लोकतंत्र
के बढ़ते कदम
संबोधन (2022-2023)

लोकतंत्र के बढ़ते कदम

सत्यमेव जयते

ओम बिरला
लोक सभा अध्यक्ष

संबोधन (2022–2023)

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली
2024

4-लार्डिस (ईएसए)/2022-23

मूल्य : चार सौ रुपए

© लोक सभा सचिवालय, नई दिल्ली, 2024

लोक सभा के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियम (सोलहवाँ संस्करण) के नियम 382 के अंतर्गत प्रकाशित और मैसर्स प्रभात प्रकाशन प्रा.लि., नई दिल्ली 110002 द्वारा मुद्रित।

आमुख

भारत की संसद देशवासियों की संप्रभु इच्छा का मूर्त रूप है। देश की इस सर्वोच्च प्रतिनिधि सभा एवं उसके सदस्यों के अधिकारों और विशेषाधिकारों के संरक्षक के रूप में लोक सभा अध्यक्ष को हमारे संसदीय लोकतंत्र में विशेष स्थान दिया गया है। लोक सभा अध्यक्ष अपनी नेतृत्व क्षमता, राजनैतिक सूझबूझ, निष्पक्ष और गरिमापूर्ण आचरण से सभा के सुचारू एवं व्यवस्थित संचालन में धुरी की भूमिका निभाते हैं।

सत्रहवीं लोक सभा के अध्यक्ष श्री ओम बिरला हमारे प्राचीन समाज में रचे-बसे लोकतांत्रिक मूल्यों के उत्फुल्लन के प्रतीकात्मक उदाहरण हैं। सहभागितापूर्ण राजनीति में अटूट विश्वास रखने वाले श्री ओम बिरला की राजनैतिक यात्रा छात्र और युवा राजनीति से आरंभ होकर सहकारी आंदोलन, राजस्थान विधान सभा और लोक सभा के मार्ग से अग्रसर होते हुए लोक सभा अध्यक्ष के उच्च दायित्व वाले आसन तक आ पहुँची है। जमीनी स्तर से लेकर शीर्षस्थ लोकतांत्रिक संगठनों में लगभग चार दशकों की सक्रिय भागीदारी का इनको बहुमूल्य अनुभव प्राप्त है। यह अनुभव श्री बिरला को संविधान सम्मत तरीके से संसदीय कार्य संचालन में अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हुआ है। उनका यह स्पष्ट मत है कि हमारी संसद राजनैतिक दलों तथा विचारधाराओं के बीच सकारात्मक चर्चा एवं विचार-विमर्श का उत्कृष्ट मंच है, अत: अध्यक्ष का प्रमुख दायित्व इस संवाद के लिए सदन में अनुकूल वातावरण सृजित करना है। उन्होंने यह सुनिश्चित किया है कि सांसदों को लोक सभा में जनहित से जुड़े सभी मुद्दों पर वाद-विवाद और खुली चर्चा के लिए पर्याप्त समय एवं अवसर मिले, जिसके परिणामस्वरूप वर्तमान लोक सभा में सांसदों ने सभा की कार्यवाही में बढ़-चढ़कर भाग लिया है और सभा के कार्यनिष्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है।

वर्तमान प्रकाशन माननीय अध्यक्ष श्री बिरला द्वारा अपने कार्यकाल के चौथे वर्ष में महत्त्वपूर्ण विषयों पर अनेक मंचों से दिए गए भाषणों का संकलन है। ये वक्तव्य अत्यधिक प्रासंगिक और समसामयिक मुद्दों पर उनकी सोच एवं विचारों की अभिव्यक्ति हैं। इस

पुस्तक के भाग–एक में श्री ओम बिरला के जीवन–वृत्त की प्रस्तुति है और भाग–दो में उनके भाषणों का संकलन है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह संकलन पाठकों, विशेष रूप से सांसदों, शिक्षाविदों, मीडिया और समसामयिक विषयों में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों के लिए अत्यंत लाभप्रद सिद्ध होगा।

(**उत्पल कुमार सिंह**)
महासचिव, लोक सभा

नई दिल्ली
जनवरी 2024

अनुक्रम

पृष्ठ

आमुख *i*

खंड-एक

श्री ओम बिरला : जीवन-वृत्त 1

खंड-दो

उनके विचार

भाग-एक : संसदीय लोकतंत्र

1. **विधायी संस्थाओं के माध्यम से नवभारत का निर्माण** 11
   अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारियों के 83वें सम्मेलन का उद्घाटन समारोह, जयपुर, राजस्थान 11 जनवरी, 2023

2. **लोकतांत्रिक मर्यादा का संरक्षण और संवर्धन : एक सामूहिक जिम्मेदारी** 17
   गुजरात विधान सभा के नवनिर्वाचित सदस्यों के लिए आयोजित प्रबोधन कार्यक्रम, गांधीनगर, गुजरात 15 फरवरी, 2023

3. **सशक्त लोकतंत्र के लिए सक्रिय जन भागीदारी का महत्त्व** 24
   राष्ट्रमंडल संसदीय संघ (इंडिया रीजन-III) के 19वें सम्मेलन का शुभारंभ समारोह, गंगटोक, सिक्किम, 23 फरवरी, 2023

4. **लोकतांत्रिक प्रणाली को सुदृढ़ करने में जनप्रतिनिधियों की भूमिका** 31
   मेघालय विधान सभा के नवनिर्वाचित सदस्यों के लिए आयोजित प्रबोधन कार्यक्रम, नई दिल्ली, 2 मई, 2023

5. **जन संवाद और जनसंपर्क : लोकतंत्र का आधार** 36
   हिमाचल प्रदेश के नवनिर्वाचित विधायकों के लिए आयोजित प्रबोधन कार्यक्रम, नई दिल्ली, 10 मई, 2023

पृष्ठ

6. **नवनिर्मित संसद भवन नूतन और पुरातन का अनूठा संगम** 41
संसद के नवनिर्मित भवन के उद्घाटन के अवसर पर संबोधन, नई दिल्ली, 28 मई, 2023

7. **स्थानीय स्वशासन की भावना को साकार करती पंचायती राज व्यवस्था** 45
करनाल, हरियाणा से आए पंचायत सदस्यों के लिए आयोजित कार्यक्रम, नई दिल्ली, 7 जून, 2023

8. **जनता का जनप्रतिनिधियों में पूर्ण विश्वास : लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए आवश्यक** 51
'राष्ट्रीय विधायक सम्मेलन' में उद्घाटन भाषण, मुंबई, 6 जून, 2023

9. **विकसित भारत : संकल्प से सिद्धि तक** 56
गोवा विधान सभा में 'विकसित भारत-2047 हेतु निर्वाचित जनप्रतिनिधियों की भूमिका' विषय पर संबोधन, गोवा, 15 जून, 2023

भाग-दो : धार्मिक एवं आध्यात्मिक मुद्दे

10. **श्रीमद्भगवद् गीता : मानव जीवन में बदलाव लाने का आधार सूत्र** 65
'गीता विज्ञान उपनिषद' के विमोचन के अवसर पर संबोधन, नई दिल्ली, 26 जुलाई, 2022

11. **चरित्र निर्माण के साथ व्यक्तित्व निर्माण को अग्रसर वाल्मीकि समाज** 69
महर्षि वाल्मीकि भगवान की जयंती के अवसर पर संबोधन, कोटा, राजस्थान, 9 अक्तूबर, 2022

12. **भगवान महावीर की शिक्षा : एक शांतिमय और सद्भावनापूर्ण समाज की नींव** 72
भगवान महावीर 2550वीं निर्वाण उत्सव समिति द्वारा आयोजित महावीर जयंती कार्यक्रम में वर्चुअल संबोधन, 4 अप्रैल, 2023

13. **वेद—भारतीय संस्कृति, दर्शन और परंपरा के आधार** 76
अखिल भारतीय वेद विज्ञान सम्मेलन में संबोधन, नई दिल्ली, 29 अप्रैल, 2023

14. **यज्ञ : आत्म साक्षात्कार का मार्ग** 82
51 कुंडीय लक्ष्मी महायज्ञ के उपलक्ष्य में ध्वजारोहण कार्यक्रम में संबोधन कोटा, राजस्थान, 29 मई 2023

15. **गुरु-शिष्य परंपरा : ज्ञान, भाव और विश्वास का संबंध** 89
गुरु पूर्णिमा पर श्री श्री रविशंकर जी की संस्था 'आर्ट ऑफ लिविंग' के गुरुपूजन एवं सत्संग कार्यक्रम में संबोधन, नई दिल्ली 13 जुलाई, 2023

भाग-तीन : आर्थिक मुद्दे

पृष्ठ

16. **युवा : भारत के कर्णधार** 95
जूनियर-चैंबर इंटरनेशनल (जेसीआई) इंडिया के राष्ट्रीय सम्मेलन में संबोधन, नई दिल्ली, 27 दिसंबर, 2022

17. **ऑटो मोबाइल सेक्टर : आर्थिक तंत्र का एक महत्त्वपूर्ण स्तंभ** 101
फेडरेशन ऑफ ऑटो मोबाइल डीलर्स एसोसिएशन (FADA) के 12वें ऑटो समिट कार्यक्रम में संबोधन, नई दिल्ली, 13 जनवरी, 2023

18. **तकनीक और नवाचार से सशक्त होता कृषि क्षेत्र** 106
कृषि महोत्सव प्रदर्शनी और प्रशिक्षण मेले के शुभारंभ के अवसर पर संबोधन, कोटा-बूँदी, राजस्थान, 24 जनवरी, 2023

19. **कृषि क्षेत्र में मूल्य संवर्धन के माध्यम से कृषकों की आय वृद्धि** 111
राजस्थान मसाला संघ द्वारा आयोजित इंटरनेशनल बिजनेस मीट के अवसर पर संबोधन, जयपुर, राजस्थान, 28 जनवरी, 2023

20. **एमएसएमई क्षेत्र-देश के आर्थिक विकास का इंजन** 116
एमएसएमई औद्योगिक मेले के आयोजन पर संबोधन, कोटा, राजस्थान, 4 मार्च, 2023

21. **विश्व का उत्पादन हब बनने की ओर अग्रसर आत्मनिर्भर भारत** 120
महाराष्ट्र चैंबर ऑफ कॉमर्स, इंडस्ट्री एंड एग्रीकल्चर के तत्त्वावधान में आयोजित सेठ वालचंद हीराचंद मेमोरियल लैक्चर, मुंबई, महाराष्ट्र, 16 जून, 2023

भाग-चार : शैक्षिक एवं सामाजिक मुद्दे

22. **गुणवत्तापूर्ण एवं संस्कारी शिक्षा : एक समतामूलक समाज की नींव** 127
डॉ. अंबेडकर छात्रावास के शिलान्यास कार्यक्रम में संबोधन, कोटा, राजस्थान, 09 जनवरी, 2023

23. **नवाचार और शोध : उभरती वैश्विक चुनौतियों से निपटने में कारगर** 130
मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान के 19वें दीक्षांत समारोह में संबोधन, प्रयागराज, 8 अप्रैल, 2023

24. **शिक्षा का मूल उद्देश्य : समाज और मानवता का कल्याण** 134
एमएनआईटी, जयपुर और आईआईआईटी, कोटा के दीक्षांत समारोह में संबोधन, कोटा, राजस्थान, 12 अप्रैल, 2023

पृष्ठ

25. **मूल्यपरक वाणिज्य पठन-पाठन की नितांत आवश्यकता** 140
दिल्ली विश्वविद्यालय के श्री गुरु गोविंद सिंह कॉलेज ऑफ कॉमर्स के वार्षिक दिवस पर आयोजित दीक्षांत समारोह में संबोधन, नई दिल्ली, 2 मई, 2023

26. **चिकित्सा क्षेत्र : सेवा और समर्पण का क्षेत्र** 144
प्रवर इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस के वार्षिक दीक्षांत समारोह में संबोधन, लोनी, महाराष्ट्र, 11 मई, 2023

भाग-पाँच : स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे

27. **सुलभ स्वास्थ्य सेवा : हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता** 165
यशोदा अस्पताल द्वारा आयोजित कार्यक्रम में संबोधन, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, 29 सितंबर, 2022

28. **विश्व थैलेसीमिया दिवस** 170
विश्व थैलेसीमिया दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में संबोधन, नई दिल्ली, 9 मई, 2023

29. **योग : एक स्वस्थ विश्व का आधार** 175
अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर संबोधन, नई दिल्ली, 21 जून, 2023

भाग-छह : युवा विषयक मुद्दे

30. **युवा सपनों और संकल्पों के लिए प्रेरक स्वामी विवेकानंद का जीवन** 179
स्वामी विवेकानंद जयंती के अवसर पर स्वामी विवेकानंद ग्लोबल यूनिवर्सिटी द्वारा आयोजित कार्यक्रम में संबोधन, जयपुर, राजस्थान, 12 जनवरी, 2023

31. **जन-जन की न्याय तक पहुँच : हमारा नैतिक दायित्व** 184
गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी में संबोधन, गांधीनगर, गुजरात 15 फरवरी, 2023

32. **राष्ट्रीय युवा संसद महोत्सव : लोकतंत्र को निकट से समझने का प्रयोग** 189
राष्ट्रीय युवा संसद महोत्सव कार्यक्रम में संबोधन, नई दिल्ली, 02 मार्च, 2023

33. **विद्यार्थियों में समझ संसद की** 194
'समझ संसद की' कार्यक्रम के अंतर्गत संसद भवन के दौरे पर आए विद्यार्थियों के साथ संवाद, नई दिल्ली, 1 मई, 2023

34. **आत्मविश्वासी युवा : आत्मनिर्भर भारत की रीढ़** 199
राष्ट्रीय युवा सम्मेलन, 2022 में संबोधन, जोधपुर, राजस्थान, 16 सितंबर, 2023

भाग-सात : विशेष व्यक्तित्व

पृष्ठ

35. **महात्मा गांधी और लालबहादुर शास्त्री जी का जीवन : भारतीयता का अविस्मरणीय दर्शन** 207
महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री जी की जयंती पर संसद भवन के केंद्रीय कक्ष में संबोधन, नई दिल्ली, 02 अक्तूबर, 2022

36. **त्याग, संकल्प और स्वाभिमान की प्रतिमूर्ति : नेताजी सुभाष चंद्र बोस** 213
नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती के अवसर पर संबोधन, नई दिल्ली, 23 जनवरी, 2023

37. **गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर : एक कवि हृदय विश्व मानव** 216
संसद भवन में गुरुदेव श्री रवींद्रनाथ टैगोर की जयंती पर आयोजित पुष्पांजलि कार्यक्रम में संबोधन, नई दिल्ली, 9 मई, 2023

भाग-आठ : विविध

38. **राष्ट्रहित और जनकल्याण के प्रति समर्पित व्यक्तित्व : श्री रामनाथ कोविन्द** 223
संसद सदस्यों की ओर से भारत के राष्ट्रपति, श्री रामनाथ कोविन्द के विदाई समारोह में संबोधन, नई दिल्ली, 23 जुलाई, 2022

39. **व्यापक जन भागीदारी से सुनिश्चित हो रही प्रभावी एवं पारदर्शी शासन व्यवस्था** 227
केंद्रीय सूचना आयोग के वार्षिक सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में संबोधन, नई दिल्ली, 09 नवंबर, 2022

40. **गुर्जर जन नायक : स्वर्गीय कर्नल किरोड़ी सिंह बैंसलान** 232
स्वर्गीय कर्नल किरोड़ी सिंह बैंसला की मूर्ति के अनावरण और गुर्जर सम्मेलन में संबोधन, कोटा, राजस्थान, 30 मई, 2023

41. **वैश्विक आकांक्षाओं और अपेक्षाओं को पूरा करने में समर्थ भारत** 236
भारतीय विदेश सेवा के प्रशिक्षु अधिकारियों से संवाद, नई दिल्ली, 7 जून 2023

खंड-एक

श्री ओम बिरला : जीवन-वृत्त

श्री ओम बिरला
माननीय अध्यक्ष, सत्रहवीं लोक सभा

श्री ओम बिरला : एक परिचय

भारत की 17वीं लोक सभा के अध्यक्ष श्री ओम बिरला का जन्म 23 नवंबर, 1962 को कोटा, राजस्थान में हुआ।

संसदीय लोकतांत्रिक प्रणाली में श्री ओम बिरला ने वर्ष 2003 में प्रथम बार कोटा दक्षिण विधान सभा क्षेत्र से राजस्थान विधान सभा के लिए निर्वाचित होकर अपनी उपस्थिति दर्ज की। 2008 व 2013 में भी जनता के सर्वमान्य सेवक के रूप में पुन: विधायक के तौर पर निर्वाचित हुए। श्री बिरला राजस्थान विधान सभा के अपने कार्यकाल के दौरान संसदीय सचिव पद पर भी रहे।

श्री बिरला वर्ष 2014 और 2019 में कोटा–बूँदी लोक सभा संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से क्रमश: 16वीं तथा 17वीं लोक सभा के लिए चुने गए। श्री ओम बिरला 19 जून, 2019 को सर्वसम्मति से 17वीं लोक सभा के अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

एक साधारण परिवेश से निकलकर देश की सर्वोच्च जनप्रतिनिधि संस्था के अध्यक्ष पद पर पहुँचने की श्री बिरला की संघर्षपूर्ण यात्रा एक प्रेरक गाथा है।

जनता से उनका जुड़ाव और उनके प्रति समर्पण उन्हें एक लोकप्रिय जनप्रतिनिधि बनाता है। एक संवेदनशील, जिम्मेदार और निष्ठावान जनप्रतिनिधि के रूप में श्री बिरला अपने संसदीय क्षेत्र के प्रति निरंतर समर्पित रहे हैं।

सहकारिता क्षेत्र में योगदान

श्री ओम बिरला का सहकारिता आंदोलन में दृढ़ विश्वास रहा है। वर्ष 1987 से 2003 तक कोटा जिला सहकारी उपभोक्ता थोक भंडार लिमिटेड के अध्यक्ष पद पर रहते हुए उन्होंने इस संकटग्रस्त सहकारी समिति को पुनर्जीवित कर नई कल्याणकारी योजनाओं का शुभारंभ किया। वर्ष 1992 से 1995 तक श्री बिरला राजस्थान राज्य

सहकारी उपभोक्ता संघ लिमिटेड के अध्यक्ष रहे। इस दौरान उन्होंने संपूर्ण राजस्थान राज्य में सहकारिता आंदोलन को गति दी। उसी अवधि में उन्होंने राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता संघ लिमिटेड के निदेशक का पदभार ग्रहण किया और देश भर में सहकारिता आंदोलन को मजबूती प्रदान की। वह वर्ष 2002 से 2004 तक राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता संघ लिमिटेड के उपाध्यक्ष पद पर भी रहे। उपाध्यक्ष के रूप में उन्होंने पूरे देश में सुपर बाजार योजना को बढ़ावा दिया।

एक समाजसेवी

श्री ओम बिरला अपने राजनीतिक जीवन के प्रारंभ से ही एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में सक्रिय रहकर गरीबों और समाज के दलित-वंचित वर्गों की सेवा करते रहे हैं। अपने राजनीतिक जीवन काल में उन्होंने अनेकानेक जन-केंद्रित प्रकल्प संचालित किए जैसे कि **प्रसादम, परिधान, कंबल प्रकल्प, सुपोषित माँ अभियान, हर गाँव स्वस्थ-हर परिवार स्वस्थ, मोबाइल हेल्थ वैन, वृहत वृक्षारोपण अभियान, क्लीन कोटा-ग्रीन कोटा तथा एक मुट्ठी अन्न राहत अभियान** इत्यादि।

नवोन्मेषी-निष्पक्ष लोक सभा अध्यक्ष

जून, 2019 में 17वीं लोक सभा के अध्यक्ष चुने जाने के पश्चात् से ही श्री ओम बिरला ने लोक सभा की कार्य प्रणाली में गुणवत्तापूर्ण सुधार एवं उत्पादकता बढ़ाने का लक्ष्य लेकर अनेकानेक प्रयास किए। कुछ प्रमुख उपलब्धियाँ निम्न प्रकार हैं—

- 17वीं लोक सभा की कार्य उत्पादकता में 14वीं, 15वीं, 16वीं लोक सभा की तुलना में महत्त्वपूर्ण वृद्धि हुई है।
- नए सदस्यों को बोलने का अवसर देना।
- पहली बार चुनकर आने वाले सदस्यों को पहले सत्र में ही बोलने का अवसर देना।
- उपलब्ध संसाधनों और समय का इष्टतम उपयोग करना।
- सदस्यों की दक्षता बढ़ाने के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म को अपनाना।
- कार्य निष्पादन में त्रुटि और विलंब को कम करना।
- पारदर्शिता और जवाबदेही लाना।

- संसद सदस्यों के लिए 'शोध एवं सूचना सहायता' (प्रिज्म) की स्थापना।
- शोध सहायता के माध्यम से सदस्यों की कार्य-क्षमता को बढ़ाना।
- विषय विशेषज्ञों द्वारा माननीय संसद सदस्यों के लिए ब्रीफिंग सत्रों का आयोजन।
- मोबाइल ऐप के माध्यम से माननीय सदस्यों को 40 भाषाओं में 5000 से अधिक पत्रिकाएँ और समाचार-पत्रों को पढ़ने की सुविधा।
- मूल संविधान सभा, संविधान सभा की चर्चाओं और लोक सभा की कार्यवाही का डिजिटलाइजेशन।
- ऑनलाइन संसद ग्रंथालय की शुरुआत।
- महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर सदस्यों को विधायी और नीति संबंधी जानकारी उपलब्ध कराने की संस्थागत व्यवस्था करना।
- पंचायती राज संस्थाओं के लिए आउटरीच कार्यक्रमों का आयोजन करना।
- शैक्षणिक संस्थानों के विद्यार्थियों को संसद ग्रंथालय एवं संसद भवन के भ्रमण की व्यवस्था करना।
- छात्रों और युवाओं में संविधान एवं संसदीय लोकतंत्र के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से 'अपने संविधान को जानें' (केवाईसी) पहल की शुरुआत।
- संविधान सदन के केंद्रीय कक्ष में हमारे राष्ट्रनायकों को पुष्पांजलि अर्पित करने के लिए भारतवर्ष के विभिन्न प्रदेशों के युवाओं को आमंत्रित करना।
- सूचना और संचार केंद्र की स्थापना करना इत्यादि।

लोक सभा के अध्यक्ष के रूप में श्री बिरला ने सदन के माध्यम से कार्यपालिका की पारदर्शिता और विधायिका के प्रति जवाबदेही को और अधिक प्रभावी तरीके से सुनिश्चित किया है। सदन के सभी माननीय सदस्यों को, विशेष रूप से नए सदस्यों, महिला और युवा सदस्यों को उन्होंने सदन के अंदर अपनी बात रखने का पर्याप्त अवसर दिया है।

श्री बिरला के विशेष प्रयासों एवं सभी माननीय सदस्यों के सहयोग से ही कोविड वैश्विक महामारी के दौरान भी लोक सभा में बेहतर कार्य निष्पादन सुनिश्चित किया जा सका।

संसद का नया भवन

श्री ओम बिरला के कार्यकाल के दौरान ही एक ऐतिहासिक पहल के तौर पर संसद के नए भवन का शिलान्यास, निर्माण और लोकार्पण हुआ। नए संसद भवन को अत्याधुनिक तकनीक से युक्त तथा पर्यावरण अनुकूल बनाया गया है, ताकि माननीय सदस्यगण दक्षतापूर्वक कार्य कर सकें।

अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर उपस्थिति

श्री ओम बिरला ने लोक सभा अध्यक्ष के कार्यकाल के दौरान विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, जैसे अंतर-संसदीय संघ (आई.पी.यू.) की महासभा, संसद के अध्यक्षों के वैश्विक सम्मेलन, जी-20 देशों की संसदों के अध्यक्षों के सम्मेलन, राष्ट्रमंडल देशों की संसदों के अध्यक्षों और पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलन (सीएसपीओसी) सहित विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मंचों द्वारा आयोजित सम्मेलनों में शिरकत की। इसके साथ-साथ अनेक देशों में जानेवाले भारत के संसदीय प्रतिनिधिमंडलों का भी नेतृत्व किया। इस हेतु उन्होंने कई देशों की यात्रा की, जैसे कि संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, मेक्सिको, सर्बिया, इटली, तुर्की, फ्रांस, नीदरलैंड, जापान, सूरीनाम, मालदीव, युगांडा, संयुक्त अरब अमीरात, बहरीन, यूरोपियन पार्लियामेंट, बेल्जियम, वियतनाम, कंबोडिया, सिंगापुर और इंडोनेशिया, ऑस्ट्रिया, केन्या, तंजानिया और मंगोलिया इत्यादि।

पी-20 सम्मेलन का सफल आयोजन

श्री ओम बिरला के नेतृत्व में अक्टूबर, 2023 में यशोभूमि, नई दिल्ली में भारत की अध्यक्षता में जी-20 देशों की संसदों के अध्यक्षों के नौवें पी-20 सम्मेलन का सफल आयोजन हुआ। जी-20 देशों तथा 10 आमंत्रित देशों की संसदों के 37 अध्यक्षों/उपाध्यक्षों/प्रतिनिधियों के साथ-साथ आईपीयू के अध्यक्ष और पैन अफ्रीकी संसद के अध्यक्ष ने इस शिखर सम्मेलन में हिस्सा लिया। इनके अलावा, 48 माननीय संसद सदस्यों समेत कुल 436 प्रतिनिधियों ने इस शिखर सम्मेलन में भाग लिया। इस सम्मेलन का मुख्य विषय था—**"एक पृथ्वी-एक परिवार-एक भविष्य के लिए संसद"**। इस सम्मेलन में मुख्य रूप से एसडीजी, हरित ऊर्जा, महिला नेतृत्व वाले विकास तथा डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढाँचे इत्यादि विषयों पर विस्तृत, सफल एवं सारगर्भित चर्चा हुई।

श्री ओम बिरला ने संसद के बाहर विभिन्न अंतर-संसदीय मंचों, देश-विदेश के सामाजिक व सार्वजनिक समारोहों और अपने निर्वाचन क्षेत्र में अनेक मंचों को अपनी उपस्थिति से सुशोभित किया है। श्री ओम बिरला ने लोक महत्त्व के विषयों को जिस विद्वत्ता, तार्किकता एवं भावात्मकता के साथ प्रस्तुत किया है, उसे पढ़ना पाठकों के लिए एक समृद्धिकारक अनुभव रहेगा।

खंड-दो

उनके विचार

भाग-एक

संसदीय लोकतंत्र

1

विधायी संस्थाओं के माध्यम से नवभारत का निर्माण*

"कानून बनाने में जनता की जितनी सक्रिय भागीदारी होगी उतना ही प्रभावी कानून बनेगा और कानून के माध्यम से हम लोगों के जीवन में अपेक्षाकृत बेहतर परिणाम ला सकते हैं, बदलाव ला सकते हैं।"

अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारी के 83वें सम्मेलन में पधारे सभी पीठासीन अधिकारीगण, लोक सभा के माननीय सदस्यगण, राज्य सभा के सदस्यगण, राज्य सरकार के मंत्रिगण, विधायकगण, पूर्व विधायकगण, पूर्व सांसदगण, सबका मैं राजस्थान की राजधानी में हार्दिक अभिनंदन करता हूँ, स्वागत करता हूँ। राजस्थान आध्यात्मिक भक्ति, शौर्य एवं पराक्रम की धरती है। यहाँ की जीवंत बहुरंगी विरासत, संस्कृति और 'पधारो म्हारे देश' की संस्कृति का अनुभव आप सब पीठासीन अधिकारियों ने किया होगा।

इस अवसर पर मैं विशेष रूप से भारत के माननीय उप राष्ट्रपति जी का अभिनंदन करता हूँ, स्वागत करता हूँ, जो अपने व्यस्ततम समय में से समय निकालकर इस कार्यक्रम में पधारे और उनका मार्गदर्शन हमें मिलेगा। यह सौभाग्य है कि उप राष्ट्रपति जी भी राजस्थान से ही हैं और इस विधान सभा के सदस्य भी रहे हैं। मैं इस मौके पर राजस्थान के माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत जी का और राजस्थान विधान सभा के अध्यक्ष माननीय डॉ. सी.पी. जोशी जी को विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिन्होंने इस अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारी सम्मेलन की मेजबानी की और गर्मजोशी से अभिनंदन किया, स्वागत किया। मंच पर विराजे राज्य सभा के उप सभापति एवं वरिष्ठ पत्रकार

* अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारियों के 83वें सम्मेलन का उद्घाटन समारोह, जयपुर, राजस्थान, 11 जनवरी, 2023

श्री हरिवंश जी, राजस्थान के वरिष्ठ नेता और प्रतिपक्ष के नेता माननीय गुलाब चंद कटारिया जी का भी मैं अभिनंदन करता हूँ, स्वागत करता हूँ।

भारत के उप राष्ट्रपति और राज्य सभा के सभापति श्री जगदीप धनखड़; राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत, राज्य सभा के उप सभापति, श्री हरिवंश और राजस्थान विधान सभा के अध्यक्ष, डॉ. सी.पी. जोशी के साथ अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारियों के 83वें सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में लोक सभा सचिवालय द्वारा प्रकाशित माननीय राष्ट्रपति के अभिभाषणों के अद्यतन संस्करण का विमोचन करते हुए

पिछले सम्मेलन के आयोजन के बाद से हमारे कुछ पूर्व सहयोगियों के दु:खद निधन का मैं उल्लेख करना चाहता हूँ। श्री धनिक लाल मंडल, पूर्व अध्यक्ष, बिहार विधान सभा; थिरू सेरापट्टी आर. मुथैया, पूर्व अध्यक्ष, तमिलनाडु विधान सभा; श्री ई. वीरमनी सिंह, पूर्व अध्यक्ष, मणिपुर विधान सभा; श्री मनोज सिंह मंडावी, पूर्व उपाध्यक्ष, छत्तीसगढ़ विधान सभा एवं उत्तर प्रदेश विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष, श्री केशरी नाथ त्रिपाठी जी के निधन पर हम शोक व्यक्त करते हैं। भगवान उनको अपने चरणों में स्थान दें।

हमें राजस्थान की राजधानी में एक अवसर मिला है। माननीय डॉ. सी.पी. जोशी जी ने पीठासीन अधिकारियों की चिंता व्यक्त की और उनकी वेदना भी व्यक्त की और किस तरीके से भारत का लोकतंत्र सशक्त हो, मजबूत हो, इसके लिए अपने विचार भी व्यक्त किए।

शिमला में शताब्दी वर्ष का पीठासीन अधिकारी सम्मेलन हुआ, जिसमें हमने चर्चा की। पीठासीन अधिकारी सम्मेलन में जो कुछ भी निर्णय हुए, फैसले हुए, उन निर्णयों और फैसलों को लेकर हम कहाँ तक पहुँचे, उसकी व्यापक समीक्षा की गई, विचार-विमर्श किया गया। हमने पाया कि उस सम्मेलन में से कई निर्णय सफल रूप से कार्यान्वित हुए, जिसका

परिणाम रहा कि हमारी संसद, विधान मंडलों के अंदर काफी नियमों और प्रक्रियाओं में बदलाव हुए और उसके साथ-साथ आम जनता की अपेक्षाएँ तथा आकांक्षाएँ पूरी हों, उसके लिए भी सतत रूप से इस सम्मेलन के माध्यम से प्रयास किया गया।

अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारी सम्मेलन एक ऐसा मंच है, जिसमें राज्य विधान मंडल के अध्यक्ष, केंद्र के विधान मंडल के स्पीकर बैठकर चर्चा करते हैं, संवाद करते हैं। अपने अनुभवों को, अपने नवाचारों को साझा करते हैं और एक दिशा तय करते हैं, जिससे कि हमारा विधानमंडल लगातार सतत रूप से विकसित हो जाए और बदलते परिप्रेक्ष्य में किस तरह से हमारे विधान मंडल प्रभावी सिद्ध हों, इसके लिए लगातार चर्चा और संवाद चलते रहते हैं।

यह आजादी के अमृत महोत्सव का वर्ष है। 75 वर्ष की लोकतंत्र की यात्रा में हमारा लोकतंत्र सशक्त हुआ है, मजबूत हुआ है। हमारी संसद, विधान मंडल प्रभावी हुए हैं, लेकिन हमें फिर चर्चा करनी है, मंथन करना है। लोकतंत्र भारत की परंपराओं के अंदर, परिवेश के अंदर हमेशा रहा है और इसीलिए जब जी-20 का सम्मेलन हो रहा है, उस समय लोकतंत्र भारत की अवधारणा है, विचारधारा है, कार्यशैली है और लोकतंत्र के माध्यम से ही हमने लोगों के जीवन में सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन लाने का प्रयास किया है।

इसीलिए 21वीं सदी का जो आकांक्षी भारत है, जो नया भारत उदय हो रहा है, दुनिया भारत की ओर देख रही है। इस समय हमें इस लोकतंत्र के माध्यम से जो कुछ भी परिवर्तन हुआ, उसको प्रभावी रूप से विश्व की संसदों के सामने भी और विश्व के कई देशों की सरकारों के सामने भी रखने का एक पर्याप्त मौका मिलेगा और इसीलिए हमेशा हमने कहा है कि लोकतंत्र की जननी के रूप में चाहे हम प्राचीनतम लोकतंत्र की जब चौथी शताब्दी की चर्चा करते हैं, उसके बाद की चर्चा करते हैं तो हमने पाया है कि किस तरीके से लोकतंत्र हमारी विरासत में रहा है और लोकतंत्र-परंपराएँ हमारी शुरू से रही हैं।

इस परिप्रेक्ष्य में हमारी ज्यादा जिम्मेदारी बन जाती है कि जब हम लोकतंत्र की जननी भारत को मानते हैं तो हमारी संसद, विधान मंडल अधिक प्रभावी हों, उत्तरदायी हों और उत्पादकतायुक्त हों, इसलिए पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलन में हमारी ज्यादा जिम्मेदारी है कि हम जनता की अपेक्षाओं और आकांक्षाओं पर खरे उतरें। इन सदनों के माध्यम से जनता के अभावों, कठिनाइयों का समाधान करने का एक रास्ता निकालें।

हमारे संविधान निर्माताओं की मंशा भी यही रही थी। इस मंशा के अनुसार देश में कानून बनाने की हमारी जिम्मेदारी है। कानून प्रभावी हो, कानून पर व्यापक चर्चा हो, कानून में जनता की सक्रिय भागीदारी हो। कानून बनाने में जनता की जितनी सक्रिय भागीदारी होगी उतना ही प्रभावी कानून बनेगा और कानून के माध्यम से हम लोगों के

जीवन में अपेक्षाकृत बेहतर परिणाम ला सकते हैं, बदलाव ला सकते हैं। इस समय एक और चुनौती हमारे सामने है, जिसकी चिंता माननीय विधान सभा अध्यक्ष जी ने की, माननीय मुख्यमंत्री जी ने भी की।

हमें चिंतन करने की आवश्यकता है कि 75 वर्ष के लोकतंत्र के परिपक्व होने के बाद भी आज हमें शालीनता, गरिमा की बात करने की आवश्यकता पड़ रही है। किस तरीके से सदन में शालीनता आए, गरिमा आए, 50 वर्ष जब आजादी के हुए तो उस समय भी इसकी चर्चा हुई।

वर्ष 2001 में देश में एक सम्मेलन हुआ, जिसमें सारे राज्यों के मुख्यमंत्री, विधान सभा के अध्यक्ष, मुख्य सचेतक, देश के प्रधानमंत्री, प्रतिपक्ष के सभी नेताओं ने एक स्वर से इस बात को कहा कि हमें अगर लोकतंत्र को मजबूत करना है तो सदनों के अंदर शालीनता, गरिमा होनी चाहिए। चर्चा, डिबेट का स्तर ऊँचा होना चाहिए और कानून बनाने में लोगों की प्रभावी तरीके से भूमिका होनी चाहिए।

आज भी यह चिंता का विषय है और इस चिंता को दूर करेंगे हमारे जन-प्रतिनिधि। हमारे जन-प्रतिनिधि जितने परिपक्व रूप से शालीनता, गरिमा रखेंगे, संवाद और चर्चा में उच्च कोटि की चर्चा और संवाद करेंगे, कानून बनाते समय व्यापक रूप से उसकी समीक्षा करेंगे, चर्चा करेंगे, लेकिन कानून बनाते समय, जैसा अध्यक्ष जी ने कहा कि कानून बनाते समय जो समय कम होता जा रहा है, कानून जिस तरीके से जल्दी से पारित हो रहे हैं, ये देश के लिए भी चिंता है और विशेष रूप से हमारे लोकतंत्र के लिए विशेष चिंता का प्रश्न है। इसीलिए 75 वर्ष के इस लोकतंत्र की यात्रा में हम हमारे विधान मंडलों की इमेज को अच्छा बनाएँ, इनकी प्रोडक्टिविटी बनाएँ, गरिमा को ठीक करें और अनुशासित, सारगर्भित तरीके से चर्चा करके एक प्रभावी लोकतंत्र की भूमिका बनाने का काम करें।

यह बात सही है कि बदलते परिप्रेक्ष्य में सूचना प्रौद्योगिकी का बहुत बड़ा महत्त्व है। सूचना प्रौद्योगिकी का महत्त्व होने के कारण अधिकतर विधान सभाओं की कार्यवाही का प्रसारण लाइव हो रहा है। देश की जनता विधान सभा, लोक सभा, राज्य सभा की कार्यवाहियों को देखती है। उनके मन एवं चिंतन में एक अच्छा प्रभाव पड़े, उनके विचारों में जो हमारी संस्थाएँ हैं, उनके प्रति अच्छा प्रभाव पड़े, उनकी गरिमा उनको नजर आए, ताकि लोगों का, जनता का और अधिक विश्वास व भरोसा इन लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति बढ़े। जन-विश्वास को बढ़ाना हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। इसके लिए हम लगातार चर्चा करते रहते हैं। विधान सभाओं के अंदर, लोक सभा के अंदर हमारे जन-प्रतिनिधियों की कैपेसिटी बिल्डिंग हो, इसके लिए हर विधान सभा में, लोक सभा में हमने रिसर्च के, इनोवेशन के नए सेंटर खोले हैं। उनको हम पुरानी डिबेट, जैसे राजस्थान के अंदर, देश के अंदर की पुरानी चर्चाएँ और डिबेट उपलब्ध कराते हैं, ताकि एक अच्छी चर्चा व संवाद कर सकें।

भारत के उप राष्ट्रपति और राज्य सभा के सभापति श्री जगदीप धनखड़; राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत और राजस्थान विधान सभा के अध्यक्ष डॉ. सी.पी. जोशी के साथ अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारियों के 83वें सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर दीप प्रज्वलित करते हुए

माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने पिछली बार स्पीकर कॉन्फ्रेंस में एक विजन दिया था—'वन नेशन-वन लेजिस्लेटिव प्लेटफार्म'। इस दिशा के अंदर भारत की संसद और राज्यों के विधान मंडल मिलकर काम कर रहे हैं।

आने वाले समय के अंदर एक प्लेटफार्म पर देश की संसद हो, चाहे राज्य सभा हो, चाहे विधान सभा हो, उनकी कार्यवाही पूरा देश देख पाएगा। जो उनकी पुरानी डिबेट हैं, चर्चाएँ हैं, कानून बनाते समय जो चर्चा हुई, उन सबको देख पाएगा, ताकि पूरे देश के अंदर एक साथ एक प्लेटफार्म पर जब पूरे लेजिस्लेटिव का डाटा (डिबेट्स, डिस्कशन्स, स्टेटमेंट्स, स्पीचेज इत्यादि) होगा तो निश्चित रूप से चर्चा करते समय, संवाद करते समय ज्यादा जानकारी मिलेगी। इसके लिए भी पीठासीन अधिकारी लगातार प्रयास कर रहे हैं। चाहे राजस्थान हो, चाहे मध्य प्रदेश हो, चाहे उत्तर प्रदेश हो, सभी विधान सभाओं ने अपनी-अपनी डिबेटों को कंप्यूटराइज किया है। लगता है कि वर्ष 2023 के अंदर इस डिजिटल संसद के प्लेटफार्म को भी देश की जनता को समर्पित कर देंगे।

जैसी सब ने चिंता व्यक्त की कि संसद और विधान मंडल के अध्यक्ष हमेशा न्यायपालिका का सम्मान करते हैं। उनके अधिकारों का, उनकी स्वतंत्रता का सम्मान करते

हैं। इसके साथ-साथ हमारा यह भी मानना है कि संविधान में जो मर्यादा दी है, उस मर्यादा का पालन न्यायपालिका भी करे। न्यायपालिका से भी यह अपेक्षा की जाती है कि जो उनको संवैधानिक मेंडेट दिया गया है, वह उस मेंडेट का उपयोग करे, लेकिन अपनी प्रत्यक्ष शक्तियों के पृथक्करण और संतुलन के सिद्धांतों को बनाने में भी सहयोग करे। यह अपेक्षा हमारे पीठासीन अधिकारियों की है। इसीलिए विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका को संविधान ने शक्तियाँ दी हैं, क्षेत्राधिकार दिया है, उन क्षेत्राधिकारों में रहकर हम किस तरीके से जनता का भरोसा, विश्वास जीत सकते हैं, इसके लिए हमें काम करने की आवश्यकता है।

"संविधान में जो मर्यादा दी है, उस मर्यादा का पालन न्यायपालिका भी करे। न्यायपालिका से भी यह अपेक्षा की जाती है कि जो उनको संवैधानिक मेंडेट दिया गया है, वह उस मेंडेट का उपयोग करे लेकिन अपनी प्रत्यक्ष शक्तियों के पृथ्क्करण और संतुलन के सिद्धांतों को बनाने में भी सहयोग करे।"

हमारा देश लगातार आगे बढ़ रहा है। इसी के साथ हमारी विधायी संस्थाओं के अंदर भी हम लगातार प्रयास कर रहे हैं कि जनता का भरोसा व विश्वास और अधिक कायम हो। इसके लिए जो ये पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलन हैं, इन सम्मेलनों के अंदर जो चर्चाएँ होती हैं, वे दीर्घकाल के लिए दिशा देती हैं।

मुझे आशा है कि राजस्थान की राजधानी के अंदर जो निर्णय, जो फैसले होंगे, यहाँ पर माननीय भैरोंसिंह शेखावत जी उप राष्ट्रपति के रूप में रहे, कई वरिष्ठ नेता रहे यहाँ पर, जिनका एक लंबा अनुभव रहा है। राजस्थान के कई निर्णय आज देश व दुनिया के अंदर, उन निर्णयों को, उन फैसलों को पूरा देश मानता है, पूरा विश्व भी मानता है। इसलिए मुझे लगता है कि दो दिन होने वाले विचार-विमर्श में हमारे पीठासीन अधिकारियों के जो नए दृष्टिकोण आएँगे, नए विचार आएँगे, उनको लेकर हम आगे बढ़ेंगे। जिन विषयों को लेकर चर्चा की है, उससे श्रेष्ठ परिणाम आएगा।

मुझे उम्मीद है कि हम जनता की उम्मीदों पर खरे उतरेंगे और जनता ने हमें जो मेंडेट दिया है, लोकतंत्र को सशक्त बनाने का, उसको प्रभावी तरीके से कर पाएँगे। यहाँ आए सभी पीठासीन अधिकारियों को मैं पुनः बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ। मुझे आशा है कि आपकी सारगर्भित चर्चा से हम निश्चित रूप से एक बेहतर परिणाम देश की जनता को दे पाएँगे।

2

लोकतांत्रिक मर्यादा का संरक्षण और संवर्धन : एक सामूहिक जिम्मेदारी*

"जितना राज्यों की विधान सभाओं में चर्चा संवाद का उच्च स्तर होगा, कानून बनाते समय सदस्यों की सक्रिय भागीदारी होगी, सभी पहलुओं को, तथ्यों के साथ सदन में रखेंगे, उतने ही अच्छे कानून बनेंगे। इसलिए सदन चर्चा, संवाद के प्रभावी केंद्र बनें ताकि हमारा लोकतंत्र और सशक्त हो।"

आज गुजरात विधान सभा में आयोजित इस प्रबोधन कार्यक्रम में शामिल होना मेरे लिए अत्यंत हर्ष का विषय है। सर्वप्रथम गुजरात विधान सभा के सभी सदस्यों, विशेष रूप से नवनिर्वाचित सदस्यों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ।

मैं माननीय श्री शंकर चौधरी जी को गुजरात विधान सभा का अध्यक्ष निर्वाचित होने पर बधाई देता हूँ। सर्वसम्मति से विधान सभा का उपाध्यक्ष निर्वाचित होने पर माननीय श्री जेठा भाई भारवाड़ जी को भी हार्दिक बधाई।

मुझे आशा है कि आपके कार्यकाल में आप गुजरात विधान सभा की गौरवशाली लोकतांत्रिक परंपराओं को और सशक्त करेंगे, और आगे बढ़ाएँगे।

सर्वप्रथम, मैं समृद्धशाली राज्य गुजरात की पावन धरती को नमन करता हूँ। गुजरात धर्म और अध्यात्म की धरती है, भक्ति और शक्ति की धरती है, महापुरुषों की धरती है। इस धरती ने हमारे देश को गांधी जी एवं सरदार पटेल जैसी कई महान हस्तियाँ दी हैं। आजादी के आंदोलन में और आजादी के बाद देश के नवनिर्माण में इस प्रदेश के नेताओं की बहुत बड़ी भूमिका रही है।

---

* गुजरात विधान सभा के नवनिर्वाचित सदस्यों के लिए आयोजित प्रबोधन कार्यक्रम, गांधीनगर, गुजरात 15 फरवरी, 2023

यह धरती देश के आर्थिक, औद्योगिक और सांस्कृतिक विकास का केंद्र है। यहाँ के उद्यमी, व्यापारी और लोग सदियों से भारत ही नहीं बल्कि विश्व के विभिन्न हिस्सों में जाकर अपनी क्षमता और योग्यता को साबित करते आए हैं।

गुजराती समाज जिस भी देश या प्रदेश में निवास करता है, वहाँ रोजगार और व्यापार करके उस राज्य के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है। गुजराती समाज ने भारत ही नहीं बल्कि विश्व की सामाजिक व आर्थिक समृद्धि में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

गुजरात विधान सभा के नवनिर्वाचित सदस्यों के लिए
आयोजित प्रबोधन कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए

मैं विश्व के कई देशों में गया हूँ। वहाँ मैंने देखा है कि वहाँ पर, चाहे अफ्रीका के देश हों या यूरोप के देश हों या संसार के अन्य हिस्सों के अंदर, गुजराती समाज के लोगों का उस देश के आर्थिक-सामाजिक जीवन में, विकास में, समृद्धि में बहुत बड़ा योगदान रहा है। यहाँ के लोग अत्यंत लगनशील, परिश्रमी, निष्ठावान, ईमानदार एवं कर्मयोगी हैं।

गुजरात सौभाग्यशाली रहा है कि हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने इसका तीन बार नेतृत्व किया है। उनके सशक्त मार्गदर्शन में गुजरात में व्यापक आर्थिक, औद्योगिक तथा सामाजिक जीवन में परिवर्तन आए हैं।

माननीय सदस्यगण, आप गुजरात के 6 करोड़ से ज्यादा लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। आपके सामने जिम्मेदारी है कि आप किस प्रकार से इस लोकतांत्रिक संस्था के माध्यम

से यहाँ की जनता के सामाजिक, आर्थिक जीवन में समृद्धि लाएँ, उनके जीवन में रचनात्मक परिवर्तन करें।

गुजरात की इस 15वीं विधान सभा में अनुभव एवं नवीनता का अद्‌भुत संगम है। मुझे खुशी है कि इस विधान सभा में 82 सदस्य पहली बार निर्वाचित होकर आए हैं। यह हर्ष का विषय है कि मौजूदा विधान सभा में 15 महिला सदस्य हैं, जिनमें से 8 महिलाएँ पहली बार चुनकर आई हैं।

गुजरात विधान सभा के नवनिर्वाचित सदस्यों के लिए आयोजित प्रबोधन कार्यक्रम के उद्‌घाटन सत्र में गुजरात के मुख्यमंत्री, श्री भूपेंद्र पटेल और अध्यक्ष, गुजरात विधान सभा, श्री शंकर चौधरी के साथ

इस विधान सभा का एक गौरवशाली इतिहास रहा है, जिसमें कई उत्कृष्ट लोकतांत्रिक परंपराएँ स्थापित हुई हैं। सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेंबली के आरंभिक वर्षों में अध्यक्ष के रूप में स्वर्गीय विट्‌ठलभाई पटेल ने असेंबली की प्रक्रिया नियमों को सुस्थापित करने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई थी।

हम प्रदेश की लोकतांत्रिक संस्थाओं में चुनकर आए हैं। हमारी बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। जनता ने हमें बड़ी अपेक्षा और आकांक्षाओं से चुनकर भेजा है। ऐसे में हमारा यह दायित्व बन जाता है कि हम उनकी आकांक्षाओं और अपेक्षाओं को इस सदन के माध्यम से पूरा करें। इसलिए यह संस्था चर्चा-संवाद का केंद्र होनी चाहिए। जिस तरीके से यहाँ के नेताओं का मार्गदर्शन रहा है, उसी प्रकार से हमारी चर्चा और संवाद का स्तर उच्चतम रहना चाहिए।

इसलिए हमें विधान सभाओं की नियम प्रक्रियाओं की जानकारी, संविधान की जानकारी, यहाँ की समृद्ध परंपराओं की जानकारी होनी चाहिए। यहाँ पर हुई उच्च कोटि की चर्चा और डिबेट्स का अध्ययन भी हमें करना चाहिए।

जितना राज्यों की विधान सभाओं में चर्चा-संवाद का स्तर उच्च होगा, कानून बनाते समय सदस्यों की सक्रिय भागीदारी होगी, सभी पहलुओं को, तथ्यों के साथ सदन में रखेंगे, उतने ही अच्छे कानून बनेंगे। इसलिए सदन चर्चा, संवाद के प्रभावी केंद्र बनें, ताकि हमारा लोकतंत्र और सशक्त हो।

पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलन में भी हमारा हमेशा यह प्रयास रहता है कि हम अपने सदनों की प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए काम करें। सदनों में चर्चा के गिरते स्तर, सदन की कम होती गरिमा हमारे लिए चिंता का विषय है।

गुजरात के मुख्यमंत्री, श्री भूपेंद्र पटेल और अध्यक्ष, गुजरात विधान सभा, श्री शंकर चौधरी के साथ दीप प्रज्वलित करते हुए

आपमें से कई नए सदस्य चुनकर आए हैं। मैं आपसे विशेष रूप से कहना चाहूँगा कि उत्कृष्ट विधायक वही होता है, जो उत्कृष्ट कोटि के चर्चा-संवाद में भाग लेता है। कानून बनाने में बेहतर तरीके से अपनी बात को सदन में रखता है, तर्कों के साथ रखता है।

लेकिन मेरी आज चिंता यह है कि तार्किक चर्चा-संवाद की जगह, आज इन संस्थाओं का उपयोग निरर्थक आरोप लगाने के लिए होने लगा है, जो हम सबके लिए चिंता का विषय है। हमें इस पर आत्म-मंथन करने की आवश्यकता है।

"उत्कृष्ट विधायक वही होता है जो उत्कृष्ट कोटि की चर्चा संवाद में भाग लेता है, कानून बनाने में बेहतर तरीके से अपनी बात को सदन में रखता है, तर्कों के साथ रखता है।"

माननीय प्रधानमंत्री जी ने कहा है कि "एक मजबूत लोकतंत्र के लिए रचनात्मक आलोचना महत्त्वपूर्ण है। लोकतंत्र में आलोचना एक 'शुद्धि यज्ञ' की तरह है। रचनात्मक आलोचना लोकतंत्र को समृद्ध बनाती है। परंतु सदन में मिथ्या आरोप-प्रत्यारोप नहीं लगाना चाहिए। निराधार आरोप लगाने से सदनों की गरिमा कम होती है।"

गुजरात विधान सभा के नवनिर्वाचित सदस्यों के लिए आयोजित प्रबोधन कार्यक्रम के उद्घाटन के लिए अहमदाबाद पहुँचने पर गुजरात विधान सभा के अध्यक्ष श्री शंकर चौधरी स्वागत करते हुए

माननीय प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में, उनके विजन के अनुसार हम 'एक देश एक, विधायी प्लेटफॉर्म' को साकार करने के लिए काम कर रहे हैं, ताकि देश के सभी विधान मंडलों के चर्चा-संवाद को, वहाँ के कानूनों को एक स्थान पर ला सकें। बहुत जल्दी हम यह कार्य पूरा कर लेंगे।

विधान सभा के सदस्य होने के नाते हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि हम जिस जनता का प्रतिनिधित्व करते हैं, उस जनता की आवाज को, उनकी समस्याओं, उनकी कठिनाइयों को इन सदनों में रखें और सकारात्मक रूप से उनकी समस्याओं के समाधान का केंद्र-बिंदु बनें। संसदीय लोकतंत्र में प्रतिपक्ष की बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। यह भूमिका सकारात्मक होनी चाहिए, रचनात्मक होनी चाहिए। शासन में जवाबदेही लाने की होनी चाहिए। लेकिन, जैसा कि मैंने पूर्व में भी कहा है, जिस तरीके से सदनों में नियोजित तरीके से व्यवधान करके सदन स्थगित कराने की परंपरा बनाई जा रही है, यह लोकतंत्र के लिए उचित नहीं है। सदन में चर्चा हो, डिबेट हो, डिसेंट हो, परंतु सदन में कभी भी गतिरोध नहीं होना चाहिए। हमें उच्च कोटि की परंपरा स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए।

सदनों में जिन विधायकों ने अच्छे रचनात्मक कार्य किए हैं, उनकी चर्चा होनी चाहिए, ताकि उनके श्रेष्ठ कार्यों, अनुभवों का लाभ दूसरे विधायकों को मिल सके। सदन के अंदर हमें अपने नए चुनकर आए विधायकों को भी पर्याप्त समय और अवसर देना चाहिए, ताकि उनको अपनी बात सदन में रखने का मौका मिले। नए विधायकों को यहाँ की परंपराओं, नियम-प्रक्रियाओं, यहाँ की पुरानी डिबेट्स एवं चर्चाओं का अध्ययन करना चाहिए। जितना वे अध्ययन करेंगे, कानून बनाते समय सदन में होने वाली चर्चा, डिबेट्स में उतने ही बेहतर ढंग से अपनी बात रखेंगे।

देश की किसी विधान सभा में नारेबाजी और शोरगुल से कोई सर्वश्रेष्ठ विधायक नहीं बन सकता है। सर्वश्रेष्ठ विधायक तो बेहतर तरीके से, तर्कों से अपनी बात रखने से ही बन सकता है। बदलते परिप्रेक्ष्य के अंदर विधायिका में नए नवाचार हुए हैं। जिस तरह सदनों में आईटी का उपयोग बढ़ा है, आपको भी अधिक-से-अधिक आईटी का उपयोग करना चाहिए।

विधान सभाओं को अपने रिसर्च विंग को सशक्त बनाने पर काम करना चाहिए। आपके यहाँ जो विधान सभा की समितियाँ हैं, उन समितियों में आपकी सक्रिय रूप से भागीदारी होनी चाहिए। संसदीय समितियों में चर्चा-संवाद से बहुत सारी जानकारी आपको मिलती है। यदि आप उन जानकारियों का उपयोग करके सदन में चर्चा-संवाद करेंगे, तो आप बेहतर चर्चा-संवाद कर पाएँगे।

हमारा लोकतंत्र प्राचीनतम है। परंतु यदि हमारा लोकतंत्र प्राचीनतम है तो इस लोकतंत्र की मर्यादा को बनाए रखना और उसका संरक्षण तथा संवर्धन करना हम सबकी पहली जिम्मेदारी है। तभी हम लोकतंत्र की जननी के रूप में वैश्विक पटल पर एक सशक्त आवाज बन पाएँगे।

माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में हमें अपनी लोकतांत्रिक ताकत को जी-20 की अध्यक्षता के माध्यम से विश्व को दर्शाने का एक महत्त्वपूर्ण अवसर मिला है। अंत में

मैं आपसे पुन: कहना चाहूँगा कि सदन के अंदर मर्यादित चर्चा और गरिमापूर्ण आचरण संसदीय लोकतंत्र के मूल में है। इसके लिए नियमों, परंपराओं और प्रक्रियात्मक साधनों आदि की एक विस्तृत व्यवस्था बनी हुई है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप उस व्यवस्था का समर्पण और निष्ठा के साथ पालन करते हुए आगे बढ़ेंगे; उसे अपने कार्यों, अनुभवों से और मजबूत और समृद्ध बनाने का काम करेंगे। मैं आशा करता हूँ कि यह प्रबोधन कार्यक्रम आप सभी के लिए उपयोगी और लाभकारी होगा। भारत की संसद की प्राइड संस्था का प्रशिक्षण ब्यूरो आपके साथ हमेशा है। मैं एक बार फिर आप सभी को राज्य की विधान सभा के लिए निर्वाचित होने की बधाई देता हूँ, शुभकामनाएँ देता हूँ।

3

सशक्त लोकतंत्र के लिए सक्रिय जन भागीदारी का महत्त्व*

"विधानमंडलों की चर्चा-संवाद और बनने वाले कानूनों से हम लोगों के सामाजिक-आर्थिक बदलाव के साथ-साथ इस देश को विश्व की सबसे अग्रिम पंक्ति में लाने का काम करें।"

मैं सबसे पहले सीपीए रीजन-III के चेयर पर्सन को धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिन्होंने सीपीए रीजन के लगातार, हर वर्ष, विभिन्न मुद्दों, विभिन्न विषयों पर सम्मेलन आयोजित किया है। पूरे देश में सीपीए रीजन-III की सक्रियता लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और किस तरह से नॉर्थ-ईस्ट के मुद्दों एवं देश के मुद्दों पर चर्चा करके उनका समाधान हो, इस पर उनकी सक्रियता के लिए वर्तमान चेयरमैन सोना जी को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ देता हूँ, बधाई देता हूँ।

"यह प्रदेश पहाड़, नदियाँ, झीलें, झरनों से संपन्न प्राकृतिक सौंदर्य वाला प्रदेश है। जहाँ उसकी प्राकृतिक सुंदरता है, वहीं यहाँ पर रहने वाले लोगों की कोमलता है।"

यह एक ऐसा प्रदेश है, जो भारत के सपनों को पूरा करना चाहता है। जैविक खेती, पर्यावरण और अन्य, जिन पर लगातार राज्य के विधान मंडल चर्चा करते रहते हैं कि हम किस तरह से विश्व के उन सभी पैरामीटर्स में सबसे उत्कृष्ट हों। इस दिशा में इस राज्य ने विशेष रूप से प्रगति की है। इसके लिए मैं राज्य के मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इस राज्य की प्राकृतिक सुंदरता, जैविक संरक्षण, जैविक खेती और पर्यावरण, जिनके लिए पूरा विश्व चिंतित है, उन कार्यों में उनकी प्रतिबद्धता झलकती है।

जोन-III सीपीए का वह संगठन है, जिसमें विभिन्न विषयों पर चर्चा होगी, ताकि

---

* राष्ट्रमंडल संसदीय संघ (इंडिया रीजन-III) के 19वें सम्मेलन का शुभारंभ समारोह, गंगटोक, सिक्किम, 23 फरवरी, 2023

हम लोकतांत्रिक संस्थाओं के माध्यम से देश के लोकतंत्र को सशक्त कर सकें, मजबूत कर सकें। ये संस्थाएँ जनता के प्रति जवाबदेह हों। हम शासन और प्रशासन में पारदर्शिता लाएँ। इनकी चर्चा और संवाद से जो निष्कर्ष निकलें, जो फैसले हों, उनसे इस सारे क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक कल्याण की दिशा बने। विशेष रूप से पूर्वोत्तर क्षेत्र, जो हमारा महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है, जिसके लिए माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने पूर्वोत्तर क्षेत्र के विकास के लिए एक व्यापक कार्य योजना बनाई है, मंत्रालय बनाया है। किस तरह से पूर्वोत्तर की समस्याओं का समाधान हो, वह निश्चित समय में हो, चाहे इन्फ्रॉस्ट्रक्चर में हो, सामाजिक विकास में हो, आर्थिक तंत्र मजबूत हो, यहाँ के लोगों की आर्थिक आमदनी बढ़े, उसके लिए भी नरेंद्र मोदी जी ने एक विजन के आधार पर काम करने का प्रयास किया है, जिसका परिणाम हम देख रहे हैं। चाहे रोड कनेक्टिविटी हो, रेल कनेक्टिविटी हो, या एयर कनेक्टिविटी हो, विशेष रूप से सिक्किम में इन्फ्रॉस्ट्रक्चर के क्षेत्र में नए कीर्तिमान हासिल किए गए हैं। निश्चित रूप से हम सभी का एक प्रयास रहता है कि इन विधान मंडलों की चर्चा-संवाद और बनने वाले कानूनों से हम लोगों के सामाजिक-आर्थिक बदलाव के साथ-साथ इस देश को विश्व के सबसे अग्रिम पंक्ति में लाने का काम करें क्योंकि भारत लोकतंत्र की जननी है। हमारे लोकतंत्र की विशालता है, विविधता है। यहाँ विविध संस्कृति है। यह हमारी ताकत है। इसीलिए 75 वर्ष की लोकतंत्र की इस यात्रा में हमने चर्चा-संवाद से कानून बनाकर देश में सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन का एक नया दौर शुरू किया है। यह अमृत महोत्सव हमारे लिए यहाँ की आर्थिक-सामाजिक प्रतिबद्धता है और लोकतंत्र को और ज्यादा मजबूत, और जवाबदेह बनाने की प्रतिबद्धता भी है।

मुझे बहुत खुशी है कि नॉर्थ-ईस्ट के विधान मंडलों में व्यापक चर्चा-संवाद होता है, कानून बनाते समय सक्रिय भागीदारी होती है और सबसे कम गतिरोध होता है। कई विधान मंडलों में कभी गतिरोध ही नहीं हुआ है। यह एक अच्छी परंपरा है, अच्छी परिपाटी है। हम सदन की गरिमा को बनाए रखें, अच्छी परंपराओं को लागू करें। इसके लिए समय-समय पर हमारे राज्य विधान मंडल के अध्यक्षों के सम्मेलन में इन पर बहुत लंबी चर्चा-संवाद होती है।

सीपीए भी इसी तरह का एक प्लेटफॉर्म है, जिसमें कुछ ज्वलंत मुद्दों पर चर्चा होती है। उन मुद्दों के अंदर, विधान मंडलों और उनके जनप्रतिनिधियों की भागीदारी हो, ताकि उन मुद्दों का समाधान हो। जहाँ कानून बनाना आवश्यक हो, तो वहाँ पर कानून बनाने की प्रक्रिया सरकार शुरू करे, इसके लिए सुझाव दिए जाते हैं, जिससे उन महत्त्वपूर्ण मुद्दों का समाधान इन विधान मंडलों में चर्चा-संवाद से हो। इसी तरह से, सीपीए इंडिया रीजन में जो महत्त्वपूर्ण मुद्दे रखे गए हैं, मादक पदार्थों के सेवन पर, विधान मंडलों में जनता की सक्रिय

भागीदारी हो और किस तरह से, हम साइबर बुलिंग के बारे में जन-चेतना के माध्यम से या कानून बनाकर इसके लिए भी देश की जनता और विधायिकाओं का ध्यान आकर्षित करने के लिए दो दिनों तक चर्चा-संवाद करेंगे।

सीपीए इंडिया रीजन के 19वें वार्षिक जोन III सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए

मादक पदार्थों का सेवन देश के लिए चिंता का विषय है, हम सबके लिए चिंता का विषय है। इसीलिए देश की लोकतांत्रिक संस्था संसद के अंदर, दो दिनों तक 20 और 21 दिसंबर को इस विषय पर चर्चा हुई। इसमें सभी दलों के माननीय सदस्यों ने, लगभग 53 से अधिक माननीय सदस्यों ने अपने विचार रखे, इस पर मंथन हुआ, सकारात्मक चर्चा हुई, संवाद हुआ, माननीय सदस्यों ने अच्छे-अच्छे सुझाव रखे। सरकार भी इस पर प्रतिबद्धता के साथ, सभी राज्य सरकारों के साथ, इस विषय पर एक साथ मिलकर काम कर रही है। देश के गृहमंत्री जी ने सभी विषयों पर गंभीर चर्चा का जवाब दिया। उन्होंने कहा कि जिस तरह से राज्य सरकारें और केंद्र सरकार मिलकर काम कर रही हैं, हमारा लक्ष्य है कि हम भारत को नशा-मुक्त बनाएँ। नशा-मुक्त बनाने में सभी राज्य सरकारों की भागीदारी हो और जनता की भागीदारी हो, विशेष रूप से इसमें जनप्रतिनिधियों की भागीदारी हो।

आज इसी विषय पर मंथन होगा कि विधान मंडल के माननीय सदस्य किस तरह से इन महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा करके, जहाँ राज्यों में कानून बनाने की आवश्यकता है, वहाँ कानून बनाए जाएँ, जहाँ राज्यों में जितनी चुनी हुई लोकतांत्रिक संस्थाएँ हैं, उनके जनप्रतिनिधियों का

सम्मेलन किया जाए। हमारे नौजवान विद्यार्थियों के साथ लोकतांत्रिक संस्थाएँ चर्चा-संवाद करें। हमारी जो भावी पीढ़ी है, वह हमारी ताकत है, हमारी शक्ति है।

हमारे नौजवान अपने सामर्थ्य से, अपनी शक्ति से, अपने इनोवेशन, नए रिसर्च, नई सोच, नए चिंतन से आज दुनिया भर में नेतृत्व कर रहे हैं। हमारी सबसे बड़ी ताकत हमारे नौजवान हैं। हमारे नौजवानों को संस्कारित करना, उनको सही दिशा देना हमारी लोकतांत्रिक संस्थाओं की सबसे महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी है।

इसलिए मेरा आग्रह है, नॉर्थ-ईस्ट प्रदेशों के विधान मंडलों के अध्यक्षगण और सदस्यगण भी यहाँ आए हैं, हम एक व्यापक कार्य-योजना बनाने पर विचार करें। इस लक्ष्य के साथ, जैसे सिक्किम ने वर्ष 2016 में इसे जैविक प्रदेश बनाने का काम किया, उसी तरह से, अपने-अपने प्रदेशों में विभिन्न विधान मंडल चर्चा-संवाद और संकल्प के साथ काम करें और सोचें कि मेरा राज्य नशे से मुक्त हो, जब सभी राज्य सामूहिकता से अपने-अपने राज्यों को नशा-मुक्त बनाएँगे, तो इससे देश नशा-मुक्त होगा। यह हमारा संकल्प होना चाहिए।

इसी के साथ-साथ, दूसरा महत्त्वपूर्ण विषय है—विधान मंडलों के अंदर जनता की सक्रिय भागीदारी, विधान मंडलों और जनता के बीच में एक व्यापक संवाद-चर्चा हो, जनता की पहुँच विधान मंडल तक हो।

आजादी के 75 वर्षों के बाद, यह इसलिए जरूरी है, क्योंकि जब भी संसद और विधान मंडलों के अंदर कानून बनते हैं, कानून बनाते समय, जो चर्चा-संवाद होना चाहिए, उसमें कहीं-न-कहीं कमी आ रही है। इसीलिए हमारा प्रयास होना चाहिए कि कानून बनाते समय, चर्चा-संवाद करते समय जनता की सक्रिय भागीदारी इन लोकतांत्रिक संस्थाओं के साथ हो। जब कानून बने, तो कानून बनाते समय उसमें जनता का सक्रिय योगदान हो, वह अपने-अपने जनप्रतिनिधियों को कानून बनाने में आवश्यक सुझाव दे। जनप्रतिनिधि विधान मंडल और केंद्रीय विधान मंडल में अपने चर्चा-संवाद के दौरान उनके बताए गए विषयों पर चर्चा करें।

इसी तरह से चर्चा-संवाद के अंदर भी जितनी भागीदारी लोकतांत्रिक संस्थाओं की होगी, वहाँ के जनप्रतिनिधियों की होगी, उतना ही हम जनता की अपेक्षाओं-आकांक्षाओं, उनकी परेशानियों और कठिनाइयों को सदन में रख पाएँगे। यदि उनके समाधान का कोई रास्ता है, तो वे हमारे विधान मंडल हैं, जो जनता की समस्याओं और कठिनाइयों का समाधान कर सकते हैं। इसलिए हमारी कोशिश होनी चाहिए, चाहे प्रौद्योगिकी का उपयोग करें, आईटी के तंत्रों का उपयोग करें, स्कूल-कॉलेजों में जन-संवाद हो, युवा संसद का आयोजन हो और केवल मतदाता ही नहीं, बल्कि भावी मतदाता की भी हमारी लोकतांत्रिक संस्थाओं तक सीधी पहुँच हो और उनकी भागीदारी बढ़े।

मेरी अपेक्षा है कि जनता की जितनी सक्रिय भागीदारी बढ़ेगी, उतना ही लोकतंत्र सशक्त होगा, जनप्रतिनिधि भी जवाबदेह होंगे, शासन-प्रशासन में भी पारदर्शिता आएगी, कार्यपालिका की जवाबदेही निश्चित होगी। जो नीतियाँ, कार्यक्रम और योजनाएँ बनती हैं, उन योजनाओं का लाभ जनता को भी मिले, यदि उनके इनपुट भी जनता देगी तो हम योजना, नीतियों और कार्यक्रमों के बारे में भी सदनों में चर्चा कर पाएँगे। हमने जो कानून बनाए हैं, उनका कितना लाभ जनता को मिला, जनता की जितनी सक्रिय भागीदारी होगी, उतनी हमारे राज्य विधान मंडलों और केंद्रीय विधान मंडल में चर्चा-संवाद का स्तर भी बढ़ेगा और इससे उनकी अपेक्षाओं, आकांक्षाओं और कठिनाइयों का समाधान भी इन संस्थाओं के माध्यम से निकाला जाएगा।

सीपीए इंडिया रीजन के जोन III के 19वें वार्षिक सम्मेलन में प्रतिनिधियों के साथ

तीसरा विषय, जो हम सभी के लिए चिंता का विषय है। हमारे उप सभापति जी ने उस पर अच्छी तरह से अपने विचार रखे कि आईटी का जितना उपयोग है, उतना ही गलत दिशा में उसके उपयोग से देश-प्रदेशों को नुकसान भी होता है। इसलिए आईटी का उपयोग हमारी दिनचर्या के लिए आवश्यक है, शासन-प्रशासन में पारदर्शिता के लिए उपयोगी है। लेकिन इसके साथ-साथ जो दूसरे पहलू हैं, उन पर भी जनता को सचेत करने की जिम्मेदारी इन विधान मंडलों और जनप्रतिनिधियों की है।

इसलिए साइबर बुलिंग जैसे विषय पर भी हमें व्यापक चर्चा और संवाद करना चाहिए, क्योंकि ये सब विषय महत्त्वपूर्ण हैं। हर विषय पर लोकतांत्रिक संस्थाएँ जनता के बीच में जितनी जाएँगी, उतना ही बेहतर शासन होगा और उतनी ही शासन प्रणाली बेहतर बनेगी,

पारदर्शिता आएगी। इसलिए साइबर बुलिंग जैसे विषय पर भी आने वाली पीढ़ियों को हमें सचेत करना होगा, उनका मार्गदर्शन करना होगा, ताकि हम इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी का सही दिशा में उपयोग करें और उसका लाभ हमको मिले, उसका दुरुपयोग न हो, इसके लिए भी विशेष काम हमें करना होगा।

मुझे आशा है, हम सबका एक ही लक्ष्य है कि वर्ष 2047 तक हमें भारत को विकसित राष्ट्र बनाना है। हमारे प्रधानमंत्री जी ने देश की 140 करोड़ जनता से अपेक्षा की है कि यदि भारत को समृद्ध, समर्थ और विकसित राष्ट्र बनाना है, तो सबको मिलकर काम करना होगा। सबके सहयोग से हमें काम करना होगा। देश के वे राज्य, जो कभी पिछड़े थे, अभाव में थे, उनको भी मुख्यधारा में लाकर दूसरे राज्यों के समकक्ष खड़ा करना होगा। उनके आकांक्षी जिलों को भी विकसित जिलों के समकक्ष लाकर खड़ा करना होगा। देश के अंतिम व्यक्ति के जीवन में बदलाव लाने के लिए हम सबको सामूहिक प्रयास करना होगा। ऐसा करने से हम भारत को समृद्ध और विकसित राष्ट्र बना पाएँगे। इसके लिए विधान मंडलों और माननीय जनप्रतिनिधियों की विशेष रूप से भूमिका है।

"साइबर बुलिंग जैसे विषय पर भी आने वाली पीढ़ियों को हमें सचेत करना होगा, उनका मार्गदर्शन करना होगा, ताकि हम इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी का सही दिशा में उपयोग करें और उसका लाभ हमको मिले, उसका दुरुपयोग न हो।"

मुझे आशा है कि जी-20 और इसके बाद पी-20 के सम्मेलनों के द्वारा हम अपनी लोकतांत्रिक संस्थाओं के माध्यम से सामाजिक और आर्थिक बदलाव ला सकते हैं। हमारी जीवन पद्धतियों के अंदर लोकतंत्र है और हमें आशा है कि दुनिया भी यह मानती है कि शासन चलाने की सर्वश्रेष्ठ पद्धति लोकतंत्र है। यह भारत की प्राचीनतम पद्धति है, जैसा कि अभी श्री प्रेम सिंह जी ने कहा कि किस तरीके से हमारी संसदीय लोकतांत्रिक प्रणाली कितनी पुरानी है। उसी तरीके से हम अपनी प्राचीनतम लोकतांत्रिक पद्धतियों के उदाहरण पेश करें, तो सभा-समितियाँ इसी तरीके से चर्चा और संवाद करती थीं, नियम-प्रक्रियाएँ बनाती थीं और पूरी जनता उनको मानती थी।

मुझे आशा है कि इस दिशा में हम आगे बढ़ेंगे और जी-20 और पी-20 हमारे लिए एक मील का पत्थर साबित होगा, ताकि दुनिया को हम अपनी सर्वश्रेष्ठ लोकतांत्रिक पद्धति और उसके माध्यम से हुए सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन को दिशा दे सकें। मुझे आशा है कि दो दिवसीय यह पूर्वोत्तर राज्यों का सम्मेलन एक मील का पत्थर साबित होगा और

यहाँ हुई चर्चा तथा संवाद के बाद जो निर्णय, जो फैसले होंगे, उन फैसलों से जिन विषयों पर हम चर्चा कर रहे हैं, उनसे लोगों के सामाजिक और आर्थिक जीवन में परिवर्तन तो आएगा, लेकिन जो सामाजिक बुराई समाज में बढ़ रही है, उसको भी हम रोक पाएँगे और उसको समाप्त भी कर पाएँगे। लोकतंत्र में भागीदारी बढ़े, इस विषय पर भी हमारे पास कई सुझाव आएँगे। इन तीनों विषयों पर जो संवाद और चर्चा होगी, उसका एक विस्तृत पेपर बनेगा। सर्वसम्मति के आधार पर फैसले होंगे। उन फैसलों पर देश के सभी राज्यों के विधान मंडल और सीपीए रीजन भारत एक साथ बैठकर सीपीए जोन के सभी मुद्दों पर चर्चा करेंगे और उन सारे मुद्दों पर किस तरीके से एक व्यापक कार्य योजना, दिशा बनाकर देश की लोकतांत्रिक संस्थाओं के माध्यम से, जनप्रतिनिधियों के माध्यम से हम इन मुद्दों का समाधान करेंगे और देश तथा राज्यों की सरकारों को व्यापक रूप से सुझाव देंगे, ताकि राज्य सरकारें और केंद्र सरकार भी ऐसी नीतियाँ, योजनाएँ और कानून बनाकर इस देश में सामाजिक बदलाव ला सकें। मैं पुन: सिक्किम विधान सभा के अध्यक्ष माननीय श्री अरुण कुमार उप्रेती जी को धन्यवाद देता हूँ। राज्य के मुख्यमंत्री जी ने सीपीए जोन के प्रतिनिधियों का जो स्वागत किया, जो अभिनंदन किया, उसके लिए मैं उनको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ।

4

लोकतांत्रिक प्रणाली को सुदृढ़ करने में जनप्रतिनिधियों की भूमिका*

"सुशासन मुख्य रूप से विधानमंडलों के प्रभावी कार्यकरण पर निर्भर करता है जो लिखित और अलिखित संसदीय परंपराओं और परिपाटियों के बल पर ही संभव है।"

संसदीय लोकतंत्र शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान (प्राइड) द्वारा मेघालय विधान सभा के नवनिर्वाचित सदस्यों के लिए आयोजित किए जा रहे इस प्रबोधन कार्यक्रम के उद्घाटन के अवसर पर आज आप सभी को संबोधित करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। मुझे यह कहते हुए बहुत हर्ष हो रहा है कि जनप्रतिनिधियों को संसदीय पद्धतियों और प्रक्रियाओं के बारे में आवश्यक जानकारी प्रदान करने में प्राइड अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

प्राइड ने विगत वर्षों में देश के विभिन्न जनप्रतिनिधियों और अलग-अलग क्षेत्रों में कार्य करने वाले अधिकारियों के लिए कई प्रबोधन कार्यक्रम तथा प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए हैं, और निस्संदेह मैं यह कह सकता हूँ कि प्राइड ने इस संबंध में बहुत उत्कृष्ट काम किया है।

माननीय सदस्यगण, मुझे यह जानकर बहुत अच्छा लगा कि मेघालय विधान सभा की गिनती देश की सबसे अनुशासित सभाओं में होती है, जहाँ सार्थक वाद-विवाद के माध्यम से इस संस्था की गरिमा और प्रतिष्ठा को बनाए रखा गया है। मेघालय में 60 सदस्यों वाली एक सदनीय विधायिका है। मेघालय विधान सभा भी भारत के अन्य राज्यों की विधान सभाओं के समान संसदीय पद्धतियों और प्रक्रियाओं का पालन करती है।

मेघालय, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'बादलों का घर' अपने अद्भुत प्राकृतिक सौंदर्य, जीवंत संस्कृति और आतिथ्य सत्कार के लिए प्रसिद्ध है।

---

* मेघालय विधान सभा के नवनिर्वाचित सदस्यों के लिए आयोजित प्रबोधन कार्यक्रम, नई दिल्ली, 2 मई, 2023

संसद भवन परिसर में मेघालय विधान सभा के नवनिर्वाचित सदस्यों के लिए आयोजित प्रबोधन कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए

दूर-दूर तक फैले पहाड़ों, प्राचीन लिविंग रूट्स ब्रिजेस, हरे-भरे वनों, गुफाओं, स्वच्छ नदियों और मनोरम झरनों वाले इस राज्य की गिनती भारत के सबसे खूबसूरत राज्यों में होती है। मेघालय के लोग पर्यावरण और राज्य के प्राकृतिक सौंदर्य को बचाए रखने के लिए जाने जाते हैं। अपने मैत्रीपूर्ण व्यवहार और आतिथ्य-सत्कार तथा अपनी सुदृढ़ सांस्कृतिक परंपराओं को बनाए रखने के लिए प्रसिद्ध मेघालय के लोग पर्यटकों को बहुत प्रभावित करते हैं। मेघालय का प्राकृतिक सौंदर्य और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत यहाँ आने वालों को एक अनूठा और अविस्मरणीय अनुभव प्रदान करती है।

माननीय सदस्यगण, भारतीय लोकतंत्र विश्व का सबसे बड़ा कार्यशील लोकतंत्र है। लोकतांत्रिक परंपराएँ और मूल्य भारत की सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक हैं। सहिष्णुता, राजनैतिक मतभेद के बावजूद एक-दूसरे के प्रति सम्मान की भावना, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और लोकतांत्रिक मूल्यों के आधार पर मुद्दों का समाधान करना सदियों से हमारी पहचान तथा हमारी राजनीतिक विचारधारा का अभिन्न अंग रहे हैं। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि हमारा कार्यशील लोकतंत्र जिसकी पूरा विश्व सराहना करता है, सामाजिक-राजनैतिक परिस्थितियों और समय की कसौटी पर खरा उतरा है।

माननीय सदस्यगण, सुशासन मुख्य रूप से विधान मंडलों के प्रभावी कार्यकरण पर निर्भर करता है, जो लिखित और अलिखित संसदीय परंपराओं और परिपाटियों के बल पर ही संभव है। भारतीय लोकतांत्रिक प्रणाली में संसद का सर्वोच्च स्थान है। यह प्रणाली संवैधानिक प्रावधानों, नियमों, प्रथाओं और प्रक्रियाओं के जरिए काम करती है। जनप्रतिनिधियों से अपेक्षा की जाती है कि निर्वाचन के बाद वे लोगों के कल्याण और राष्ट्रहित के लिए कानून बनाने का काम करेंगे। संसदीय पद्धति और प्रक्रिया हमारी लोकतांत्रिक प्रणाली की वह आधारशिला है, जिस पर हमारा लोकतंत्र टिका हुआ है। हमारी संसदीय प्रक्रियाएँ संसद सदस्यों को अपने मतदाताओं के सरोकारों को उठाने के पर्याप्त अवसर प्रदान करती हैं, जिन्होंने बड़ी आशा के साथ अपने जनप्रतिनिधियों को चुना होता है।

संसद के नियमों और विनियमों, प्रक्रियाओं और परंपराओं के मौजूदा ढाँचे के तहत एक सदस्य सार्वजनिक महत्त्व के मुद्दों को प्रभावी ढंग से उठा सकता है, जनता की समस्याओं को उजागर कर उनके निवारण की माँग कर सकता है और नीति निर्माण के स्तर पर सार्थक प्रभाव डाल सकता है।

माननीय सदस्यों, असहमति किसी भी कार्यशील लोकतंत्र का अभिन्न अंग है और असहमति व्यक्त करने के कई तरीके होते हैं, लेकिन सदन की कार्यवाही को बाधित करने या वेल में आने का कोई औचित्य नहीं है। हमारी संसदीय प्रक्रियाएँ और नियम संसद सदस्यों को दूरगामी महत्त्व के कानूनों पर अपने विचार व्यक्त करने के लिए पर्याप्त अवसर और पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करते हैं।

इसके लिए एकमात्र शर्त यह है कि सदन के कार्यकरण को सुचारू रूप से निर्धारित नियमानुसार चलने दिया जाए। संसद के महत्त्वपूर्ण कार्यों में से एक है—कार्यपालिका को हर हाल में विधायिका के प्रति जवाबदेह बनाना।

इस मूलभूत सिद्धांत के पालन हेतु कुछ प्रक्रियात्मक साधनों को संस्थागत स्वरूप दे दिया गया और चैंबर में इन साधनों के विवेकपूर्ण उपयोग से यह सुनिश्चित किया जाता है कि संसद की कार्यवाही सुचारू रूप से संचालित की जाए और सदस्यों के बीच तथा कार्यपालिका एवं संसद के बीच सामंजस्य बना रहे।

लोक सभा के अध्यक्ष के रूप में मैंने खुद देखा है कि विधायी कार्यों के सुचारू संचालन में संसदीय पद्धति और प्रक्रिया का कितना महत्त्व है। विधायिका के प्रत्येक निर्वाचित सदस्य को उनसे भली-भाँति परिचित होना चाहिए। प्रत्येक सदस्य और समस्त सभा के अधिकारों का संरक्षक होने के नाते सदन के कार्यों का सुचारू संचालन मेरा दायित्व है। यह सुनिश्चित करना मेरा कर्तव्य है कि चैंबर में होने वाले विचार-विमर्श में सभी दलों की बात सुनी जाए। जब भी व्यवस्था का प्रश्न उठता है तो पीठासीन अधिकारी के रूप में

मुझे नियमों की व्याख्या करनी होती है और उस विषय संबंधी यदि कोई पूर्वोदाहरण हो या पहले दिए गए निर्णय हों तो उनका अध्ययन करना होता है और उनका संदर्भ देना होता है।

जब भी आवश्यकता होती है मुझसे यह आशा भी की जाती है कि मैं अपने विवेकाधिकार का प्रयोग कर नई पद्धति विकसित करूँ, निदेश दूँ और विनिर्णय जारी करूँ। इन मामलों में अध्यक्ष द्वारा दिए गए निर्णय ही अंतिम होते हैं, इनसे पूर्वोदाहरण बनते हैं और ये ही आगामी सदनों के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत बन जाते हैं।

उदाहरण के तौर पर, 'शून्य काल' में सदस्यों को अविलंबनीय लोक महत्त्व के मामलों को उठाने का अवसर प्राप्त होता है। सभा की कार्यवाही में इसका नियमित उपयोग होता था, परंतु इसके संबंध में कोई नियम नहीं था। समय के साथ यह कार्यवाही का महत्त्वपूर्ण अंग बन गया और इसका विनियमन कर दिया गया है। इसलिए यह सदस्यों पर निर्भर है कि वे व्यापक राष्ट्रहित में नियमों और पद्धतियों का किस प्रकार समुचित उपयोग कर सदन के सुचारू संचालन में सहायता कर सकते हैं।

मेघालय की विधान सभा के निर्वाचित सदस्यों के रूप में आप पर मेघालय के लोगों के हित में कानून बनाने की जिम्मेदारी है।

यह बहुत जरूरी है कि आप सार्थक वाद-विवाद करें और आपकी चर्चा औचित्यपूर्ण और तर्कसंगत हो। मेघालय के लोगों की पूरी निष्ठा और समर्पित भाव से सेवा करना आपकी सर्वोपरि जिम्मेदारी है। विधायिका के सदस्य के रूप में आप सबका यह कर्तव्य है कि आप लोकतंत्र के सिद्धांतों का पालन करें और संसदीय पद्धति तथा प्रक्रिया के अनुसार कार्य करें। यह सुनिश्चित करना आप सबकी जिम्मेदारी है कि विधायी कामकाज कुशल और पारदर्शी ढंग से एवं लोकतंत्र के सिद्धांतों का अनुसरण करते हुए किया जाए। ऐसा तभी हो सकता है, जब विधान सभा के सदस्यों को संसदीय पद्धति और प्रक्रिया का समुचित ज्ञान हो।

माननीय सदस्यगण, प्रबोधन कार्यक्रम के दौरान आपको प्रख्यात संसदविदों, वरिष्ठ संसदीय अधिकारीगण एवं विशेषज्ञों के साथ बातचीत का अवसर मिलेगा। बातचीत के दौरान वे आपको हमारी विधायी प्रक्रिया के विभिन्न आयामों, जैसे विभिन्न प्रकार के प्रस्तावों, समितियों, मतदान की प्रक्रिया और कार्य संचालन के संबंध में व्यापक जानकारी प्रदान करेंगे।

इससे आप प्रश्न काल के महत्त्व को समझ पाएँगे और यह भी जान पाएँगे कि प्रश्न काल किस प्रकार से सरकार को जवाबदेह ठहराने में सहायक होता है। यह कार्यक्रम आपके लिए अपने विचारों एवं ज्ञान का परस्पर आदान-प्रदान करने का अवसर भी होगा, ताकि सभी प्रतिभागी एक-दूसरे से सीख सकें और संसदीय पद्धति एवं प्रक्रिया के संबंध में अपनी जानकारी बढ़ा सकें।

अंत में, एक बार फिर से मैं आप सबका स्वागत करता हूँ और माननीय सदस्यों से आग्रह करता हूँ कि आप सभी इस प्रबोधन कार्यक्रम का अधिक-से-अधिक लाभ उठाएँ एवं इस कार्यक्रम के दौरान प्राप्त जानकारी और कौशल का उपयोग करके पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ मेघालय के लोगों की सेवा करें। मैं आशा करता हूँ कि यह कार्यक्रम अपने उद्देश्यों में सफल होगा और हमारी लोकतांत्रिक प्रणाली को और सुदृढ़ करेगा। मैं आपके भावी प्रयासों की सफलता की कामना करता हूँ।

5

जन संवाद और जनसंपर्क : लोकतंत्र का आधार*

"जनप्रतिनिधि होने के नाते हमारा दायित्व बन जाता है कि समाज के अंतिम छोर के व्यक्ति की समस्या और कठिनाइयाँ हम सभा के माध्यम से सरकार के ध्यान में लाएँ।"

हिमाचल राज्य से आए सभी नवनिर्वाचित माननीय विधायकगण, मैं भारत की संसद में 'प्राइड' की तरफ से आपका हार्दिक अभिनंदन करता हूँ, स्वागत करता हूँ।

आप उस राज्य से आते हैं, जो प्राकृतिक रूप से भी सुंदर है। संस्कृति के रूप में हिमाचल की एक अलग पहचान है। झील, नदियाँ, बर्फ और पहाड़ों से सुसज्जित भारत के एक सबसे सुंदर राज्य हिमाचल प्रदेश की जनता का आप प्रतिनिधित्व करते हैं। यह भौगोलिक दृष्टि से विविधता वाला क्षेत्र है। लेकिन विविधता के अंदर भी हमारी संस्कृति, हमारे आध्यात्मिक, हमारे सामाजिक-राजनीतिक रूप से भी इसकी अपनी एक अलग पहचान है।

आप सबको जनता ने बहुत महत्त्वपूर्ण दायित्व सौंपा है। क्योंकि वहाँ की भौगोलिक स्थिति के अनुसार कुछ इलाका पहाड़ी है, कुछ समतल है, छोटे-छोटे गाँव हैं। इसलिए उन सबकी भावनाएँ, उनकी समस्याएँ, उनकी कठिनाइयाँ, उनकी अभिव्यक्ति करने का दायित्व आपको हिमाचल प्रदेश की जनता ने दिया है। जनप्रतिनिधि होने के नाते हमारा दायित्व बन जाता है कि समाज के अंतिम छोर के व्यक्ति की समस्या और कठिनाइयाँ हम विधान सभा के माध्यम से सरकार के ध्यान में लाएँ।

हमारा महत्त्वपूर्ण काम यह है कि हम जनसंवाद करें, चर्चा करें। उनके अभावों और कठिनाइयों को सदन के माध्यम से सरकार में लाएँ और किस तरीके से उनके अभावों को दूर कर सकते हैं, इसके लिए एक सार्थक प्रयास करें। दूसरा महत्त्वपूर्ण कार्य आपका संपूर्ण

---

* हिमाचल प्रदेश के नवनिर्वाचित विधायकों के लिए आयोजित प्रबोधन कार्यक्रम, नई दिल्ली, 10 मई, 2023

राज्य की जनता के कल्याण के लिए है। उनके आर्थिक, सामाजिक जीवन में परिवर्तन लाएँ। उनकी दिनचर्या में कानून बना कर, रूल्स बना कर एक पारदर्शी पद्धति से उनकी समस्याओं का समाधान हो, यह भी आपकी महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी है।

राज्य की सर्वोच्च संस्था विधान सभा होती है, इसलिए जितना अच्छा हमारा आचरण होगा, सदन में हम जितनी बेहतर चर्चा और संवाद करेंगे, बेहतर निर्णय करेंगे, उतना ही वहाँ की लोकतांत्रिक संस्थाओं में एक सकारात्मक संदेश जाएगा। मेरा मानना है कि आम जनता की रोजमर्रा की समस्याएँ राज्य की रहती हैं। इसलिए राज्य विधान सभा लोकतंत्र का एक ऐसा मंच है, जिससे हम जनता से बेहतर संवाद करके, सरकार से समन्वय कर के और अपनी नियम, प्रक्रियाओं के तहत मुद्दों को उठाकर एक बेहतर समाधान, जनता की समस्याओं का निराकरण कर सकते हैं।

हमारे दल, हमारी विचारधारा अलग-अलग हो सकती है। लेकिन हम सबका एक दायित्व है प्रदेश की जनता का कल्याण करना। इसमें कोई दो मत नहीं है। इसलिए ऐसे मुद्दे, जो संपूर्ण प्रदेश के लिए कल्याणकारी हैं, सभी हितकारकों के लिए आवश्यक हैं, उसके लिए समय-समय पर कानून में परिवर्तन करते समय हमें व्यापक चर्चा और संवाद करना चाहिए। कानून बनाते समय विधायकों को जनता का फीडबैक भी लेना चाहिए। एक्सपर्ट से कानूनी विचार-विमर्श भी करना चाहिए। फिर कानून बनते समय अपनी चर्चा के अंदर जो कुछ भी अनुभव आपके हैं, उनको आप सदन में रखेंगे तो कानून बेहतर बनेंगे, पारदर्शितापूर्ण बनेंगे और जनता के लिए कल्याणकारी होंगे। भारत का लोकतंत्र बहुत प्राचीनतम लोकतंत्र है। इसलिए मदर ऑफ डेमोक्रेसी के रूप में भारत की पहचान है। हमारे देश के अंदर, क्योंकि प्राचीनतम लोकतंत्र होने के कारण हमारी विचारधारा, हमारी कार्य प्रणाली, लोकतांत्रिक रूप से चलने वाले चाहे गाँव हों, ढाणी के अंदर हमारा जनमानस, इसलिए आप देखते होंगे कि इस लोकतंत्र के माध्यम से ही इस 75 वर्ष की यात्रा के अंदर देश में सामाजिक, आर्थिक रूप से व्यापक तौर पर एक सकारात्मक बदलाव संभव हुआ है। आजादी के पहले भी भारत में लोकतंत्र था। गाँव के अंदर लोकतांत्रिक परंपराएँ थीं, परिपाटियाँ थीं। गाँव में जो कुछ निर्णय होते थे, सभी उनको मानते थे।

आजादी के बाद जब भारत ने संसदीय लोकतंत्र अपनाया तो दुनिया के कई देश यह मानते थे कि इतने बड़े देश के अंदर, जहाँ की भौगोलिक स्थितियाँ अलग-अलग हों, विचारधारा अलग-अलग हो, संस्कृति अलग-अलग हो, बोली अलग हो, खानपान अलग हो, वहाँ किस तरीके से देश में संसदीय लोकतंत्र चल पाएगा। ये आशंकाएँ दुनिया के लोकतांत्रिक देशों में थीं। लेकिन भारत में जब संविधान बना, उस समय हमने संसदीय लोकतंत्र को अपनाया। सबको मताधिकार दिया गया। हमने लिंग के आधार पर

मत का विभाजन नहीं किया। दुनिया के अंदर सरकार की अलग-अलग पद्धतियाँ होती हैं, हमने संसदीय लोकतंत्र पद्धति को अपनाया है, जो दुनिया के अंदर आज सर्वश्रेष्ठ लोकतांत्रिक पद्धति है।

संसद भवन परिसर में हिमाचल प्रदेश विधान सभा के नवनिर्वाचित सदस्यों के लिए आयोजित प्रबोधन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए

जहाँ-जहाँ भी संसदीय लोकतंत्र है, वहाँ पर शासन ठीक से चला है, जनता की भावना के साथ। कुछ अपवाद हो सकते हैं। मेरा तो मानना है कि एक विधान सभा के सदस्य के रूप में आपको भारत के संविधान को जानना चाहिए। भारत के संविधान में जो अनुसूचियाँ हैं, उसके अंदर राज्य को कानून बनाने के लिए क्या-क्या अधिकार दिए गए हैं और राज्यों के क्या-क्या अधिकार हैं, उसको जानना चाहिए। विधान सभा के नियम-प्रक्रियाओं को समझना चाहिए। विधान सभा के पुराने डिबेट, चर्चा और संवाद का अध्ययन करना चाहिए। जब कभी सरकार कानून बनाए तो उस कानून पर विधान सभा में क्या-क्या चर्चा हुई और संसद में उस विषय पर क्या-क्या चर्चा हुई, उसका रिसर्च पेपर तैयार करना चाहिए।

मेरा मानना है कि हम जितना बेहतर तरीके से सदन के पटल पर अपनी बातों को रखते हैं, उतने ही बेहतर जनप्रतिनिधि बनते हैं। विधान सभा एक ऐसा प्लेटफॉर्म है, जिससे आपका व्यक्तित्व निखरता है। आपके संपूर्ण ज्ञान और अनुभव का लाभ देश, सरकार और जनता को मिलता है। इसलिए जितनी देर तक आप सदन में बैठेंगे, आपको उतना ही अनुभव प्राप्त

होगा। एक विधान सभा के प्लेटफॉर्म पर आपको राज्यों के अलग-अलग क्षेत्रों की समस्याएँ भी ध्यान में आएँगी। जब अलग-अलग क्षेत्रों से विधायक आते हैं, तो वे अलग-अलग मुद्दे उठाते हैं। सरकार को जानने के लिए, सरकार को समझने के लिए, सरकार और पूरे प्रदेश की समस्याएँ एवं अभाव को समझने के लिए विधान सभा एक ऐसा प्लेटफॉर्म देता है, जिससे पूरे राज्य का विषय उनके ध्यान में आ जाता है। वह चाहे सत्ता में हो या प्रतिपक्ष में हो, जो बात विधान सभा में होती है, सरकार उसको सकारात्मक रूप से लेती है। सरकार देखती है कि यह मुद्दा क्यों उठा, यह विषय क्यों उठा और यह समस्या क्यों उठी? जब सरकार सकारात्मक प्रयास करती है, तो बदलाव आता है और उस बदलाव से जनता का कल्याण होता है।

"विधान सभा एक ऐसा प्लेटफॉर्म है, जिससे आपका व्यक्तित्व निखरता है।
आपके संपूर्ण ज्ञान और अनुभव का लाभ
देश, सरकार और जनता को मिलता है।"

मेरा मानना है कि विधान सभाओं में और विशेष रूप से संसदीय समितियों में जो चर्चा होती है, वह दलों से ऊपर उठकर चर्चा होती है। इसलिए आप सबका यह प्रयास होना चाहिए कि हम पूरे संविधान को जानें और संविधान की अनुसूचियों में राज्यों के जो अधिकार हैं, उनकी जानकारी लें। हम विधान सभा के रूल-रेगुलेशन को समझें। वहाँ की पुरानी डिबेट और चर्चा को समझें। वहाँ की परंपरा और परिपाटियों को समझें। किस तरीके से जो श्रेष्ठ विधायक रहे, जो विधान सभा से नेता बने, उनके अनुभव को आप जितना समझेंगे, उतना ही आपको लाभ मिलेगा। मेरा मानना है कि विधान सभा में आपको विषय उठाने का मौका मिले न मिले, लेकिन जितनी देर आप विधान सभा में बैठेंगे, उतने ही ज्यादा विषय आपके ध्यान में आएँगे। आप चर्चा के समय उन सारे विषयों को सकारात्मक रूप से सदन में रख सकते हैं। जनसंवाद तथा जनता से संपर्क आदि तो हमारे जीवन की आवश्यकता है। यह काम सभी माननीय विधायक करते हैं।

हिमाचल प्रदेश पहला ऐसा प्रदेश है, जो पूर्ण रूप से डिजिटलीकृत है। मुझे जानकारी है कि वहाँ पुरानी डिबेट, चर्चा तथा संवाद का डिजिटलीकरण हो चुका है। इसलिए जो मुद्दे आते हैं, उस मुद्दे पर पहले क्या विषय उठे थे, किस विषय पर कौन से मुद्दे उठाए गए थे और किसने क्या बोला था, ये सब चीजें आपको वहाँ से मिलेंगी और उसके अनुभव का लाभ अपनी चर्चा और संवाद के प्रक्रिया के दौरान मिलेगा। यह चिंता का विषय है कि विधान सभाओं के सत्र बहुत कम दिन चल रहे हैं। यह सबके लिए चिंता का विषय है। समय-समय पर हम इस विषय की चर्चा करते रहते हैं।

हमारा मानना है कि विधान सभा में न व्यवधान होना चाहिए और न नियोजित तरीके से सदन को स्थगित करने की परंपरा होनी चाहिए। हर विषय पर डिबेट होनी चाहिए। सहमति-असहमति हमारे लोकतंत्र की विशेषता रही है। जहाँ आवश्यकता हो, वहाँ हम आलोचना करें। हम सकारात्मक आलोचना करें। लेकिन आरोप-प्रत्यारोप लगाते समय हमें बिना तर्क के आरोप-प्रत्यारोप नहीं लगाने चाहिए। हम सभी को इससे बचना चाहिए। लोकतंत्र का हमारा यह मंच आरोप-प्रत्यारोप के लिए नहीं होता है। यह किसी पॉलिसी और कार्यकलापों के लिए होता है। हमें आलोचना करनी चाहिए। हमें तीखी आलोचना भी करनी चाहिए। सदन के अंदर आप जितनी तीखी आलोचना करेंगे और सकारात्मक सुझाव देंगे, अगर सरकार उसको सकारात्मक रूप से लेगी तो सरकार को भी अपनी कार्य योजना बनाने में बहुत बड़ा लाभ मिलता है। मुझे भी पता है कि हिमाचल प्रदेश की भौगोलिक स्थिति अलग है। वहाँ छोटे-छोटे गाँव और ढाणियाँ हैं। कुछ इलाकों में चारों तरफ पहाड़ हैं। वहाँ इस प्रकार की कठिनाई जरूर है, लेकिन अंतिम पहाड़ पर बैठे हुए व्यक्ति को भी लगना चाहिए कि मेरा जनप्रतिनिधि मेरी भावनाओं, कठिनाइयों और अभावों को समझता है। उनको लगना चाहिए, जिनको मैंने चुनकर भेजा है, वह मेरी बात को सदन के पटल पर रखकर सरकार से सकारात्मक रूप से हल करवाने का प्रयास कर रहा है। यही हमारे लोकतंत्र की ताकत है। हमें यही विश्वास व भरोसा जनता को दिलाए रखना चाहिए कि आप अंतिम छोर पर बैठे हैं और आपने ही मुझे चुनकर भेजा है, इसलिए हम आपकी आवाज हैं और आपकी भावनाओं को सदन में रखेंगे।

हमें इसका प्रयास करना चाहिए। इसके सकारात्मक परिणाम निश्चित रूप से आएँगे। इसीलिए जनता अपना जनप्रतिनिधि चुनकर भेजती है। आप सभी यहाँ पर आए हैं। यहाँ पर आपका दो दिन का प्रशिक्षण शिविर होगा। आप यहाँ की लाइब्रेरी देखें। अगर आपको समय मिले तो आप यहाँ की डिबेट्स का भी अध्ययन करें। किस तरीके से सदन की उच्च परंपरा व परिपाटियाँ रही हैं, उसी तरीके की उच्च परंपरा व परिपाटियाँ विधान सभा में भी रहें।

6

नवनिर्मित संसद भवन
नूतन और पुरातन का अनूठा संगम*

"लोकतंत्र हमारे इतिहास की बहुमूल्य धरोहर है।
लोकतंत्र हमारे वर्तमान की ताकत है और
लोकतंत्र हमारे स्वर्णिम भविष्य का आधार है।"

भारत की लोकतांत्रिक आस्था की प्रतीक हमारी संसद के इस नवनिर्मित भवन के लोकार्पण समारोह में भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी जी, राज्य सभा के उप सभापति श्री हरिवंश जी, गण्यमान्य अतिथिगण, देवियो और सज्जनो, मैं आप सभी का हार्दिक स्वागत करता हूँ, अभिनंदन करता हूँ।

आजादी के अमृतकाल में संपूर्ण राष्ट्र आज इस महत्त्वपूर्ण और ऐतिहासिक पल का साक्षी बन रहा है। मैं माननीय प्रधानमंत्री जी को साधुवाद देता हूँ, जिनके दृढ़ संकल्प और प्रेरक मार्गदर्शन में संसद का यह नया भवन ढाई वर्ष से भी कम अवधि में बनकर तैयार हुआ है। मैं उन हजारों श्रमिक भाई-बहनों को नमन करता हूँ, जिनकी निरंतर श्रम-साधना और कठिन परिश्रम से यह भगीरथ प्रयास पूरा हुआ है।

कोविड महामारी के कठिन समय में हमारे श्रमवीरों ने अपने कर्तव्यों के प्रति अद्‌भुत समर्पण दिखाया, जिसके कारण राष्ट्र का यह सामूहिक संकल्प सिद्ध हुआ।

जनप्रतिनिधि जनहित और सेवाभाव से काम करते हैं। पिछले सात दशकों से संसद के अंदर हमारे विद्वान नेताओं और सांसदों की उत्कृष्ट चर्चा और संवाद से जनता की समस्याओं का समाधान किया गया है। कई महत्त्वपूर्ण कानून भी बनाए गए, जिनसे लोगों के सामाजिक-आर्थिक जीवन में व्यापक परिवर्तन हुए हैं। हमारा लोकतंत्र और अधिक सशक्त हुआ है। इस अवसर पर मैं उन सबका भी आभार व्यक्त करता हूँ।

* संसद के नवनिर्मित भवन के उद्‌घाटन के अवसर पर संबोधन, नई दिल्ली, 28 मई, 2023

लोक सभा में मेरे पूर्ववर्ती अध्यक्षों ने सदन की गरिमा और प्रतिष्ठा बढ़ाने में समर्पित भाव से योगदान दिया, उनके प्रति मैं साधुवाद व्यक्त करता हूँ।

भारत विश्व का प्राचीनतम लोकतंत्र है। संपूर्ण विश्व में लोकतंत्र की जननी के रूप में हमारी पहचान है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और राज्य सभा के उप सभापति, श्री हरिवंश के साथ संसद के नए भवन के उद्घाटन के अवसर पर

संसदीय लोकतंत्र की इस यात्रा में हमने सदनों में अच्छी परंपरा और परिपाटियाँ स्थापित की हैं। हमारी निर्वाचन प्रक्रिया के कुशल, पारदर्शी एवं विश्वसनीय प्रबंधन के कारण लोगों का विश्वास लोकतंत्र के प्रति और बढ़ा है। इस अमृतकाल में भारत की प्रतिष्ठा विश्व में बढ़ी है, सम्मान बढ़ा है।

आज लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ-साथ वैश्विक चुनौतियों के समाधान के लिए विश्व भारत की ओर देखता है। भारत की संसद लोकतांत्रिक व्यवस्था का सर्वोच्च केंद्र है। लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में जनता की बढ़ती भागीदारी इस सत्य को रेखांकित करती है।

लोकतंत्र हमारे इतिहास की बहुमूल्य धरोहर है। लोकतंत्र हमारे वर्तमान की ताकत है और लोकतंत्र हमारे स्वर्णिम भविष्य का आधार है।

हमारी संसद घरेलू और वैश्विक चुनौतियों को अवसर में बदलने का सामर्थ्य रखती है। विविधता में एकता भारत की शक्ति है।

यह शक्ति संसद में भी दृष्टिगत होती है, जहाँ क्षेत्रीय तथा विचारधाराओं की भिन्नता के बावजूद सांसदगण राष्ट्रहित के विषयों पर एक स्वर में अपनी बात रखते हैं। यही हमारे लोकतंत्र की ताकत है।

भारत की संसद इस प्राचीन राष्ट्र की गौरवपूर्ण लोकतांत्रिक विरासत की कस्टोडियन है। हमारा वर्तमान संसद भवन भारत की स्वतंत्रता-प्राप्ति तथा संविधान-निर्माण से लेकर अनेक ऐतिहासिक घटनाओं का साक्षी रहा है। इसलिए अपनी इस अनमोल धरोहर को सँभालकर रखना भी हमारा दायित्व है।

"भारत की संसद इस प्राचीन राष्ट्र की गौरवपूर्ण लोकतांत्रिक विरासत की कस्टोडियन है।"

पिछले वर्षों में पक्ष-विपक्ष के माननीय सदस्यों ने कई अवसरों पर संसद के नए भवन के निर्माण की आवश्यकताओं को महसूस किया था। इसी परिप्रेक्ष्य में राज्य सभा और लोक सभा, दोनों सदनों ने माननीय प्रधानमंत्री जी से संसद का नया भवन बनाने का आग्रह किया था।

संसद के नए भवन के उद्घाटन के अवसर पर विशिष्ट सभा को संबोधित करते हुए

मैं प्रधानमंत्री जी का पुनः आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने माननीय सदस्यों की भावनाओं का सम्मान करते हुए इस आग्रह को तत्काल स्वीकार किया और इतने कम समय में इसको साकार भी कर दिया।

हमारे इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण धरोहर 'सेंगोल' को अध्यक्षपीठ के समीप स्थापित कर माननीय प्रधानमंत्री जी ने ऐतिहासिक परंपराओं के सम्मान तथा न्यायपूर्ण एवं निष्पक्ष शासन के प्रति अपने संकल्प को दोहराया है।

यह नवनिर्मित भवन हमारी समृद्ध संस्कृति, प्राचीन विरासत एवं आधुनिक आकांक्षाओं का अद्‌भुत संगम है। नए भवन में माननीय सदस्यगण नई तकनीकी, प्रौद्योगिकी का उपयोग करके अपनी कार्यकुशलता को बढ़ा पाएँगे। नए वातावरण में नए विचारों का सृजन होगा, ऐसा मेरा विश्वास है। हमारे नए भवन में ऊर्जा संरक्षण, जल-संरक्षण, ग्रीन टेक्नोलॉजी, पर्यावरण अनुकूलता की विशिष्टता का समागम है।

यह भवन वास्तु, शिल्प, कला व संस्कृति का अद्‌भुत उदाहरण है। इसमें संपूर्ण भारत की उत्कृष्ट व विविधतापूर्ण सांस्कृतिक विरासत के दर्शन होंगे। इस भवन में प्रत्येक भारतीय को अपने-अपने राज्य की संस्कृति की झलक भी दिखेगी। इसलिए मेरा माननीय सांसद मित्रों से अनुरोध है कि जब हम संसद के नए भवन में प्रवेश करें तो नए संकल्प के साथ प्रवेश करें।

हम लोकतंत्र की अच्छी परंपराओं को आगे बढ़ाएँ। हम संसदीय अनुशासन, मर्यादा और गरिमा के मानदंड स्थापित करें, ताकि विश्व की लोकतांत्रिक संस्थाओं के लिए भारत की लोकतांत्रिक संस्था आदर्श बन सके। मुझे पूर्ण विश्वास है कि नए वातावरण में हम सब मिलकर अधिक ऊर्जा के साथ, रचनात्मक व सकारात्मक चर्चा के माध्यम से एक श्रेष्ठ और विकसित भारत का निर्माण कर सकेंगे।

7

जनता का जनप्रतिनिधियों में पूर्ण विश्वास : लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए आवश्यक*

"लोकतंत्र हमारी नैतिक व्यवस्था है, इसलिए हमें अपनी कमियों का आत्म-विश्लेषण करना होगा और भविष्य की चुनौतियों का सही दिशा में समाधान ढूँढ़ना होगा।"

देश की आर्थिक एवं वाणिज्यिक राजधानी मुंबई में आयोजित 'राष्ट्रीय विधायक सम्मेलन' के शुभारंभ के अवसर पर यहाँ पधारे सभी सम्मानित प्रतिनिधियों का हार्दिक अभिनंदन एवं स्वागत।

आज हम जिस महाराष्ट्र की धरती पर इस कार्यक्रम से जुड़े हैं, वह शौर्य, पराक्रम, संस्कृति, ज्ञान और स्वाभिमान की धरती है। यह छत्रपति शिवाजी महाराज, बाल गंगाधर तिलक, संत तुकाराम और संत ज्ञानेश्वर, गुरु नामदेव एवं सावित्रीबाई फुले की धरती है। इस धरती ने देश को हमेशा सामाजिक, आध्यात्मिक पुनर्जागरण एवं लोक कल्याण का संदेश दिया है।

देश के अलग-अलग राज्यों से, अलग-अलग राजनीतिक विचारधाराओं के माननीय सदस्य यहाँ पर इस सम्मेलन में आए हैं और इस सम्मेलन में देश की विधायी संस्थाओं के समक्ष वर्तमान समस्याओं या चुनौतियों पर हम चर्चा-संवाद करेंगे, मंथन करेंगे और अपने उत्कृष्ट कार्यों और बेस्ट प्रैक्टिस को साझा भी करेंगे। हम हमारी विधायिकाओं को किस प्रकार सशक्त और मजबूत बनाएँ, इस पर चर्चा करेंगे।

भारत विश्व का सबसे प्राचीन, विशाल और सबसे जीवंत लोकतंत्र है। हमारे देश में अलग-अलग क्षेत्रों में हजारों वर्षों से लोकतांत्रिक व्यवस्था एवं लोकतांत्रिक संस्थाओं का अस्तित्व रहा है।

---

* 'राष्ट्रीय विधायक सम्मेलन' में उद्घाटन भाषण, मुंबई, 6 जून, 2023

वैदिक काल में संसद, सभा और समिति के उल्लेख से, दक्षिण भारत में भगवान बसवेश्वर के अनुभव मंडपम् एवं चोल साम्राज्य में ग्राम स्तर की लोकतांत्रिक संस्थाओं के उल्लेख से प्राचीन भारतीय शासन में समतावादी दृष्टिकोण और आम जनता की भागीदारी के स्पष्ट प्रमाण मिलते हैं। महाभारत में भी हमारे गणराज्यों की विशेषताओं के बारे में विस्तार से वर्णन मिलता है। भारतीय लोकतंत्र की स्वीकार्यता पूरे विश्व में आज भी है। इसी लोकतांत्रिक विरासत के कारण पूरे विश्व में 'मदर ऑफ डेमोक्रेसी' के रूप में भारत की पहचान है।

लोकतंत्र हमारे आचार-विचार और व्यवहार में है। इसीलिए जब हमारा देश आजाद हुआ तो स्वाभाविक रूप से हमने संसदीय लोकतंत्र को अपनी शासन-पद्धति के रूप में अपनाया।

वर्तमान कालखंड हमारे देश के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण कालखंड है। आजादी के बाद के 75 वर्षों की लोकतांत्रिक यात्रा में हमारा लोकतंत्र और अधिक सशक्त हुआ है, देश ने विकास के नए आयाम हासिल किए हैं।

"किसी विधानमंडल की विशिष्टता उसके सदस्यों की भूमिका और आचरण से जुड़ी होती है।"

विधान मंडल लोकतंत्र के ऐसे मंदिर हैं, जिनके माध्यम से हम जन-कल्याण का कार्य करने का प्रयास करते हैं। सर्वोच्च जनप्रतिनिधि संस्था होने के कारण हमसे अपेक्षा की जाती है कि हम देश की अन्य संस्थाओं और संगठनों के लिए आदर्श संस्था के रूप में कार्य करें। अनुशासन और शालीनता के उच्च मापदंड बनाए रखें। किसी विधान मंडल की विशिष्टता उसके सदस्यों की भूमिका और आचरण से जुड़ी होती है। जनप्रतिनिधि होने के नाते हमसे अपेक्षा की जाती है कि हम विधान मंडलों के अंदर और बाहर शालीनता के अत्यधिक उच्च मानदंडों की पालना करें। विधायकों के अशोभनीय व्यवहार की घटनाओं से हमारी छवि खराब होती है।

हमसे अपेक्षा की जाती है कि हम चर्चा और संवाद से समस्याओं का समाधान करें। लोकतंत्र हमारी महान विरासत है। हमारे पास पर्याप्त जनशक्ति है, पर्याप्त प्राकृतिक संसाधन है, इसीलिए जनता की आशाओं, आकांक्षाओं को पूरा करने की हमारी जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है।

हमें जनता की तत्कालीन आवश्यकताओं और अपेक्षाओं को समझना होगा तथा उनको पूरा करने के लिए व्यापक प्रयास करना होगा।

हम अपने नैतिक बल से समाज को बदल सकते हैं। व्यवस्थाएँ बदली जा सकती हैं। इसके लिए हमें एक स्वस्थ लोकतांत्रिक वातावरण की आवश्यकता है। लोकतंत्र हमारी नैतिक व्यवस्था है, इसलिए हमें अपनी कमियों का आत्म-विश्लेषण करना होगा और भविष्य की चुनौतियों का सही दिशा में समाधान ढूँढ़ना होगा। हमें हमारे लोकतंत्र के मंदिरों, यानी विधान मंडलों को गरिमापूर्ण बनाना होगा। लेकिन हाल में जो विधान मंडलों में घटनाएँ घट रही हैं, वे हमारे लोकतंत्र के लिए शुभ संकेत नहीं हैं।

हमने 75 वर्ष की लोकतंत्र की यात्रा में लोकतंत्र को निरंतर सशक्त किया है, मजबूत किया है। राजनीतिक मतभेद होने के बावजूद कई महत्त्वपूर्ण मुद्दे हमने आपसी सहमति से हल किए। हमने कई कानून सर्वसम्मति से पारित किए। हम तो उस विरासत के लोकतंत्र है, जहाँ शास्त्रार्थ के आधार पर फैसले होते थे। लेकिन आज हम अपने सदनों को किस दिशा में ले जा रहे हैं, इस पर विचार करने की आवश्यकता है।

“हमारे संविधान का आधार कार्यपालिका की सदन के प्रति जवाबदेही तथा सदनों की जनता के प्रति जवाबदेही है, इसे हमें पुनः स्थापित करना होगा।”

हमारा संविधान हमारा मार्गदर्शक है। संविधान निर्माण के बाद हमारे संविधान निर्माताओं ने उस समय संसदीय लोकतंत्र की शासन-पद्धति को अपनाया था, तो उसके पीछे की मूल भावना यह थी कि लोकतंत्र जनता का, जनता के लिए, जनता के द्वारा शासन है।

हमारी संवैधानिक व्यवस्था के अंदर लोकतांत्रिक संस्थाओं के माध्यम से जनता का अधिकतम कल्याण सुनिश्चित हो, इसके लिए आवश्यक है कि विधायिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका, सभी संवैधानिक मर्यादा एवं अपने संवैधानिक क्षेत्राधिकार के अंतर्गत कार्य करें।

हमारे संविधान का आधार सदन के प्रति कार्यपालिका की जवाबदेही तथा सदनों की जनता के प्रति जवाबदेही है, इसे हमें पुनः स्थापित करना होगा। अगर ये सदन प्रभावी रूप से चर्चा-संवाद करके समस्याओं का समाधान नहीं निकालेंगे, तो न्यायिक हस्तक्षेप होगा, जो देश के लोकतंत्र के लिए उचित नहीं है। हमारी जिम्मेदारी है कि इन सदनों के माध्यम से हम नीतियाँ और कानून बनाकर जनता का अधिकतम कल्याण सुनिश्चित करें।

आज हमारे समक्ष सबसे बड़ी चुनौती है कि किस प्रकार हम हमारी विधायी संस्थाओं को सार्थक चर्चा और संवाद का केंद्र बनाएँ।

हम परस्पर चर्चा करें कि हमारी विधायी संस्थाओं में क्या नवाचार किए जाएँ, नियम प्रक्रियाओं में क्या परिवर्तन लाए जाएँ, समितियों में क्या नए परिवर्तन ला सकते हैं, ताकि

हम जनता की समस्याओं को, उनकी परेशानियों को प्रभावी रूप से कार्यपालिका तक पहुँचा सकें और उनके उचित समाधान के लिए हम अपना इनपुट व मार्गदर्शन दे सकें।

यह सम्मेलन विधायी संस्थाओं के सदस्यों का सम्मेलन है। यह सम्मेलन इस विषय पर चिंतन, मनन और मंथन करने का है कि हम अपने लोकतंत्र को किस दिशा में ले जा रहे हैं। यह इस विषय पर चर्चा करने का मंच है। हममें विचारधारा के आधार पर मतभेद हो सकते हैं, लेकिन हम सदनों को जिस दिशा की ओर ले जा रहे हैं, हंगामे, नारेबाजी नियोजित तरीके से सदन स्थगित करना, यह लोकतांत्रिक व्यवस्था और राजनीतिक संस्कृति के लिए उचित नहीं है।

मैं मानता हूँ कि सभी विधान मंडलों को जनहित में कार्य करना चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि वे प्रभावी ढंग से कार्य करें, ताकि जनता में, सदनों और जनप्रतिनिधियों के प्रति विश्वास पैदा हो सके। अनुशासनहीनता की घटनाओं को हम कम कर सकें। सदनों का सुव्यवस्थित रूप से संचालन हो, नीतियों और मुद्दों पर लंबी चर्चा और बहस हो, विधायकों में अनुशासन की भावना हो, हमारा आचरण गरिमामयी और शालीन हो, ताकि हम इन विधान मंडलों को प्रभावी बना सकें। हम यहाँ यह भी चर्चा करें कि हमारी विधायी संस्थाओं में क्या नवाचार किए जाएँ, जिससे हमारे विधान मंडल जीवंत बने रहें।

इस सम्मेलन में आप अपने-अपने सदनों की बेस्ट प्रैक्टिसेज को साझा करें। आप अपने दायित्वों को और प्रभावी रूप से पूर्ण करें और हम विधायकों ने अपने-अपने क्षेत्र की जनता के लिए सामाजिक क्षेत्र के अंदर शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार के लिए जो उत्कृष्ट कार्य किए हैं, उसकी बेस्ट प्रैक्टिसेज साझा करें, ताकि अन्य जनप्रतिनिधियों को प्रेरणा मिल सके।

दो दशकों से जनप्रतिनिधि के नाते मैं स्वयं महसूस करता हूँ कि जनता की हमसे अपेक्षाएँ बढ़ी हैं, माँग बढ़ी है, आवश्यकताएँ बढ़ी हैं। हम किस तरीके से उनकी आवश्यकताओं, अपेक्षाओं तथा माँगों को पूरा कर सकते हैं। हम उनके जीवन स्तर को किस प्रकार से बेहतर कर सकते हैं और नीतियों तथा कार्यक्रमों का एग्जीक्यूशन ठीक से हो रहा है या नहीं हो रहा है, यह देखें। यह भी देखें कि हम अपनी जिम्मेदारी ठीक से निभा पा रहे हैं या नहीं। यदि हम जिम्मेदारी ठीक से नहीं निभा पा रहे हैं, तो हमें कोई माफ करने वाला नहीं है।

चुनाव जीतना ही हमारा अंतिम लक्ष्य नहीं हो सकता। चुनाव जीतने के बाद भी हमारा लक्ष्य होना चाहिए कि सार्वजनिक जीवन में हम किस तरीके से आम आदमी के जीवन में परिवर्तन ला सकते हैं, किस प्रकार हम सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी लाकर एक आदर्श मापदंड स्थापित करें और हमारे आचरण तथा कार्यों से लोगों में विश्वसनीयता और भरोसा पैदा करें।

आज हम जब अमृत काल में हैं और विश्व भारत की ओर देख रहा है, भारत का सामर्थ्य और सशक्त हुआ है। हमारे पास अपार युवा जनशक्ति है। दुनिया में हमारा भरोसा बढ़ रहा है। इस समय हमारी और अधिक जिम्मेदारी हो जाती है कि हम सब जनप्रतिनिधि और अधिक जिम्मेदारी से तथा और अधिक सामूहिक दायित्व से एक विकसित भारत, समर्थ भारत, आत्मनिर्भर और एक आत्मविश्वासी भारत बनाएँ।

मुझे आशा है कि यह दो दिवसीय सम्मेलन कई मुद्दों और कई विषयों पर चर्चा करेगा और यहाँ से हम नई ऊर्जा, नया सामर्थ्य और नए चिंतन के साथ 'विकसित भारत-समर्थ भारत' बनाने के अपने संकल्प को पूरा करेंगे।

8

स्थानीय स्वशासन की भावना को साकार करती पंचायती राज व्यवस्था*

"कोई भी देश, राज्य या संस्था सही मायने में लोकतांत्रिक तभी मानी जा सकती है जब शक्तियों का उपयुक्त विकेंद्रीकरण हो एवं विकास का प्रवाह ऊपरी स्तर से निचले स्तर (टॉप टू बाटम) की ओर होने के बजाय निचले स्तर से ऊपरी स्तर (बाटम टू टॉप) की ओर हो।"

संसद भवन में पधारे करनाल, हरियाणा के समस्त पंचायत प्रतिनिधियों का अभिवादन करता हूँ।

हरियाणा प्रदेश भारत का अनुपम प्रदेश है। हमारे देश की सांस्कृतिक विरासत है, देश की समृद्धि को दर्शाने वाला प्रांत है। आप उस प्रांत से आए हो, जहाँ श्रीकृष्ण ने गीता का संदेश दिया था। हरियाणा की भूमि पूरी मानवता को कर्तव्य और कर्म की सीख देती है। हरियाणा में पंचायत राज की समृद्ध व्यवस्था है। मुझे आज भारत के संसद भवन में आपका स्वागत कर प्रसन्नता हो रही है।

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और कोई भी देश, राज्य या संस्था सही मायने में लोकतांत्रिक तभी मानी जा सकती है, जब शक्तियों का उपयुक्त विकेंद्रीकरण हो एवं विकास का प्रवाह ऊपरी स्तर से निचले स्तर (टॉप टू बॉटम) की ओर होने के बजाय निचले स्तर से ऊपरी स्तर (बॉटम टू टॉप) की ओर हो।

पंचायती राज व्यवस्था में विकास का प्रवाह निचले स्तर से ऊपरी स्तर की ओर करने के लिए वर्ष 2004 में पंचायती राज को अलग मंत्रालय का दर्जा दिया गया। भारत में पंचायती राज के गठन व उसे सशक्त करने की अवधारणा महात्मा गांधी के दर्शन पर आधारित है।

---

* करनाल, हरियाणा से आए पंचायत सदस्यों के लिए आयोजित कार्यक्रम, नई दिल्ली, 7 जून, 2023

गांधी जी कहते थे कि "सच्चा लोकतंत्र केंद्र में बैठकर राज्य चलाने वाला नहीं होता, अपितु यह तो गाँव के प्रत्येक व्यक्ति के सहयोग से चलता है"।

पंचायती राज व्यवस्था से लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण और स्थानीय स्वशासन की भावना साकार होती है। इससे आम आदमी की सत्ता में भागीदारी सुनिश्चित हो पाती है, और आमजन अपने हितों व आवश्यकताओं के अनुरूप शासन-संचालन में योगदान दे पाते हैं।

वर्ष 1993 में संविधान के 73वें संशोधन द्वारा पंचायती राज व्यवस्था को संवैधानिक मान्यता मिली थी। इसका उद्देश्य देश की करीब ढाई लाख पंचायतों को अधिक अधिकार प्रदान कर उन्हें सशक्त बनाना था और यह उम्मीद थी कि ग्राम पंचायतें स्थानीय जरूरतों के अनुसार योजनाएँ बनाएँगी और उन्हें लागू करेंगी।

संसदीय ज्ञानपीठ में पानीपत और करनाल जिला परिषदों के नवनिर्वाचित जन प्रतिनिधियों के साथ

पंचायती राज ने देश में महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया है, उन्हें राजनीतिक रूप से सक्षम बनाया है। आज देश में लाखों महिलाएँ पंचायत और नगर स्तर पर राजनीति में भागीदार बन पाई हैं। यह हमारी इस स्थानीय स्वशासन की व्यवस्था के कारण ही संभव हो सका है।

जब देश आजाद हुआ था, तब हमारी संविधान सभा में महिलाओं की संख्या 15 थी, आज 115 के करीब महिलाएँ संसद में नेतृत्व कर रही हैं। देश की विधान सभाओं में आज महिलाएँ बड़े स्तर पर नेतृत्व कर रही हैं। हमारी पंचायतों और नगर निकायों में बड़ी संख्या में महिलाएँ (लगभग 14 लाख महिलाएँ) नेतृत्व कर रही हैं।

सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्गों और वंचित वर्गों को पंचायती राज से मजबूती मिली है। पंचायती राज से देश में सभी वर्ग अपने अधिकारों को लेकर सजग हुए हैं।

पंचायती राज के चलते आज गाँव-कस्बे का सामान्य नागरिक भी अपने हिसाब से नीतियाँ बनवा पा रहा है। सरकार के संचालन में हर व्यक्ति और समूह भागीदार बन पा रहा है।

पंचायती राज व्यवस्था में जब हम एक साथ बैठकर सामूहिकता के साथ चर्चा करते हैं, संवाद करते हैं और आपसी सहमति से निर्णय करते हैं तो हमारा लोकतंत्र मजबूत होता है। एक-एक नागरिक में लोकतंत्र की भावना का विकास होता है।

"पंचायती राज व्यवस्था से लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण और स्थानीय स्वशासन की भावना साकार होती है। इससे आम आदमी की सत्ता में भागीदारी सुनिश्चित हो पाती है और आमजन अपने हितों व आवश्यकताओं के अनुरूप शासन-संचालन में योगदान दे पाते हैं।"

भारत में लोकतंत्र का समृद्ध इतिहास रहा है। हमारे यहाँ प्राचीन समय में सभा और समिति जैसी संस्थाएँ हुआ करती थीं। हमारे यहाँ वैशाली के लिच्छवी और शाक्य जैसे लोकतांत्रिक गणराज्य हुआ करते थे। प्राचीन समय के ग्रंथों और शिलालेखों से हमारे यहाँ के लोकतांत्रिक इतिहास की जानकारी मिलती है।

भारत न केवल दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, बल्कि लोकतंत्र की जननी भी है। हमारे यहाँ वैदिक काल से लोकतांत्रिक व्यवस्था थीं। एक व्यवस्था थी, जिसमें राजा या सम्राट के स्थान पर परिषद या सभा में शक्ति निहित होती थी।

महाभारत के शांति पर्व के अध्याय 107/108 में भारत में गणराज्यों (जिन्हें गण कहा जाता है) की विशेषताओं के बारे में विस्तृत वर्णन है। इसमें कहा गया है कि जब एक गणतंत्र के लोगों में एकता होती है तो गणतंत्र शक्तिशाली हो जाता है और उसके लोग समृद्ध हो जाते हैं तथा आंतरिक संघर्षों की स्थिति में वे नष्ट हो जाते हैं।

पश्चिमी समाज में लोकतंत्र अधिकारों की अवधारणा से जुड़ा है, जबकि भारत का लोकतंत्र एक मानवीय संस्था है, जो मनुष्य को मनुष्य के रूप में महत्त्व देने पर आधारित एक ऐसा जीवन मार्ग है, जिसका उद्देश्य सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक जीवन के सभी पक्षों का समावेशी एवं समानतापूर्ण समाज की स्थापना सुनिश्चित करना है।

प्राचीन भारत में सबसे पहला गणराज्य वैशाली था। ऐतिहासिक प्रमाणों के मुताबिक, वैशाली में ही दुनिया का पहला गणराज्य स्थापित हुआ।

आज लोकतांत्रिक देशों में उच्च सदन और निम्न सदन की जो प्रणाली है, वह भी वैशाली गणराज्य में थी।

वहाँ उस समय छोटी-छोटी समितियाँ थीं, जो जनता के लिए नियम और नीतियाँ बनाती थीं। वैशाली वज्जी महाजनपद की राजधानी थी। वैशाली में गणतंत्र की स्थापना लिच्छवियों ने की थी। लिच्छवियों का संबंध हिमालयन आदिवासी लिच्छ से था। लिच्छवियों ने वैशाली गणराज्य इसलिए स्थापित किया था, ताकि बाहरी आक्रमणकारियों से बचा जा सके। कालांतर में वैशाली एक शक्तिशाली राज्य के रूप में उभरा और वहाँ एक नई प्रणाली विकसित हुई, जिसे हम गणतंत्र कहते हैं। इसे ही दुनिया के ज्यादातर देशों ने अपनाया। आज भारत हो या यूरोप या फिर अमेरिका, सब वैसी ही प्रणाली को मानते हैं, जैसी आज से 2500 साल पहले वैशाली में शुरू हुई थी।

दुनिया में ऐसा माना जाता है कि लोकतंत्र की संकल्पना मैग्नाकार्टा यानी इंग्लैंड में अधिकारों के घोषणा-पत्र के माध्यम से ही विकसित हुई, लेकिन भारत में कई सदियों पहले से ही जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में लोकतांत्रिक परंपरा की शुरुआत हो गई थी।

जन प्रतिनिधियों के साथ संवाद करते हुए

मैग्नाकार्टा से भी कई वर्ष पूर्व भारतीय दार्शनिक, समाज-सुधारक एवं लिंगायत संप्रदाय के संस्थापक गुरु बसवेश्वर द्वारा 'अनुभव-मंडप' की स्थापना की गई थी। यह सामाजिक,

आर्थिक एवं राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा के लिए एक सामान्य मंच उपलब्ध कराता था। इसे भारत की पहली संसद माना जाता है, जहाँ लोकतांत्रिक प्रक्रिया द्वारा समस्याओं को सुलझाने का प्रयास किया जाता था।

बौद्ध परंपरा में विद्यमान संघ की संकल्पना भी शासन करने की एक सभा के रूप में विकसित की गई थी। इसमें किसी भी निर्णय के लिए मत का प्रयोग किया जाना अनिवार्य था। तब विश्व के किसी भी भाग में यह परंपरा देखने को नहीं मिलती थी।

हमारे देश के दक्षिणी प्रदेश तमिलनाडु में चेन्नई से लगभग 90 किलोमीटर दूर एक छोटा शहर है उत्तरामेरूर। उत्तरामेरूर के बैकुंठ पेरुमल मंदिर की दीवारों पर एक शिलालेख है। यह शासन की एक अत्यंत विस्तृत लोकतांत्रिक प्रक्रिया का एक जीता-जागता उदाहरण है।

"भारत का लोकतंत्र एक मानवीय संस्था है, जो मनुष्य को मनुष्य के रूप में महत्त्व देने पर आधारित एक ऐसा जीवन मार्ग है, जिसका उद्देश्य सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक जीवन के सभी पक्षों का समावेश करते हुए एक समानतापूर्ण समाज की स्थापना सुनिश्चित करना है।"

तमिलनाडु में दसवीं सदी के प्रारंभ में परंथका चोल प्रथम चोल राजा था। उत्तरामेरूर के ग्रामीणों ने यह तय करने के लिए एक प्रणाली को लागू करने का फैसला किया कि उनके प्रतिनिधि कौन हो सकते हैं? यह चुनाव प्रक्रिया साल में एक बार आयोजित की जाती थी। पूरे क्षेत्र को 30 हिस्सों में व्यवस्थित किया गया था। तीन समितियों के लिए चुनाव होते थे। खातों को सत्यापित करने के लिए एक प्रकार के लेखाकार की व्यवस्था थी। निर्वाचित उम्मीदवार को वापस बुलाने के लिए नियमों का एक समुच्चय निर्धारित था।

गौर करने वाली बात यह है कि नैतिकता को सुनिश्चित करने हेतु ईमानदारी, सत्यनिष्ठा एवं मूल्यों से ओतप्रोत उम्मीदवारों का चयन किया जाता था। यह एक लिखित संविधान था। गाँव होने के कारण इसका दायरा छोटा हो सकता है, लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू स्वशासन की व्यवस्था थी। प्रत्येक समिति का कामकाज काफी विस्तृत था, जिसमें न्यायिक, वाणिज्यिक, कृषि, सिंचाई और परिवहन कार्य शामिल थे।

लोकतंत्र जीवन को समुचित ढंग से संचालित करने का एक तरीका है। वर्तमान में लोकतंत्र की प्रकृति में बदलाव आ रहा है। यह शासन व्यवस्था के विशेष स्वरूप तक सीमित न होकर व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के सभी पक्षों को संबोधित करने का एक पर्याय हो गया है। इस संकल्पना में भागीदारी, प्रतिनिधित्व, जवाबदेही, जनसामान्य की सहमति, बंधुता का आदर्श और आत्मविकास सन्निहित है।

इसी भावना के साथ भारत में सदियों से चली आ रही लोकतंत्रात्मक व्यवस्था भावी वैश्विक समाज के लिए प्रेरणादायक है। जो लोकतांत्रिक व्यवस्था उपहारस्वरूप हमारे पूर्वजों ने हमें दी, उसे सहेजना और भावी पीढ़ी को उसका महत्त्व समझा पाना समस्त भारतीय समाज और उसके नागरिकों का दायित्व है।

पिछले 75 वर्षों में भारत में सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन हुए हैं। देश तेजी से आगे बढ़ रहा है। पूरे विश्व में भारत का सम्मान बढ़ रहा है। हमारे नौजवानों की बौद्धिक क्षमता, इनोवेशन, नई सोच और चिंतन तथा सभी समाजों के अंदर सामूहिक चिंतन के कारण देश प्रगति कर रहा है। हमें अपने देश को आगे लेकर जाना है तो इसके लिए जरूरी है कि सभी समाज अपने बच्चों को, आने वाली पीढ़ी को शिक्षा और संस्कार दें। हम अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक और लोकतांत्रिक विरासत को याद करते हुए आगे बढ़ें।

9

विकसित भारत : संकल्प से सिद्धि तक*

"विकसित भारत को बनाने में यदि सभी राज्यों की जनता और पूरे देश की जनता सामूहिक प्रयास करेगी तो निश्चित रूप से हमारा यह संकल्प सिद्धि की ओर अग्रसर होगा।"

आज आप सबके बीच गोवा विधान सभा में उपस्थित होकर, मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। वर्ष 2047 तक देश को विकसित भारत बनाने में हमारे जनप्रतिनिधियों की भूमिका, गोवा विधान सभा की भूमिका और हमारी जितनी भी चुनी हुई लोकतांत्रिक संस्थाएँ—पंचायत, नगरीय क्षेत्र संस्थाएँ आदि हैं, हम सबके सामूहिक प्रयासों से, हम किस तरह से, नए भारत का निर्माण, आत्मनिर्भर भारत का निर्माण, आत्म-विश्वासी भारत के निर्माण के लिए सामूहिक प्रयास करने के साथ ही, हम लोग यहाँ पर सामूहिक संकल्प के लिए आए हैं।

मैं इस मौके पर गोवा के लोकप्रिय मुख्यमंत्री श्री प्रमोद सावंत जी, गोवा विधान सभा के माननीय अध्यक्ष श्री रमेश तावडकर जी, जिन्होंने केंद्र सरकार में एक सांसद और मंत्री के रूप में भी गोवा का नेतृत्व किया, श्री श्रीपद येसो नायक जी, गोवा विधान सभा के उपाध्यक्ष श्री जोशुआ डिसुजा जी, मंत्रिमंडल के माननीय सदस्यगण, माननीय विधायकगण, पंचायत और नगरीय क्षेत्र के प्रतिनिधिगण, गोवा विधान सभा के पूर्व विधायक, पूर्व मंत्रिगण एवं सभी प्रतिष्ठित नागरिकों का, मैं गोवा विधान सभा में हार्दिक अभिनंदन करता हूँ, स्वागत करता हूँ।

गोवा अनुपम प्राकृतिक सौंदर्य, संस्कृति और विरासत से संपन्न देश की वह मनोरम धरती है, जहाँ नूतनता के साथ ही प्राचीनता का भी अद्‌भुत संगम है, गोवा अपने आप में एक विशिष्ट स्थान रखता है।

---

* गोवा विधान सभा में 'विकसित भारत-2047 हेतु निर्वाचित जनप्रतिनिधियों की भूमिका' विषय पर संबोधन, गोवा, 15 जून, 2023

गोवा केवल इस देश का ही नहीं, बल्कि विश्व का भी एक पर्यटन स्थल बन चुका है। भारत के अलग-अलग राज्यों से लोग यहाँ पर आते हैं और विश्व के कई देशों से भी लोग यहाँ आते हैं। इसलिए पर्यटन के रूप में भी गोवा को जिस तरह से विकसित किया गया है, उसके लिए मैं माननीय मुख्यमंत्री जी एवं पूर्व मुख्यमंत्रियों का भी बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूँ, स्वागत करता हूँ।

गोवा की मेहनतकश, परिश्रमी, मिलनसार जनता के कारण ही गोवा ने सबका दिल जीता है। इसीलिए आज देश-दुनिया के लोग गोवा की तरफ आकर्षित होते हैं। आज हम लोगों ने यहाँ पर वर्ष 2047 में एक विकसित भारत का सपना देखा है।

माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने 15 अगस्त को देश की जनता से आह्वान किया कि हम सबके सामूहिक प्रयासों से देश की 140 करोड़ जनता के सामूहिक प्रयास, सामूहिक कर्तव्य एवं सामूहिक दायित्व से जब वर्ष 2047 में आजादी के 100 साल होंगे, तब हम भारत को एक विकसित भारत के रूप में देखना चाहते हैं। इस विकसित भारत को बनाने में यदि सभी राज्यों की जनता और पूरे देश की जनता सामूहिक प्रयास करेगी तो निश्चित रूप से हमारा यह संकल्प सिद्धि की ओर अग्रसर होगा।

मुझे पता है कि गोवा विधान सभा का बहुत बड़ा इतिहास रहा है। गोवा की जनता ने वर्ष 1947 के बाद एक लंबी लड़ाई लड़ी और वर्ष 1961 में गोवा को स्वतंत्रता मिली।

आज इतने कम समय के अंदर गोवा के विकास में और यहाँ की जनता के सामाजिक-आर्थिक कल्याण में इस विधान सभा की बहुत बड़ी भूमिका है। क्योंकि यही वह कार्यस्थली है, जहाँ पर हमने राजनीतिक संस्कृति को एक कार्य संस्कृति के आधार पर गोवा के विधान सभा की नीतियाँ, कार्यक्रम और लोगों को अधिकार देने के लिए कानून बनाए। उसके कारण आज गोवा विकास की नई ऊँचाइयों को छू रहा है।

मुझे खुशी है कि गोवा शिक्षा, रोजगार एवं स्वास्थ्य सहित अन्य सभी पैरामीटर में अग्रिम स्थान पर है। यहाँ के मुख्यमंत्री लगातार हम किस तरीके से देश और विश्व के मानकों में सबसे प्रथम पंक्ति पर आएँ, इस लक्ष्य को लेकर काम कर रहे हैं। इसीलिए 75 वर्ष की लोकतंत्र की इस यात्रा में हम यह कह सकते हैं कि देश का लोकतंत्र सशक्त हुआ है, मजबूत हुआ है और हमारी लोकतांत्रिक संस्थाएँ जनता के प्रति और जवाबदेह बन गई हैं। लेकिन हमारे सपने कुछ और हैं। हमें उन सपनों को इन 25 वर्षों में साकार करना है।

आजादी के बाद हमने विकास की एक लंबी यात्रा तय की। आजादी के लंबे संघर्ष के बाद जब हमें आजादी मिली तो हमारे सामने कई चुनौतियाँ थीं। हम उन चुनौतियों से लड़े और सामूहिकता के साथ लड़े। हम सामूहिक उत्तरदायित्व से लड़े। हमने दुनिया में

साबित किया कि इतने बड़े देश में जहाँ इतनी विविधता है, विविधताओं में अलग-अलग संस्कृति, भाषा और बोली है तथा अलग-अलग विचाराधाराओं के लोग भी हैं। हमने इसी संसदीय लोकतंत्र के माध्यम से आज दुनिया को बताया है कि इस विविधता की ताकत हमारी सामूहिकता की ताकत है।

हम वसुधैव कुटुंबकम् की संस्कृति में विश्वास करते हैं। इसीलिए इस 75 वर्ष की लोकतंत्र की यात्रा में, जिसमें हमारा अमृतकाल चल रहा है, इस अमृतकाल में हमने काफी सफलताएँ प्राप्त की हैं, लेकिन चुनौतियाँ भी हमारे सामने हैं।

गोवा विधान सभा के सदस्यों को संबोधित करते हुए

दूसरी तरफ, उन चुनौतियों से लड़ने का सामर्थ्य भी हमारे पास है। दुनिया की सबसे बड़ी युवाशक्ति हमारे पास है। हमारे पास कुशल नेतृत्व है। हमारे यहाँ संसदीय लोकतांत्रिक संस्थाएँ हैं और उनके जनप्रतिनिधि हैं। उन्होंने जनता के विश्वास और भरोसे को जीता है। भारत के अंदर जोश, उमंग और नए संकल्प को पूरा करने का सामर्थ्य है। दुनिया भारत के सामर्थ्य की ओर देख रही है। हमने कई आपदाएँ और चुनौतियाँ झेली हैं।

कोविड जैसी महामारी, चुनौती से हम लड़े और उस चुनौती से लड़ने के बाद उस आपदा से हम बाहर निकले। हमने विश्व के कई देशों की आपदा के समय मदद भी की। आज भारत का यह सामर्थ्य बना है। हमारे नौजवानों की अद्‌भुत क्षमता, नए इनोवेशन की ताकत, नया चिंतन, नया विचार, नया जोश, कुछ कर गुजरने की शक्ति, सामर्थ्य भारत के अंदर है और इसीलिए सबके सामूहिक प्रयासों से हम निश्चित रूप से वर्ष 2047 में विकसित भारत बना पाएँगे।

आप सब जनप्रतिनिधि हैं और जनप्रतिनिधि होने के नाते आपका दायित्व ज्यादा होता है। एक छोटे राज्य में हम किस तरीके से जनता के साथ संवाद करके, जनता के साथ चर्चा करके, उनके अभावों को समझकर, उनकी कठिनाइयों को समझकर और भविष्य की

चुनौतियों को समझकर इस सदन के माध्यम से चर्चा और संवाद करके उन समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।

75 वर्ष की इस लोकतंत्र की यात्रा में इसी चर्चा/संवाद, सहमति/असहमति से हमने देश का विकास किया है। हमारे जो विधान मंडल हैं, उन विधान मंडलों के अंदर जो जनप्रतिनिधि चुनकर आते हैं, वे जनता की आकांक्षाओं, अपेक्षाओं, उनके अभावों को सदन के माध्यम से सरकार तक पहुँचाते हैं।

जितना ज्यादा जनता से हमारा संपर्क होगा, जितनी निकटता से हम समस्याओं को समझेंगे और उनके समाधान के रास्तों की चर्चा करेंगे, उतना बेहतर होगा। मुझे कई बार लगता है कि विधान मंडल हों या संसद हो, आजकल उनमें नीतियों/कार्यक्रमों की आलोचना करने की जगह विरोध की नई प्रवृति शुरू हुई है। सहमति/असहमति हमारे लोकतंत्र की विशेषता है। नीतियों की आलोचना करना हमारे लोकतंत्र की विशेषता है।

जब हम फ्लोर पर बात करें तो नीतियों/कार्यक्रमों की आलोचना करें, सरकार को मार्गदर्शन देने का काम करें कि किस तरीके से उन नीतियों/कार्यक्रमों का ठीक से एग्जीक्यूशन हो। जो नीतियाँ/कार्यक्रम इस विधान सभा में बनाए गए हैं, जो नियम/कानून सरकार ने बनाए हैं, वे जनता तक ठीक से पहुँच रहे हैं या नहीं पहुँच रहे हैं, यह हमारी जिम्मेदारी बनती है। सदन के अंदर हम सरकार के हर एक्शन पर चर्चा करें।

कानून बनाते समय हमारी लंबी चर्चा-संवाद होना चाहिए। हर सरकार जनता की बेहतरी के लिए कानून बनाती है, जनता को अधिकार देने के लिए कानून बनाती है और एक निष्पक्ष तथा जवाबदेह शासन के लिए कानून बनाती है। कानून बनाते समय व्यापक डिबेट हो, डिटेल में डिबेट हो, उस पर व्यापक चर्चा हो।

जितनी ज्यादा चर्चा-संवाद से कानून बनेंगे, उतने ही बेहतरीन कानून बनेंगे और जनता के प्रति उतना ही हम अपने दायित्वों को निभाते हुए उनके जीवन को बेहतरीन करने का काम कर पाएँगे।

इसीलिए मेरा आपसे निवेदन है, मुझे खुशी है कि 40 दिन से ज्यादा गोवा विधान सभा चलती है। हमारी चिंता यह रहती है कि आजकल विधान मंडलों की बैठकों की संख्या कम होती चली जा रही है।

यह हमारे लिए चिंता का विषय है, लेकिन गोवा छोटा राज्य होने के बाद भी यहाँ पर अच्छी चर्चा होती है, अच्छा संवाद होता है, अच्छी डिबेट होती है और चर्चा-संवाद से जो मंथन निकलता है, उससे हम जनता के कल्याण की योजनाएँ बनाते हैं। मुझे आशा है कि आने वाले समय में हमारी जितनी लोकतांत्रिक संस्थाएँ हैं, चाहे पंचायत है, चाहे नगरपालिका क्षेत्र है, चाहे विधान सभाएँ हैं, चाहे लोक सभा है, इन लोकतांत्रिक संस्थाओं

को जितना हम जनता के प्रति जवाबदेह बनाएँगे, जितनी ज्यादा इन सदनों में चर्चा होगी, उतना ही हम कार्यपालिका पर ठीक से निगरानी और नियंत्रण कर पाएँगे।

इसीलिए इन सदनों में व्यापक चर्चा और संवाद होना चाहिए। हमें हर विषय पर चर्चा और संवाद करना चाहिए। जब ग्राम सभा में विकास की योजनाएँ बनाएँ तो ग्राम सभा विकास के लोग जनता में बैठें और चर्चा करें कि प्राथमिकता के आधार पर गाँव में क्या विकास के कार्य करने की आवश्यकता है और लोगों की क्या अपेक्षाएँ हैं। पंचायत उन कार्यों का विवरण राज्य सरकार तक पहुँचाए और राज्य की विधान सभा में उन योजनाओं पर चर्चा हो।

मेरा विश्वास है कि हम अपने-अपने क्षेत्र में सारी योजनाओं का एग्जिक्यूशन करते हुए सभी अभावों को दूर करने के लिए एक ऐसे पैरामीटर तक पहुँच सकते हैं कि गोवा आने वाले समय में भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में जो एसडीजी के गोल हैं, उन्हें वर्ष 2030 से पहले पूरा करने का संकल्प लें।

मेरा आपसे इतना ही निवेदन है कि विधान सभा छोटी हैं, निर्वाचन मंडल छोटे हैं, इसलिए हमारी जनता की अपेक्षाएँ भी ज्यादा हो सकती हैं, लेकिन उसमें क्या प्राथमिकता है, प्राथमिकता के आधार पर सबसे पहले महत्त्वपूर्ण कार्यों को लेकर जितना हमारा बजट है, उस बजट के अनुसार प्राथमिकता तय करें और लक्ष्य तय करके उन लक्ष्यों को प्राप्त करें।

यदि हमने इस दिशा में पंचायत से लेकर विधान मंडल तक चर्चा और संवाद से जनता की अपेक्षाओं, आकांक्षाओं को पूरा करने का काम किया, तो मैं कह सकता हूँ कि वर्ष 2047 में विकसित भारत के सपने को सबसे पहले गोवा पूरा करेगा।

गोवा विधान सभा से मेरी बहुत अपेक्षाएँ हैं। हम उन अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए लक्ष्य को सामने रखकर काम करें। लोगों में लोकतंत्र के प्रति विश्वास और भरोसा बढ़ा है और हम सभी जनप्रतिनिधियों की जिम्मेदारी है कि इस भरोसे को कायम रखें। मेरा आपसे निवेदन है कि नई टेक्नोलॉजी का उपयोग करते हुए, नई तकनीक का उपयोग करते हुए हर व्यक्ति से हमारा सीधा संवाद होना चाहिए।

इस बदलते परिप्रेक्ष्य के बदलते दौर में टेक्नोलॉजी में हम आगे हैं, हम चिकित्सा क्षेत्र में आगे हैं, हम शिक्षा के क्षेत्र में आगे हैं और इंफ्रास्ट्रक्चर खड़ा करने के क्षेत्र में आगे हैं। जब मैं गोवा आ रहा था, तो देख रहा था कि किस तरह से यहाँ इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास हुआ है।

आने वाले समय में जिस तरह के इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास भारत में हो रहा है, चाहे रेल कनेक्टिविटी हो, चाहे एयर कनेक्टिविटी हो, चाहे इंडस्ट्रीज सेक्टर हो, चाहे निवेश हो, चाहे टेक्नोलॉजी हो, ऐसा कोई सेक्टर नहीं है, जिसमें भारत नेतृत्व नहीं कर रहा है।

हम सभी यदि सामूहिक प्रयासों से कार्यों को करेंगे, सामूहिक जिम्मेदारियों से करेंगे और पूरे संकल्प के साथ करेंगे तो निश्चित रूप से वर्ष 2047 में जो विकसित भारत का सपना हमने देखा है, उसे पूरा कर पाएँगे।

मैं पुन: गोवा की विधान सभा के अध्यक्ष जी को और मुख्यमंत्री जी को बहुत-बहुत साधुवाद देता हूँ कि उन्होंने मुझे आज यहाँ अपनी बात कहने का अवसर दिया। निश्चित रूप से हम सभी अपने सामूहिक प्रयासों से इस देश और प्रदेश को आगे बढ़ाने के लिए कृतसंकल्प हैं।

हम जनप्रतिनिधि होने के नाते अपने संवैधानिक दायित्वों को पूरा करते हुए अपने क्षेत्र की जनता का अधिकतम कल्याण कर सकें, सबके जीवन में खुशहाली और समृद्धि ला सकें, इस जिम्मेदारी के साथ अपने कर्तव्य को निभाएँगे।

भाग-दो

धार्मिक एवं आध्यात्मिक मुद्दे

10

श्रीमद्भगवद् गीता : मानव जीवन में बदलाव लाने का आधार सूत्र*

"हम सबके लिए गीता एक पवित्र ग्रंथ ही नहीं बल्कि व्यक्ति के जीवन में बदलाव लाने का आधार सूत्र है। ऐसा इसलिए क्योंकि गीता में कहे गए कृष्ण के एक-एक उपदेश व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन लाने का काम करते हैं।"

मुझे खुशी है कि राजस्थान पत्रिका समूह के प्रधान संपादक माननीय गुलाब जी कोठारी के लिखे ग्रंथ 'गीता विज्ञान उपनिषद' का विमोचन आज देश के प्रधान न्यायाधीश माननीय एन.वी. रमण साहब के करकमलों से हो रहा है, जो स्वयं विधि के विद्वान होने के साथ-साथ अध्यात्म और गीता के मर्मज्ञ भी हैं। इस मौके पर मैं गुलाब जी और समस्त पत्रिका परिवार को हार्दिक बधाई देता हूँ।

वेद विज्ञान को जनसाधारण के सामने सरल भाषा में लाने का जो प्रयास पत्रिका के संस्थापक श्रद्धेय कर्पूर चंद्र कुलिश जी ने शुरू किया था, उसे आगे बढ़ाने का काम गुलाब कोठारी जी कर रहे हैं।

आज जिस ग्रंथ का विमोचन हुआ है, वह सनातन संस्कृति की कालजयी रचना गीता के वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित है। सही मायने में इस ग्रंथ में गीता एवं वेद विज्ञान का सरल शब्दों में जिस तरह से विवेचन किया गया है, उससे यह उम्मीद की जानी चाहिए कि नई पीढ़ी हमारे पुरातन ज्ञान को आसानी से समझ सकेगी।

वैसे तो वेदों के गूढ़ रहस्यों को समझना कोई आसान काम नहीं है। राजस्थान पत्रिका के माध्यम से गुलाब जी लगातार वेदों के विज्ञान भाव को अपने आलेखों के जरिए समझाने का भागीरथी काम करते रहे हैं। वेद विज्ञान के अध्ययन में गुलाब जी कोठारी ने काफी समय दिया है।

---

* 'गीता विज्ञान उपनिषद' के विमोचन के अवसर पर संबोधन, नई दिल्ली, 26 जुलाई, 2022

वेद विज्ञान अध्ययन एवं शोध संस्थान के माध्यम से कोठारी जी ने न केवल वेद विज्ञान पर शोध को आगे बढ़ाया है, बल्कि संस्कृत की भी अनूठी सेवा की है।

गीता विज्ञान उपनिषद भी इन्हीं प्रयासों की कड़ी है। कोठारी जी का संपूर्ण लेखन आधुनिक जीवन-मूल्यों के बारे में तो बताता ही है, साथ ही वर्तमान में नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों में आ रही कमी के प्रति सचेत करता नजर आता है।

मुझे राजस्थान में कोठारी जी के संवाद सेतु और दिशाबोध कार्यक्रमों में शामिल होने का मौका भी मिला है। वे किस तरह से जनता के बीच जाकर उनकी बात सुनते हैं और अपने अखबार के जरिए उनकी आवाज बनते हैं, यह सब जानते हैं।

दिशा बोध कार्यक्रम के जरिए खास तौर से नई पीढ़ी को हमारी संस्कृति से अवगत कराने के काम को गुलाब जी ने मिशन के रूप में लिया है।

हम सबके लिए गीता एक पवित्र ग्रंथ ही नहीं बल्कि व्यक्ति के जीवन में बदलाव लाने का आधार सूत्र है। ऐसा इसलिए क्योंकि गीता में कहे गए कृष्ण के उपदेश व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन लाने का काम करते हैं।

गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने निष्काम कर्मयोग का अमर संदेश दिया है। गीता में फल की इच्छा किए बिना कर्म करने का उपदेश दिया गया है। यह अपने आप में एक पूरा दर्शन है। फल की कामना किए बिना कर्म करने वाला व्यक्ति सहनशील बन जाता है। लेकिन जब हमारी दृष्टि कर्म के बजाय फल पर रहने लगे, तब न तो कर्म के प्रति श्रद्धा भाव ही होगा और न ही व्यक्ति धैर्य रख पाएगा। इसलिए बिना फल की इच्छा के ही कर्म की प्रधानता सबसे बलशाली मानी गई है। यदि व्यक्ति किसी कार्य में सफलता प्राप्त करना चाहता है तो उसके लिए सबसे अनिवार्य है कि वह अपने कर्म पर सबसे अधिक ध्यान दे।

गीता मानव को सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती है। यह मानव को उसके कार्य करने का सामर्थ्य का बोध कराती है। गीता ज्ञान, भक्ति और कर्म, तीनों ही मार्गों से मोक्ष प्राप्ति के मार्ग को भी प्रशस्त करती है।

यह मानव को अध्यात्म से जोड़ती है। गीता के अनुसार प्रत्येक प्राणी में शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा रूपी चार घटक होते हैं, इन चारों घटकों का समन्वय ही मानव को सत्कर्म की ओर ले जाता है।

संसार की एक सरल व्याख्या गीता में की गई है। जैसे पेड़ के सभी पत्ते, पुष्प, फल बीज से अलग नहीं हैं, पेड़ के सभी अंग उसी बीज से प्रकट हुए हैं और एक-दूसरे के लिए जी रहे हैं, ठीक यही क्रम संसार का भी है।

संसार के सारे पिंड, जैसे सूर्य, चंद्रमा, पृथ्वी आदि एक-दूसरे पर आश्रित हैं और सब

मिलकर पूर्ण हैं। सब अपने आप में भी पूर्ण हैं। अस्तित्व और सह अस्तित्व की इससे सुंदर व्याख्या नहीं हो सकती।

गीता का सार संदेश है कि धर्म और अधर्म के मध्य हमेशा धर्म की विजय होती है। भगवान श्रीकृष्ण ने कुरुक्षेत्र में अर्जुन को संदेश देते हुए कहा था कि जब-जब धर्म की हानि होगी, उसकी रक्षा स्वयं ईश्वर करेंगे। यह मानव को साफ संदेश देता है कि भगवान नैतिकता, सत्य और धर्म के पक्ष में खड़े हैं तथा अधर्म और बुराई का पराभव निश्चित है।

गीता में भक्ति, ज्ञान और कर्म से जुड़ी कई ऐसी बातें बताई गई हैं, जो मनुष्य के लिए हर युग में महत्त्वपूर्ण हैं। गीता की महानता यह है कि इसके प्रत्येक शब्द पर एक अलग ग्रंथ लिखा जा सकता है। गीता का मुख्य ज्ञान मानव को श्रेष्ठ बनाना, ईश्वर को समझना और मोक्ष की प्राप्ति है। इसीलिए जब भी हम गीता और वेदों का नाम सुनते हैं, तो हमारे दिल-दिमाग में धर्मग्रंथों का ऐसा रूप सामने आ जाता है जिनके जरिए व्यक्ति के चरित्र-निर्माण का काम होता है।

"गीता का सार संदेश है कि धर्म और अधर्म के मध्य हमेशा धर्म की विजय होती है। भगवान श्रीकृष्ण ने कुरुक्षेत्र में अर्जुन को संदेश देते हुए कहा था कि जब-जब धर्म की हानि होगी, उसकी रक्षा स्वयं ईश्वर करेंगे।"

अपनी संस्कृति और परंपरा को बनाए रखना किसी भी समाज का मूल दायित्व होता है। हम इतिहास में देखते हैं कि एक लंबे काल खंड तक विदेशी आक्रांताओं ने हमारी संस्कृति को नष्ट करने का प्रयास किया था। लेकिन हमारे पूर्वजों ने हमारी संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखा। हमारे संतों व ऋषि मुनियों ने श्रुति-परंपरा के जरिए हमारे वेदों में छिपे गूढ़ ज्ञान को जीवित रखा और हमारी सनातन संस्कृति को समय के साथ अधिक समृद्ध किया।

आज आधुनिकता का दौर है। धार्मिक विश्वास और विज्ञान के तर्कों के मध्य कई बार टकराव होता है। लेकिन हमें यह समझना होगा कि विज्ञान और धर्म एक-दूसरे के पूरक हैं। दोनों को एक साथ समझे बिना न तो विज्ञान परिपूर्ण है, न ही धर्म। इसीलिए आज के माहौल में धर्म एवं विज्ञान को नई परिभाषा देने का वक्त आ गया है।

विज्ञान के विकास के मामले में पश्चिम ने भले ही बहुत तरक्की कर ली हो, लेकिन आध्यात्मिक ज्ञान के अभाव में जीवन भटकाव और तनाव से मुक्त नहीं हो पाया है। वहीं हमारे वेद विज्ञान ने मानव को अपने मन की शांति के साथ-साथ संपूर्ण विश्व का कल्याण करने की दिशा में प्रेरित किया है। समस्त विश्व के लोग हमारी इस विचारधारा की ओर आकर्षित हो रहे हैं।

आज हमारे समाज में जो धर्म-समुदाय को लेकर राजनीति हो रही है, उसकी चिंता से भी मैं आप सबको जोड़ना चाहूँगा। कोई भी धर्म, कोई भी संप्रदाय हिंसा की हिमायत नहीं करता, लोगों को बाँटने की बात नहीं करता। इसलिए आज आवश्यकता है कि हम देश को जोड़ने की बात करें, समाज में सद्भाव और सौहार्द स्थापित करने की बात करें। तभी हमारा देश और समाज विश्व के सामने एक आदर्श प्रस्तुत कर सकता है।

इस परिप्रेक्ष्य में विशेष रूप से हमारे प्रबुद्धजनों की जिम्मेदारी बनती है कि वे युवा पीढ़ी को हमारे वैदिक ग्रंथों में निहित ज्ञान को सरल भाषा में बताने का काम करें। हमारी संस्कृति और धर्म ग्रंथों की सरल व्याख्या संसार के सामने प्रस्तुत करें।

श्री गुलाब कोठारी जी का रचना-संसार काफी व्यापक है। जीवन-दर्शन से जुड़ा कोई भी पहलू ऐसा नहीं, जिस पर आपने अपने विचार व्यक्त नहीं किए हों। आपने निरंतर वैदिक विषयों की वैज्ञानिक व्याख्या में अपना जीवन समर्पित किया है तथा समाज के अंदर हमारी सनातन संस्कृति के अनमोल खजाने को सामने लाने का काम किया है।

आपकी लेखनी लगातार समाज को सन्मार्ग दिखाती रहे व नई पीढ़ी का मार्गदर्शन करती रहे, यही कामना करता हूँ।

11

चरित्र निर्माण के साथ व्यक्तित्व निर्माण को अग्रसर वाल्मीकि समाज*

**"दुनिया के अंदर धर्म के आधार पर कई देश हैं,
लेकिन भारत की यह विविधता है कि यहाँ सब धर्मों का सम्मान किया जाता है।
व्यक्ति की श्रेष्ठता का सम्मान किया जाता है।"**

महर्षि वाल्मीकि भगवान की जय। आज शरद पूर्णिमा और महर्षि वाल्मीकि भगवान की जयंती पर हम सब इस शरद पूर्णिमा पर भगवान महर्षि वाल्मीकि भगवान को याद कर रहे हैं। हमारा देश आध्यात्मिक संस्कृति एवं विविध धर्मों को मानने वाला देश है। हमारे महापुरुषों ने समाजसुधारकों के रूप में इस समाज में योगदान दिया है। भगवान महर्षि वाल्मीकि जी ने भगवान राम के विचारों को, उनके जीवन-दर्शन को समाज के अंदर रखा। भारत में ही नहीं, पूरी दुनिया में महर्षि वाल्मीकि जी की लिखी रामायण उपजीव्य है और लोग अलग-अलग तरीके से भगवान राम के जीवन-दर्शन को प्रस्तुत करते रहे हैं।

मैं अभी 8 तारीख को इंडोनेशिया से आया हूँ और इंडोनेशिया में जावा तथा बाली में भगवान श्रीराम के चरित्र का चित्रण होता है और वहाँ पर अलग-अलग देशों के लोग भगवान राम की लीला को देखने आते हैं। उस अद्‌भुत दृश्य को मैंने देखा।

मैंने कंबोडिया के अंदर अंकोरवाट मंदिर भी देखा, जहाँ 11वीं शताब्दी के भगवान राम की मूर्तियों के चित्रण के आधार पर भगवान राम के जीवन-दर्शन को बताया गया है, महाभारत के जीवन-दर्शन को बताया गया है।

मुझे खुशी है कि आज भारत 21वीं शताब्दी में भी भगवान राम और भगवान श्रीकृष्ण के चरित्र पर चलने का संकल्प ले रहा है। भगवान श्रीराम ने जहाँ आदर्श जीवन जी कर दुनिया को संदेश दिया कि व्यक्ति का आदर्श जीवन कैसा होना चाहिए, व्यक्ति का चरित्र कैसा होना चाहिए, वह उदाहरण भगवान श्रीराम के जीवन-दर्शन से मिलता है।

* महर्षि वाल्मीकि भगवान की जयंती के अवसर पर संबोधन, कोटा, राजस्थान, 9 अक्तूबर, 2022

भगवान श्रीकृष्ण के कर्म दर्शन के माध्यम से जीवन के अंदर व्यक्ति का कर्म करना, यह सिद्धांत भगवान श्रीकृष्ण ने दिया। भगवान श्रीराम और भगवान श्रीकृष्ण के अलग-अलग विचारों को, उनके दर्शन को कई महापुरुषों ने अलग-अलग तरीके से लिखा।

जब हम महर्षि वाल्मीकि जी को याद करते हैं तो महर्षि वाल्मीकि जी ने भगवान श्रीराम के चरित्र को ऐसी दृष्टि से दिखाया कि समाज में सब व्यक्ति बराबर हैं। समाज में न कोई ऊँचा है, न कोई नीचा है। उन्होंने जाति व्यवस्था पर प्रहार किया और यह कहा कि व्यक्ति जाति से नहीं, उसके कर्म की श्रेष्ठता से श्रेष्ठ बनता है।

वाल्मीकि समाज के लोग जो कर्म करते हैं, वह सबसे श्रेष्ठ काम करते हैं, समाज की स्वच्छता का काम करते हैं। इसीलिए आज भारत के अंदर भी वाल्मीकि समाज का सम्मान सबसे बड़ा सम्मान है।

इसीलिए मैं जितना भी वाल्मीकि समाज के लोगों को जानता हूँ, वे अध्यात्म एवं धर्म के माध्यम से अपने चरित्र-निर्माण के साथ व्यक्तित्व-निर्माण की ओर बढ़ रहे हैं। उनमें एक अटूट आस्था है, विश्वास है और भगवान श्रीराम के पदचिह्नों पर चलते हुए एक आदर्श जीवन, एक सात्विक जीवन, सत्य के मार्ग पर चलने वाला जीवन जी रहे हैं।

अभी कुछ दिन पहले हमने दशहरे पर रावण दहन किया है। रावण दहन का अर्थ है अहंकार को समाप्त करना, पाप का विनाश करना। हमारे जीवन के अंदर पाप और अहंकार समाप्त हो और इस पाप-अहंकार को समाप्त करने का काम किसने किया—वाल्मीकि समाज के लोगों ने किया न उनमें अहंकार होता है, न वे पाप की दृष्टि से देखते हैं। हमेशा समाज में पुण्य हो सके, समाज की सेवा हो सके, समर्पण और सेवा के रूप में वाल्मीकि समाज जैसा कोई समाज नहीं है।

इसीलिए आज भगवान श्रीराम के जीवन-दर्शन को देखते हैं तो भगवान श्रीराम के शिष्य के रूप में वीर हनुमान की पूजा दुनिया के अंदर सबसे ज्यादा होती है। जिस तरीके का समर्पण और सेवाभाव वीर हनुमान जी में था, लोग इसी सेवा और समर्पण के कारण उनको सबसे ज्यादा पूजते हैं।

यही कारण है कि युद्ध लड़ा अर्जुन ने, भगवान श्रीकृष्ण ने उनको संदेश दिया, कर्म का संदेश दिया। भगवान श्रीकृष्ण, जो अर्जुन को योद्धा बना रहे थे, खुद भी युद्ध लड़ सकते थे, लेकिन व्यक्ति के जीवन में कर्म और कर्म-सिद्धांत को उन्होंने अपनाया कि व्यक्ति कर्म के आधार पर श्रेष्ठ बनता है और व्यक्ति को कर्म करना चाहिए, अहंकार नहीं करना चाहिए। कर्म जीवन का हिस्सा होना चाहिए, इसलिए कर्म के रूप में भी वाल्मीकि समाज का बहुत बड़ा योगदान है।

मैं कह सकता हूँ कि जितना हम महर्षि वाल्मीकि जी को याद करेंगे, दुनिया के अंदर अलग-अलग देशों में याद कर रहे हैं, भारत के अंदर महर्षि वाल्मीकि जी के जीवन-दर्शन, उनके विचार, सिद्धांत और उनके सत्य के मार्ग पर चलने वाले विचार आने वाली पीढ़ी को प्रेरणा देंगे। इसीलिए भारत में हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने कहा है कि हमें विरासत को हमेशा बचाए रखना है।

हमारी विरासत और हमारी भारतीय संस्कृति हमें आध्यात्मिक रूप से धर्म के मार्ग पर कायम रखती है। कोई भी श्रेष्ठ शासन वही होता है, जो धर्म से चले, किसी भी धर्म की पूजा-उपासना का अगर दुनिया के अंदर कोई सबसे बड़ा केंद्र है, तो वह हिंदुस्तान है, जहाँ सभी धर्मों और पूजा-उपासना को सम्मान दिया जाता है। दुनिया के अंदर धर्म के आधार पर कई देश हैं, लेकिन भारत की यह विविधता है कि यहाँ सब धर्मों का सम्मान किया जाता है। व्यक्ति की श्रेष्ठता का सम्मान किया जाता है। यही भारत की धरती और संस्कृति है। इसलिए उन्होंने जो बातें कही हैं, निश्चित रूप से मैं कह सकता हूँ कि वाल्मीकि समाज से हमेशा से मेरा बहुत स्नेह-प्यार रहा है, उनका आशीर्वाद मुझे मिला है।

जिन-जिन विषयों को उन्होंने रखा है, उनसे भी जो हटकर विषय होंगे, मैं निश्चित रूप से उपयुक्त मंच पर उन बातों को पहुँचाऊँगा। मेरी कोशिश है और अगर आप सरकार से बात करें और वह जमीन दे दे, तो महर्षि वाल्मीकि जी की एक मूर्ति लगाएँ, जिससे आने वाला व्यक्ति जब महर्षि वाल्मीकि जी को देखे, उनके जीवन-दर्शन को देखे, तो उस जीवन-दर्शन से आने वाली पीढ़ी को प्रेरणा मिले। आने वाली पीढ़ी महर्षि वाल्मीकि जी के जीवन को अपने आचरण में लाए, व्यवहार में अपनाए। इसीलिए आज हम सब लोग महर्षि वाल्मीकि जी को याद कर रहे हैं।

हम अगली बार जब महर्षि वाल्मीकि जी की जयंती मनाएँगे तो बड़े स्तर पर मनाएँगे, जिसमें हम देश के बड़े-बड़े लोगों को यहाँ बुलाएँगे। तीन दिनों तक महर्षि वाल्मीकि जी के जीवन पर एक पूरा सेमिनार चलाएँगे। उसमें अलग-अलग क्षेत्रों के महर्षि वाल्मीकि जी के विचारों को, शोध को, रिसर्च को लिखने वाले लोग आएँगे। किस तरीके से महर्षि वाल्मीकि जी की रामायण और उनके जीवन-दर्शन को लिखा है।

मैं सभी आयोजकों को कहूँगा कि अगली बार हम तीन दिनों तक महर्षि वाल्मीकि महोत्सव मनाएँगे और वह उत्सव उत्साहपूर्ण होगा तथा उससे हमारी संस्कृति और आध्यात्मिक ज्ञान से नई पीढ़ी को नए संस्कार, नई चेतना, नई ऊर्जा मिलेगी।

12

भगवान महावीर की शिक्षा : एक शांतिमय और सद्भावनापूर्ण समाज की नींव*

**"दुनिया के अंदर धर्म के आधार पर कई देश हैं,
लेकिन भारत की यह विविधता है कि यहाँ सब धर्मों का सम्मान किया जाता है।
व्यक्ति की श्रेष्ठता का सम्मान किया जाता है।"**

आज महावीर जयंती के इस भव्य उत्सव में सम्मिलित होकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। सर्वप्रथम महावीर स्वामी के चरणों में शत-शत नमन। आचार्य श्री सुनील सागर जी एवं अन्य संतों की भी चरण वंदना करता हूँ। मेरी कामना है कि आप सभी के जीवन में सुख, सफलता और शांति हो तथा भगवान महावीर स्वामी की कृपा आप पर बनी रहे।

भगवान महावीर स्वामी के उदय से भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में एक नए युग की शुरुआत हुई थी। जिस समय पूरे विश्व में अशांति, युद्ध, संघर्ष का वातावरण था, उस समय में उन्होंने विश्व को शांति, अहिंसा, आध्यात्मिकता, धर्म के जीवन-मूल्य प्रदान किए थे और उनके जीवन के ढाई हजार वर्षों के बाद भी आज भी उनकी शिक्षा, उनके आदर्श और उनके सिद्धांत उतने ही प्रासंगिक हैं।

चाहे पर्यावरण का विषय हो, सामाजिक अस्थिरता का विषय हो, मानवता का विषय हो, प्रत्येक विषय पर महावीर स्वामी ने जो कहा, और अपने जीवन में उन्होंने जिन सिद्धांतों का पालन किया, वे आज भी उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं।

और यही कारण है कि आज महावीर जयंती का उत्सव केवल जैनियों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह एक वैश्विक त्योहार है।

---

* भगवान महावीर 2550वीं निर्वाण उत्सव समिति द्वारा आयोजित महावीर जयंती कार्यक्रम में वर्चुअल संबोधन, 4 अप्रैल, 2023

इसे पूरे भारत और दुनिया भर में भव्यता और आध्यात्मिक उत्साह के साथ मनाया जाता है।

भारत सदैव अध्यात्म, शांति और मानवता के प्रति प्रेम की भूमि रही है। आध्यात्मिकता हमेशा हमारे देश में जीवन-शैली रही है। हमारे प्राचीन ग्रंथ, जैसे वेद, पुराण, उपनिषद, पूरे विश्व के लिए ज्ञान, धर्म और उत्तम विचारों के भंडार हैं। हमारी संस्कृति 'वसुधैव कुटुंबकम्' की रही है। हमने सदैव संपूर्ण विश्व को एक परिवार माना है, यह भावना हमारे मानस और संस्कृति में शामिल है।

हमें अपने देश पर गर्व है कि भारत की पवित्र भूमि से दुनिया के महान धर्मों, जैन, बौद्ध, हिंदू और सिख धर्म की उत्पत्ति हुई। हमारे देश में हजारों वर्षों से सभी धर्मों के लोग आपसी सद्भाव और शांति से रहते हैं। हमारी बहुलतावादी संस्कृति पूरे विश्व के लिए एक आश्चर्य है।

"हमारी बहुलतावादी संस्कृति पूरे विश्व के लिए एक आश्चर्य है। यही विविधता हमारी ताकत और शक्ति है। पूर्व से पश्चिम तक, उत्तर से दक्षिण तक, यह भारत को एक साथ बाँधती है, जिससे 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' बनता है।"

यही विविधता हमारी ताकत और शक्ति है। पूर्व से पश्चिम तक, उत्तर से दक्षिण तक, यह भारत को एक साथ बाँधती है, जिससे 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' बनता है।

भारत ने हमेशा पूरे विश्व को, मानवता को, शांति और अहिंसा का मार्ग दिखाया है। भारत ने पूरी दुनिया को सदैव प्रेम, सद्भाव, शांति, अहिंसा, बंधुत्व और आपसी एकता का शाश्वत संदेश दिया है। ये वे संदेश हैं, जिनकी प्रेरणा विश्व को भारत से मिलती है। आज जब पूरे विश्व में युद्ध और अशांति का वातावरण है, तो उचित मार्गदर्शन के लिए दुनिया आज एक बार फिर भारत की ओर देख रही है।

भारत का इतिहास आप देखें तो आप महसूस करेंगे, जब भी मानवता को आंतरिक प्रकाश की जरूरत हुई है, भारत की ही संत परंपरा से कोई-न-कोई सूर्य उदित हुआ है।

कोई-न-कोई महापुरुष, संत और मनीषी हर कालखंड में हमारे देश में रहे हैं, जिन्होंने समाज को सही दिशा दी है।

भगवान महावीर ने तो समस्त मानवता को एक नया संदेश दिया, नया मार्ग दिखाया। यह भगवान महावीर स्वामी की शिक्षा, उनके बताए मार्ग की ही शक्ति है कि जैन धर्म के मानने वाले आज भारत में ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व में अपनी सेवा और समर्पण के भाव के लिए जाने जाते हैं।

भगवान महावीर जैन धर्म की परंपरा के अनुसार 24वें तीर्थंकर थे। राजकुल में जन्म लेने के बावजूद वे अध्यात्म की ओर आकर्षित थे। बारह वर्षों की कठिन तपस्या एवं निरंतर साधना के बाद उन्हें कैवल्य ज्ञान की प्राप्ति हुई, जिसके बाद वे महावीर बने।

वे महावीर थे, उन्होंने अपनी सभी इंद्रियों पर विजय प्राप्त कर ली थी। भगवान महावीर अहिंसा को सबसे उच्च नैतिक गुण मानते थे।

उन्होंने न सिर्फ लोगों को मानवता का पाठ पढ़ाया बल्कि सभी जीवों पर दया करना, एक-दूसरे से प्रेम करना, परोपकार करना भी सिखाया।

महावीर स्वामी की 5 मूल शिक्षाओं को हम पंच-प्रतिज्ञा या महाव्रत कहते हैं। सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य आदि पाँच सिद्धांत हमें त्याग, संयम, प्रेम और करुणा जैसे मानवीय मूल्यों का पाठ पढ़ाते हैं। यही वे गुण हैं जो हमें अनुशासित होना सिखाते हैं, हमें जीवन का वास्तविक अर्थ सिखाते हैं।

भगवान महावीर की स्पष्ट दृष्टि थी, स्पष्ट विजन था कि एक आदर्श समाज की स्थापना तभी हो सकती है, जब मनुष्य के अंदर त्याग, संयम, प्रेम और करुणा जैसे मानवीय गुणों का निवास हो।

"भगवान महावीर की स्पष्ट दृष्टि थी, स्पष्ट विजन था कि एक आदर्श समाज की स्थापना तभी हो सकती है, जब मनुष्य के अंदर त्याग, संयम, प्रेम और करुणा जैसे मानवीय गुणों का निवास हो।"

उनकी शिक्षाओं ने पूरी मानवता को करुणा, दया और प्रेम का जीवन जीने की प्रेरणा दी है। उनकी शिक्षाओं पर चलकर ही हम एक शांतिपूर्ण, न्यायपूर्ण और सद्भावना पूर्ण समाज का निर्माण कर सकते हैं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जैन धर्म ने वास्तव में मानवता को अहिंसा और तपस्या की अवधारणा दी है। दैनिक जीवन में अहिंसा का अभ्यास किस प्रकार किया जा सकता है, इसका सूक्ष्मतम विवरण इसमें दिया गया है। भगवान महावीर स्वामी की शिक्षा के पालन से निस्संदेह हम एक बेहतर मनुष्य बन सकते हैं।

जैन समुदाय की प्रवृत्ति ऐसी रही है कि वे जहाँ भी जाते हैं, उस समाज को, पूरे समुदाय को अपना लेते हैं। उसके बाद चाहे शिक्षा हो, मेडिकल हो, उद्योग हो, आर्थिक क्षेत्र हो, स्टार्ट-अप हो, हर क्षेत्र में सामुदायिक सेवा के लिए वे सबसे आगे होते हैं।

यह इसीलिए संभव हो पाता है कि समाज के गरीबों, दलितों और उपेक्षित वर्गों के उत्थान के प्रति आपकी प्रतिबद्धता आपके संस्कार में समाहित है। इसके लिए आपको दुनिया भर में सराहा जाता है।

हमारा सौभाग्य है कि हमें आचार्य सुनील सागर जी जैसे संतश्री का सत्संग मिला है। आचार्यश्री की महिमा इतनी बड़ी है कि उसका वर्णन करना अत्यंत कठिन कार्य है। वे महान संत हैं, महर्षि हैं, उनके नेतृत्व में जैन धर्म ने नई ऊँचाइयाँ प्राप्त की हैं।

आचार्यश्री बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। उनकी लेखनी जहाँ संस्कृत, प्राकृत के छंदों का निर्माण करने में अद्‌भुत है, वहीं हिंदी की सरल कविताओं को लिखने में भी सिद्धहस्त है। साहित्य की अलग-अलग विधाओं में आचार्यश्री ने विविध विषयों पर सरल-सुबोध एवं सुगम भाषा में लिखा है। मेरा सौभाग्य है, मुझे उनका स्नेह और आशीर्वाद सदैव प्राप्त होता है।

अंत में आज महावीर जयंती के इस पावन अवसर पर मैं अपने जैन भाइयों के साथ-साथ सभी देशवासियों को पुनः हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ, बधाई देता हूँ।

आइए, आज हम संकल्प लें कि भगवान महावीर स्वामी ने जिस उत्कृष्ट राष्ट्र और उत्कृष्ट समाज के निर्माण के लिए शिक्षा दी थी, हम अपने दैनिक जीवन में उन शिक्षाओं का अनुसरण करें, उनके जीवन से प्रेरणा लें। हम उनके महान विचारों और प्रथाओं को आगे बढ़ाने का संकल्प लें और सभी के कल्याण के लिए एक सामंजस्यपूर्ण तथा प्रगतिशील समाज का निर्माण करें। भगवान महावीर की शिक्षाओं की सच्ची अनुपालना तभी हो पाएगी, जब हमारा हर प्रयास समाज के कमजोर वर्गों के कल्याण के लिए होगा।

आप सबको पुनः भगवान महावीर जयंती की शुभकामनाएँ। भगवान आपका कल्याण करें।

13

वेद–भारतीय संस्कृति, दर्शन और परंपरा के आधार*

**"हमारे प्राचीन वेदों में जो तर्क दिए गए हैं,
जो सूत्र और श्लोक दिए गए हैं,
उनमें और आज के विज्ञान में बहुत सी समानताएँ हैं।"**

विश्व वेद परिषद और परमार्थ निकेतन आश्रम के तत्त्वावधान में आयोजित किए जा रहे अखिल भारतीय वेद विज्ञान सम्मेलन में आज आप सभी के बीच उपस्थित होकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है।

वेद सिर्फ ग्रंथ नहीं है, बल्कि हमारी संस्कृति है, हमारी जीवनशैली है। हमारा जीवन कैसा होना चाहिए, किन आदर्शों और मूल्यों के साथ जीवन होना चाहिए, हमारे वेद इसका संदेश देते हैं।

वेद और विज्ञान पर जब हम मंथन कर रहे हैं, तो हमें यह समझना होगा कि ज्ञान-विज्ञान हर युग में रहा है। मनुष्य जब से तार्किक हुआ है, जब से विचार-मंथन करने लगा है, तब से विज्ञान का महत्त्व रहा है। चिंतन-मनन और प्रयोग ही विज्ञान है।

आज यह पूरी दुनिया मानती है कि ऋग्वैदिक और वैदिक सभ्यता दुनिया की सबसे प्राचीन सभ्यताओं में रही हैं। हमारे प्राचीन वेदों में जो तर्क दिए गए हैं, जो सूत्र और श्लोक दिए गए हैं, उनमें और आज के विज्ञान में बहुत सी समानताएँ हैं।

ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद—संसार के इन महान ग्रंथों के पीछे जो चिंतन है, वह बड़ा समृद्ध चिंतन है। वह इहलौकिक भी है और पारलौकिक भी है। जिस समय वेद अवतरित हुए, उस समय भले ही तकनीक आज जितनी विकसित न थी, लेकिन अध्यात्म, चिंतन और मनन अत्यंत विकसित था।

---

* अखिल भारतीय वेद विज्ञान सम्मेलन में संबोधन, नई दिल्ली, 29 अप्रैल, 2023

आधुनिक दुनिया में 300 साल पहले औद्योगिक क्रांति हुई। कल-कारखानों से जब विषैला धुआँ निकला, फैक्ट्रियों से विषैले रसायन निकले; जब ग्लोबल वार्मिंग बढ़ने लगी, पर्वतों की बर्फ पिघली और समुद्रों का जल-स्तर बढ़ने लगा, तब जाकर दुनिया को समझ आया कि अगर मनुष्य को जीवित रहना है, तो पर्यावरण को बचाकर रखना होगा। अब जाकर दुनिया पर्यावरण संरक्षण का महत्त्व समझ पाई है।

आज हमारे सामने जो सबसे बड़ी चुनौती है, वह पर्यावरण और जलवायु को बचाए रखने की चुनौती है। हम जानते हैं कि यदि पर्यावरण को नहीं बचाया गया, तो मानवता को भी नहीं बचाया जा सकता है। इसलिए आज हम अपने स्वार्थ के कारण पर्यावरण का संरक्षण करते हैं। लेकिन पर्यावरण का संरक्षण हमारा कर्तव्य है, हमारा संस्कार है, यह ज्ञान हमें प्राचीन वेदों से मिलता है।

"हमारे वेदों में अनेक प्राकृतिक घटनाओं जैसे कि सितारों और ग्रहों की गति, सूर्य, चंद्रमा, पृथ्वी के बारे में सटीक जानकारी मिलती है।"

अथर्ववेद का पृथ्वी सूक्त कहता है कि 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्या' अर्थात् धरती हमारी माता है और हम इसके पुत्र हैं। पृथ्वी माता की तरह सभी मनुष्यों का भरण-पोषण करती है और हम सबका कर्तव्य है कि हम पुत्र की तरह जिम्मेदारी निभाते हुए इसका संरक्षण करें।

मॉडर्न साइंस भी इस बात से सहमत है कि इस ग्रह पर रहने वाले सभी जीवों को भोजन इसी ग्रह से मिलता है और सभी मनुष्यों के अस्तित्व के लिए यह जरूरी है कि हम पृथ्वी और पर्यावरण की रक्षा करें, इसका संरक्षण करें।

यहाँ विज्ञान और वेद में अंतर इतना सा ही है कि विज्ञान के अनुसार यह हमारी जरूरत है। यानी अगर हम पृथ्वी और अपने पर्यावरण को नहीं बचाएँगे, तो हम भी नहीं बच सकते हैं। इसलिए विज्ञान के अनुसार यह हमारी मजबूरी है कि अपने अस्तित्व के लिए हम पृथ्वी को बचाएँ।

वेद इसे हमारा कर्तव्य बताते हैं, हमारा दायित्व बताते हैं। अपने ग्रह पृथ्वी को बचाना हमारी मजबूरी नहीं, बल्कि हमारे संस्कारों का हिस्सा है।

अपनी भूमि की रक्षा करना हमारे संस्कार और कर्तव्य हैं। इस भाव के साथ हम पूर्ण समर्पण से काम करते हैं। इसी भाव के साथ भारत काम कर रहा है।

हमारे इन्हीं संस्कारों और कर्तव्य भावना का नतीजा है कि दुनिया में जब औद्योगिक क्रांति की शुरुआत हुई, दुनिया में जब पर्यावरण संरक्षण पर पहली बार विचार किया गया, उससे भी कई साल पहले (1730 ईस्वी में) हमारे देश में राजस्थान की एक महिला अमृता

देवी बिश्नोई और 363 लोग पेड़ों को बचाने के लिए कट गए थे। आप उस सच्चाई के बारे में जानकर हैरत में पड़ जाएँगे। मैं अनुरोध करूँगा कि सभी उस घटना को जानें।

हमारे वेदों का एक मूल चिंतन यह है कि यह जीवन पाँच तत्त्वों से बना है—जल, अग्नि, वायु, पृथ्वी और आकाश। वेदों का हमारा चिंतन सृजन की बात करता है, निर्माण की बात करता है, शांति की बात करता है, विनाश की नहीं।

सृजन और निर्माण का यही चिंतन विज्ञान में भी काम करता है। हम परमाणु शक्ति से विद्युत भी बना सकते हैं और परमाणु बम भी बना सकते हैं। हम सभी अवगत हैं कि परमाणु बम इस दुनिया का विनाश कर सकता है, जबकि इसके रचनात्मक उपयोग से हम और अधिक ऊर्जा का निर्माण कर सकते हैं।

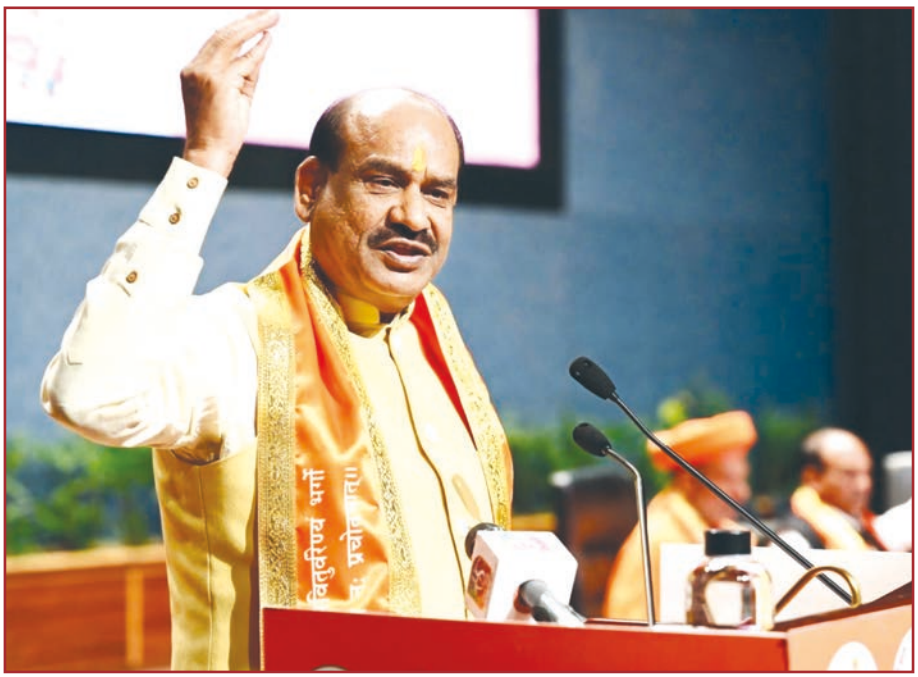

अखिल भारतीय वेद विज्ञान सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए

दुनिया में कोई ऐसा उदाहरण नहीं मिलता जब भारत ने आगे बढ़कर किसी दूसरे राष्ट्र पर हमला किया हो, किसी को नुकसान पहुँचाया हो, क्योंकि हमारी प्रकृति ऐसी नहीं है।

हम सत्य, शाश्वत और शांति को मानने वाले लोग हैं। वसुधैव कुटुंबकम् के हमारे दर्शन ने दुनिया को सहभागिता के साथ जीवन जीने का रास्ता बताया है और आज इसी आधार पर भारत 'एक पृथ्वी-एक परिवार-एक भविष्य' के विचार के साथ जी-20 में दुनिया का नेतृत्व कर रहा है।

वेद और विज्ञान पर जब आज यहाँ हम सम्मेलन का आयोजन कर रहे हैं तो मैं समझता हूँ कि आज सबसे अधिक जरूरी यह है कि आज की देश की वर्तमान पीढ़ी को हम अपने स्वर्णिम इतिहास के बारे में बताएँ।

स्कूल–कॉलेज में पढ़ने वाले स्टूडेंट्स को यह जानकारी होनी चाहिए कि भारत का प्राचीन, भारत का अतीत बहुत समृद्ध रहा है। स्कूल से हमें यह करना चाहिए।

आज भी यह पढ़ाया जाता है और बहुत से बालकों को, युवाओं को लगता है कि भारत की खोज 1498 में एक पुर्तगाली नाविक वास्को–डि–गामा ने की पर क्या उससे पहले भारत नहीं था? भारत का इतिहास तो सभ्यताओं की शुरुआत का इतिहास है। हमारे यहाँ की नगरीय सभ्यताओं—हड़प्पा और मोहनजोदड़ो ने दुनिया भर की सभ्यताओं को रास्ता दिखाया है।

जब तक भारत के युवाओं के मन में अपने देश के प्रति गौरव का भाव नहीं होगा, तब तक हम अपने महान वेदों और अपने संस्कारों का प्रसार नहीं कर पाएँगे।

माननीय प्रधानमंत्री जी ने इस स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से 'पंच प्रण' का मंत्र दिया था। उसमें एक प्रण है कि हमें हमारी विरासत पर गर्व होना चाहिए।

भारत के महान वैज्ञानिक आर्यभट्ट ने शून्य का आविष्कार किया था। महर्षि कणाद ने बताया था कि पदार्थ के सबसे छोटे से छोटे कण को और अधिक तोड़ा नहीं जा सकता है। भारत के महान गणितशास्त्री रामानुजन ने गणित के अद्भुत सूत्र दिए। बोधायन और आर्यभट्ट जैसे विद्वानों ने गणित में पाई और दशमलव के महान आविष्कार किए। आज भी बड़ी से बड़ी गणनाएँ वैदिक गणित से सरलता से हो जाती हैं।

हजारों वर्ष पहले के हमारे नक्षत्र विज्ञान और खगोल विज्ञान का महत्त्व आज भी बहुत प्रासंगिक है। फसलों की बुवाई का सही समय पता लगाने के लिए, ज्योतिष, सूर्य ग्रहण–चंद्र ग्रहण सहित अनेक घटनाओं की सही–सही जानकारी हमें हमारे प्राचीन ग्रंथों से मिलती है।

हमारे वेदों में अनेक प्राकृतिक घटनाओं जैसे कि सितारों और ग्रहों की गति, सूर्य, चंद्रमा, पृथ्वी के बारे में सटीक जानकारी मिलती है।

हमारे देश में एक बहुत बड़ी आबादी या मैं कहूँ कि अधिकतर आबादी वेदों के बारे में ठीक से नहीं जानती है। इसके पीछे एक कारण यह भी है कि वेद संस्कृत में लिखे गए थे और आज की पीढ़ी संस्कृत भाषा ही नहीं जानती है। परमार्थ निकेतन जैसे कुछ संस्थान हैं, जो आज भी संस्कृत को आगे बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं।

आज दुनिया के पास भौतिक चिंतन है। उसी के बल पर वह आगे बढ़ रही है। मगर हमारे पास आध्यात्मिक चिंतन भी है। दुनिया भौतिक चिंतन के साथ रॉकेट और यान बनाकर अंतरिक्ष में जा सकती है, लेकिन अंतरिक्ष में मानव के लिए क्या संभावनाएँ हैं, अंतरिक्ष के

क्या खतरे हैं, मानव जाति और अंतरिक्ष के क्या संबंध हैं, यह विचार भौतिक ज्ञान से संभव नहीं। इसके लिए तार्किक और आध्यात्मिक विचार होना चाहिए।

हमारे पास जो सांस्कृतिक चेतना है, जो आध्यात्मिक चिंतन है, उसी के चलते भारत के नौजवान आज पूरी दुनिया में कई क्षेत्रों में नेतृत्व कर रहे हैं।

वेदों में वायु, जल, पृथ्वी, ध्वनि प्रदूषण आदि अनेक विषयों के बारे में चिंतन किया गया है।

मुझे बताया गया है कि अखिल भारतीय वेद विज्ञान सम्मेलन के अंदर वेदों में कृषि विज्ञान, जल विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, योग विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, रसायन विज्ञान, पशु विज्ञान, मानसून विज्ञान, गणित विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, भौतिक विज्ञान, दार्शनिक तत्त्व आदि विषयों पर देश भर से विद्यार्थियों, शिक्षकों और शोधार्थियों ने अपने-अपने शोध तैयार किए हैं। मैं आपके इस सामूहिक प्रयास की प्रशंसा करता हूँ। इस सभागार में उपस्थित हर एक विद्यार्थी, हर एक शिक्षक और व्यक्ति इसके लिए प्रशंसा का पात्र है।

वेद ब्रह्म विद्या है और इस विद्या का प्रसार करना समस्त भारतवासियों का कर्तव्य है। वैदिक शिक्षा कोई धार्मिक शिक्षा नहीं है, बल्कि यह हमें सदाचार और चरित्रवान बनाने का मंत्र है। यह परम ज्ञान और परम सत्य के अनुसंधान का मार्ग प्रशस्त करता है।

वेदों के संरक्षण और प्रचार-प्रसार से भारतीय संस्कृति फले-फूलेगी और नई ऊँचाइयों को छुएगी। आज समाज अधूरे अध्ययन एवं सीमित ज्ञान के कारण वेदों के ज्ञान से वंचित हो रहा है, हमारी परंपरा तो रह गई हैं, लेकिन उन परंपराओं के प्राण चले गए हैं। हमें प्राण वापस लाने की जरूरत है।

हमें वर्तमान समय के अनुसार वेदों के ज्ञान को सरल भाषा में आम जन तक पहुँचाने के लिए प्रयास करने चाहिए। कालांतर में भी हमारे ऋषि-मुनियों ने ऐसे अद्‌भुत प्रयास किए हैं। उन्होंने वैदिक ऋचाओं की सरल व्याख्या की थी। पुराण उसी गूढ़ वैदिक ज्ञान का रोचक व सरल संस्करण है।

वेदों को सरल भाषा में लिखा ही क्यों जाए, वेद तो श्रुति हैं, जिन्हें सुनने व सुनाने की परंपरा थी। इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए वेदों का रोचक पाठ भी युवाओं तक पहुँचाया जा सकता है। हमें स्वाध्याय एवं जिज्ञासा के साथ वेद मंत्रों को समझना और समझाना होगा, ताकि इस छिपे हुए ज्ञान का लाभ आम जनता को मिल सके।

मैं इस सभागार में अनेक युवाओं को देख रहा हूँ। मुझे आप नौजवानों से बहुत आशा है। आप वेदों का गहन अध्ययन कर, हमारे इन ग्रंथों में जो ज्ञान समाहित है, उसे पूरी दुनिया को बता सकते हैं। आप आज की तकनीक भी समझते हैं और वैदिक ज्ञान की जानकारी भी रखते हैं।

आज सूचना और प्रचार–प्रसार का तंत्र बहुत मजबूत हुआ है। सोशल मीडिया, वेबसाइट, मोबाइल एप्लिकेशन, पॉडकास्ट जैसे अनेक माध्यमों के द्वारा हम वेदों का ज्ञान पूरी दुनिया तक पहुँचा सकते हैं।

इसके लिए हम अपने इन ग्रंथों का अच्छी तरह अध्ययन करें, इनके गूढ़ ज्ञान और रहस्य को समझें और फिर उसका सरलीकरण कर दुनिया के सामने रखें।

भारतीय दर्शन विशाल एवं समृद्ध है। भारत सदियों से अपनी संस्कृति, अपने दर्शन और विरासत के लिए पूरे संसार में जाना जाता है। वेद ही हमारी संस्कृति, दर्शन और परंपरा के आधार हैं।

हमारे वेदों में वह जीवन ज्ञान है, जो मानव मात्र के उच्चतम विकास का मार्ग बताता है। यदि वैदिक शिक्षा को आधार बनाया जाए तो आज मानव की बहुत सी समस्याओं का समाधान निकल सकता है।

इसी बात को ध्यान में रखते हुए हमारी नई शिक्षा नीति में संस्कृत शिक्षा को शैक्षिक पाठ्यक्रम की मुख्य धारा में लाने का प्रयास किया गया है। संस्कृत के साथ ही पाली एवं प्राकृत जैसी प्राचीन भारतीय भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान को आम जन तक सुगमता से पहुँचाने पर कार्य किया जा रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इन प्रयासों से संस्कृत एवं वैदिक शिक्षा को नया आयाम मिलेगा तथा अन्य संस्थाएँ एवं व्यक्ति भी इस दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित होंगे।

मैं एक बार फिर वेद और विज्ञान सम्मेलन के आयोजन के लिए 'विश्व वेद परिषद' और 'परमार्थ निकेतन आश्रम' की प्रशंसा करता हूँ। यहाँ इस दो दिवसीय सम्मेलन में देश भर से आए नौजवानों को साधुवाद देता हूँ। मुझे विश्वास है कि आपकी प्रतिबद्धता वैदिक शिक्षा को नए आयाम देगी।

14

यज्ञ : आत्म साक्षात्कार का मार्ग*

**"यज्ञ करने से वातावरण की शुद्धि होती है,
सकारात्मक ऊर्जा और वातावरण का प्रवाह होता है।"**

श्री 51 कुंडीय लक्ष्मी महायज्ञ में पधारे सभी लोगों को नमस्कार।

श्रीलक्ष्मी महायज्ञ समस्त संसार के लिए कल्याणकारी है। इस यज्ञ में बैठने मात्र से ही सौ जन्मों का फल मिलता है। सार्वजनिक हित, विश्व शांति और कल्याण के उद्देश्य से प्रतिवर्ष लक्ष्मी महायज्ञ और कथा का आयोजन किया जा रहा है। इस महायज्ञ का पुण्य लाभ आयोजन करवाने वाले को तो मिलता ही है, साथ ही यज्ञ में भाग लेने वाले सभी लोगों और क्षेत्रवासियों को भी पुण्य लाभ मिलता है।

जीवन में केवल ज्ञान प्राप्त कर लेना ही काफी नहीं है, बल्कि इसके साथ भक्ति भी जरूरी है। यज्ञ, सत्संग व कथा के माध्यम से मनुष्य भगवान की शरण में पहुँचता है, वरना वह इस संसार में आकर मोहमाया के चक्कर में पड़ जाता है, इसीलिए मनुष्य को समय निकालकर ऐसे आयोजनों में हिस्सा लेना चाहिए।

यज्ञ हमारी समृद्ध संस्कृति का हिस्सा हैं। यह हमारी परंपरा, हमारी पूजा पद्धति का अभिन्न अंग है। यज्ञ सिर्फ एक शब्द के तौर पर ही नहीं, रूप के तौर पर भी व्यापक है। श्रीकृष्ण अर्जुन को मर्म समझाते हुए दान, पुण्य, सेवा, उपकार, रक्षा आदि सत्कर्मों को यज्ञ का ही प्रकार बताते हैं। यज्ञ विष्णु का स्वरूप हैं और विष्णु व्यापक हैं। इसलिए ज्ञान, ध्यान, आराधना और चिंतन यज्ञ हैं, सेवा भी यज्ञ है। प्राचीन समय में हमारे ऋषि-मुनि वन में रहा करते थे और सुबह व शाम दोनों समय यज्ञ किया करते थे।

यज्ञ करने से वातावरण की शुद्धि होती है, सकारात्मक ऊर्जा और वातावरण का प्रवाह होता है। हमारी संस्कृति में यज्ञ के समय वृक्षों में भगवान का वास मानकर पीपल,

---

* 51 कुंडीय लक्ष्मी महायज्ञ के उपलक्ष्य में ध्वजारोहण कार्यक्रम में संबोधन कोटा, राजस्थान, 29 मई 2023

बरगद, आम, अशोक, बिल्व, पारिजात, आँवला आदि वृक्षों की पूजा की जाती है। यज्ञ को सफलता और सिद्धि का आधार माना जाता है।

यज्ञ का आधार अग्नि है और अग्नि अनमोल है। हमारी संस्कृति के अनुसार यज्ञ और व्रत आदि से शरीर, आत्मा के साथ प्रकृति संतुलन मजबूत होता है। यज्ञ से ही सूर्य अपनी भूमिका में आता है और यज्ञ से ही जीवनाधार बादल बनकर बरसता है। कहा भी है 'यज्ञाद् भवति पर्जन्यो यज्ञकर्म समुद्भव:।' यज्ञ में प्राणिमात्र के सुखी होने की कामना निहित है।

यज्ञ योग की विधि है, जो परमात्मा द्वारा हृदय में संपन्न होती है। यज्ञ शुद्ध होने की क्रिया है। यज्ञ का तात्पर्य है—त्याग, बलिदान, शुभ कर्म। अपने प्रिय खाद्य पदार्थों एवं मूल्यवान सुगंधित पौष्टिक द्रव्यों को अग्नि एवं वायु के माध्यम से समस्त संसार के कल्याण के लिए यज्ञ द्वारा वितरित किया जाता है। यज्ञ हमें दूसरों के कल्याण के लिए त्याग करना सिखाता है।

"जीवन में केवल ज्ञान प्राप्त कर लेना ही काफी नहीं है,
बल्कि इसके साथ भक्ति भी जरूरी है।"

इस संसार में व्यक्तिगत उन्नति और सामाजिक प्रगति का सारा आधार सहकारिता, त्याग, परोपकार आदि पर निर्भर करता है। यदि माता अपने रक्त-मांस में से एक भाग नए शिशु का निर्माण करने के लिए न त्यागे, प्रसव की वेदना न सहे, अपना शरीर निचोड़कर उसे दूध न पिलाए, पालन-पोषण में कष्ट न उठाए और यह सब कुछ नितांत निस्स्वार्थ भाव से न करे; तो फिर मनुष्य का जीवन धारण कर सकना भी संभव न हो।

दूध को मथने से उसका जल और घी अलग-अलग हो जाते हैं। अब अग्नि में घी डाला जाता है, जिससे अग्नि उसे प्रकाश में परिवर्तित कर देती है। अग्नि और घी का यह प्रतीकात्मक प्रयोग सिर्फ यह ज्ञान देता है कि जब ज्ञान को अग्नि रूपी सत्य में डाल दिया जाता है, तब इस कर्म का प्रभाव अलग हो जाता है और अग्नि उस ज्ञान को संसार में प्रकाशित कर अंधकार को दूर करती है। दूध, घी, अग्नि और प्रकाश, क्रमश: अनुभव, ज्ञान, विवेक और सत्य हैं; और यज्ञ उनका एक सामंजस्य है।

यदि यज्ञ भावना यानी त्याग भाव के साथ मनुष्य ने अपने को जोड़ा न होता, तो अपनी शारीरिक असमर्थता और दुर्बलता के कारण अन्य पशुओं की प्रतियोगिता में यह कब का अपना अस्तित्व खो बैठा होता। यह जितना भी अब तक बढ़ा है, उसमें उसकी यज्ञ-भावना ही एकमात्र माध्यम है। आगे भी यदि प्रगति करनी हो, तो उसका आधार यही भावना होगी।

प्रकृति का स्वभाव भी यज्ञ-परंपरा के अनुरूप है। समुद्र बादलों को उदारतापूर्वक जल देता है, बादल एक स्थान से दूसरे स्थान तक उसे ढोकर ले जाने और बरसाने में मेहनत करते हैं। नदी, नाले प्रवाहित होकर भूमि को सींचते हैं और प्राणियों की प्यास बुझाते हैं।

वृक्ष एवं वनस्पतियाँ अपने अस्तित्व का लाभ दूसरों को ही देती हैं। पुष्प और फल दूसरे के लिए ही जीते हैं। सूर्य, चंद्र, नक्षत्र, वायु—ये सभी अपने लाभ के लिए नहीं, बल्कि दूसरों के लिए ही हैं। शरीर का प्रत्येक अवयव अपने निज के लिए नहीं, वरन् समस्त शरीर के लाभ के लिए ही अनवरत गति से कार्यरत रहता है। ऋषियों ने कहा है—यज्ञ ही इस संसार-चक्र का धुरा (कमानी) है। धुरा टूट जाने पर गाड़ी का आगे बढ़ सकना कठिन है।

प्राचीन काल में तीर्थ वहीं बने हैं, जहाँ बड़े-बड़े यज्ञ हुए थे। जिन घरों में, जिन स्थानों में यज्ञ होते हैं, वह भी एक प्रकार का तीर्थ बन जाता है और उन घरों में जो लोग रहते हैं, उनकी मनोस्थिति उच्च, सुविकसित और सुसंस्कृत रहती है।

"यज्ञ के द्वारा काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, ईर्ष्या, द्वेष, कायरता, कामुकता, आलस्य, आवेश, संशय आदि का नाश होता है।"

यज्ञ को पापनाशक भी कहा गया है। यज्ञ के प्रभाव से सुसंस्कृत हुई विवेकपूर्ण मनोभूमि का प्रतिफल जीवन के प्रत्येक क्षण को स्वर्ग जैसे आनंद से भर देता है, इसलिए यज्ञ को स्वर्ग देने वाला कहा गया है।

यज्ञ से आत्मा में ऋषि तत्त्व की वृद्धि होती है और आत्मा को परमात्मा से मिलाने का परम लक्ष्य बहुत सरल हो जाता है। आत्मा और परमात्मा को जोड़ देने का, बाँध देने का कार्य यज्ञ की अग्नि द्वारा ऐसे ही होता है, जैसे लोहे के टूटे हुए टुकड़ों को वेल्डिंग की अग्नि जोड़ देती है। यज्ञ के द्वारा काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, ईर्ष्या, द्वेष, कायरता, कामुकता, आलस्य, आवेश, संशय आदि का नाश होता है।

अनेक प्रयोजनों के लिए, अनेक कामनाओं की पूर्ति के लिए, अनेक विधानों के साथ, अनेक विशिष्ट यज्ञ भी किए जा सकते हैं। दशरथ ने यज्ञ करके चार उत्कृष्ट संतानें प्राप्त की थीं। अग्निपुराण तथा उपनिषदों में वर्णित पंचाग्नि विद्या में ये रहस्य बहुत विस्तारपूर्वक बताए गए हैं। विश्वामित्र जैसे ऋषियों ने असुरता निवारण के लिए बड़े-बड़े यज्ञ किए थे। राम-लक्ष्मण को ऐसे ही एक यज्ञ की रक्षा के लिए स्वयं जाना पड़ा था। लंका युद्ध के बाद राम ने दस अश्वमेध यज्ञ किए थे। महाभारत के पश्चात् श्रीकृष्ण ने भी पांडवों से एक महायज्ञ कराया था, उनका उद्देश्य युद्ध के कारण हुए दुःख और बुराई को समाप्त करना था।

हमारे जीवन की प्रधान नीति 'यज्ञ' भाव से परिपूर्ण होनी चाहिए। हम यज्ञ आयोजनों में लगें—परमार्थ परायण बनें और जीवन को यज्ञ परंपरा में ढालें। हमारा जीवन यज्ञ के

समान पवित्र, प्रखर और प्रकाशवान हो। गंगास्नान से जिस प्रकार पवित्रता, शांति, शीतलता, आदरता को हृदयंगम करने की प्रेरणा ली जाती है, उसी प्रकार यज्ञ से तेजस्विता, प्रखरता, परमार्थ-परायणता एवं उत्कृष्टता का प्रशिक्षण मिलता है। यज्ञ वह पवित्र प्रक्रिया है, जिसके द्वारा अपावन एवं पावन के बीच संपर्क स्थापित किया जाता है।

यज्ञ की प्रक्रिया को जीवन-यज्ञ का एक रिहर्सल कहा जा सकता है। अपने घी, शक्कर, मेवा, औषधियाँ आदि बहुमूल्य वस्तुएँ जिस प्रकार हम परमार्थ प्रयोजनों में होम करते हैं, उसी तरह अपनी प्रतिभा, विद्या, बुद्धि, समृद्धि, सामर्थ्य आदि को भी विश्व मानव के चरणों में समर्पित करना चाहिए। इस नीति को अपनाने वाले व्यक्ति न केवल समाज का, बल्कि अपना भी सच्चा कल्याण करते हैं।

संसार में जितने भी महापुरुष, देवमानव हुए हैं, उन सभी को यही नीति अपनानी पड़ी है। जो उदारता, त्याग, सेवा और परोपकार के लिए कदम नहीं बढ़ा सकता, उसे जीवन की सार्थकता का श्रेय और आनंद भी नहीं मिल सकता।

यज्ञ सामूहिकता का प्रतीक है। अन्य उपासनाएँ या धर्म-प्रक्रियाएँ ऐसी हैं, जिन्हें कोई अकेला कर या करा सकता है; पर यज्ञ ऐसा कार्य है, जिसमें अधिक लोगों के सहयोग की आवश्यकता है। होली आदि पर्वों पर किए जाने वाले यज्ञ तो सदा सामूहिक ही होते हैं। यज्ञ आयोजनों से सामूहिकता, सहकारिता और एकता की भावनाएँ विकसित होती हैं।

प्रत्येक शुभ कार्य, प्रत्येक पर्व-त्योहार, संस्कार यज्ञ के साथ संपन्न होता है। यज्ञ भारतीय संस्कृति का पिता है। यज्ञ भारत की एक मान्य एवं प्राचीनतम वैदिक उपासना है। धार्मिक एकता एवं भावनात्मक एकता को लाने के लिए ऐसे आयोजनों की सर्वमान्य साधना का आश्रय लेना सब प्रकार से दूरदर्शितापूर्ण है।

लोकमंगल के लिए, जन-जागरण के लिए, वातावरण के परिशोधन के लिए स्वतंत्र रूप से भी यज्ञ आयोजन संपन्न किए जाते हैं। संस्कारों और पर्व-आयोजनों में भी उसी की प्रधानता है।

हमारी प्राचीन संस्कृति को अगर एक ही शब्द में समेटना हो तो वह है यज्ञ। 'यज्ञ' शब्द संस्कृत की यज् धातु से बना हुआ है, जिसका अर्थ होता है दान, देवपूजन एवं संगतीकरण। भारतीय संस्कृति में यज्ञ का व्यापक अर्थ है, यज्ञ मात्र अग्निहोत्र को ही नहीं कहते हैं वरन् परमार्थ परायण कार्य भी यज्ञ है। यज्ञ स्वयं के लिए नहीं किया जाता है बल्कि संपूर्ण विश्व के कल्याण के लिए किया जाता है।

यज्ञ का प्रचलन वैदिक युग से है, वेदों में यज्ञ की विस्तार से चर्चा की गई है, बिना यज्ञ के वेदों का उपयोग कहाँ होगा और वेदों के बिना यज्ञ कार्य भी कैसे पूर्ण हो सकता है। अस्तु यज्ञ और वेदों का अन्योन्याश्रय संबंध है।

जिस प्रकार मिट्टी में मिला अन्न कण सौ गुना हो जाता है, उसी प्रकार अग्नि से मिला पदार्थ लाख गुना हो जाता है। अग्नि के संपर्क में कोई भी द्रव्य आने पर वह सूक्ष्मीभूत होकर पूरे वातावरण में फैल जाता है और अपने गुण से लोगों को प्रभावित करता है। इसको इस तरह समझ सकते हैं कि जैसे लाल मिर्च को अग्नि में डालने पर वह अपने गुण से लोगों को प्रताड़ित करती है, इसी तरह सामग्री में उपस्थित स्वास्थ्यवर्धक औषधियाँ जब यज्ञाग्नि के संपर्क में आती हैं, तब वे अपना औषधीय प्रभाव व्यक्ति के स्थूल व सूक्ष्म शरीर पर दिखाती हैं और व्यक्ति स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करता चला जाता है।

"यज्ञ परमात्मा तक पहुँचने का सोपान है।
उसका सान्निध्य पाने का माध्यम है। यज्ञ में प्रकट अग्नि साक्षात् भगवान है।"

यज्ञ की महिमा अनंत है। यज्ञ से आयु, आरोग्यता, तेजस्विता, विद्या, यश, पराक्रम, वंशवृद्धि, धन-धान्यादि, सभी प्रकार के राज-भोग, ऐश्वर्य, लौकिक एवं पारलौकिक वस्तुओं की प्राप्ति होती है। प्राचीन काल से लेकर अब तक रुद्रयज्ञ, सूर्ययज्ञ, गणेशयज्ञ, लक्ष्मीयज्ञ, श्रीयज्ञ, लक्षचंडी भागवत यज्ञ, विष्णुयज्ञ, ग्रह-शांति यज्ञ, पुत्रेष्टि, शत्रुंजय, राजसूय, ज्योतिष्टोम, अश्वमेध, वर्षायज्ञ, सोमयज्ञ, गायत्री यज्ञ इत्यादि अनेक प्रकार के यज्ञ होते चले आ रहे हैं। हमारा शास्त्र, इतिहास, यज्ञ के अनेक चमत्कारों से भरा पड़ा है। जन्म से लेकर मृत्यु तक के सभी सोलह-संस्कार यज्ञ से ही प्रारंभ होते हैं एवं यज्ञ में ही समाप्त हो जाते हैं।

यज्ञ करने से व्यष्टि नहीं अपितु समष्टि का कल्याण होता है। (इसका अर्थ है कि यज्ञ करने से किसी एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि समस्त मानवों का कल्याण होता है)।

यज्ञ को वेदों में 'कामधूक्' कहा गया है, मनुष्य के समस्त अभावों एवं बाधाओं को दूर करने वाला। 'यजुर्वेद' में कहा गया है कि जो यज्ञ को त्यागता है, उसे परमात्मा त्याग देता है। यज्ञ के द्वारा ही साधारण मनुष्य देव-योनि प्राप्त करते हैं और स्वर्ग के अधिकारी बनते हैं। यज्ञ को सर्व कामना पूर्ण करने वाली कामधेनु और स्वर्ग की सीढ़ी कहा गया है। इतना ही नहीं, यज्ञ के जरिए आत्म-साक्षात्कार और ईश्वर प्राप्ति भी संभव है।

यज्ञ भारतीय संस्कृति का आदि प्रतीक है। शास्त्रों में गायत्री को माता और यज्ञ को पिता माना गया है। कहते हैं, इन्हीं दोनों के संयोग से मनुष्य का दूसरा, यानी आध्यात्मिक जन्म होता है, जिसे द्विजत्व कहा गया है। एक जन्म तो वह है, जिसे इंसान शरीर के रूप में माता-पिता के जरिए लेता है। यह तो सभी को मिलता है, लेकिन आत्मिक रूपांतरण द्वारा आध्यात्मिक जन्म यानी दूसरा जन्म किसी-किसी को ही मिलता है। शारीरिक जन्म तो संसार में आने का बहाना मात्र है, लेकिन वास्तविक जन्म तो वही है, जब इंसान अपनी अंत:प्रज्ञा से जागता है, जिसका एक माध्यम है 'यज्ञ'।

यज्ञ की पहचान है 'अग्नि' या यों कहें 'अग्नि', यज्ञ का अहम हिस्सा है, जो कि प्रतीक है शक्ति की, ऊर्जा की, सदा ऊपर उठने की। शास्त्रों में अग्नि को ईश्वर भी कहा गया है इसी अग्नि में ताप भी छिपा है तो भाप भी छिपी है। यही अग्नि जलाती है तो प्रकाश भी देती है। इसी अग्नि के माध्यम से जल भी बनता है और जल मात्र मानव जीवन के लिए ही नहीं बल्कि पूरी प्रकृति के लिए वरदान है, अमृत है। इसीलिए अग्नि इतनी पूजनीय है।

"श्रीभगवान कहते हैं, अर्पण ही ब्रह्म है, हवि ब्रह्म है, अग्नि ब्रह्म है, आहुति ब्रह्म है, कर्म रूपी समाधि भी ब्रह्म है और जिसे प्राप्त किया जाना है, वह भी ब्रह्म ही है।"

एक प्रकार से अग्नि ही ईश्वर है, तभी तो अग्नि इतनी पूजनीय है। यही कारण है कि हर धर्म एवं संप्रदाय में अग्नि का इतना महत्त्व है तथा उसे किसी-न-किसी रूप में जलाया व पूजा जाता है। और यज्ञ भी एक तरह की पूजा है। यदि यज्ञ में जलती अग्नि ईश्वर है तो अग्नि का मुख ईश्वर का मुख है। यज्ञ में कुछ भी आहूत करने का अर्थ है परमात्मा को भोजन कराना। इसलिए अग्नि को जो कुछ खिलाया जाता है, वह सही अर्थों में ब्रह्मभोज है। जिस तरह भगवान सबको खिलाता है, उसी तरह यज्ञ के जरिए इंसान भगवान को खिलाता है।

यज्ञ परमात्मा तक पहुँचने का सोपान है। उसका सान्निध्य पाने का माध्यम है। यज्ञ में प्रकट अग्नि साक्षात् भगवान है। इसीलिए यज्ञ में अग्नि को प्रज्ज्वलित करने के लिए तथा उसे बनाए रखने के लिए यज्ञ या हवन सामग्री का भी विशेष स्थान है। यह सामग्री न केवल भगवान के भोजन का हिस्सा बनती है बल्कि इससे उठने वाला धुआँ वायुमंडल को शुद्ध करता है।

भगवद्गीता के अनुसार परमात्मा के निमित्त किया गया कोई भी कार्य यज्ञ कहा जाता है। परमात्मा के निमित्त किए गए कार्य से संस्कार पैदा नहीं होते, न ही कर्म बंधन होता है। भगवद्गीता के चौथे अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को उपदेश देते हुए विस्तारपूर्वक विभिन्न प्रकार के यज्ञों को बताया गया है।

श्रीभगवान कहते हैं, अर्पण ही ब्रह्म है, हवि ब्रह्म है, अग्नि ब्रह्म है, आहुति ब्रह्म है, कर्म रूपी समाधि भी ब्रह्म है और जिसे प्राप्त किया जाना है, वह भी ब्रह्म ही है। यज्ञ परब्रह्म स्वरूप माना गया है। इस सृष्टि से हमें जो भी प्राप्त है, जिसे अर्पण किया जा रहा है, जिसके द्वारा हो रहा है, वह सब ब्रह्म स्वरूप है, अर्थात् सृष्टि का कण-कण, प्रत्येक क्रिया में जो ब्रह्मभाव रखता है, वह ब्रह्म को ही पाता है अर्थात् ब्रह्म स्वरूप हो जाता है। कर्मयोगी देवयज्ञ का अनुष्ठान करते हैं तथा अन्य ज्ञान योगी ब्रह्म अग्नि में यज्ञ द्वारा यज्ञ का हवन करते हैं।

देव पूजन उसे कहते हैं, जिसमें योग द्वारा अधिदैव अर्थात् जीवात्मा को जानने का प्रयास किया जाता है। कई योगी ब्रह्म अग्नि में हवन करते हैं, अर्थात् अधियज्ञ (परमात्मा) का पूजन करते हैं।

यज्ञ से अमृत का अनुभव करने वाले परब्रह्म परमात्मा को प्राप्त होते हैं अर्थात् यज्ञ क्रिया के परिणामस्वरूप जो बचता है, वह ज्ञान ब्रह्मस्वरूप है। इस ज्ञान रूपी अमृत को पीकर वह योगी तृप्त और आत्मस्थित हो जाते हैं परंतु जो मनुष्य यज्ञाचरण नहीं करते, उनको न इस लोक में कुछ हाथ लगता है न परलोक में। इस प्रकार बहुत प्रकार की यज्ञ विधियाँ वेद में बताई गई हैं। ये यज्ञ विधियाँ कर्म से ही उत्पन्न होती हैं। इस बात को जानकर कर्म की बाधा से जीव मुक्त हो जाता है। द्रव्यमय यज्ञ की अपेक्षा ज्ञान यज्ञ अत्यंत श्रेष्ठ है। द्रव्यमय यज्ञ सकाम यज्ञ हैं और अधिक-से-अधिक स्वर्ग को देने वाले हैं, परंतु ज्ञान यज्ञ द्वारा योगी कर्म बंधन से छुटकारा पा जाता है और परम गति को प्राप्त होता है।

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला वास्तव में कुछ भी नहीं है, क्योंकि जल, अग्नि आदि से यदि किसी मनुष्य अथवा वस्तु को पवित्र किया जाए तो वह शुद्धता और पवित्रता थोड़े समय के लिए ही होती है, जबकि ज्ञान से जो मनुष्य पवित्र हो जाए वह पवित्रता सदैव के लिए हो जाती है।

ज्ञान ही अमृत है और इस ज्ञान को लंबे समय तक योगाभ्यासी पुरुष अपने आप अपनी आत्मा में प्राप्त करता है, क्योंकि आत्मा ही अक्षय ज्ञान का स्रोत है। जिसने अपनी इंद्रियों को वश में कर लिया है तथा निरंतर उन्हें वश में रखता है, जो निरंतर आत्मज्ञान में तथा उसके उपायों में श्रद्धा रखता है, ऐसा मनुष्य उस अक्षय ज्ञान को प्राप्त होता है तथा ज्ञान को प्राप्त होते ही परम शांति को प्राप्त होता है। ज्ञान प्राप्त होने के बाद उसका मन नहीं भटकता, इंद्रियों के विषय उसे आकर्षित नहीं करते; लोभ-मोह से वह दूर हो जाता है तथा निरंतर ज्ञान की पूर्णता में रमता हुआ आनंद को प्राप्त होता है।

15

गुरु-शिष्य परंपरा : ज्ञान, भाव और विश्वास का संबंध*

"हमारे देश की गुरु-शिष्य परंपरा अत्यन्त संपन्न रही है, क्योंकि इसमें त्याग, समर्पण, विश्वास और निष्ठा का समावेश रहा है।"

भारत भूमि पर अवतार लेने वाले सभी दिव्य आत्माओं, समस्त गुरुजनों को इस शुभ दिवस पर नमन करता हूँ। मानवता और अध्यात्म के संदेश का दुनिया भर में प्रचार-प्रसार करने वाले पूज्य गुरुदेव श्री श्री रविशंकर जी को नमन करता हूँ।

हमारी सनातन संस्कृति में गुरु पूर्णिमा की महत्ता प्राचीन काल से ही रही है। यह महर्षि वेदव्यास जी का जन्मदिन तो है ही, इसी दिन आदिकाल में भगवान महेश ने वेदों का ज्ञान मानव को दिया था।

भारत में महान गुरुओं की प्राचीन परंपरा रही है। हमारी परंपरा में महान गुरुओं के प्रति सदैव सम्मान और विश्वास का भाव रहा है। हमारे गुरुओं ने हमेशा समाज को सही मार्गदर्शन दिया है तथा मानव कल्याण का मार्ग दिखाया है।

भारत में प्राचीन काल से ही गुरुभक्ति की मर्यादा रही है। गुरु अपना संपूर्ण ज्ञान शिष्य को सौंप देते हैं और शिष्य का भूत, वर्तमान व भविष्य से परिचय करवाते हैं। भारत में सदा ही सद्गुरु की महिमा गाई जाती रही है। 'गीता' में कहा गया है कि जीवन को सुंदर बनाना, निष्काम और निर्दोष करना ही सबसे बड़ी विद्या है। इस विद्या को सिखाने वाला ही सद्गुरु कहलाता है।

जीवन में माता-पिता और गुरु वे व्यक्ति हैं, जो हमारे चरित्र-निर्माण को सही दिशा देते हैं। माता-पिता के साथ तो हमारा संबंध जन्म से ही होता है, लेकिन गुरु के साथ मन का रिश्ता होता है। गुरु और शिष्य का भरोसे, भावना और भाव का संबंध होता है।

---

* गुरु पूर्णिमा पर श्री श्री रविशंकर जी की संस्था 'आर्ट ऑफ लिविंग' के गुरुपूजन एवं सत्संग कार्यक्रम में संबोधन, नई दिल्ली 13 जुलाई, 2023

हमारे यहाँ गुरु का स्थान ईश्वर से भी ऊँचा माना गया है। गुरु ही हमें ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग बताते हैं। जीवन से अंधकार को दूर कर प्रकाश की ओर ले जाने वाले को 'गुरु' कहा जाता है।

हमारे देश की गुरु-शिष्य परंपरा अत्यन्त संपन्न रही है, क्योंकि इसमें त्याग, समर्पण, विश्वास और निष्ठा का समावेश रहा है। भारत की इसी महान गुरु परंपरा को आगे ले जाने, इसे और अधिक समृद्ध बनाने का काम श्री श्री रविशंकर जी ने किया है। गुरुदेव ने मानवता और आध्यात्म के क्षेत्र में महान योगदान दिया है।

गुरुदेव के प्रयासों ने मानव को व्यक्तिगत, सामुदायिक, राष्ट्रीय और वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए सशक्त और समर्थ बनाया है।

आपका 'आर्ट ऑफ लिविंग' आंदोलन आज दुनिया के 150 से अधिक देशों में मानवता के लिए काम कर रहा है।

परम पूज्य श्री श्री रविशंकर जी ने भारत की संस्कृति और आध्यात्मिक ज्ञान को विश्व के कई देशों में पहुँचाने का काम किया है। हमारी प्राचीनतम योग पद्धति और समृद्ध संस्कृति को गुरुदेव ने जनता तक आसान बनाकर प्रस्तुत किया है, ताकि मानव के मन, शरीर और आत्मा में शांति रहे।

राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं के साथ ही गुरुदेव ने समाज में व्याप्त समस्याओं को दूर करने के लिए भी काम किया है। युवाओं के लिए युवा सशक्तीकरण कार्यक्रम, शिक्षा, युवा कौशल कार्यक्रम, सामूहिक हिंसा, नशा और शराब की लत से युवाओं को दूर करने का काम गुरुदेव और उनकी संस्थाओं द्वारा किया जा रहा है।

आपकी संस्था द्वारा 700 से ज्यादा स्कूलों की शुरुआत की गई है, जिनमें 70 हजार से भी अधिक बच्चे पढ़ाई कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त भारतीय योग विधा और आध्यात्म के प्रसार के लिए आपने विश्व भर में काम किया है।

आपके आत्म-विकास के कार्यक्रमों ने दुनिया भर के लाखों लोगों को तनाव से राहत देकर उन्हें शांत और स्वस्थ जीवन जीने में मदद की है। आपके ये कार्यक्रम योग की प्राचीन तकनीकों के माध्यम से आज की आधुनिक आवश्यकताओं और समस्याओं पर केंद्रित हैं। गुरुदेव श्री श्री रविशंकर जी के प्रयासों ने भारत के प्राचीन योग के ज्ञान को समस्त मानवता तक पहुँचाने का काम किया है।

श्री श्री रविशंकर जी आज भारत की इसी महान रीति-नीति की विश्व में अगुवाई कर रहे हैं। धार्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और सांस्कृतिक बँटवारे से टूटे हुए विश्व में आपने प्रेम, करुणा, शांति और अहिंसा का संदेश दिया है।

आज हम देखते हैं कि जलवायु परिवर्तन का संकट साल दर साल बढ़ रहा है। पेड़ कम हो रहे हैं, ग्लोबल वार्मिंग बढ़ रही है, पर्यावरण एवं प्रकृति पर कई आपदाएँ आ रही हैं। आज आवश्यकता है कि दुनिया का प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक भारतवासी प्रकृति के महत्त्व को गंभीरता से समझे और पर्यावरण संरक्षण का संकल्प ले।

इस वर्ष भारत अपनी आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। आजादी के बाद से इन 75 वर्षों में भारत ने क्या-क्या हासिल किया, हम उसका उत्सव तो मना ही रहे हैं, लेकिन इसी के साथ हम आने वाले वर्षों में क्या अभूतपूर्व प्राप्त करेंगे, हमें उसके लिए भी अभी से संकल्प लेना है।

पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रभावी उपाय, महिला सशक्तीकरण, बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा और वंचित जनों तक सभी सुविधाएँ पहुँचाने के लिए भारत को और अधिक प्रयास करने होंगे।

अगर प्रत्येक देशवासी इसके लिए संकल्प धारण करे तो अगले 25 वर्ष में हमारा देश दुनिया के शीर्ष पर होगा। हर एक देशवासी अपनी निजी उन्नति के साथ, राष्ट्र उत्थान में बराबर का भागीदार बने, आज ये चेतना आवश्यक है।

मैं समझता हूँ कि श्री श्री रविशंकर जी और आर्ट ऑफ लिविंग इस दिशा में बड़ा प्रभावी कार्य कर सकते हैं। आपकी भूमिका इस समय बहुत महत्त्वपूर्ण है और हमें आपसे अपेक्षाएँ भी बहुत हैं।

मैं आशा करता हूँ कि मानवता और राष्ट्र के हित में आर्ट ऑफ लिविंग परिवार के कार्यों में और अधिक विस्तार होगा। आज गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर पूज्य श्री श्री रविशंकर जी का आशीर्वाद सभी अनुयायियों को प्राप्त होगा। गुरुदेव की ऊर्जा और व्यक्तित्व से सभी देशवासियों को निरंतर सकारात्मक दिशा में बढ़ने के लिए प्रेरणा मिलेगी।

भाग-तीन

आर्थिक मुद्दे

16

युवा : भारत के कर्णधार*

"हमारा इतिहास गौरवशाली है और हमारा इतिहास हमें कहीं-न-कहीं नई दिशा और ताकत देने वाला है।"

जेसीआई इंटरनेशनल के अंतर्गत देश और राष्ट्र की सेवा के लिए समर्पित सभी प्रतिनिधियों का मैं नेशनल कॉन्फ्रेंस में हार्दिक अभिनंदन करता हूँ, स्वागत करता हूँ।

यह आपकी 67वीं नेशनल कॉन्फ्रेंस है। इस संस्था का गठन वर्ष 1915 में हुआ। इसके अंतर्गत देश के नौजवानों को विकास के अवसर मिले, उनके प्रयासों से सकारात्मक परिवर्तन आए, इसके लिए विश्व के 115 देशों के अंदर आपका संगठन संचालित है। जिस देश में भी जेसीआई के प्रतिनिधि हैं, कार्यकर्ता हैं, वहाँ इसी तरीके से वे अपने-अपने राष्ट्र के नवनिर्माण के लिए, नौजवानों के विकास के लिए और उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन करने के लिए लगातार लंबे समय से प्रयास कर रहे हैं।

इसीलिए इस संगठन ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने कार्यों से, अपने विजन से, अपने समर्पण से, अपनी सेवा और निष्ठा से एक प्रतिष्ठा प्राप्त की है।

मुझे खुशी है कि भारत में भी इस संगठन को 73 वर्ष हो चुके हैं, जो कि एक लंबी यात्रा है। अभी हमने 75 वर्षों की लोकतंत्र की यात्रा पूरी की है। आपने 73 वर्षों की यात्रा पूरी की है। मुझे आशा है कि जब आप 75 वर्षों की लोकतंत्र की इस यात्रा के साथ-साथ जेसीआई के 75 वर्षों की यात्रा पूर्ण करेंगे और लोकतांत्रिक तरीके से चर्चा, संवाद, बातचीत, अनुभवों और विचारों को साझा करेंगे तो उससे आपको बहुत कुछ अनुभव होगा और आप उन अनुभवों पर विचार करके नए निष्कर्ष तथा नई दिशा की ओर अपनी कार्ययोजना बनाएँगे।

अगले 100 सालों के अंदर, जिसके पूरा होने में 25 साल बचे हैं तथा जब शताब्दी वर्ष होगा, उस समय के लिए हम किस लक्ष्य को लेकर काम करें और उस लक्ष्य को प्राप्त करे,

---

* जूनियर-चैंबर इंटरनेशनल (जेसीआई) इंडिया के राष्ट्रीय सम्मेलन में संबोधन, नई दिल्ली, 27 दिसंबर, 2022

वह निश्चित रूप से आपके लिए चुनौतीपूर्ण होगा। लेकिन आपका जो संकल्प और चिंतन है, इस चिंतन और संकल्प से 100 सालों की यात्रा के अंदर जेसीआई इंटरनेशनल देश के युवाओं का विकास, उनके सकारात्मक परिवर्तन तथा राष्ट्र-निर्माण के लिए एक महत्त्वपूर्ण योगदान देगा। पूरे देश में जेसीआई के 60 हजार से ज्यादा सदस्य हैं।

अभी भारत के लोकतंत्र की 75 वर्षों की यात्रा के साथ-साथ जी-20 का सम्मेलन भी भारत में आयोजित हो रहा है। यह जी-20 सम्मेलन पूरे विश्व के अंदर एक दिशा देगा, नया दृष्टिकोण देगा। जी-20 का सम्मेलन पूरे विश्व के अंदर नए बदलाव की ओर एक दिशा देने वाला होगा। आप सब जानते हैं कि आर्थिक, व्यापारिक तथा जनसंख्या की दृष्टि से जी-20 विश्व के विभिन्न देशों का एक महत्त्वपूर्ण संगठन है, जो निश्चित रूप से वैश्विक चुनौतियों के समाधान और सारा विश्व एक है, इस दिशा की ओर काम करेगा। इसलिए हमारी संस्कृति, हमारी परंपराओं में वसुधैव कुटुंबकम् का विचार है कि सारा विश्व हमारा परिवार है।

विश्व में किसी एक देश के अंदर कोई चुनौती आती है, आपदा आती है, संकट आता है या आर्थिक-सामाजिक ढाँचे में बदलाव आता है तो उस सारे तंत्र से पूरा विश्व प्रभावित होता है। आप वर्तमान समय में दो देशों के विवाद से ही पूरे वैश्विक तंत्र के अंदर आर्थिक और सामाजिक तंत्र में परिवर्तन का विषय देख रहे हैं। इसलिए हम सबके सामने यह बहुत महत्त्वपूर्ण अवसर है कि हम विश्व का नेतृत्व कर सकें और पूरे विश्व को एक दिशा दे सकें। जैसा कि हमने कहा है कि हम सबको साथ लेकर एक परिवार के रूप में चलें, आर्थिक और सामाजिक रूप से सभी देश आर्थिक तथा सामाजिक प्रगति करें एवं एक-दूसरे के अंदर सहयोग की भावना हो, इस दिशा के लिए यह जी-20 का सम्मेलन निश्चित रूप से महत्त्वपूर्ण साबित होगा।

इसी के साथ आपका संगठन भी वैश्विक चुनौतियों पर समाधान का रास्ता ढूँढ़ता है। आपकी संस्था विश्व के नौजवानों को एक सक्रिय नागरिक बनाने के लिए है, ताकि वे वैश्विक चुनौतियों का समाधान कर सकें। किस तरीके की चुनौतियाँ भारत में होंगी, विश्व में होंगी और उनका स्थाई समाधान क्या होगा, इसके लिए आपका संगठन निश्चित रूप से विचार करेगा, अपने-अपने अनुभवों को साझा करेगा। अभी अंशू सराफ जी ने कई सारी चीजें बताईं कि कोई भी आपदा हो, संकट हो, गाँव के विकास की बात हो, नौजवानों के अंदर सकारात्मक परिवर्तन के लिए उनके व्यापार और इंडस्ट्री सेक्टर के अंदर नेतृत्व देने का काम हो, गाँव के अंदर सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन करना हो, संपूर्ण विश्व के अंदर जेसीआई संगठन ने आपदा और संकट में काम किया है।

जूनियर चैंबर इंटरनेशनल (जेसीआई), भारत के राष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित करते हुए

हम इस वैश्विक परिवर्तन में भारत के अंदर एक नए दौर की ओर देख रहे हैं। लोकतंत्र की हमारी एक लंबी यात्रा रही है। इस लोकतंत्र की लंबी यात्रा में हमने इन 75 वर्षों में बहुत सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन किए हैं। जब वर्ष 1947 में देश आजाद हुआ था तो हमारा बजट 175 करोड़ रुपए था। उस समय हमने यात्रा शुरू की थी। आज हमारा बजट 40 लाख करोड़ रुपए का है। हमारा विविधताओं वाला देश है, विशालता वाला देश है, अलग-अलग संस्कृति, अलग-अलग भाषा, अलग-अलग बोली वाला देश है। जब देश आजाद हुआ था तो दुनिया ने सोचा था कि इतने बड़े देश में इतनी विशालता, विविधता, अलग-अलग संस्कृति, अलग-अलग धर्म हैं तो शायद यह देश एक साथ कभी संगठित होकर नहीं रह पाएगा। जब आप पार्लियामेंट की, संविधान की उस समय की डिबेट का हिस्सा देखेंगे तो आपको लगेगा कि उस समय किस तरीके की चुनौतियाँ थीं। हमारी साक्षरता दर 20 प्रतिशत थी। हम हेल्थ के इंडेक्स और सभी इंडेक्स के अंदर दुनिया से बहुत पीछे थे।

इससे ज्यादा बड़ी चुनौती यह थी कि हमारे यहाँ अलग-अलग रजवाड़े, अलग-अलग राज्य, छोटी-छोटी रियासतें थीं, लेकिन हमारे दूरदर्शी नेता सरदार वल्लभभाई पटेल ने अच्छा काम किया। आप विचार कीजिए कि किस तरीके से राजाओं ने अपने राज को त्यागा और एक राष्ट्र का निर्माण हुआ। भारत के कुछ हिस्सों को छोड़कर सभी ने अपना त्याग करके

लोकतंत्र में विश्वास व्यक्त किया और लोकतंत्र में विश्वास करके अपने राज्य को भारत में विलय की सहमति दी। हम इतिहास पढ़ते हैं, क्योंकि हमारा इतिहास गौरवशाली है और हमारा इतिहास हमें कहीं-न-कहीं नई दिशा और ताकत देने वाला है। इसलिए आपको इस लोकतंत्र की यात्रा को समझना पड़ेगा और अध्ययन करना पड़ेगा। जब आप इस लोकतंत्र की यात्रा का अध्ययन करेंगे तो आप देखेंगे। यह बात सही है कि हमसे बाद में या हमसे पहले आजाद हुए देशों में से कुछ हमसे आगे बढ़े होंगे, लेकिन हमारी इतनी ताकत है कि इतनी विशालता, इतनी विविधता, इतनी संस्कृति तथा दुनिया के सारे धर्म यहाँ होने के बाद भी अगर हमें किसी ने जोड़ा है तो लोकतंत्र ने जोड़ा है।

हमारे यहाँ लोकतंत्र की शासन-पद्धति है, जो हमारे संविधान में बनाई गई। हम कहते हैं कि हमारा प्राचीनतम लोकतंत्र है। लोकतंत्र हमारे जीवन का हिस्सा है, हमारी परंपरा का हिस्सा है, हमारे कार्य का हिस्सा है। यह लोकतंत्र कोई आजादी के बाद नहीं मिला है। इसलिए इस जी-20 के अंदर भी हम दुनिया को यह बताने वाले हैं कि भारत सबसे प्राचीनतम लोकतंत्र है और हम लोकतंत्र की शासन-पद्धति पर सबसे ज्यादा विश्वास रखते हैं। आज दुनिया के कितने ही देशों में चले जाइए, जहाँ लोकतंत्र नहीं होगा, वहाँ भी ऐसी शासन-पद्धति को दिखाते हैं, जैसे वहाँ पर बड़ा लोकतंत्र हो। मैं कई देशों के अंदर जाता हूँ और जब हमारी वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस ऑफ स्पीकर्स होती है तो मैं देखता हूँ कि दुनिया के अंदर कहीं पर एक दल की शासन-पद्धति है, कहीं लोकतंत्र नहीं है, लेकिन वे लोकतंत्र की बड़ी चर्चा करते हैं, बड़ी विवेचना करते हैं, क्योंकि दुनिया ने माना है कि लोकतंत्र ही शासन चलाने की सर्वश्रेष्ठ पद्धति है।

हमारे यहाँ संविधान के अंदर जनता को बीच में रखकर जनता की सरकार द्वारा संचालित शासन है। यह हमारी ताकत है। दुनिया के बड़े-बड़े विकसित देशों ने जब महिलाओं को वोट का अधिकार नहीं दिया था, तब भारत के संविधान के अंदर समानता, सबको मौलिक अधिकार, सबको न्याय का अधिकार था, ऐसा हमारा संविधान है। यह संविधान की ताकत ही है कि हमारे लोकतंत्र में अभिव्यक्ति है, आजादी है और हम हर कार्य व्यवहार को इस लोकतंत्र के कारण बेहतरीन कर सकते हैं।

इस विषय पर आपकी बड़ी जिम्मेदारी है। बदलती हुई परिस्थिति में हमारे देश के नौजवानों ने दुनिया को यह बता दिया है कि हर चुनौती का समाधान निकालने की सामर्थ्य और शक्ति भारत के नौजवानों में है। उनकी ऊर्जा, सामर्थ्य, चिंतन, नया रिसर्च, नया इनोवेशंस, आप यह देखिए कि वर्ष 2014 में स्टार्ट-अप गिनती के थे, लेकिन आज लाखों स्टार्ट-अप हैं। दुनिया में जो कुछ भी नया रिसर्च, नया इनोवेशन होता है, उसमें हमारी पद्धति और कार्यशैली का बड़ा योगदान है।

हमने सबसे सस्ता-टिकाऊ इनोवेशंस करके दुनिया को दिशा देने का काम किया है। अभी दुनिया में कोविड वैक्सीन्स की बात चल रही है। भारत ने अपना वैक्सीन बनाया। लोग कहा करते थे कि भारत हमेशा मेडिकल रिसर्च के लिए विकसित राष्ट्रों की ही ओर देखता था। आजादी के बाद भारत ने कभी ऐसी वैक्सीन नहीं बनाई, जिसको दुनिया माने। हमारे वैज्ञानिकों में इतनी ताकत है कि उन्होंने वह वैक्सीन बनाई, जिसको आज दुनिया मान्यता देती है।

आप सामाजिक क्षेत्र में काम कर रहे हैं, आर्थिक क्षेत्र में भी लोगों के जीवन में परिवर्तन लाने के लिए काम कर रहे हैं। आप एक अच्छा युवा नेतृत्व देना चाहते हैं। केवल राजनीति के अंदर ही नेतृत्व नहीं होता है, बल्कि हर कार्य में लीडरशिप होता है।

"हममें सामर्थ्य, शक्ति, नई सोच, विचार एवं नई चिंतन की शक्ति, बौद्धिक क्षमता और टेक्नोलॉजी है। हम लगातार आगे बढ़ रहे हैं। एक समय आएगा, जब दुनिया के विकसित राष्ट्रों से हमारी टेक्नोलॉजी बेहतर होगी।"

चाहे वे बिजनेस, व्यापार, कंपनी में हों या मशीन चलाने वाले हों, नेतृत्व का गुण व्यक्ति के अंदर होता है। अगर उनकी नेतृत्व क्षमता सामूहिकता को साथ लेकर चलने की होगी, सभी के मतों को लेकर चलने की होगी, तो हम बेहतर नेतृत्व देकर बेहतर परिणाम दे सकते हैं।

इसलिए मेरी आपसे अपेक्षा है कि हमें कुछ एजेंडा तय करना चाहिए। भारत में जो मौजूदा चुनौतियाँ हैं, उनमें से एक-दो चुनौतियों के समाधान निकालने का काम जेसीआई करे। जेसीआई दुनिया को बताए कि भारत में जेसीआई के नौजवानों ने इन चुनौतियों का समाधान निकालकर लोगों के सामाजिक-आर्थिक जीवन में परिवर्तन लाने का काम किया है।

हममें वह सामर्थ्य, शक्ति, नई सोच, विचार एवं नई चिंतन की शक्ति, बौद्धिक क्षमता और टेक्नोलॉजी है। हम लगातार आगे बढ़ रहे हैं। एक समय आएगा, जब दुनिया के विकसित राष्ट्रों से हमारी टेक्नोलॉजी बेहतर होगी। हमारे नौजवानों की बौद्धिक क्षमता, ऊर्जा, सामर्थ्य और देशों के नौजवानों से ज्यादा है। इसलिए हमारा भरोसा है कि नौजवानों के बल पर हम दुनिया में हर चुनौती का समाधान करेंगे।

इसलिए आपके सामने चुनौती है कि आप कैसे नौजवानों को तैयार करेंगे? हम गाँव के आर्थिक तंत्र में क्या बदलाव ला सकते हैं? हम लोगों के सामाजिक जीवन में क्या बदलाव ला सकते हैं? हमारा दृष्टिकोण इस दिशा की ओर काम करेगा। हम एक-दो

एजेंडा को पकड़कर काम करना शुरू कर देंगे, तो शायद हम भारत में बहुत बड़ा परिवर्तन ला पाएँगे। मैं जेसीआई से जुड़ा रहता हूँ।

मैं देखता हूँ कि किस तरह का जेसीआई के लोगों का समर्पण, भाव और संस्कार है। वे अपना धन कमाते हैं और समाज को समर्पित करते हैं और लीडरशिप देने का काम करते हैं। राष्ट्र के प्रति समर्पण का भाव है। उनका एक अच्छा दृष्टिकोण है। इसीलिए मेरा आपसे आग्रह है कि हमें इस माहौल की ओर बढ़ना चाहिए, सकारात्मक दिशा की ओर बढ़ना चाहिए। आपने कई मुद्दों पर चर्चा की है। आपने हमेशा एसडीजी के मुद्दों पर बात की है। आपने इसकी चर्चा इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंसों में की है कि एसडीजी के अंदर कैसे भारत के मानकों को सबसे ऊपर ला सकें। इस दृष्टिकोण से आपने काम किया है।

ऐसे कई सारे दृष्टिकोण हैं, जिन पर आपकी तीन दिनों की कॉन्फ्रेंस, चर्चा, संवाद, सहमति–असहमति और उसके बाद निर्णय, निर्णय के मंथन से जो अमृत निकलेगा, उसी से समाज का कल्याण करने का लक्ष्य आपके इस कॉन्फ्रेंस से तय होगा।

मुझे आशा है कि आप सभी सामर्थ्यवान नौजवान इस दिशा में काम करेंगे। तीन दिनों के कॉन्फ्रेंस में सिद्धांत, नैतिकता और आदर्श के साथ अनुशासनपूर्ण जिंदगी जीते हुए किस तरीके से भारत के नौजवानों में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं, उस लक्ष्य को आप पूरा कर पाएँगे।

17

ऑटो मोबाइल सेक्टर : आर्थिक तंत्र का एक महत्त्वपूर्ण स्तंभ*

**"हमारी 'वसुधैव कुटुंबकम्' की संस्कृति और संस्कार है।
सामाजिक सेवा और समर्पण की भावना हमारे जीवन में है।"**

मैं सबसे पहले आपको शुभकामनाएँ एवं बधाई देता हूँ। मैं विशेष रूप से धन्यवाद इसलिए भी देता हूँ कि आप केवल मोटर व्हीकल गाड़ियाँ ही बेचने का काम नहीं कर रहे हैं बल्कि आप गाड़ी बेचने के साथ-साथ अपने सामाजिक उत्तरदायित्व को भी निभा रहे हैं। आपने एक ऐसी पहल और शुरुआत की है, जिससे समाज और व्यक्ति के जीवन में एक सामाजिक परिवर्तन आया है। इसके लिए मैं आपको शुभकामनाएँ एवं बधाई देता हूँ।

गाड़ियों से जो प्रदूषण होता है, अभी टेक्नोलॉजी में परिवर्तन का दौर चल रहा है, उस प्रदूषण को रोकने में हमारे क्या प्रयास हो सकते हैं, उसके लिए आप एक गाड़ी के साथ एक पौधा भी दे रहे हैं।

एक वर्ष के अंदर दो करोड़ पौधे, जो व्यक्ति पौधा लेकर जाए, वह उसको लगाए और उसका संरक्षण करे। यदि आपके एसोसिएशन के सभी सदस्य देश भर में दो करोड़ पौधे बाँटेंगे तो वे एक बड़ा हरित क्रांति का काम करेंगे। मैं इसके लिए आपको शुभकामनाएँ देता हूँ। यह प्रयास सामूहिक रूप से पूरे देश के लोगों को करना चाहिए।

हमारी 'वसुधैव कुटुंबकम्' की संस्कृति और संस्कार है। सामाजिक सेवा और समर्पण की भावना हमारे जीवन में है। हमने कोविड के समय दुनिया को बता दिया कि हमने सामूहिकता की शक्ति से इतने विशाल देश में एक-दूसरे के सहयोग से जो कुछ भी बन

---

* फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन (FADA) के 12वें ऑटो समिट कार्यक्रम में संबोधन, नई दिल्ली, 13 जनवरी, 2023

सका, वह किया। हमने एक मजबूत सामूहिक भारत की तस्वीर दुनिया के सामने रखी। इस तरीके का प्रयास, जिसकी आपने शुरुआत की है, उससे नए लोगों को, विभिन्न एसोसिएशंस को प्रेरणा मिलेगी, इंडस्ट्रीज के लोगों को प्रेरणा मिलेगी।

साथ ही सर्विस सेक्टर के लोगों को भी प्रेरणा मिलेगी। जलवायु परिवर्तन के विषय पर भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी ने दुनिया के अंदर कहा है कि आबादी की दृष्टि से हम 17 प्रतिशत हैं, लेकिन कार्बन उत्सर्जन के मामले में हम कम हैं। हम अपने लक्ष्य से इसको और कम करने का काम करेंगे। इस संकल्प में आपके सहयोग के लिए मैं आपको शुभकामनाएँ एवं बधाई देता हूँ।

यह बात सही है कि पूरी दुनिया में एक समय था कि जब पेट्रोल और डीजल से गाड़ियाँ चलती थीं। आज युग परिवर्तन हो रहा है। आज पेट्रोल-डीजल के अलावा सीएनजी है, एलपीजी है एवं इलेक्ट्रिकल व्हीकल्स आए हैं। अब भारत में हाइड्रो-व्हीकल्स आने की तैयारी हो रही है। मुझे लगता है कि यह परिवर्तन का दौर है। इस परिवर्तन के दौर में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका डीलर्स की होती है, क्योंकि डीलर्स और ग्राहक का संबंध सबसे नजदीक का होता है। मैन्युफैक्चरर्स चाहे कितनी ही बेहतरीन गाड़ियों का उत्पादन कर लें, लेकिन जो डीलर होता है, वह गाड़ी के फीचर्स को इस तरीके से ग्राहक के सामने प्रेजेंट करता है, तब उस गाड़ी को खरीदने की ग्राहक की मन:स्थिति बनती है। इसीलिए इस बदलते परिप्रेक्ष्य में जहाँ रोज नई तकनीक आ रही है, नया इनोवेशन हो रहा है, नया रिसर्च हो रहा है, नई तकनीक और रिसर्च के साथ मैन्युफैक्चरर्स को भी लगातार अपने आप में बदलाव करने की आवश्यकता पड़ रही है। उसी के साथ डीलर्स को भी नए फीचर्स एवं बदलाव के साथ-साथ ग्राहकों से संबंध बनाने की आवश्यकता पड़ रही है।

मुझे आशा है कि जब मैन्युफैक्चर्स, डीलर्स और ग्राहकों के मजबूत संबंध की कड़ी ठीक से जुड़ेगी, तो हमारे भारत का जो अंतिम उपभोक्ता है, हम उसको सही जानकारी भी दे पाएँगे। जैसा आपने बताया है कि सड़क सुरक्षा की दृष्टि से एक व्यापक अभियान चलाया गया है। संसद में भी इस विषय पर व्यापक चर्चा हुई है। सरकार ने भी तय किया है कि हम सड़क दुर्घटनाओं को आने वाले समय में 50 प्रतिशत कम करेंगे। इसके लिए मैन्युफैक्चरर्स का भी योगदान है, ताकि वे सुरक्षा के फीचर्स के साथ नई गाड़ियाँ निकालें। उस गाड़ी की कीमत भी ग्राहकों के अनुकूल रहे। डीलर्स ग्राहकों को सुरक्षा के नए फीचर्स की जानकारी दें, ताकि एक कड़ी जुड़े और हम सड़क सुरक्षा के रूप में एक नया कीर्तिमान हासिल कर पाएँगे। इस लक्ष्य को पूरा करने में आपका बहुत बड़ा योगदान होगा।

इसीलिए हमें एक ग्राहक को सारी जानकारी देनी है। उसकी गाड़ी की सुरक्षा की जानकारी, चलाते समय सुरक्षा के क्या-क्या इंतजाम करने हैं, उसको बताएँ। जब कभी

दुर्घटना हो जाती है, अगर उसके बाद जो पहला संबंध होता है, तो वह आपका होता है। जब वह गाड़ी ठीक कराने के लिए आता है, तब आप उससे सारी जानकारी लेते हैं। गाड़ी का एक्सीडेंट कहाँ हुआ, किस स्थान पर हुआ, उसका क्या कारण है। आप एक नया रिसर्च कर सकते हैं कि देश के किस इलाके में ज्यादा दुर्घटनाएँ होती हैं। उन दुर्घटनाओं के क्या-क्या कारण हैं। दुर्घटना के बाद हमें उसके त्वरित उपचार के लिए क्या-क्या प्लान करना है।

फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन (एफएडीए),
के 12वें शिखर सम्मेलन में एसोसिएशन के प्रतिनिधियों के साथ

मैं अभी टाटा के एमडी साहब को बोल रहा था कि हमें एक बेसिक प्लान बनाने की आवश्यकता है। डीलर्स ग्राहक को संपूर्ण जानकारी देने के साथ-साथ रोड्स पर जितनी भी दुर्घटनाएँ होती हैं तथा जिस इलाके में ज्यादा दुर्घटनाएँ होती हैं, वहाँ त्वरित गति से डीलर्स तथा मैन्युफैक्चरर्स अपना सामाजिक उत्तरदायित्व निभाएँ। दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति को नजदीक के अस्पताल में ले जाने के लिए फास्ट एंबुलेंस हो और उस एंबुलेंस में सारे फीचर्स हों, ताकि वह एंबुलेंस एक चलता-फिरता हॉस्पिटल हो, जिससे दुर्घटना होने के बाद उस व्यक्ति को बचाया जा सके।

मेरा मानना है कि अगर हमने एक व्यक्ति की भी जिंदगी बचा ली तो उससे बड़ा पुण्य का काम नहीं हो सकता है। मैंने उस दर्द को देखा है, उस पीड़ा को देखा है। दुर्घटना से अगर सबसे ज्यादा किसी की मृत्यु होती है तो नौजवानों की होती है। उसका सारा परिवार

उस पर आश्रित होता है। वह गाँव-ढाणी से चलता है, शहर में काम करने आता है, बड़े सपने लेकर आता है, लेकिन दुर्घटना के बाद अगर उसकी मृत्यु हो जाती है या काम करने में अक्षम हो जाता है तो वह उसकी सबसे बड़ी पीड़ा होती है। इसलिए हमें डीलर होने के नाते उसकी सुरक्षा के इंतजाम, उसके लिए इंश्योरेंस की पॉलिसी के इंतजाम करने चाहिए। दुर्घटना के बाद उस राज्य की सरकार की जो योजनाएँ हैं, उन योजनाओं की जानकारी, केंद्र सरकार की योजनाओं की जानकारी रहेगी तथा अगर हम उसको उस राज्य सरकार की कल्याणकारी योजनाओं के साथ जोड़कर रखेंगे तो अच्छा रहेगा। मान लीजिए, किसी दुर्घटना के अंतर्गत कोई योजना है, दुर्घटना होने पर राज्य सरकार की तरफ से इतना पैसा मिलना है या किसी तरह की बीमा की योजना है या प्रधानमंत्री सुरक्षा योजना है तो ऐसी तमाम योजनाओं की जानकारी आप गाड़ी के बेचने के साथ-साथ उपभोक्ताओं को देंगे तो शायद हम पहले सुरक्षा की दृष्टि से उनको बचाने की बात करेंगे, दुर्घटना के बाद उसके लिए बेहतर इलाज का काम करेंगे। उसके बाद भी अगर वह नहीं बच पाया तो उसके परिवार के पालन-पोषण का इंतजाम बेहतरीन तरीके से कोई कर सकता है तो सिर्फ डीलर ही कर सकता है।

मुझे बहुत अच्छा लगा कि आपने पर्यावरण की बात की, सड़क सुरक्षा की बात की। आपने सड़क सुरक्षा के इंतजामों की बात की, लेकिन कुछ कठिनाइयाँ और परेशानियाँ आपकी भी हैं। निश्चित रूप से आपके एसोसिएशंस लगातार इस बात पर तथा कई बिंदुओं पर सरकार के संपर्क में रहते हैं। जब बदलते परिवेश के अंदर कोई कंपनी बंद हो जाती है तो काफी बड़ी संख्या में लोग बेरोजगार हो जाते हैं। अगर अचानक कंपनी की तालाबंदी हो जाती है तो डीलर्स से लेकर काम करने वाले लोगों पर बड़ा इफैक्ट पड़ता है। इसलिए इसका एक मॉडल बनना चाहिए, जिसके बारे में मुझे बताया गया है। मैं तो संसद में सुनने वाला हूँ, लेकिन मेरी अपेक्षा होगी कि संसद सदस्य सड़क सुरक्षा के बारे में बात करते समय कुछ डीलर्स के या कुछ फ्रैंचाइजीज़ के इश्यूज़ पर भी चर्चा करेंगे और अपने विषयों को रखेंगे। जब वे संसद या विधान मंडल में अपने विषयों को रखेंगे तो निश्चित रूप से मेरी कोशिश होगी कि उचित समय पर उचित डायरेक्शन दूँ, ताकि आपकी समस्या का समाधान हो सके।

मुझे खुशी है कि आज दुनिया के अंदर भारत वह देश है, जो आर्थिक रूप से सबसे तेजी से बढ़ रहा है। दुनिया के अंदर आर्थिक डेस्टिनेशन के रूप में भी सबसे ज्यादा उपर्युक्त स्थान भारत के अंदर है। ऑटो मोबाइल एक ऐसा सेक्टर है कि जब मैं कहीं पर जाता हूँ तो देखता हूँ, चूँकि मैं बड़े देश में भी गया हूँ और छोटे देश में भी गया हूँ। छोटे देश युगांडा में मैंने देखा कि टू-व्हीलर गाड़ी भारत की है। मैंने मैक्सिको में ट्रैक्टर देखा, वह भी भारत का था।

एक समय था, जब भारत केवल बाहर से पुर्जे लाकर गाड़ियों को असेंबल करने का काम करता था। आज हमें गर्व है कि भारत अब एक्सपोर्ट का सबसे बड़ा हब है। आने वाले समय के अंदर दुनिया में ऑटो मोबाइल एक्सपोर्ट में भारत नेतृत्व करेगा, यह क्षमता हमारे पास है। हमारे नौजवानों की अद्भुत क्षमता है, इनोवेशन और रिसर्च की नई क्षमता है, इसलिए हमें भरोसा है कि दुनिया के विकसित देश नई टेक्नोलॉजी की गाड़ी लाते थे, एक समय यह आएगा, जब भारतीय टेक्नोलॉजी के बारे में, सुरक्षा की दृष्टि से, नए फीचर के रूप में भी भारत के नौजवानों की बौद्धिक क्षमता, उनकी इनोवेशन क्षमता, उनकी रिसर्च की क्षमता के आधार पर भारत की गाड़ियाँ दुनिया में बिकने लगेंगी।

हमें गर्व है कि जो नई रिसर्चेज हैं, नए इनोवेशंस हैं, उनको करना भारत ने शुरू कर दिया है। आज नए स्टार्ट-अप के माध्यम से वैश्विक चुनौतियों, भारत की चुनौतियों का समाधान भारत का नौजवान करने लगा है। ऑटोमोबाइल सेक्टर रेवेन्यू की दृष्टि से सबसे बड़ा सेक्टर है और भारत में सबसे ज्यादा गाड़ियाँ बिकती हैं, इसलिए इस सेक्टर को आर्थिक रूप से भी मजबूत करना पड़ेगा। ऑटोमोबाइल सेक्टर आर्थिक रूप से जितना मजबूत होगा, भारत की आर्थिक स्थिति उतनी ही मजबूत होगी। मुझे आशा है कि यहाँ पर डीलर्स भी बैठे हैं, मैन्युफैक्चरर्स भी बैठे हैं, हम किस तरीके से बदलते वैश्विक परिप्रेक्ष्य में अपने आपको और दुनिया को सुरक्षा की दृष्टि से भी, नए फ्यूल और नई टेक्नोलॉजी के माध्यम से बेहतरीन गाड़ी दे सकें, ताकि आने वाले समय में भारत दुनिया का नेतृत्व कर सके। ऑटोमोबाइल सेक्टर के अंदर जो रेवेन्यू आता है, आर्थिक तंत्र का जो सबसे बड़ा हिस्सा आता है, वह ऑटोमोबाइल सेक्टर से आता है। हम अपने देश के अंदर उत्पादित गाड़ियों का यूज करें और आने वाले समय के अंदर भारत की बनी हुई गाड़ियाँ दुनिया के अंदर बेहतरीन हों, इस लक्ष्य के साथ काम करने की आवश्यकता है। मैं पुनः डीलर्स एसोसिएशन के सभी पदाधिकारियों को बहुत-बहुत साधुवाद देता हूँ, जिन्होंने एक नया कीर्तिमान हासिल किया है, नए सामाजिक संकल्प लिए हैं और आने वाले समय में आपने जो सामाजिक संकल्प लिए हैं, चाहे वह पर्यावरण को सुरक्षित करने का हो, चाहे वह सबसे बड़ा और सबसे महत्त्वपूर्ण काम—लोगों की जिंदगियाँ बचाने का जो काम आपने शुरू किया है, अगर आप पूरे संकल्प के साथ काम करेंगे तो भारत दुनिया में सबसे कम दुर्घटना वाला देश बन सकेगा। भारत सड़क सुरक्षा की दृष्टि से एक लैंडमार्क बने कि इतने बड़े और विशाल देश के अंदर, इतनी विविधता वाले देश के अंदर किस तरीके से हमने सामाजिक सहयोग से, सबके साथ मिलकर सड़क दुर्घटनाएँ रोकने के व्यापक इंतजाम किए हैं।

18

तकनीक और नवाचार से सशक्त होता कृषि क्षेत्र*

"मैंने आज स्टार्ट-अप के रूप में देखा है कि जब आप एक-एक जगह पर जाएँगे तो देखेंगे कि किस तरीके से इन स्टार्ट-अप के माध्यम से हमने लागत को कम करने का काम किया है, उत्पादन बढ़ाने का काम किया है तथा उत्पादन और उसकी प्रोसेसिंग के बाद उसका वैल्यू एडिशन करने का काम किया है।"

भारत किसान एवं कृषि प्रधान देश है। इसीलिए हम कहते हैं, सीमा पर खड़ा जवान देश की रक्षा का काम कर रहा है, खेत में खड़ा किसान, चाहे ठिठुरती ठंड हो, तपती गर्मी हो, बरसात हो, वह अन्नदाता के रूप में अन्न का उत्पादन करके भारत को कृषि जगत में आत्मनिर्भर बनाने के लिए अपने लक्ष्य और संकल्प को पूरा कर रहा है।

75 वर्ष की लोकतंत्र की यात्रा में हमने कृषि क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन किए हैं। एक समय था, जब हमें भारत में खाद्यान्न यानि गेहूँ से लेकर अन्य चीजें दुनिया के अन्य विकसित देशों से मँगानी पड़ती थीं, लेकिन जय जवान, जय किसान का नारा देते हुए भारत के किसान हरित क्रांति लेकर आए थे। आज हम अन्न उत्पादन में पूरी दुनिया में सबसे बड़े देश के रूप में जाने जाते है। अभी हमारा संकल्प और कार्य पूरा नहीं हुआ है। हमें अनवरत प्रयास करने की आवश्यकता है।

हमने कृषि में कई परिवर्तन और नवाचार किए हैं, लेकिन इस बदलते परिप्रेक्ष्य और नवाचार में एग्रीकल्चर के क्षेत्र में श्वेत क्रांति, दूध उत्पादन, मछली उत्पादन में नए तंत्र का उपयोग करते हुए हमें पूरी दुनिया में सबसे अग्रिम पंक्ति का देश बनना है। मेरा दावा है कि पूरी दुनिया में भारत की आर्थिक स्थिति की कोई रीढ़ की हड्डी है, तो वे किसान भाई हैं। मैंने कोरोना के समय देखा था, जब पूरे देश में लॉकडाउन लगा था, तब किसान का बेटा

* कृषि महोत्सव प्रदर्शनी और प्रशिक्षण मेले के शुभारंभ के अवसर पर संबोधन, कोटा-बूँदी, राजस्थान, 24 जनवरी, 2023

जो शहर में 15,000 से 20,000 रुपए की नौकरी करता था, जब दुकान और प्रतिष्ठान बंद हो गए, लॉकडाउन लग गया, तो उसने अपने गाँव जाकर खेत-खलिहान में दो वक्त की रोटी का इंतजाम किया।

यह अन्नदाता की ताकत है। जब हर सेक्टर के अंदर उत्पादन कम हो गया था, उस समय कोरोना जैसी वैश्विक महामारी में भी इस भारत के किसान ने अन्नदाता के रूप में अन्न उगाकर पेट भरने के लिए अन्न की कमी नहीं होने दी थी। अगर भारत के प्रधानमंत्री जी ने देश के 80 करोड़ लोगों को नि:शुल्क अन्न देकर उनके पेट भरने का काम किया तो वह काम केवल हमारे किसान भाइयों के कारण संभव हो सका।

हमें अभी और परिवर्तन करने हैं। यह बदलता हुआ भारत है। बदलता हुआ भारत आत्मनिर्भर भारत तब बनेगा, जब दुनिया के अंदर हो रहे नवाचार, नई तकनीक, नई कृषि परंपराओं का उपयोग करते हुए कम जमीन पर ज्यादा उत्पादन होगा तथा लागत कम होगी। उत्पादन के बाद जब तक हमारे देश का किसान उसकी प्रोसेस करके, उसका वैल्यू एडीशन करके देश और दुनिया के बाजारों में बेचने का काम पूरा नहीं कर लेगा, तब तक अनवरत काम चलता रहेगा। जब मैं दिल्ली में कृषि मेला देखने गया तो उस समय मेरे साथ कैलाश जी थे। मैंने कहा कि इसके बारे में हर किसान को पता होना चाहिए। हमारा जो नौजवान है, जिसने कृषि के अंदर अपना स्टार्ट-अप बनाया है, जिसकी रिसर्च और इनोवेशन में बौद्धिक क्षमता है, उसका उपयोग देश और प्रदेश के किसानों को मिलना चाहिए।

मैंने आज स्टार्ट-अप के रूप में देखा है कि जब आप एक-एक जगह पर जाएँगे तो देखेंगे कि किस तरीके से इन स्टार्ट-अप के माध्यम से हमने लागत को कम करने का काम किया है, उत्पादन बढ़ाने का काम किया है तथा उत्पादन और उसकी प्रोसेसिंग के बाद उसका वैल्यू एडिशन करने का काम किया है।

यह हाड़ौती की वह धरती है, जहाँ की जमीन सबसे उपजाऊ है। यहाँ पर चंबल नदी है, पार्वती है तथा कालीसिंध नदी है। जितना पानी भारत के अंदर किसी इलाके में होगा, उससे ज्यादा पानी यहाँ पर है, लेकिन आधुनिक खेती करने की परंपराएँ कम हैं। यहाँ का धनिया देश में और दुनिया में महत्त्व रखता है। मैं यहाँ के बासमती के चावल के बारे में बताता हूँ। जब मैं नीदरलैंड गया तो मैंने पूछा कि सबसे बढ़िया चावल कौन सा है तो उन्होंने कहा राजस्थान में बूँदी का है। मेरा सीना गर्व से फूल गया। जब मैं दुबई गया तो मैंने मसाला इंडस्ट्री वालों से पूछा कि धनिया कहाँ से आता है तो उन्होंने कहा कि धनिया तो कई जगहों से आता है, लेकिन जो महक और चमक है, वह कोटा और रामगंज मंडी की है। यह हमारी ताकत है। दुनिया के अंदर सबसे बढ़िया लहसुन हमारे यहाँ पैदा होता है, लेकिन कभी किसानों को उसके एवज में 80 रुपए तो कभी 8 रुपए मिलते हैं।

हमारे मन में पीड़ा होती है कि आखिर इतनी मेहनत से किसान ने लहसुन उगाया है, लेकिन आने वाले समय में आप इन्हीं स्टार्ट-अप मेलों में देखेंगे कि किस तरीके से लहसुन को दो-तीन साल रखकर जब उसकी प्रोसेसिंग के बाद भाव आएगा तो आप उसको बेचने का काम करेंगे।

अभी मैंने एक स्टार्ट-अप देखा। उस स्टार्ट-अप में हमारे जो फलोद्यान होते हैं, जिनके फलों से जूस निकलता है और जूस के बाद उसका किल्ट निकलता है, मैंने उसकी चॉकलेट देखी। आप मानकर चलिए कि उसके बाद उस जूस को दो साल तक छोटी पैंकिंग में रखा जा सकता है। ऐसे कई सारे स्टार्ट-अप हैं। हमने ड्रोन देखा है। किसान खुद खेती करना छोड़ रहे हैं। आज बच्चों को पढ़ाने के लिए लोग शहरों की तरफ आ जाते हैं और खेती को कांट्रैक्ट पर दे देते हैं। अब आने वाले समय के अंदर लागत कम करने के लिए इस ड्रोन से आप बीज डाल सकते हैं, फसलों में कीड़े न लगे, उसके लिए एक साथ पेस्टिसाइड कर सकते हैं।

यह ड्रोन देखेगा कि कहाँ-कहाँ बीमारी है और वहीं पत्तियों पर पेस्टिसाइड डालने का काम करेगा। इस ड्रोन की कीमत कितनी है ? अभी भी इस पर 90 प्रतिशत सब्सिडी है, अगर 10 लाख रुपए का ड्रोन है तो वह एक लाख रुपए में मिलेगा। किसान आपस में बाँटकर काम करेंगे तो हर छोटी दूरी पर हम ड्रोन की इस टेक्नोलॉजी का उपयोग करने लगेंगे। ऐसे कई सारे स्टार्ट-अप हैं। इन स्टार्ट-अप को देखने के बाद मेरी इच्छा हुई कि मेरा शहर, मेरा संसदीय क्षेत्र, कृषि उत्पादन में हाड़ौती का क्षेत्र देश और दुनिया में सबसे आगे रहे। यहाँ का किसान, उस किसान का बेटा, जो यहाँ से पढ़कर शहर में जाता है, 10 हजार या 15 हजार रुपए की नौकरी ढूँढ़ता रहता है, एक समय ऐसा आए, जैसा मैंने लाल चंद कटारिया जी के इलाके में देखा कि वहाँ 18 बीघे खेत के अंदर व्यक्ति दो करोड़ रुपए कमाता है। यहाँ पर हम कभी भी पशुपालन का काम भी नहीं करते हैं। यहाँ घास चराने बाड़मेर के लोग आते हैं, लेकिन यहाँ का व्यक्ति पशुपालन नहीं करेगा। मैंने पिछली बार पशुपालन और किसान क्रेडिट कार्ड के लिए कार्यक्रम किया था, वित्त मंत्री जी आई थीं, उस समय भी मैंने कहा था कि समय लगेगा, लेकिन एक दिन इस इलाके के अंदर श्वेत क्रांति लेकर ही आएँगे और श्वेत क्रांति के साथ यहाँ पर मैंने जो प्रोसेसिंग प्लांट देखे हैं, उनको देखकर जाना कि किस तरीके से दही बना, मक्खन बना, छाछ बनी, आइसक्रीम बनी। आने वाले समय में प्रोडक्शन के साथ-साथ प्रोसेसिंग प्लांट लगेंगे और इसका वैल्यू एडिशन होगा, तब किसान की लागत निकलेगी और अच्छे दाम मिलेंगे। अभी बूँदी के अंदर सब्जियों को प्रोसेस करके, प्रिजर्व करने का काम चलता है। आप अर्जुनपुरा के अंदर चले जाएँ, आप गिरधरपुरा के अंदर चले जाएँ, जब अर्जुनपुरा और गिरधरपुरा के किसानों की आप आमदनी देखेंगे कि एक बीघा खेत के अंदर

वह 20 हजार रुपए से 40 हजार रुपए तक कमा रहा है। दूसरी तरफ एक किसान एक बीघा खेत के अंदर 2 हजार या 3 हजार रुपए कमाता है और अगर कभी आपदा या संकट आ जाए तो वह भी नहीं मिलता है। यह परिवर्तन हम एक शहर के दूसरे हिस्से की जमीन में देख रहे हैं। मैंने पिछली बार कहा था कि मैं एक लाख वृक्षों वाला फलोद्यान दूँगा। इस बार मैंने लक्ष्य रखा है कि हर विधान सभा क्षेत्र के अंदर एक लाख वृक्षों वाला फलोद्यान लगाया जाएगा और उसके साथ उससे जो नीबूं आएगा, अमरूद आएगा, आँवला आएगा, बेर आएगा, अब बेर के बारे में मैंने देखा कि बेर की प्रोसेसिंग होती है, आँवले की प्रोसेसिंग हो रही है। ये सब प्रोसेसिंग के साथ अगर हम फलोद्यान लगाएँगे, मेंड़ पर पेड़ लगाने लगेंगे तो आमदनी बढ़ेगी।

जब तक मेरे किसान भाइयों की आमदनी नहीं बढ़ेगी, देश की आर्थिक स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आ सकता है। मेरा मानना है और मुझे पीड़ा है, दर्द है कि मेरे किसान भाइयों की आमदनी बढ़नी ही चाहिए। किसान का बेटा 10 हजार रुपए या 15 हजार रुपए पर दुकान पर, ड्राइवर के रूप में नौकरी करता हुआ शहरों में नजर नहीं आए। वह गाँव में रहकर एक लाख रुपए की आमदनी करता हुआ नजर आए। यह ताकत हाड़ौती के किसान में पैदा करनी है। मुझे लगता है कि कई बार मैं सपना देखता हूँ, लेकिन सपनों को सच करने के लिए उतनी ऊर्जा भी है, उतना आपका सहयोग भी है। जो कुछ भी जिम्मेदारी आपने मुझे दी है, दिल्ली की संसद में बैठकर, माननीय मंत्रियों को बुला-बुलाकर मैं यही कहता हूँ कि मेरे किसान की आमदनी कैसे बढ़ सकती है, कैसे एग्रीकल्चर के अंदर नए बीज आएँ, कम पेस्टिसाइड्स और जैविक खाद के रूप में क्या हो सकता है, इन सब पर चर्चा करने के बाद जो परिणाम निकलता है, उसके लिए किसान मेला लगाते हैं। इसलिए आने वाले समय के अंदर मैं आपसे यही निवेदन करूँगा कि इन स्टार्ट-अप को देखकर जाएँ।

यहाँ कृषि वैज्ञानिक आएँ और उनके द्वारा दिए जा रहे प्रशिक्षण को समझें। कौन सा नया बीज आया है, कितना पेस्टिसाइड लगाना चाहिए, कैसे अपनी मिट्टी की जाँच करनी चाहिए, हमें ये सारे काम सीखकर जाने हैं। इसलिए आप सबसे निवेदन है, यह मेला आज भी है, कल भी है। कल हमारे कृषि मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर जी आएँगे। प्रत्येक किसान, जिसने हर नई चीज की प्राकृतिक रूप से परंपरागत रूप से खेती की है, उस परंपरागत और आधुनिक खेती को मिलाकर नए आविष्कार करने का काम करें और उदाहरण पेश करें। दुनिया के लोग, देश के लोग हाड़ौती के खेतों को देखने आएँ, मैं यह सपना देखना चाहता हूँ और पशुपालन के रूप में डेयरी को देखने आएँ, मैं यह देखना चाहता हूँ। वैल्यू एडिशन के काम को देखने के लिए दुनिया के लोग यहाँ पर आएँ।

मैं दुनिया के जिस भी देश में जाता हूँ, जैसे मैं पिछली बार मैक्सिको गया तो मैंने अपने एंबेसडर से कहा कि मुझे कृषि विज्ञान केंद्र जाना है, क्योंकि मैक्सिको के अंदर पहली बार

गेहूँ के नए बीज के उत्पादन का आविष्कार हुआ था। मैं मैक्सिको गया और वहाँ मैंने देखा कि गेहूँ के नए बीज को पैदा करने वाला व्यक्ति कौन था, वह भारत का वैज्ञानिक था, जो आजाद हिंद फौज का एक सैनिक था। वह जहाज पर कुली के रूप में बैठकर गया था और कैलिफोर्निया होते हुए वहाँ पहुँचा। वह मैक्सिको की यूनिवर्सिटी के अंदर सबसे बड़ा वैज्ञानिक और डायरेक्टर बना। यह भारत की ताकत है। यह भारत की ताकत मैंने दुनिया के अंदर देखी है। दुनिया के कितने भी देशों में चले जाइए, चाहे ऑस्ट्रेलिया में चले जाइए, चाहे कनाडा में चले जाइए, वहाँ किसान मिलेगा तो भारत का मिलेगा। इसलिए भारत के किसान की ताकत बहुत बड़ी है। भारत के किसान में बहुत ऊर्जा है और काम करने तथा कठिन परिश्रम करने की ताकत है। इसलिए किसान भाइयो! यहाँ पर आइए तथा कल अपने और भाइयों को भी लेकर आइए। हर स्टार्ट-अप पर जाओ, चीजों को समझो और जो समझ में आए, उसको देखो कि आप उसे कैसे उपयोग करना चाहते हैं। मैं आपके साथ हूँ और धन की कोई कमी नहीं आएगी। हम सब मिलकर यहाँ पर नए स्टार्ट-अप के माध्यम से आधुनिक खेती करके कृषि विज्ञान केंद्र के रूप में एक नए युग की शुरुआत करेंगे।

19

कृषि क्षेत्र में मूल्य संवर्धन के माध्यम से कृषकों की आय वृद्धि*

"रावला मंडी का धनिया हो, जोधपुर संभाग का जीरा हो, नागौर की कसूरी मेथी हो, बिलाड़ा की सौंफ हो, बीकानेर की मेथी हो, अजवाइन और मिर्ची इत्यादि मसाला प्रोडक्शन का एक बहुत बड़ा हब राजस्थान की धरती पर है।"

राजस्थान एसोसिएशन ऑफ स्पाइस की इस इंटरनेशनल बिजनेस मीट में आकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई कि आपने राजस्थान की इस शौर्य और वीरता की धरती, त्याग-तपस्या की धरती, सेवा और समर्पण की धरती के माध्यम से आज देश और दुनिया को बता दिया कि यह मसाला प्रोडक्शन की भी बड़ी धरती है। मुझे खुशी है कि आपके माध्यम से मुझे जानकारी मिली कि भारत के 25 परसेंट से अधिक मसाले के कल्टीवेशन में, प्रॉसेसिंग में, पैकिंग में तथा एक्सपोर्ट में राजस्थान की धरती का बहुत बड़ा योगदान है।

पहले मैं समझता था कि मेरे हाड़ौती क्षेत्र के धनिये की चमक केवल भारत में ही नहीं, दुनिया के अंदर है, लेकिन आज जब मैं गया तो मैंने देखा कि राजस्थान के अलग-अलग क्षेत्रों के अंदर जिस तरीके से मसाला एक उद्योग के रूप में स्थापित है और विशेष रूप से कुछ स्पाइसेज, कुछ मसालों के उत्पादन का तो बहुत बड़ा हिस्सा राजस्थान में होता है। मैंने विशेष रूप से देखा कि किस तरीके से हमारा जीरा और मेथी, मेथी के बारे में तो बताया गया कि 70 परसेंट मेथी का उत्पादन केवल राजस्थान में होता है, इसके लिए मैं आपको साधुवाद देता हूँ। चाहे रावला मंडी का धनिया हो, जोधपुर संभाग का जीरा हो, नागौर की कसूरी मेथी हो, बिलाड़ा की सौंफ हो, बीकानेर की मेथी हो, अजवाइन और मिर्ची इत्यादि मसाला प्रोडक्शन का एक बहुत बड़ा हब राजस्थान की धरती पर है। जब आप दुनिया के अंदर जाएँगे तो देखेंगे

* राजस्थान मसाला संघ द्वारा आयोजित इंटरनेशनल बिजनेस मीट के अवसर पर संबोधन, जयपुर, राजस्थान, 28 जनवरी, 2023

कि भारत के मसालों की डिमांड सबसे ज्यादा है। हम मिडिल ईस्ट के इलाके में जाते हैं तो मिडिल ईस्ट में सबसे ज्यादा भारत के मसालों को पसंद किया जाता है। अब कुछ यूरोप की तरफ बढ़ने लगे हैं। कई कंट्रीज, दक्षिण अफ्रीका के अंदर भी मैं गया, पूरी अफ्रीकन कंट्रीज के अंदर भी भारत के मसालों की डिमांड बढ़ रही है। यह आपका प्रयास है। आपके प्रयासों के कारण हमारे किसान समृद्ध हो रहे हैं, प्रगतिशील हो रहे हैं। कम जमीन पर ज्यादा उत्पादन करके और उस उत्पादन के बाद वैल्यू एडीशन करके उसको मसाले में प्रोसेस करने का काम आप लोग करते हैं। वैल्यू एडीशन किसी भी खाद्यान्न का हो, मसाले का हो या अन्य कोई भी चीज, जो धरती से उगती है, सभी प्रोडक्ट, उसमें केवल खाद्यान्न ही नहीं है, दवाइयों के रूप में भी मसाला और जड़ी-बूटी का प्रयोग होता है और उसके प्रोडक्शन का बहुत बड़ा हब आने वाले समय में राजस्थान बनता जा रहा है। जब हम इस वैल्यू एडीशन करने की इंडस्ट्रीज को गाँवों में लगाना शुरू करेंगे, ग्रामीण इलाकों के अंदर शुरू करेंगे, तो हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था भी मजबूत होगी और किसान की आर्थिक स्थिति भी मजबूत होगी। बदलते भारत के अंदर जहाँ हम परंपरागत खेती करते हैं, इस परंपरागत खेती के साथ जैविक खेती के रूप में हम कदम बढ़ा रहे हैं, प्राकृतिक खेती के रूप में कदम बढ़ा रहे हैं।

लेकिन उसके साथ-साथ हमें मसाला प्रोडक्शन का हब भी बनाने की आवश्यकता है। मैंने अभी जीरे की चमक और खुशबू को देखा। नागौर की मेथी देखी। मैंने यहाँ के धनिए को देखा। मैंने यहाँ की मूँगफली को देखा। ऐसे बहुत सारे आइटम्स, जिनमें विशेष रूप से कई प्रोडक्शन तो हमारे यहाँ ही होते हैं, उनको देखा। यह शायद मेरी पहली जानकारी थी कि नागौर में जो कसूरी मेथी होती है, देश और दुनिया में उसके 70 पर्सेंट प्रोडक्शन का हब राजस्थान ही है। हमें इस दिशा की ओर बहुत से कदम बढ़ाने की आवश्यकता है। इस नए बदलते परिप्रेक्ष्य में हम किसानों को किस तरीके से जागरूक करें, उनकी एक-एक जमीन को साथ मिलाकर हम किस तरीके से एफपीओ बनाना शुरू करें और उन एफपीओ को बनाने का काम भी आप करें, उनका सहयोग करें कि किस तरीके से फार्मर प्रोडक्शन ऑर्गेनाइजेशन अलग-अलग इलाके के किसान सामूहिकता के साथ खेती करें। हमारे जितने भी कृषि के नए स्टार्ट-अप हैं, नए इनोवेशंस हैं, नए रिसर्च हैं, उनका उपयोग करते हुए किसान के प्रोडक्शन को बढ़ाने का काम करें। अभी 24-25 तारीख को कोटा में कृषि महोत्सव में देश के नौजवानों ने जो बौद्धिक क्षमता, इनोवेशन, रिसर्च की क्षमता के जो नए स्टार्ट-अप एग्रीकल्चर के सेक्टर में तैयार किए, नई तकनीकी खेती, वैज्ञानिक खेती और नए तकनीकी यंत्रों का उपयोग करते हुए हम अपनी जमीन को भी बचाते हुए प्रोडक्शन उसके वैल्यू एडीशन को बढ़ाने के लिए मैंने दो दिन का कृषि महोत्सव आयोजित किया।

राजस्थान मसाला संघ द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय व्यापार सम्मेलन को संबोधित करते हुए

माननीय प्रधानमंत्री जी ने दिल्ली के पूसा में मेले का उद्घाटन किया था तो मुझे वहाँ जाने का सौभाग्य मिला और मैंने देखा कि किस तरीके से कृषि स्टार्ट-अप के अंदर कृषि की नई तकनीकी, वैज्ञानिक तकनीकी, नई तकनीकी के यंत्रों का उपयोग, जिसकी जानकारी अभी किसान के अंतिम छोर तक नहीं पहुँची है, उस काम को अब आपको करना है। यहाँ दो दिनों तक जो सेमीनार होगा, चर्चा होगी, संवाद होगा, मंथन होगा, विचार होगा, चिंतन होगा, अपने-अपने अनुभवों को साझा करेंगे। यह मानकर चलें कि लोकतंत्र में सबसे बड़ी ताकत विचारों का आदान-प्रदान है। इनोवेशन को सीखना, चिंतन करना और अच्छी प्रैक्टिसेज से शनैः-शनैः बदलाव की ओर बढ़ना है। इसके लिए जितना प्रयास करेंगे, राजस्थान और देश के किसानों की जिंदगी में उतनी ही समृद्धि ला पाएँगे। आपके प्रयासों से किसान की जिंदगी बेहतर होगी, क्योंकि आपका किसान से बड़ा निकट का संबंध है। अच्छा उत्पादन होगा, क्वालिटी उत्पादन होगा, क्वालिटी वाले बीज मिलेंगे, नए इक्विपमेंट्स, नए संयंत्र होंगे, वैज्ञानिक खेती करने के जितने नए-नए तरीके आप बताएँगे, उतने ही वे अपने उत्पादन को बढ़ाने का काम करेंगे, क्योंकि गाँव में जब तक आप जमीन पर किसी चीज को प्रैक्टिकल करके नहीं बताएँगे, तब तक किसान परंपरागत खेती को छोड़ने वाला नहीं है। इस 75 सालों की यात्रा में बहुत कुछ परिवर्तन हुआ है, लेकिन दुनिया में जिस देश ने कृषि क्षेत्र में बहुत जल्दी परिवर्तन किया, वह देश आर्थिक रूप से मजबूत होता चला गया। हमारी 60 से 70 प्रतिशत अर्थव्यवस्था, कृषि आधारित है। मान लीजिए कि आप मसालों के निर्यातक हैं। आप किस पर निर्भर हैं? आप किसान

पर निर्भर हैं। अगर अच्छी फसल पैदा होगी, क्वालिटी वाली फसल पैदा होगी, ज्यादा उत्पादन होगा, तो आप उसको ज्यादा अच्छे तरीके से वैल्यू एडीशन करके देश और दुनिया के अंदर और मार्केट ढूँढ़ने का काम करेंगे। जितना उत्पादन अधिक होगा, उतना ही आप नए मार्केट डेवलप करने का काम करेंगे। इसलिए आपकी जो यह दो दिनों की 'मीट' है, उसमें हमारा फोकस किसान पर होना चाहिए, उत्पादन पर होना चाहिए। कई अच्छी कंपनियाँ अगर समझदारी से काम करती हैं तो वे अपने बीज, क्वालिटी के बीज, कितना पेस्टीसाइड का उपयोग करना है, कम पेस्टीसाइड और कम उर्वरकों का उपयोग करना है, वे करेंगे। जिस किसान ने कम उर्वरक और कम पेस्टीसाइड्स का प्रयोग करके अपने उत्पादन को बढ़ाया है, अगर आप उसका उदाहरण देंगे तो फिर किसान उसी दिशा की ओर काम करने का प्रयास करेंगे। इसलिए मेरा कहना है कि आपको कुछ गाँवों को गोद लेकर, उनसे बात करके हमें फार्मर्स प्रोडक्शन ऑर्गेनाइजेशन के साथ मिलकर या फार्मर्स प्रोडक्शन एसोसिएशन आप बनाकर काम करें। अभी हम यह लक्ष्य बनाकर चलें कि आने वाले समय में देश के अंदर और देश के बाहर भी, विभिन्न प्रकार के मसाले, चाहे खाने के रूप में काम आएँ या दवा के रूप में काम आएँ या आयुर्वेद में काम आएँ, इस दिशा में हम काम करेंगे। अगले साल जब यह 'मीट' हो तो आप मंथन करेंगे कि हम किस स्थिति तक पहुँचे हैं। जब हम हर कार्य का मूल्यांकन करते जाएँगे तो निश्चित रूप से उसके बेहतर परिणाम आते जाएँगे, क्योंकि चर्चा, संवाद के बाद मूल्यांकन भी जरूरी है। संसद में कहते हैं कि आप चर्चा कीजिए, संवाद कीजिए, बातचीत कीजिए, डिबेट कीजिए। उसके मंथन से जो अमृत निकलेगा, उससे कल्याण होगा।

आपके मंथन से जो विचार-विमर्श निकलेगा, उससे देश व राजस्थान के किसानों का कल्याण होगा। मुझे आशा है कि आने वाले समय में आपके प्रयासों से राजस्थान के किसान आर्थिक रूप से मजबूत होंगे और 'आत्मनिर्भर भारत' का हमारा जो सपना है, वह भी पूरा होगा। इसके लिए मैं आप सब को विशेष रूप से धन्यवाद देता हूँ।

मुझे चिंता है कि लोग गाँव से शहर की ओर पलायन कर रहे हैं। यदि हमें उस पलायन को रोकना है तो ग्रामीण क्षेत्र के अंदर इंडस्ट्रीज को डेवलप करना पड़ेगा और वहाँ लोगों को रोजगार उपलब्ध कराना पड़ेगा। गाँव के आस-पास रोजगार उपलब्ध कराने के लिए मुझे लगता है कि राजस्थान स्पाइस एसोसिएशन से ज्यादा महत्त्वपूर्ण कोई संगठन नहीं हो सकता। मैं हर वर्ष आपके साथ बैठूँगा। मेरे संबंध में आपको किसी भी तरह की कोई कठिनाई हो, कोई विषय हो, आपको एक्सपोर्ट करने में, आपके नए एक्सपोर्ट मार्केट को डेवलप करने में, किन देशों में हम अपने मसाले को एक्सपोर्ट कर सकते हैं, उनकी क्या-क्या परेशानी है, उन परेशानियों का क्या सॉल्यूशन हो सकता है, मैं आपके साथ हूँ।

हर समस्या का समाधान निकलेगा और इसे हमें निकालना है। असंभव जैसी चुनौतियों से लड़ना और उन चुनौतियों से समाधान निकालना, यह भारत के राजनैतिक नेतृत्व की ताकत है। दुनिया में माननीय नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में हम देख रहे हैं कि हमारा देश किस तरीके से आगे बढ़ रहा है। उनका भी बार-बार यह सपना रहता है कि अगर हमें अपने देश को विकसित राष्ट्र बनाना है तो हमारे गाँव के अंतिम छोर पर बैठे किसान की जिंदगी को समृद्ध और खुशहाल करना होगा, तब हम विकसित राष्ट्र के सपने को पूरा कर पाएँगे। एक विकसित राष्ट्र के सपने में आपका बहुत बड़ा योगदान है।

20

एमएसएमई क्षेत्र-देश के आर्थिक विकास का इंजन*

"इन नई नीतियों और पॉलिसीज के माध्यम से छोटे-छोटे गाँवों के अंदर भी हम लघु उद्योग लगाकर, सूक्ष्म उद्योग लगाकर, कुटीर उद्योग लगाकर, खादी ग्रामोद्योग लगाकर, लोगों की जिंदगियों को बेहतर कर सकते हैं और रोजगार भी दे सकते हैं।"

आज इस एमएसएमई औद्योगिक मेले और प्रदर्शनी के अंदर हमारे बीच में पधारे सभी व्यक्तियों का मैं हार्दिक अभिनंदन करता हूँ।

मुझे आशा है कि भारत के अंदर सूक्ष्म लघु, मध्यम उद्योगों को नई दिशा मिलेगी और आने वाले समय के अंदर हमारा एमएसएमई सेक्टर देश के आर्थिक ग्रोथ का इंजन है, जो हमारे आर्थिक तंत्र का महत्त्वपूर्ण उद्योग है, जो सबसे ज्यादा रोजगार देने वाला है, उसमें आपके विजन से नई दिशा मिलेगी।

इस देश के अंदर एमएसएमई का योगदान तीस प्रतिशत है और रोजगार की दृष्टि से देखें तो सबसे ज्यादा अगर रोजगार मिलता है तो एमएसएमई सेक्टर के अंदर मिलता है। आने वाले समय में भारत के प्रधानमंत्री जी का मानना है कि एमएसएमई सेक्टर केवल हमारे भारत का ही नहीं, ग्लोबल आर्थिक तंत्र बने और इसीलिए एमएसएमई सेक्टर के अंदर सरकार ने बहुत नीतियाँ बनाई हैं। इन नई नीतियों और पॉलिसीज के माध्यम से छोटे-छोटे गाँवों के अंदर भी हम लघु उद्योग लगाकर, सूक्ष्म उद्योग लगाकर, कुटीर उद्योग लगाकर, खादी ग्रामोद्योग लगाकर, लोगों की जिंदगियों को बेहतर कर सकते हैं और रोजगार भी दे सकते हैं।

इसीलिए सरकार ने एक और प्रयास किया है कि हर जिले के अंदर, जो वहाँ का प्रोडक्ट हो, उस प्रोडक्ट को आने वाले समय के अंदर ग्लोबल मार्केट मिले, उसके लिए

* एमएसएमई औद्योगिक मेले के आयोजन पर संबोधन, कोटा, राजस्थान, 4 मार्च, 2023

भी एक डिजिटल सिस्टम को डेवलप किया है, ताकि किसी छोटे गाँव के अंदर भी कोई प्रोडक्ट बनाता है, कोई वैल्यू एडीशन करता है, तो उसका मार्केट राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय हो सके। आने वाले समय के अंदर, इस देश के अंदर, समाज के अंदर अगर परिवर्तन लाना है, लोगों को आर्थिक रूप से मजबूत करना है, गाँवों के अंदर रोजगार देकर लोगों की, नौजवानों की जिंदगियों को बेहतर करना है, तो इस सेक्टर की ओर विशेष ध्यान देना पड़ेगा।

जैसा कि माननीय मंत्री जी ने चिंता व्यक्त की और यह मेरे लिए भी विशेष चिंता का विषय है कि किसी जमाने में कोटा औद्योगिक नगर कहलाता था और आज देश के अंदर सबसे कम एमएसएमई सेक्टर के रूप में हम खड़े हैं।

इस मेले और प्रदर्शनी को लगाने का उद्देश्य भी यही है। हमने पहले डिफेंस एक्सपो लगाया। डिफेंस की बड़ी-बड़ी कंपनियाँ आईं, ताकि डिफेंस सेक्टर के छोटे और लघु उद्योग, एमएसएमई इंडस्ट्री लगे। इसके बाद हमने कृषि स्टार्ट-अप मेला लगाया।

हाड़ौती कृषि प्रधान है, हम किस तरीके से किसान की आमदनी बढ़ाएँ और गाँवों के अंदर जो उत्पादन हो रहा है, फसल पैदा हो रही है, उसका वैल्यू एडीशन करके राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मार्केट दे सकें। इसमें कुछ बेहतर स्टार्ट-अप भी आए थे। आज एमएसएमई का मेला मील का पत्थर साबित होगा।

हमारे जीवन में पढ़ाई के साथ-साथ एंटरप्रेंयोरशिप होनी चाहिए। हमारे हर कार्य में उद्यमिता होनी चाहिए। अगर हमारा विजन, हमारी रिसर्च, हमारी इनोवेशन इस दिशा की ओर होगी तो आने वाले समय में आप नौकरी लगाने वाले होंगे, नौकरी माँगने वाले नहीं होंगे।

मैं देखता हूँ, जब भी मैं रोजगार मेला लगाता हूँ, हजारों की तादाद में नौजवान आते हैं। अब इन नौजवानों को कोशिश करनी चाहिए कि हम किस तरीके से नए स्टार्ट-अप लगाएँ। गाँवों के अंदर छोटे, लघु कुटीर उद्योग लगाएँ, हस्तकला, शिल्पकला के उद्योग लगाएँ और गाँवों में उस प्रोडक्ट की मार्केटिंग करने के लिए तो आजकल डिजिटल प्लेटफार्म है, जिसका वे बेहतर तरीके से उपयोग कर सकते हैं।

यहाँ इंडस्ट्री सेक्टर के लोग भी बैठे हैं, मैं उनसे भी आग्रह करना चाहता हूँ कि अगर इंडस्ट्री सेक्टर को डेवलप करना है तो जो नए इनोवेशन, नई रिसर्च और परिवर्तन हो रहे हैं, उन परिवर्तनों को कोटा में लाकर इंडस्ट्री सेक्टर के लोगों को बताना चाहिए।

कोटा वह शहर है, जो रोड कनैक्टिविटी में सबसे बेहतर है। दिल्ली-मुंबई कोरिडोर बनने के बाद आने वाले समय में साढ़े चार घंटे में दिल्ली और साढ़े सात घंटे में मुंबई पहुँच सकेंगे। चंबल एक्सप्रेस वे बनने के बाद आप आने वाले समय में कोटा से चलकर इटावा, इटावा से उत्तर प्रदेश, कानपुर साढ़े पाँच या छह घंटे में पहुँच जाएँगे।

एमएसएमई औद्योगिक प्रदर्शनी और मेले का उद्घाटन करते हुए

रोड कनैक्टिविटी किसी भी क्षेत्र में आर्थिक प्रगति की द्योतक होती है। रेल कनैक्टिविटी, रोड कनैक्टिविटी और सबसे बड़ी बात किसी इंडस्ट्री को लगाने के लिए पानी चाहिए। चंबल माँ का हमें वरदान है, इसलिए पानी की कोई कमी नहीं है। बिजली के हर तरह के उद्योग, कोयले, गैस, एटॉमिक पावर से लेकर तमाम जिस तरीके की बिजली पैदा हो सकती है, वह कोटा में हो सकती है।

राजकुमार जी एयरपोर्ट की चर्चा कर रहे थे, बहुत जल्दी एयरपोर्ट भी आ जाएगा और हर तरह की कनैक्टिविटी भी बढ़ जाएगी। लेकिन सबसे बड़ा आपको काम करना है कि हम किस तरीके से एमएसएमई सेक्टर डेवलप करें।

मैं कुछ दिनों से देख रहा हूँ, कोटा के कोचिंग हब बनने के बाद हमारे इंडस्ट्री सेक्टर के लोग होस्टल की तरफ बढ़े हैं। होस्टल बनाना हमारा काम हो सकता है, लेकिन हमारी बेसिक एंटरप्रेंयोरशिप इंडस्ट्रीज की थी और इंडस्ट्रीज के लिए आज नारायण राणे जी यहाँ हैं, देश के कई अलग हिस्सों से यहाँ इंडस्ट्रीज के लोग आए हैं, आप उनको देखें, समझें और किस तरीके से भविष्य में और इंडस्ट्रीज लग सकती हैं, उसकी कार्य योजना बनाएँ।

निश्चित रूप से हमारा लक्ष्य दो साल में यह होना चाहिए कि हम कोटा को औद्योगिक नगरी बनाएँ, हाड़ौती को औद्योगिक नगरी बनाएँ, चाहे कोटा हो, बूँदी हो, बाराँ हो, झालावाड़ हो, तमाम सेक्टर को किस तरीके से इंडस्ट्रीज का हब बना सकते हैं। हर गाँव में नौजवानों को छोटे-छोटे लघु उद्योग लगाकर रोजगार दे सकते हैं।

जब मैं गाँव में जाता हूँ तो देखता हूँ कि जब छोटी इंडस्ट्री भी गाँव में आती है तो 25-50 लोग काम पर लग जाते हैं। अगर ये छोटी-छोटी इंडस्ट्रीज हर गाँव में लगने लग

जाएँ तो आस-पास के गाँव में रोजगार के लिए इससे बड़ा कोई और साधन नहीं हो सकता है, इसलिए मेरा हमेशा प्रयास रहता है।

आने वाले भविष्य में इस देश को बदलने के लिए, इस देश को नई दिशा देने के लिए और इस देश की आर्थिक तंत्र को मजबूत करने के लिए एमएसएमई सबसे बड़ा सेक्टर है तथा सरकार का सारा ध्यान एमएसएमई सेक्टर पर है।

सरकार की योजना है कि आने वाले समय में दुनिया के अंदर भारत ट्रेड, टेक्नोलॉजी और टूरिज्म के मामले में एक हब बने। इसके लिए भारत के प्रधानमंत्री जी ने सभी देशों के दूतावासों से कहा है कि इस देश में छोटे ट्रेड को बढ़ाने के लिए, भारत के उत्पादों को लाने के लिए, उस देश में जो अच्छी टेक्नोलॉजी है, उसको भारत में लाने के लिए और टूरिज्म बढ़ाने के लिए प्रयास करें। यह काम हमें करना है। ये सब एमएसएमई सेक्टर के दायरे में आते हैं।

मुझे आशा है कि आने वाले समय में हम सबके प्रयासों से यह काम जरूर होगा। आज यहाँ तीन दिन मेला लगेगा। आप यहाँ कुछ समझेंगे और कुछ देखेंगे। जब नारायण राणे जी दोबारा यहाँ आएँ तो उनको 36,000 की जगह 60,000 एमएसएमई इंडस्ट्रीज देखने को मिलें। उनका सपना और आपका सपना पूरा हो। सरकार हर तरीके का सहयोग देने के लिए तैयार है। आप चिंता मत कीजिए। चाहे बैंक हो या कोई और सेक्टर हो, आपको इंडस्ट्री लगाने में हर तरीके की सहायता मिलेगी।

21

विश्व का उत्पादन हब बनने की ओर अग्रसर आत्मनिर्भर भारत*

"चाहे अजंता, एलोरा और एलिफेंटा की गुफाएँ हों या 20वीं शताब्दी की आर्ट डेको शैली के भवन, वन्यजीव अभयारण्य हों या समुद्र तट का सौंदर्य, गेटवे ऑफ इंडिया से लेकर पुराने ऐतिहासिक किलों तक, महाराष्ट्र की प्राकृतिक सुंदरता, विविधता और विरासत अत्यंत समृद्ध है।"

छत्रपति शिवाजी महाराज की इस पावन भूमि पर सबसे पहले मैं उन्हें सादर नमन करता हूँ, उनका वंदन करता हूँ। यह समय इसलिए भी विशेष है कि इसी वर्ष छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक के 350 वर्ष पूरे हो रहे हैं। इस विशेष अवसर पर मैं आप सभी को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ।

महाराष्ट्र केवल एक भौगोलिक क्षेत्र का नाम भर नहीं है, यह वीरों की जन्मभूमि और कर्मभूमि है। यहाँ के लोगों ने इस पवित्र भूमि को अपने खून-पसीने से सींचा है और सभी के सामूहिक प्रयासों से इसका निर्माण हुआ है।

विविध रीति-रिवाजों और परंपराओं वाला यह राज्य अपने समृद्ध संगीत, साहित्य और कला के लिए जाना जाता है। देश के ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विकास में इसकी एक अलग पहचान है।

चाहे अजंता, एलोरा और एलिफेंटा की गुफाएँ हों या 20वीं शताब्दी की आर्ट डेको शैली के भवन, वन्यजीव अभयारण्य हों या समुद्र तट का सौंदर्य, गेटवे ऑफ इंडिया से लेकर पुराने ऐतिहासिक किलों तक, महाराष्ट्र की प्राकृतिक सुंदरता, विविधता और विरासत अत्यंत समृद्ध है। इसके अलावा, यहाँ न केवल देश के कई प्रमुख कॉर्पोरेट घराने और

---

* महाराष्ट्र चैंबर ऑफ कॉमर्स, इंडस्ट्री एंड एग्रीकल्चर के तत्त्वावधान में आयोजित सेठ वालचंद हीराचंद मेमोरियल लैक्चर, मुंबई, महाराष्ट्र, 16 जून, 2023

संगठन हैं, बल्कि यहाँ एशिया का सबसे पुराना स्टॉक एक्सचेंज बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) भी है।

महाराष्ट्र में व्यापार, उद्योग और वाणिज्य के क्षेत्र में महाराष्ट्र चैंबर ऑफ कॉमर्स, इंडस्ट्री एंड एग्रीकल्चर का बड़ा योगदान रहा है।

आपका यह योगदान या यूँ कहें कि आपकी दशकों की यह यात्रा अद्‌भुत रही है। इस यात्रा में विशेष भूमिका निभाने वाले आप सभी लोगों का, प्रत्येक महानुभाव का साधुवाद।

महाराष्ट्र के वित्तीय और आर्थिक विकास हेतु यह संगठन व्यापार, उद्योग और कृषि से संबंधित विभिन्न मामलों पर प्रगतिशील और विकासोन्मुख नीतियाँ तैयार करने में राज्य सरकार की सहायता करता है। स्वर्गीय सेठ वालचंद हीराचंद जी की दूरदर्शिता ही थी कि उनके द्वारा वर्ष 1927 में स्थापित यह संगठन आज इतने व्यापक स्तर पर देशहित और समाज हित के लिए कार्य कर रहा है।

कल्पना कीजिए, उस समय में इस तरह से सोचना, स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले के समय में कारोबारियों को एक मंच पर लाना और उनके बीच सामंजस्य कायम करना तथा अपनी सोच को कर दिखाना किसी चमत्कार से कम नहीं है। उन्होंने स्वतंत्र भारत की उद्योग जगत की आवश्यकताओं और भारत के विकास में इसके महत्त्व को समझा और यही कारण था कि उन्होंने व्यापारियों के लिए अनुकूल परिवेश उपलब्ध कराने के हर संभव प्रयास किए।

देश में विभिन्न प्रमुख क्षेत्रों का औद्योगीकरण करने की दिशा में उनके योगदान को कौन भूल सकता है। भारतीय परिवहन उद्योग का जनक माने जाने वाले सेठ हीराचंद जी प्रौद्योगिकी और नवोन्मेष की असीम संभावनाओं को जानते थे, जिससे भारत में औद्योगिक विकास को बल मिल सकता था और इस दिशा में उन्होंने अथक प्रयास किए।

5000 से अधिक प्रत्यक्ष सदस्यों, राज्य के 800 से अधिक स्थानीय व्यापार और उद्योग संघों और 7 लाख से अधिक व्यापारिक इकाइयों के साथ आज यह संगठन राज्य के शीर्ष चैंबर के रूप में कार्य कर रहा है।

यह महाराष्ट्र का एकमात्र ऐसा चैंबर है, जिसकी शाखाएँ महाराष्ट्र के सभी जिलों और तालुकों में मौजूद हैं और यह व्यापार तथा उद्योग के राष्ट्रव्यापी स्तर के संगठनों से जुड़ा हुआ है। यह अपने आप में एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।

महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई को भारत की आर्थिक राजधानी ऐसे ही नहीं कहा जाता है। आर्थिक तौर पर देखें तो, पिछले कुछ वर्षों में राज्य के विकास में यह साफ-साफ दिखाई देता है। चाहे महाराष्ट्र में प्रति व्यक्ति आय हो, देश के औद्योगिक उत्पादन में इसका प्रतिशत योगदान हो, विभिन्न उद्योगों में निवेश प्राप्त करने की बात हो, राज्य ने चौतरफा प्रगति की है।

राज्य में 12 टेक्सटाइल पार्क के अलावा अमरावती में स्थित पीएम मित्र पार्क भारत में एकमात्र ब्राउनफील्ड पीएम मित्र पार्क है, जिसमें रेडी-टू-ऑपरेट इन्फ्रॉस्ट्रक्चर है।

आज महाराष्ट्र देश में ऑटोमोबाइल विनिर्माण और बैंकिंग, वित्तीय सेवाएँ और बीमा से जुड़े कार्यकलापों का हब बनकर उभरा है। जीएसटी कलेक्शन से लेकर यूपीआई ट्रांजेक्शन तक, हर क्षेत्र में रिकॉर्ड वृद्धि हुई है।

यह उल्लेखनीय है कि पिछले वर्षों में भारत सरकार द्वारा देश के समग्र सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए कई पहल की गई हैं। भारत में नागरिकों और उद्योगों की सुविधा के लिए तेजी से विकसित हो रहा सड़क, रेल, एयरपोर्ट, नौ-परिवहन और जलमार्ग नेटवर्क हमारे देश के अवसंरचना क्षेत्र की प्रमुख भूमिका का प्रमाण है।

भारत को स्पेस सेक्टर, ड्रोन सेक्टर और रक्षा विनिर्माण सहित सभी क्षेत्रों में अग्रणी बनाने के लिए वर्तमान नीतियों में काफी बदलाव किए गए हैं। विभिन्न क्षेत्रों में नवीन योजनाओं के माध्यम से शोध और विकास को बढ़ावा दिया जा रहा है।

आज हमारा देश दुनिया में सबसे तेजी से विकसित होती अर्थव्यवस्था है। भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मोबाइल विनिर्माता देश बन गया है और हमारे यहाँ विश्व का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्ट-अप इकोसिस्टम मौजूद है। वैश्विक महामारी के बाद अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने भारत को वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए एक उम्मीद की किरण बताया है, जो सरकार की दूरदर्शी नीतियों को दर्शाता है।

इसी दिशा में आगे बढ़ते हुए, इस वर्ष का केंद्रीय बजट अर्थव्यवस्था को प्रगति और समृद्धि की दिशा में आगे बढ़ाने का ब्लूप्रिंट है। वर्तमान समय में सरकार ने पीएलआई योजनाएँ, पीएम गति शक्ति, नेशनल लॉजिस्टिक्स पॉलिसी और नेशनल सिंगल विंडो सिस्टम जैसी व्यापार अनुकूल कई नीतियाँ बनाई हैं, ताकि भारत व्यापार और निवेश के लिए एक अनुकूल गंतव्य बने। इन प्रयासों का ही परिणाम है कि भारत की ईज ऑफ डूइंग बिजनस रैंकिंग में सुधार आया है।

आज जब हम आत्मनिर्भर भारत की बात कर रहे हैं तो हम ज्यादा नहीं बस 2 वर्ष पहले की स्थिति को देखें। हमारे देश ने पिछले 100 वर्षों की सबसे भयानक वैश्विक महामारी का सामना किया है और उस स्थिति में भी हम पूरी दुनिया के लिए एक मिसाल बनकर उभरे। हर छोटी-बड़ी चुनौतियों और तमाम मोर्चों पर हम सभी एक साथ मिलकर लड़ रहे हैं। इस तरह की कसौटी में हमारा संकल्प, हमारा कर्म उज्ज्वल भविष्य की गारंटी भी लेकर आता है।

किसी चुनौती से हम कैसे निपट रहे हैं, कितनी मजबूती से लड़ रहे हैं, ये आने वाले अवसरों को भी तय करता है। हमारी एकजुटता, हमारी संकल्पशक्ति, हमारी इच्छाशक्ति, यही हमारी सबसे बड़ी ताकत है।

ऐसे कई उदाहरण देखने को मिले हैं, जब हर देशवासी इस संकल्प से आगे बढ़ा है कि जीवन में आने वाली आपदा को अवसर में परिवर्तित करना है, आत्मनिर्भर बनना है। आत्मनिर्भर भारत बनाने का, आत्मनिर्भरता का यह भाव बरसों से हर भारतीय के मन में रहा है।

पिछले कुछ वर्षों में देश की नीति और रीति में भारत की आत्मनिर्भरता का लक्ष्य सर्वोपरि रहा है और महामारी की चुनौती के बाद इस लक्ष्य को गति और बल मिला है। आत्मनिर्भर भारत अभियान उसी का परिणाम है। आत्मनिर्भर भारत अभियान यानी दूसरे देशों पर अपनी निर्भरता कम-से-कम।

हर वह चीज, जिसे हम आयात करने के लिए मजबूर हैं, वह न सिर्फ हमारे यहाँ बने बल्कि उससे भी आगे बढ़कर हम उसे दूसरे देशों को निर्यात कर सकें। इस लक्ष्य पर आज तेजी से काम कर रहे हैं और हमें आगे भी करने हैं।

आत्मनिर्भरता का अर्थ वैश्विक बाजार से अलग होना नहीं है बल्कि विश्व का उत्पादन हब बनना है, वैश्विक सप्लाई चेन का अभिन्न हिस्सा बनना है। हम अपने लिए भी उत्पादन करें और विश्व के लिए भी। इसके लिए सबसे पहले आवश्यकता है—लघु उद्यमी के रूप में देश को सशक्त बनाना। हैंडीक्राफ्ट वाले हों, स्वयं सहायता समूह से जुड़े लोग हों या दूर-सुदूर गाँव में घरेलू सामान बनाने वाले हों, उनके हाथों को मजबूत करना है, हम इस प्रयास के साथ आगे बढ़ें। आसान शब्दों में कहें, तो यह समय अपने लोकल के लिए वोकल होने का समय है, हर गाँव, हर कस्बे, हर जिले, हर प्रदेश, पूरे देश को आत्मनिर्भर करने का समय है।

और यहीं पर मैं समझता हूँ कि देश के हमारे युवा साथियों को, देश की महिलाओं को आगे आने की जरूरत है। इसलिए मेरी यह अपील है कि हमारे युवा उद्यमी हों, या ग्रामीण क्षेत्र में कार्य कर रही महिलाएँ हों, वो आगे आएँ और इस अवसर का समुचित उपयोग करें।

इसके अलावा मेरा यहाँ बैठे सभी लोगों से और इस संस्था से भी आग्रह है कि आत्मनिर्भर भारत अभियान को सफल करने के लिए आप एक बड़ा संकल्प लें, अपने-अपने स्तर पर कुछ नए लक्ष्य तय करें। मुझे विश्वास है कि आप जितना अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ेंगे, उतना ही आत्मनिर्भर भारत का यह अभियान अपनी सफलता की ओर बढ़ेगा।

यह बहुत खुशी की बात है कि महाराष्ट्र चैंबर ऑफ कॉमर्स, इंडस्ट्री एंड एग्रीकल्चर (एमएसीसीआईए) की महाराष्ट्र की आर्थिक प्रगति में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। यह महाराष्ट्र के व्यापारी, कृषक, उद्यमी और उद्योगपति वर्ग के परिश्रम का ही परिणाम है, जिसके कारण आज महाराष्ट्र विकास के मार्ग पर आगे बढ़ रहा है।

आज यह राज्य व्यापार और उद्योग में नई ऊँचाइयों को हासिल कर राष्ट्र के आर्थिक विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

भाग-चार

शैक्षिक एवं सामाजिक मुद्दे

22

गुणवत्तापूर्ण एवं संस्कारी शिक्षा : एक समतामूलक समाज की नींव*

"आज आवश्यकता है कि हमारे समाज के नौजवान बाबासाहेब अंबेडकर जी के विचारों पर चलें। इस देश को आगे ले जाए, राष्ट्र को आगे ले जाए, समाज को आगे ले जाए, समाज की प्रगति होगी, खुशहाली आएगी, समृद्धि आएगी, तो देश में खुशहाली और समृद्धि आएगी।"

आज हम सब ने बाबासाहेब अंबेडकर जी की मूर्ति पर माल्यार्पण किया है। बाबासाहेब का सपना था कि देश का अंतिम व्यक्ति, चाहे पिछड़ा हो, दलित हो, शोषित हो, उसको समाज में न्याय मिले।

बाबा साहेब जी ने संविधान का निर्माण किया, हम गर्व के साथ यह कह सकते हैं कि दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र भारत है। भारत विविधता, विशालता, विविध संस्कृति वाला देश है। समानता, न्याय और समतामूलक समाज की नींव बाबासाहेब ने रखी थी, आज पूरी दुनिया में भारत एक ऐसा देश है, जहाँ समाज के प्रत्येक व्यक्ति को भी अपने मौलिक अधिकारों के लिए न्याय प्राप्त करने का अधिकार है। इसीलिए आज आवश्यकता है कि हमारे समाज के नौजवान बाबासाहेब अंबेडकर जी के विचारों पर चलें।

इस देश को आगे ले जाए, राष्ट्र को आगे ले जाए, समाज को आगे ले जाए, समाज की प्रगति होगी, खुशहाली आएगी, समृद्धि आएगी, तो देश में खुशहाली और समृद्धि आएगी। इसीलिए हर समाज को अपने यहाँ एक सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन की अलख जगाने की आवश्यकता है। एक अच्छी शिक्षा, गुणवत्तापूर्ण एवं संस्कारी शिक्षा के माध्यम से हमारा नौजवान देश और प्रदेश का नेतृत्व करे। इसके लिए समाज को सामूहिक प्रयास करना चाहिए। समाज में पैदा होने वाले हर बेटे-बेटी को हम अच्छी और संस्कारी शिक्षा

* डॉ. अंबेडकर छात्रावास के शिलान्यास कार्यक्रम में संबोधन, कोटा, राजस्थान, 09 जनवरी, 2023

देकर भारत का उत्कृष्ट नौजवान बनाएँगे। यही सामाजिक परिवर्तन है। समाज में सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करना, नए परिवर्तन के युग की ओर प्रवेश करना और शिक्षा के माध्यम से आर्थिक रूप से मजबूत बनना हमारा उद्देश्य होना चाहिए।

हर गाँव में तथा शहर में रहने वाला हर व्यक्ति जब आर्थिक रूप से मजबूत होगा तो भारत का आर्थिक तंत्र भी मजबूत होगा। इसलिए समाज को संगठित करके हमारी यह कोशिश होनी चाहिए कि हम हर व्यक्ति को रोजगार से कैसे जोड़ें, उसको अच्छी शिक्षा कैसे मिले। वह टेक्निकल शिक्षा प्राप्त करे, मेडिकल की शिक्षा प्राप्त करे। वह डॉक्टर बने, इंजीनियर बने, चार्टर्ड अकाउंटेंट बने तथा वैज्ञानिक बने। वह समाज का नेतृत्व करते हुए समाज के लोगों को भी आगे लेकर जाए। इस समाज के जो लोग बड़े पदों पर आसीन हैं, उनकी भी जिम्मेदारी है कि समाज के अंतिम व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन करने में उनका योगदान होना चाहिए।

मुझे आशा है कि हम सामूहिकता के साथ मिलकर काम करेंगे तो एक दिन समाज में परिवर्तन आएगा ही आएगा। यह हम सबकी जिम्मेदारी है। यह जिम्मेदारी हमें निभानी है। आज आजादी का 75वाँ अमृत महोत्सव चल रहा है। अमृत तभी निकलेगा, जब हम मंथन करेंगे, विचार करेंगे, चर्चा तथा संवाद करेंगे। जब हम समाज के अंतिम व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन करने के लक्ष्यों के साथ काम करेंगे तो निश्चित रूप से अमृत निकलेगा ही निकलेगा, क्योंकि बैरवा समाज से मेरा बहुत निकट का संबंध है। जब मैं दूर-दराज के गाँवों में जाता हूँ तो देखता हूँ कि आज भी लोग कठिन चुनौतियों से लड़ रहे हैं। वे संघर्ष कर रहे हैं। उनके पास बहुत अच्छी अपॉर्चुनिटी है, लेकिन उन्हें जानकारी नहीं है। जानकारी के अभाव में समाज पिछड़ा न रह जाए इसलिए सरकार की जो भी योजनाएँ हैं, वे समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचें और उन योजनाओं का लाभ उन्हें मिले।

**"समाज के जो लोग बड़े पदों पर आसीन हैं,
उनकी जिम्मेदारी है कि समाज के अंतिम व्यक्ति के जीवन में
परिवर्तन करने में उनका योगदान होना चाहिए।"**

अभी पिछली बार दिल्ली के अंबेडकर भवन में कुछ लोग घूमने आए थे। उन्होंने कहा कि अंबेडकर संस्थान की तरफ से फैलोशिप योजना होगी। मैंने उस समय समाज के लोगों को कहा था कि हर गाँव से दो-दो नौजवानों को तैयार कीजिए। उन नौजवानों को हम दिल्ली लेकर आएँगे। उन्हें संसद दिखाएँगे। संसद के केंद्रीय कक्ष में बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर जी ने और कई मनीषियों ने संविधान बनाया था। अंबेडकर जी के शोध प्रतिष्ठान

को दिखाएँगे। वे अंबेडकर साहेब के कार्यों को देखेंगे, उनके जीवन-दर्शन को देखेंगे। उनमें प्रेरणा आएगी, नया उत्साह आएगा। उनमें कार्य करने की नई शक्ति आएगी। देश के अलग-अलग हिस्सों के अंदर बाबासाहेब अंबेडकर और कई लोगों ने समाज के जीवन में परिवर्तन लाने का काम किया, उनकी जीवनी से उनको नई प्रेरणा मिलेगी कि मैं भी समाज में परिवर्तन कर सकता हूँ। इसलिए मैंने आग्रहपूर्वक कहा है कि सब लोग आएँ। सरकार की जितनी योजनाएँ हैं, उन योजनाओं का लाभ हमारी महिलाओं को मिले, हमारी बच्चियों को मिले, नौजवानों को मिले और सामाजिक-आर्थिक तंत्र का इस तरीके से ढाँचा तैयार करें कि एक छात्रावास के अंदर एक कार्यालय हो, जिसमें समस्त जानकारियाँ हों। देश के अंदर कहीं भी कोई भी परेशानी आए तो मैं आपके साथ खड़ा हूँ। किसी भी बच्चे को कहीं भी पढ़ना हो, देश में पढ़ना हो या देश के बाहर पढ़ना हो तो मैं उसके साथ खड़ा हूँ।

हमारी जो आने वाली पीढ़ी है, वह शिक्षित होगी, दीक्षित भी होगी और भारत का नेतृत्व करने वाली भी होगी। वह पीढ़ी आपमें से निकले, यह हमारा संकल्प होना चाहिए। हर समाज में से इस तरह के नौजवान निकले और इसलिए मैं पुनः हाड़ौती बैरवा समाज उत्थान समिति के सभी माननीय पदाधिकारियों को बहुत-बहुत साधुवाद देता हूँ।

23

नवाचार और शोध : उभरती वैश्विक चुनौतियों से निपटने में कारगर*

"हम केवल भौतिक संसाधनों के आधार पर देश को नहीं चला रहे हैं। हम अपने देश को अध्यात्म, संस्कृति, सामूहिकता के आधार पर, वसुधैव कुटुंबकम् की संस्कृति के आधार पर चला रहे हैं।"

प्रयागराज की धरती का अपना महत्त्व है। यह धरती आध्यात्मिक धरती है, पवित्र धरती है, जहाँ गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम है। जहाँ वर्ष 2025 में महाकुंभ मेला लगने वाला है। जहाँ पर कई ऋषियों ने अपनी तप-तपस्या और ज्ञान से भारत की संस्कृति और भारत के आध्यात्मिक ज्ञान को दुनिया भर में पहुँचाया है।

आपका सौभाग्य है कि आपको इस प्रयागराज की धरती पर टेक्नोलॉजी की शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला है।

मैं उन नौजवानों को बधाई देता हूँ, जिनको अपने-अपने विषयों में गोल्ड मेडल मिले हैं। कई नौजवान जैसे, श्री आर्यक मित्तल, कुमारी पलक मिश्रा, जिन्होंने कई गोल्ड मेडल प्राप्त किए हैं, मैं उन सभी विद्यार्थियों को शुभकामनाएँ देता हूँ, बधाई देता हूँ जिन्होंने आज इस संस्थान के अंदर उपाधि प्राप्त की है। यह उपाधि जो आपने प्राप्त की है, तो आपकी एक सिद्धि पूरी हुई है।

लेकिन एक सिद्धि आपकी और है, जब आपके प्रयासों से, आपकी शिक्षा से, आपके सामर्थ्य से आपने संस्थान के अंदर अपने गुरुजनों से जो कुछ भी टेक्नीकल शिक्षा प्राप्त की है, उसके अनुभव का लाभ देश को मिले, समाज को मिले और जिन माता-पिता ने आपको जन्म दिया है, उनका गौरव-सम्मान कर सकें। क्योंकि आपके जीवन के अंदर माता-पिता

---

* मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान के 19वें दीक्षांत समारोह में संबोधन, प्रयागराज, 8 अप्रैल, 2023

का पालन-पोषण, गुरुजनों की शिक्षा, संस्कार और भविष्य में आपको खुद अपने पैरों पर खड़ा होकर अपने निर्णयों, फैसलों से जिंदगी की नई शुरुआत करनी है।

इसलिए जब डिग्री प्राप्त करके भारत का नौजवान निकलता है, तो जो कुछ भी उसने अपने संस्थान में शिक्षा प्राप्त की है, जो संस्कार प्राप्त किए हैं, अपने गुरुओं के ज्ञान, अनुभवों का लाभ प्राप्त किया है और हमेशा शिक्षक का प्रयास रहता है कि जो कुछ भी उन्होंने जिंदगी में सीखा है, जो कुछ भी अनुभव प्राप्त किए हैं, जो कुछ भी चुनौतियाँ उनके जीवन में रही हैं, उन चुनौतियों के समाधान की कुंजी वे विद्यार्थियों को देते हैं, ताकि आने वाले समय के अंदर ये विद्यार्थी हर चुनौती का समाधान कर सके।

मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, प्रयागराज के
19वें दीक्षांत समारोह में छात्रों को प्रमाण-पत्र प्रदान करते हुए

मुझे आज गर्व है कि भारत का 21वीं सदी का नौजवान दुनिया की हर चुनौती का समाधान करने में सक्षम हो रहा है। दुनिया के सारे देश इसलिए भारत की ओर देख रहे हैं। हमने यह सामर्थ्य, यह नया इनोवेशन, नया चिंतन, दुनिया को बताने का काम किया है।

जब कभी आपदा आती है, कोई संकट आता है या कोई चुनौती होती है तो कोई समय था कि जब हम पश्चिम देशों की ओर देखा करते थे कि उस आपदा का समाधान होगा, उस चुनौती का समाधान होगा। लेकिन हमारे नौजवानों ने दुनिया की बड़ी-बड़ी आपदाओं, कोरोना जैसी चुनौतियों का समाधान भारत में किया। जब मैं भारत के बाहर जाता हूँ तो लोग कहते हैं कि भारत की वैक्सीन ने हमारे हजारों-लाखों लोगों की जिंदगियों को बचाने का काम किया।

आज हर वह क्षेत्र, जो दुनिया का बदलता परिप्रेक्ष्य है, चाहे ऊर्जा की नई टेक्नोलॉजी का प्रश्न हो, चाहे जलवायु परिवर्तन का नया सेक्टर हो, मुझे डायरेक्टर साहब बता रहे थे कि अब चिकित्सा के अंदर जो नए इनोवेशन, नए रिसर्च आने वाले हैं, वे दुनिया के अंदर भारत की ताकत और सामर्थ्य को बताएँगे। इसलिए आपकी बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। देश आपकी ओर देख रहा है। यह 21वीं सदी आपकी तरफ देख रही है।

21वीं सदी हमारे लिए महत्त्वपूर्ण इसलिए है, क्योंकि 21वीं सदी में हमारी आजादी के 100 साल पूरे होंगे। आजादी के 75 वर्षों में हमने जो कुछ भी प्राप्त किया, वह समय हमारे लिए चुनौतियों का था। कई चुनौतियों से लड़ने व कई चुनौतियों का सामना करने के लिए हर तरीके का सामर्थ्य हमने जुटाया।

इस 75 वर्ष की यात्रा में हमने लोकतंत्र के माध्यम से देश को एक ऐसा संविधान दिया, जो आज दुनिया का सबसे बड़ा संविधान है। हम दुनिया की सबसे बड़ी डेमोक्रेसी हैं। डेमोग्राफी के रूप में हम बड़े हैं। इसलिए 'मदर ऑफ डेमोक्रेसी' के रूप में भारत की पहचान आज दुनिया के अंदर है। इस लोकतंत्र के माध्यम से ही हमने जो कुछ भी परिवर्तन किया, वह लोकतांत्रिक विचारों, पद्धतियों से किया, सामूहिकता के साथ किया, सबने मिलकर किया। यह हमारा सामर्थ्य है, हमारी ताकत है। दुनिया के अंदर भारत एक ऐसा देश है, जहाँ इतनी विविधताएँ हैं।

इतनी विविधताएँ दुनिया में कहीं नहीं हैं। इतनी विविधताएँ, विशालता, हमारी संस्कृति और दुनिया के हर धर्मों के अनुसार पूजा-अर्चना करने वाले लोग भारत में रहते हैं। इसलिए संविधान बनाते समय हमारे मनीषियों ने कहा था कि दुनिया में भारत की एक अलग पहचान होगी। यह पहचान संविधान के रूप में होगी, लोकतंत्र के रूप में भी होगी।

उस समय के विचारकों ने कहा था कि हमारे भारत के नौजवानों के कारण, उनके नए इनोवेशन, नए रिसर्च, नए सामर्थ्य, उनकी बौद्धिक क्षमताओं के कारण आने वाले समय में हमारे नौजवानों की ताकत के कारण भारत नेतृत्व करेगा।

आज हम यह सपना देख रहे हैं। मैं नौजवानों की आँखों में यह सपना देख रहा हूँ। जब मैं नौजवानों के बीच में जाता हूँ, तो मुझे एक नई ऊर्जा मिलती है। नौजवानों ने किस तरह से, अपने-अपने सेक्टर के अंदर, जो कुछ भी नया हो सकता है, अपनी पूरी श्रम-शक्ति से, कड़ी मेहनत से, उसे करने का प्रयास किया है। लेकिन अभी चुनौतियाँ बहुत हैं। उन चुनौतियों से लड़ने का सामर्थ्य भारत के नौजवानों में है।

हम केवल भौतिक संसाधनों के आधार पर देश को नहीं चला रहे हैं। हम अपने देश को अध्यात्म, संस्कृति, सामूहिकता के आधार पर, वसुधैव कुटुंबकम् की संस्कृति के आधार

पर चला रहे हैं। पूरे विश्व को साथ लेकर चलने के संस्कार और संस्कृति के कारण पूरी दुनिया के अंदर हमारी एक अलग पहचान बनने लगी है।

मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूँ कि भारत के जो कैंपस हैं, चाहे आईआईटी हों, ट्रिपल आईटी हों, एमएनआईटी हों, इंजीनियरिंग कॉलेज हों, मेडिकल कॉलेज हों, साइंस एंड टेक्नोलॉजी के रिसर्च सेंटर्स हों या सामान्य विश्वविद्यालय हों, उन सब विश्वविद्यालयों के अंदर आने वाली हमारी शिक्षा की जो पद्धति है, उसमें हर विश्वविद्यालय हमारी प्रत्येक चुनौती के समाधान का केंद्र बनेगा।

हमारे हर शैक्षिक संस्थानों में पढ़ने वाला नौजवान एक कुशल नौजवान होगा, एक स्किल्ड नौजवान होगा, जिसकी बौद्धिक क्षमता होगी और जिसकी कार्य-कुशलता में गुणवत्ता भी होगी। उनमें एक नई सोच और नया चिंतन भी होगा, उनमें एक नया आत्मविश्वास भी होगा। यहाँ कैंपस में उपस्थित विद्यार्थियों के सामर्थ्य और ताकत को मैं देख रहा हूँ। यहाँ पढ़ने वाले विद्यार्थियों को, जहाँ बड़े-बड़े लेखक, राजनीतिज्ञ, ऋषि-मुनि हुए, ऐसे संस्कार और संस्कृति मिली है।

मुझे आशा है कि आज आप यहाँ से जो उपाधि प्राप्त करके निकलेंगे, उसकी बहुत बड़ी जिम्मेदारी समाज ने आपके ऊपर डाली है। यह हमारे सभी नौजवानों की जिम्मेदारी है। जिस समय आजादी हुई थी, आजादी की लड़ाई लड़ी गई थी, उस समय 18-21 साल का नौजवान देश की आजादी के लिए लड़ रहा था। उस समय उस नौजवान का संकल्प था कि मैं देश को आजाद कराकर ही छोड़ूँगा।

उस नौजवान ने एक लंबी लड़ाई लड़ी, एक संकल्प के आधार पर लड़ी। ऐसा ही संकल्प आपके मन में होना चाहिए। आपके मन में यह संकल्प होना चाहिए कि भारत विज्ञान, टेक्नोलॉजी, हर क्षेत्र में दुनिया का नेतृत्व करेगा और यह नेतृत्व करने की जिम्मेदारी इस समाज ने मुझे दी है। इस मनोभाव से आप यहाँ से निकलेंगे कि मुझे ही कुछ परिवर्तन करना है, मेरे में सामर्थ्य है, मेरे में जो सोच है, चिंतन है, जो संस्कार हैं, इस भारत के अंदर हर परिवर्तन में मेरा ही योगदान होगा, इस सामर्थ्य के साथ जब आप आगे बढ़ेंगे, तो नए आत्मनिर्भर भारत का जो विचार है, जो वसुधैव कुटुंबकम् का विचार है कि सारा विश्व भारत की ओर देखे, इस विचार के साथ ही हम सारे विश्व को साथ लेकर चलेंगे।

24

शिक्षा का मूल उद्देश्य : समाज और मानवता का कल्याण*

"हम केवल भौतिक संसाधनों के आधार पर देश को नहीं चला रहे हैं। हम अपने देश को अध्यात्म, संस्कृति, सामूहिकता के आधार पर, वसुधैव कुटुंबकम् की संस्कृति के आधार पर चला रहे हैं।"

मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एम.एन.आई.टी.) और भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान कोटा (IIIT, KOTA) के दीक्षांत समारोह में आकर आज मुझे बड़ी खुशी हो रही है।

एम.एन.आई.टी. के इस कैंपस में मैं भारत की विभूति भारत रत्न महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी को नमन करता हूँ। देश के विकास में और नौजवानों की सुशिक्षित-संस्कारित पीढ़ी तैयार करने में महामना का अमूल्य योगदान रहा है। महामना के सिद्धांतों, उनके जीवन संदेशों पर चलकर आज इन प्रतिष्ठित संस्थानों में संस्कारित और सुशिक्षित पीढ़ी तैयार हो रही है। यह हमारे लिए सुखद है।

आज आई.आई.आई.टी. कोटा का दूसरा दीक्षांत समारोह भी एम.एन.आई.टी. के साथ ही आयोजित हो रहा है। कोटा के रानपुर में आई.आई.आई.टी. के कैंपस का काम भी तेजी से चल रहा है। मुझे आशा है कि जल्द ही आपका शानदार कैंपस बनकर तैयार होगा।

आज इस दीक्षांत समारोह में मैं अपने सामने हजारों नौजवानों को देख रहा हूँ, जो इन प्रतिष्ठित संस्थानों से निकल कर अब देश और समाज के विकास के लिए आगे बढ़ेंगे।

आज का यह दिन आपके लिए बेहद खास है। जिस तरह कोई साधक वर्षों तक साधना करता है और उसे सिद्धि मिलती है। उसी तरह आपने भी बी.टेक, एम.टेक., पीएच.डी. में

---

* एमएनआईटी, जयपुर और आईआईआईटी, कोटा के दीक्षांत समारोह में संबोधन, कोटा, राजस्थान, 12 अप्रैल, 2023

कई वर्षों तक पढ़ाई की है, तब आपको यह उपाधि (डिग्री) मिल रही है। यह आपके लिए बहुत गौरव का पल है। और सिर्फ आपके लिए ही नहीं, बल्कि आपके माता-पिता, आपके शिक्षकों और मित्रों को भी आज खुशी होगी। आज आपके जीवन में एक नई उपलब्धि जुड़ जाएगी, एक नई पहचान जुड़ जाएगी।

एमएनआईटी, जयपुर के 16वें दीक्षांत समारोह और आईआईआईटी, कोटा के दूसरे दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए

अब से पहले जब आप अपना परिचय देते होंगे, तो आप अपना नाम बताते होंगे, आप कहाँ से हैं, यह बताते होंगे! लेकिन अब जब आप अपना परिचय देंगे तो यह भी बताएँगे कि मैंने एमएनआईटी से या आईआईआईटी से अपनी डिग्री ली है।

आप देश के कुछ चुनिंदा लोगों में से हो। 140 करोड़ लोगों में से कितने स्टूडेंट्स होंगे, जिन्हें ऐसे प्रतिष्ठित संस्थानों में पढ़कर यहाँ से डिग्री हासिल करने का मौका मिलता होगा? केवल कुछ हजार! इसलिए इस डिग्री के साथ ही देश और समाज के लिए आपका दायित्व भी बढ़ जाता है। आने वाले समय में हमारा देश किस दिशा में और किस गति से विकास करेगा, यह आप होनहार नौजवानों की जिम्मेदारी है। इसके लिए मैं आप सबको शुभकामनाएँ देता हूँ।

दीक्षांत का अर्थ है दीक्षा का समापन और दीक्षा के समापन के साथ ही हमारे कर्तव्यों की शुरुआत भी होती है। हमारे यहाँ यह परंपरा नई नहीं है। हमारे देश में तो हजारों साल पहले गुरुकुलों में भी यही परंपरा थी, जहाँ दीक्षा प्राप्त करने के बाद व्यक्ति समाज और मानवता के कल्याण में लग जाता था।

हमारे उन गुरुकुलों में शिक्षा तो दी ही जाती थी, शिक्षा के साथ ही संस्कार भी दिए जाते थे। गुरुकुलों में ज्ञान और संवाद की समृद्ध परंपरा रही है। वहाँ अध्ययन की समग्र प्रणाली पर ध्यान दिया जाता था। वहाँ ज्ञान केवल किताबों तक ही सीमित नहीं होता था, बल्कि व्यावहारिक ज्ञान पर फोकस किया जाता था।

मुझे खुशी है कि एम.एन.आई.टी. और आई.आई.आई.टी. जैसे हमारे शिक्षण संस्थान आज उसी परंपरा के साथ विद्यार्थियों को शिक्षित कर रहे हैं। आज हमारे युवा इस बात को समझ रहे हैं कि शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ नौकरी करना और धन कमाना नहीं होता है। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य व्यक्तित्व का निर्माण करना होता है। व्यक्तित्व के निर्माण से राष्ट्र का निर्माण हमारा ध्येय होना चाहिए।

व्यक्तित्व के निर्माण के लिए यह जरूरी है कि हम अपने मूल्यों से, अपनी जड़ों से जुड़े रहे। हम किसी की नकल नहीं करें, बल्कि हम अपनी संस्कृति पर गर्व करें। हम अपनी विरासत पर गर्व करें, क्योंकि बिना भारतीय संस्कारों के वह पीढ़ी तैयार नहीं हो सकती, जो देश के निर्माण में अपना पूरा योगदान दे सके।

हमारा देश ज्ञान-प्रधान सभ्यता की जननी रहा है। हमारे यहाँ नालंदा, तक्षशिला और विक्रमशिला जैसे उच्चस्तरीय एवं विश्वविख्यात शिक्षा संस्थान थे। दुनिया भर के अलग-अलग देशों से छात्र हमारे देश में आते थे, यहाँ के बारे में जानने आते थे, यहाँ का ज्ञान प्राप्त करते थे और फिर अपने देश में जाकर उस ज्ञान को फैलाते थे। हमारे रामायण, महाभारत और भारत के काव्यों-महाकाव्यों का दुनिया की कई भाषाओं में अनुवाद किया गया है।

"व्यक्तित्व के निर्माण के लिए यह जरूरी है कि हम अपने मूल्यों से, अपनी जड़ों से जुड़े रहें। हम किसी की नकल नहीं करें, बल्कि हम अपनी संस्कृति पर गर्व करें।"

आज भी हम देखते हैं कि दुनिया के देश सिर्फ आधुनिक विज्ञान में आगे बढ़ रहे हैं, लेकिन हम आधुनिक विज्ञान के साथ हमारी संस्कृति, हमारे संस्कार लेकर चल रहे हैं। आज का विज्ञान आज के तकनीकी समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकता है, मानवता का कल्याण कर सकता है और मानवता के कल्याण का वह भाव हमारे देश के युवाओं के मन में है।

इसलिए आज भारत के डॉक्टर, भारत के इंजीनियर, भारत के साइंटिस्ट, भारत के एंटरप्रिंयोर दुनिया में सबसे श्रेष्ठ हैं। हमारे युवा आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के साथ मूल्यों और आदर्शों को लेकर आगे बढ़ रहे हैं।

पिछले कई दशकों से आई.आई.टी., एन.आई.टी. और आई.आई.आई.टी. जैसे हमारे प्रतिष्ठित संस्थानों ने देश और मानव समाज की जरूरतों को सदा ध्यान में रखा है और उनके समाधान के लिए काम किया है। जलवायु, पर्यावरण, मेडिकल, शिक्षा, संचार, सड़क से लेकर जीवन के कई क्षेत्रों में आपके अनुसंधान व आविष्कारों ने देश और समाज को नई दिशा दी है।

छात्रों को उपाधि प्रदान करते हुए

प्रौद्योगिकी और समाज का गहरा संबंध है। समाज प्रौद्योगिकी को आगे बढ़ाता है और फिर प्रौद्योगिकी समाज की समस्याओं को दूर कर उसका विकास करती है। इसलिए जब हमने प्रौद्योगिकी में उच्च शिक्षा प्राप्त की है, तो यह हमारा दायित्व है कि हम अब प्रौद्योगिकी के उपयोग से सोसायटी को बेहतर करें। इसके लिए हमें सोसायटी और लोगों से जुड़कर मूल समस्याओं और मुद्दों को समझना होगा। क्योंकि जब तक आप धरातल पर आम व्यक्ति की समस्याओं को देखोगे नहीं, तब तक आप उसका उचित समाधान नहीं दे सकते। जब तक आप जमीनी कार्य नहीं करेंगे, तब तक आप समाधान नहीं खोज सकते।

अपना विकास तो सभी करते हैं, लेकिन दूसरों के लिए हमने क्या किया, मानवता के लिए हमने क्या किया, सोसायटी और देश के लिए हमने क्या किया? यह बात मायने रखती है।

आज बिजली के बिल से लेकर स्कूल-कॉलेज की फीस, किसी एग्जाम का फॉर्म सब ऑनलाइन हो गया है। बर्थ सर्टिफिकेट से लेकर ड्राइविंग लाइसेंस तक हर काम ऑनलाइन हुआ है और इससे लोगों को सुविधा हुई है।

इसका एक उदाहरण मैं आपको देता हूँ। भारत सरकार का एक 'ई-संजीवनी' टेलीमेडिसिन प्लेटफॉर्म है जिस पर रजिस्ट्रेशन कर गाँव-कस्बे का व्यक्ति, देश के कोने में बैठा व्यक्ति एक्सपर्ट डॉक्टर से ऑनलाइन अप्वाइंटमेंट बुक कर सकता है और जो भी हैल्थ प्रोब्लम है, उसके लिए वहाँ परामर्श ले सकता है।

मेरी जानकारी में आया है कि अब तक 10 करोड़ से अधिक लोगों ने 'ई-संजीवनी' प्लेटफॉर्म से लाभ उठाया है। इसी तरह हमारा एक ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म है 'स्वयं'। 'स्वयं' से जुड़कर देश में करीब 3 करोड़ लोग ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। सरकार के 'उमंग' मोबाइल एप्लीकेशन पर हम देखते हैं कि सभी सरकारी काम वहाँ सरलता से हो रहे हैं।

ये सिर्फ कुछ एक उदाहरण हैं, जहाँ तकनीकी और प्रौद्योगिकी देश में व्यापक सकारात्मक बदलाव ला रही है। इसके अलावा भी ऐसे कई उदाहरण हैं। हम एमएनआईटी और आईआईआईटी के स्टूडेंट्स हैं। यहाँ हम किस तरह से सहयोग कर सकते हैं, इस पर हमें विचार करना चाहिए।

"अपना विकास तो सभी करते हैं, लेकिन दूसरों के लिए हमने क्या किया, मानवता के लिए हमने क्या किया, सोसाइटी और देश के लिए हमने क्या किया? यह बात मायने रखती है।"

आज समाज व दुनिया के सामने जो समस्याएँ हैं, जो विषय हैं, जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, युद्ध और अशांति, आतंकवाद, महिला सशक्तीकरण, गरीबी, असमानता। ऐसी हर एक समस्या से निबटने, इनके बारे में अपनी समझ विकसित करने और इनका समाधान सामने लाने की जिम्मेदारी हमारे युवाओं को उठानी होगी।

आप युवाओं का सामर्थ्य ही है कि देश में स्टार्ट-अप की संख्या लगातार तेजी से बढ़ रही है। आज हमारे देश में स्टार्ट-अप की संख्या 93 हजार से अधिक हो चुकी है। 100 से ज्यादा यूनिकॉर्न हमारे देश में तैयार हुए हैं। मुझे बताया गया है कि एमएनआईटी इनोवेशन एंड इनक्यूबेशन सेंटर के पास भी 110 स्टार्ट-अप का ईको सिस्टम है।

आपका संस्थान पर्यावरण और सोसायटी के लिए भी सक्रिय रूप से काम कर रहा है। कचरे के रिसाइकिल, वॉटर ट्रीटमेंट सिस्टम, सोलर सिस्टम जैसे उपायों पर आप काम कर

रहे हैं। मुझे यह भी बताया गया है कि आपके संस्थान ने राजस्थान के 11 जिलों के 280 से अधिक गाँवों को गोद लिया है। इन कदमों के लिए मैं आपको शुभकामनाएँ देता हूँ।

हमारे देश ने अपनी स्वाधीनता के 75 वर्ष पूरे कर लिए हैं। अब अगले 25 वर्षों में देश विकास के नए सपने लेकर चल रहा है। आजादी के अमृतकाल की इस यात्रा में एमएनआईटी, आईआईआईटी, जेईई संस्थानों और यहाँ के काबिल विद्यार्थियों की भूमिका सर्वप्रमुख होगी, मुझे ऐसा विश्वास है।

आज अपने संस्थान से डिग्री लेकर जब आप कॅरियर के लिए कैंपस से बाहर की दुनिया में जाएँगे, तब आप देखेंगे कि यहाँ जो आपने सीखा है, यहाँ जो शिक्षा प्राप्त हुई है, यहाँ का ज्ञान और संस्कार आपको हमेशा आगे बढ़ाएगा। लेकिन इसके साथ ही एक बात मानकर चलिए कि कोई भी विद्यार्थी दो तरीके से ज्ञान हासिल करता है। पहला, अपने शिक्षण संस्थान से और दूसरा, शिक्षण संस्थान से बाहर निकलकर वास्तविक जीवन से। दोनों ही एक-दूसरे से कम नहीं हैं। दोनों ही तरीकों में अध्ययन लगातार होना चाहिए, तभी जीवन में सफलता प्राप्त की जा सकती है। इसलिए मैं आपको यही संदेश दूँगा कि सीखना लगातार जारी रखें। हमेशा सीखते रहें और आगे बढ़ते रहें। इसलिए हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने युवाओं के लिए एक वाक्य कहा है—'स्किल, रिस्किल और अपस्किल'।

आप विज्ञान के विद्यार्थी हैं। यह बात अच्छे से समझते हैं कि कोई भी खोज अंतिम नहीं होती। जिस तरह विज्ञान और तकनीकी में हमेशा अपडेट आते रहते हैं, उसी तरह हमारी जानकारी भी हमेशा अद्यतन होती रहनी चाहिए।

इसी संदेश के साथ मैं आपको उज्ज्वल भविष्य के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएँ देता हूँ। मुझे विश्वास है कि आईआईआईटी कोटा और एमएनआईटी के आप युवाओं से देश के हर युवा को आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलेगी, उन्हें प्रोत्साहन मिलेगा। आप हमेशा इसी भाव और जिम्मेदारी के साथ आगे बढ़ें।

25

मूल्यपरक वाणिज्य पठन-पाठन की नितांत आवश्यकता*

"गुरु गोविंद सिंह जी का संपूर्ण जीवन हमें यह सीख देता है कि हम समाज में अंतिम व्यक्ति के जीवन में बदलाव के लिए काम करें। हम हर तरह के अत्याचार और दमन का विरोध करें।"

दिल्ली विश्वविद्यालय के श्री गुरु गोविंद सिंह कॉलेज ऑफ कॉमर्स के इस खूबसूरत परिसर में आज आप सभी के बीच आकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई।

उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे ऊर्जावान युवाओं से मिलकर और संवाद करके मुझे सदैव असीम ऊर्जा और स्फूर्ति प्राप्त होती है। आज इस दीक्षांत समारोह में डिग्री प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों के साथ-साथ उनके माता-पिता और गुरुजनों को भी बधाई देता हूँ।

आपके कॉलेज का नाम महान देशभक्त एवं आध्यात्मिक संत श्री गुरु गोविंद सिंह जी के नाम पर है। उनके जीवन-दर्शन से हमें सदा नई प्रेरणा मिलती है। गुरु गोविंद सिंह जी महान योद्धा भी रहे और संत भी, जिन्होंने अध्यात्म का प्रसार किया और शौर्य का परिचय भी दिया।

गुरु गोविंद सिंह जी का संपूर्ण जीवन हमें यह सीख देता है कि हम समाज में अंतिम व्यक्ति के जीवन में बदलाव के लिए काम करें। हम हर तरह के अत्याचार और दमन का विरोध करें।

आप इस महाविद्यालय में कॉमर्स के विद्यार्थी हैं और कॉमर्स के विद्यार्थी होने के नाते आपकी यह जिम्मेदारी बन जाती है कि आप समाज की आर्थिक उन्नति के लिए अपना कंट्रीब्यूशन दें। गुरु गोविंद सिंह जी का जीवन भी इसी की प्रेरणा देता है। उन्होंने समाज और राष्ट्र के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया था।

---

* दिल्ली विश्वविद्यालय के श्री गुरु गोविंद सिंह कॉलेज ऑफ कॉमर्स के वार्षिक दिवस पर आयोजित दीक्षांत समारोह में संबोधन, नई दिल्ली, 2 मई, 2023

हजारों साल पहले से ही हमारे यहाँ शिक्षा की समृद्ध गुरुकुल परंपरा रही है। गुरुकुल की उस पद्धति में शिक्षा के साथ हमें जीवन दीक्षा मिलती थी, अच्छे संस्कार और विचार मिलते थे और विद्यार्थी के व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास होता था। गुरु से शिक्षा दीक्षा प्राप्त करके विद्यार्थी को जीवन की नई दिशा मिलती थी।

यह आपका सौभाग्य है कि आपको इस प्रतिष्ठित गुरु गोविंद सिंह कॉलेज में पढ़ने का अवसर मिला। अब आपको अपने जीवन का नया अध्याय शुरू करना है। जो कुछ भी आपने अपने जीवन में अपने माता पिता से, गुरुओं से, इस कॉलेज से और अपने अनुभवों से सीखा है, अब समय आ गया है कि हम उसके आधार पर अपना कॅरियर तो बनाएँ ही, इसी के साथ समाज में भी अपना सक्रिय योगदान दें। जिम्मेदारी का यह भाव हमें अपनी समृद्ध भारतीय परंपरा से मिलता है। भारत का इतिहास बहुत गौरवशाली परंपरा का इतिहास रहा है। हम आज आधुनिकता के साथ अपनी गौरवशाली विरासत का सम्मान करें।

"शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ नौकरी करना और धन कमाना नहीं होता है।
शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य व्यक्तित्व का निर्माण करना होता है।
और व्यक्तित्व के निर्माण से राष्ट्र का निर्माण हमारा ध्येय होना चाहिए।"

आज के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हम जब आजादी के 75 साल की यात्रा पूरी करके अमृत काल से गुजर रहे हैं, ऐसे समय पर हमें अध्यात्म, अपनी विरासत और आधुनिकता को साथ लेकर आगे बढ़ना है। भविष्य में आप किसी कंपनी में जाएँगे, किसी संस्थान का नेतृत्व करेंगे, चार्टर्ड अकाउंटेंट बनेंगे, कंपनी सेक्रेटरी बनेंगे, टैक्सेशन में जाएँगे या भविष्य में अपना व्यापार करेंगे, तब आपने यहाँ जो ज्ञान और अनुभव प्राप्त किया है, वह बहुत उपयोगी सिद्ध होगा।

जो कुछ भी आपने यहाँ शिक्षा प्राप्त की है और जो आपके जीवन का अनुभव है, यह आपके ज्ञान का संचय है। यह संचय कभी समाप्त नहीं होता है। यह आपके जीवन का स्वर्णिम काल है। इसमें आप जितना ज्ञान और अनुभव प्राप्त कर सकते हैं, प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं, करिए। यह जीवन भर आपके काम आएगा। जो कुछ भी आप जीवन में अभी हासिल कर लेंगे, वह हमेशा आपका मार्ग प्रशस्त करेगा और आपको अपने निर्धारित लक्ष्य की तरफ बढ़ाएगा।

सारी दुनिया आज भौतिक साधन के सहारे आगे बढ़ रही है। लेकिन हम विरासत और आधुनिकता को साथ लेकर आगे बढ़ रहे हैं। इसलिए भारत के डॉक्टर, भारत के इंजीनियर, भारत के साइंटिस्ट, भारत के एंटरप्रिन्योर दुनिया में श्रेष्ठ हैं।

शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ नौकरी करना और धन कमाना नहीं होता है। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य व्यक्तित्व का निर्माण करना होता है। और व्यक्तित्व के निर्माण से राष्ट्र का निर्माण हमारा ध्येय होना चाहिए।

आज व्यक्तित्व के निर्माण के लिए यह जरूरी है कि हम अपने मूल्यों से, अपनी जड़ों से जुड़े रहें। हम अपनी संस्कृति पर गर्व करें। हम अपनी विरासत पर गर्व करें।

युवाओं ने हमेशा से दुनिया को राह दिखाई है। इस दुनिया का भविष्य कैसा होगा, यह आप आज जो कार्य करते हैं, उस पर निर्भर करता है।

दिल्ली विश्वविद्यालय के गुरु गोबिंद सिंह कॉलेज ऑफ कॉमर्स के 39वें वार्षिक दिवस को संबोधित करते हुए

समय के साथ-साथ देश और दुनिया की आवश्यकताएँ भी बदलती हैं, प्राथमिकताएँ भी बदलती हैं। आप युवाओं को इस बदलाव को पहचानकर आगे बढ़ना चाहिए।

नव युग का नव सृजन तुम्हारे हाथ में है, उठो, जागो, आगे बढ़ो। कॉलेज-यूनिवर्सिटी में पढ़ने वाले युवाओं का दायित्व है कि वह समय के साथ अपडेट रहे। अपने आप को स्किल, री-स्किल और अप स्किल करता रहे। हमेशा अपना बेटर वर्जन बनने का प्रयास करें।

मैं आप विद्यार्थियों से कहना चाहता हूँ कि आप अपनी नॉलेज को हमेशा अप-टू-डेट रखें। वर्तमान में क्या चल रहा है, भविष्य में क्या हो सकता है, सरकार की क्या योजनाएँ हैं, क्या फ्यूचर प्लानिंग है! तकनीक किस तरह से विकास कर रही है, इसका आगे क्या एप्लीकेशन हो सकता है! इन सभी विषयों पर नौजवानों को अपडेट रहना चाहिए।

आपको इस महाविद्यालय के रूप में ऐसा बेहतरीन प्लेटफॉर्म मिला है, जहाँ आप अपने 'आउट ऑफ द बॉक्स' सोच से कॉमर्स के क्षेत्र में एक बदलाव ला सकते हैं।

कई सौ साल पहले भारत शिक्षा का प्रमुख केंद्र हुआ करता था। दुनिया भर से जो लोग ज्ञान की चाह रखते थे, वह भारत आते थे, यहाँ नालंदा, तक्षशिला जैसे शिक्षण संस्थानों में पढ़ते थे।

"विकसित और उन्नत भारत का निर्माण हमारी आकांक्षा है।
हमें अपनी संस्कृति और ज्ञान के बल पर इस दिशा में आगे बढ़ना होगा।"

भारत के पास आज भी वह सामर्थ्य है। आज भी दुनिया हमसे बहुत कुछ सीखती है। लोकतंत्र, ज्ञान, दर्शन, विचार, अध्यात्म, योग आदि क्षेत्रों में हमारे अनुभवों से दुनिया आज भी सीखती है।

आज हमारे ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म 'स्वयं' से जुड़कर करीब 3 करोड़ लोग ऑनलाइन एजुकेशन प्राप्त कर रहे हैं।

आज 21वीं सदी में, भारत 21वीं सदी की टेक्नोलॉजी और नई सोच के साथ आगे बढ़ रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी, तकनीकी और डिजिटलाइजेशन को साकार करते हुए हमारा देश दुनिया में अपनी अलग पहचान बना रहा है, क्योंकि आप जैसे होनहार युवा आज लीडरशिप कर रहे हैं। बड़ी-बड़ी कंपनियों में, बड़े-बड़े संस्थानों में आज भारतीय युवा नेतृत्व कर रहे हैं।

हमारे देश ने अपनी स्वाधीनता के 75 वर्ष पूरे कर लिए हैं। अब अगले 25 वर्षों में देश विकास के नए सपने लेकर चल रहा है। आजादी के अमृतकाल की इस यात्रा में आपकी भूमिका सर्वप्रमुख होगी, मुझे ऐसा विश्वास है।

विकसित और उन्नत भारत का निर्माण हमारी आकांक्षा है। हमें अपनी संस्कृति और ज्ञान के बल पर इस दिशा में आगे बढ़ना होगा।

गुरु गोविंद सिंह कॉलेज, दिल्ली यूनिवर्सिटी के आप युवा छात्र देश के हर युवा को आगे बढ़ने की दिशा दें, उन्हें प्रेरणा दें, उन्हें प्रोत्साहित करें। इसी संदेश के साथ आपको बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। एक बार पुनः आज यहाँ से डिग्री प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों को हार्दिक बधाइयाँ।

26

चिकित्सा क्षेत्र : सेवा और समर्पण का क्षेत्र*

"देश और दुनिया में जितने भी सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन हुए हैं, वह सब शिक्षित और योग्य युवाओं ने किए हैं।"

श्री छत्रपति शिवाजी महाराज की पावन धरा, भारत के गौरव महाराष्ट्र को नमन करता हूँ।

प्रवर इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस के नौजवान विद्यार्थियों के बीच आकर आज मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। मैं अपने सामने उत्साहित नौजवानों को देख रहा हूँ।

आप सभी को आपके वार्षिक दीक्षांत समारोह की अनेक शुभकामनाएँ देता हूँ। आज इस दीक्षांत समारोह में अपनी डिग्री प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों को बहुत-बहुत बधाई। देश के इस प्रतिष्ठित संस्थान से मेडिकल साइंस में डिग्री हासिल करना आपके लिए एक विशेष उपलब्धि है। कई वर्षों के परिश्रम और अध्ययन के बाद आपने यह डिग्री हासिल की है।

इस डिग्री के पीछे आपकी मेहनत तो है ही, इसी के साथ आपके माता-पिता का त्याग, उनकी अभिलाषा और आपके शिक्षकों का समर्पण भी है।

पद्मश्री से सम्मानित स्वर्गीय डॉ. विट्ठलराव विखे पाटील जी ने आजीवन ग्रामीण जन जीवन को सशक्त किया। सहकारिता के साथ ग्राम स्वराज की संकल्पना पर काम कर श्री विट्ठलराव विखे पाटील महाराष्ट्र के गाँवों में बसने वाले साधारण लोगों के जीवन में सामाजिक-आर्थिक बदलाव लेकर आए।

उनके पदचिह्नों पर चलते हुए उनके सुपुत्र, पद्मभूषण से सम्मानित स्वर्गीय डॉ. बालासाहेब विखे पाटील ने समाज-सेवा के कार्यों को और अधिक विस्तार दिया। प्रवर मेडिकल संस्थान की स्थापना कर उन्होंने सेवा के संकल्प को साकार किया है।

---

* प्रवर इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस के वार्षिक दीक्षांत समारोह में संबोधन, लोनी, महाराष्ट्र, 11 मई, 2023

प्रवर इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के 11वें दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए

इस संस्थान के कुलाधिपति डॉ. राजेंद्र विखे पाटील उनकी इस समृद्ध विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं। शिक्षा के माध्यम से किस तरह सामाजिक परिवर्तन लाया जा सकता है, यह इस संस्थान ने साबित किया है।

मेडिकल साइंस का क्षेत्र और इसकी उपाधि हमेशा से ही हमारे समाज में बड़ी सम्मान की दृष्टि से देखे जाते हैं। इस संस्थान के विद्यार्थी आगे प्रैक्टिस कर प्रोफेशनल डॉक्टर बनेंगे। पूरी दुनिया में डॉक्टर को भगवान का दर्जा दिया जाता है। इससे आपकी जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है कि जितनी मेहनत से आपने अपनी पढ़ाई पूरी की है, उससे भी अधिक मेहनत से आप अपने प्रोफेशनल जीवन में काम करें। अपनी प्रैक्टिस के लिए आप जहाँ भी जाएँ, आपका मिशन यही होना चाहिए कि जो पीड़ित व्यक्ति आपके पास आए, आप उसकी बीमारी का निदान कर सकें।

देश और दुनिया में जितने भी सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन हुए हैं, वह सब शिक्षित और योग्य युवाओं ने किए हैं। इसलिए समाज और देश को अब आपसे आशा है कि जो वर्तमान और भविष्य की चुनौतियाँ हैं, उन चुनौतियों का समाधान आप युवा करोगे।

अभी तक आप मेडिकल के स्टूडेंट हो, जल्द ही आप मेडिकल फील्ड में प्रोफेशनल डॉक्टर बनेंगे। तब आपसे उम्मीदें होंगी कि देश और प्रदेश के स्वास्थ्य क्षेत्र में जो समस्याएँ हैं, आप उनके निवारण पर काम करोगे। हमारे गाँव-कस्बों तक कैसे हम उन्नत हैल्थ फैसिलिटी पहुँचा सकते हैं, कैसे हर व्यक्ति तक सस्ता और गुणवत्तापूर्ण उपचार पहुँचे; आप इस दिशा में समाधान के लिए काम करोगे।

मैं आपसे कहना चाहूँगा कि आपकी यह जो फील्ड है, इसमें व्यक्ति जीवन भर एक छात्र बना रहता है। बड़े डॉक्टर वे ही बनते हैं, जो अपनी डिग्री के बाद भी सीखना निरंतर जारी रखते हैं। अब आपमें से बहुत विद्यार्थी किसी-न-किसी अस्पताल या कहीं डॉक्टर के रूप में अपनी सेवाएँ देंगे। मैं आपसे उम्मीद करूँगा कि अपने काम के दौरान भी आप निरंतर सीखते रहें। इससे आप अपने क्षेत्र में पारंगत बनेंगे।

"मेडिकल का प्रोफेशन सिर्फ प्रोफेशन नहीं है,
यह एक दायित्व है, एक कर्तव्य है। इसलिए समस्त विश्व में
इसे नोबल प्रोफेशन के रूप में जाना जाता है।"

उपचार के साथ आपकी यह भी जिम्मेदारी है कि आप आम जन को स्वास्थ्य संबंधी विषयों को लेकर जागरूक करें। स्वास्थ्य के मुद्दों पर जो अफवाहें अकसर समाज में होती हैं, आप उनका खंडन करें और लोगों तक सही जानकारी पहुँचाएँ।

मुझे एक वाकया याद आ रहा है। दादरा नागर हवेली और दमन दीव क्षेत्र में मुझे एक उदाहरण जानने को मिला है। मुझे मालूम हुआ कि वहाँ एक 'गाँव दत्तक' कार्यक्रम चल रहा है जिसमें वहाँ के मेडिकल कॉलेज के छात्रों ने 50 गाँवों को गोद लिया है।

अब उस मेडिकल कॉलेज के छात्र हर तरह की बीमारी से बचने के लिए गाँव की मदद करते हैं और स्वास्थ्य से जुड़ी सरकारी योजनाओं के बारे में गाँव वालों को जानकारी देते हैं। उन 50 गाँवों में जब कभी कोई बीमार होता है तो मेडिकल कॉलेज के वे छात्र उनका इलाज करते हैं।

ऐसा ही प्रयास आप भी अपने स्तर पर कर सकते हैं। मेडिकल कॉलेज में पढ़ने वाले आप युवा विद्यार्थी क्यों न लोनी, महाराष्ट्र में आस-पास के कुछ गाँवों को या किसी एरिया में यह संकल्प लें कि यहाँ अगर स्वास्थ्य से जुड़ी समस्या आती है तो आप आगे बढ़कर कॉर्डिनेशन कर जरूरतमंद लोगों की सहायता करोगे। आप भी इस तरह सेवा के लिए काम कर सकते हैं।

ईश्वर किसी भी मनुष्य को एक बार जीवन देकर भेजता है। लेकिन डॉक्टर उसे बार-बार जीवन देता है। कोविड जैसी वैश्विक आपदा के बीच जब देशवासी अपने घरों में कैद

थे, तब मानवता के देवदूत के रूप में डॉक्टर ही थे, जो संकट की घड़ी में मौत के सामने देश और मानवता के रक्षक बनकर खड़े थे। मेडिकल का प्रोफेशन सिर्फ प्रोफेशन नहीं है, यह एक दायित्व है, एक कर्तव्य है। इसलिए समस्त विश्व में इसे नोबल प्रोफेशन के रूप में जाना जाता है।

संस्थान के छात्रों को संबोधित करते हुए

भारत दुनिया में सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश बन गया है। हमारे देश में इतनी बड़ी आबादी के हिसाब से पर्याप्त डॉक्टर्स नहीं हैं। लेकिन हम लगातार अपने आप में सुधार कर रहे हैं। हम अपने साधन-संसाधनों का विस्तार कर रहे हैं। भारत को निरोगी बनाने की हमारी इच्छा शक्ति मजबूत है। इसका परिणाम है कि आज भारत में एम.बी.बी.एस. सीटों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। जल्द ही वह समय आएगा, जब एक लाख डॉक्टर्स हमारे देश में हर वर्ष तैयार होंगे।

देश भर में ऐसे उदाहरण हैं, जहाँ कोई डॉक्टर 10 रुपए की पर्ची बनाकर आम लोगों का इलाज करता है तो कई पिछले 10 सालों से सैकड़ों फ्री मेडिकल कैंप लगा चुके हैं। ऐसे-ऐसे डॉक्टर्स हैं, जिन्होंने एक लाख से ज्यादा लोगों का फ्री में इलाज किया है। मैं आपको यह नहीं कह रहा कि आप फुल टाइम फ्री में इलाज करें या सिर्फ निस्स्वार्थ सेवा करते रहें। मैं आपसे यह कह रहा हूँ कि आप पूर्ण समर्पण भाव से अपने प्रोफेशन में काम करें। इसी के साथ आम और कमजोर जन की सेवा के लिए समय जरूर निकालें।

अपने संसदीय क्षेत्र कोटा-बूँदी में भी हम 'हर गाँव स्वस्थ-हर परिवार स्वस्थ' नाम से रेगुलर हेल्थ कैंप का आयोजन कर रहे हैं। वहाँ गाँव-गाँव में लोगों को जागरूक कर हेल्थ कैंप में उनकी नि:शुल्क जाँच की जाती है। हर ग्रामीण व्यक्ति, जिसको स्वास्थ्य से संबंधित कोई समस्या है, कोई आशंका है, उनकी जाँच की जाती है और उन्हें दवा भी दी जाती है।

चिकित्सा का क्षेत्र बड़े दायित्व का क्षेत्र है। यह सेवा और मानवता का क्षेत्र है। आपके कार्य और कौशल का सम्मान हर व्यक्ति करता है। मैं आपको शुभकामनाएँ देता हूँ कि आज आप यहाँ से डिग्री लेकर जाएँगे तो जीवन में बहुत तरक्की करेंगे। इसी के साथ मैं आशा करता हूँ कि आप देश, समाज और मानवता के क्षेत्र में अपना अतुलनीय योगदान देंगे। आप भारत को विकसित और निरोगी राष्ट्र बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे।

प्रवर इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस मेडिकल शिक्षा के क्षेत्र में नित नए आयाम विकसित करे। एक चिकित्सा संस्थान के रूप में हमारा लक्ष्य चिकित्सा शिक्षा, चिकित्सा पद्धति और चिकित्सा अनुसंधान को सर्वोत्तम बनाना हो। हम सर्वोत्तम चिकित्सकों को तैयार कर अपने राष्ट्र के नवनिर्माण में अपनी भागीदारी निभाएँ।

माननीय अध्यक्ष श्री ओम बिरला
वंदनीया नारी शक्ति के बीच

10TH CONVOCATION

हार्दिक
ओम बिरला

लाडली बहना

आन्या फाउण्डेशन द्वारा
रक्षाबंधन पर्व
पर "स्किल अप कोटा" कार्यक्रम में प्रशिक्षण प्राप्त बहनों को आत्मनिर्भर बनाने हेतु
AANYA

जय महेश

श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र

द्वारा आयोजित

भाग-पाँच

स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे

27

सुलभ स्वास्थ्य सेवा : हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता*

"दुनिया भर से कई देशों के लोग इस उम्मीद से भारत आते हैं कि यहाँ उन्हें सस्ता और गुणवत्ता युक्त इलाज मिल सकेगा। हमारा देश जो अब तक अपनी संस्कृति, ज्ञान, सभ्यता, अध्यात्म के लिए जाना जाता था, आज 'भारत मेडिकल हब' के रूप में भी जाना जाता है।"

यशोदा हॉस्पिटल, गाजियाबाद के परिसर में आप सब लोगों के बीच आकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। अस्पताल प्रबंधन द्वारा अपने मरीजों के अत्याधुनिक उपचार के लिए आधुनिक रोबोटिक मशीनों का आज अनावरण किया गया है। इसके लिए मैं आप सभी को बधाई देता हूँ।

किसी भी राष्ट्र और समाज को विकसित बनाने के लिए उसकी स्वास्थ्य सेवाओं का विकसित होना अत्यंत आवश्यक है। जब हमारे देश के लोगों को इलाज के लिए आधुनिक अस्पताल मिलेंगे, आधुनिक सुविधाएँ मिलेंगीं, इलाज सस्ता होगा तो लोग अधिक स्वस्थ होंगे, और स्वस्थ नागरिक मिलकर खुशहाल राष्ट्र का निर्माण करेंगे।

पिछले 30 से अधिक वर्षों से यशोदा अस्पताल गाजियाबाद और देश के कई क्षेत्रों में अपनी सेवाएँ दे रहा है। आमजन को गुणवत्तापूर्ण एवं सुलभ इलाज देने के साथ आप निरंतर अपनी उपचार तकनीकों का विस्तार कर रहे हैं।

यही कारण है कि आपका अस्पताल आज गाजियाबाद ही नहीं बल्कि पूरे एन.सी.आर. के अंदर एक प्रतिष्ठित अस्पताल है। यह अपनी अपडेटेड तकनीकों और उच्च सेवाओं के लिए जाना जाता है। मैं इसके लिए आपकी सराहना करता हूँ।

---

* यशोदा अस्पताल द्वारा आयोजित कार्यक्रम में संबोधन, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, 29 सितंबर, 2022

समय के साथ-साथ देश और दुनिया में चिकित्सा पद्धति में बड़ा बदलाव हुआ है। नई-नई मशीनों के आने से सर्जरी और ऑपरेशन अधिक सुरक्षित हुए हैं। बीमारी की जाँच और पहचान तथा उसके बाद उपचार अब आसान हुआ है।

हम कई वर्षों से कह रहे हैं कि यह साइंस का युग है, लेकिन मैं कहूँगा कि यह एडवांस साइंस का युग है। आज जो काम मानव कर सकता है, उससे भी अधिक दक्ष तरीके से रोबोट वैसा काम कर रहे हैं। रोबोटिक्स और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने पूरी-की-पूरी दुनिया ही बदलकर रख दी है।

चिकित्सा पद्धति सिर्फ विज्ञान ही नहीं, बल्कि कला भी है और एक तकनीक भी है। इलाज से जुड़ी तकनीक लोक केंद्रित और मानवता के लिए होनी चाहिए, हमें बस यह ध्यान रखना है। तकनीक का सही उपयोग हो और मानवता का कल्याण हो तो यह हमारे लिए वरदान की तरह ही है।

आज दूरबीन चिकित्सा, लेसर तकनीक, रेडियोलॉजी, कीमोथेरैपी जैसी तकनीकों ने इलाज को प्रभावी और उच्च गुणवत्ता का बना दिया है। बदलते परिप्रेक्ष्य में यदि विज्ञान में सबसे अधिक बदलाव हो रहा है तो चिकित्सा विज्ञान में ही हो रहा है। ऐसा इसलिए हो रहा है कि तकनीकों के उपयोग से न सिर्फ इलाज को बेहतर तरीके से किया जा सकता है, बल्कि मेडिकल साइंस आज अधिक लोगों की पहुँच में भी है।

यशोदा अस्पताल और देश के अलग-अलग हिस्सों में ऐसे कितने ही अस्पताल हैं, जो जनता के लिए सहज और उचित मूल्य वाली हेल्थ केयर उपलब्ध करा रहा है। ऑपरेशन थिएटरों में आर्टिफिशिल इंटेलिजेंस के इस्तेमाल से आज जहाँ पेशेंट का इलाज बेहतर हो रहा है, वहीं डॉक्टर्स भी अधिक सुनिश्चितता और सटीकता से ऑपरेशन कर पा रहे हैं। वर्तमान समय में मेडिकल साइंस में तकनीक का प्रयोग इस लेवल पर हो रहा है कि आज ऑर्गन ट्रांसप्लांट (अंग प्रत्यर्पण) भी सरलता से संभव है।

सर्जरी यानी शल्य चिकित्सा में कारगर नई तकनीकों के जरिए अब उन जटिल चुनौतियों का भी समाधान ढूँढ़ा जा रहा है, जिनका सामना शल्य चिकित्सकों (सर्जन) को इलाज के दौरान करना पड़ता है।

एक समय था जब कैंसर को भयानक जानलेवा बीमारी माना जाता था। जब कैंसर का इलाज संभव नहीं था, उसकी जाँच भी सरल नहीं थी। मगर मेडिकल साइंस में तकनीक के उपयोग से आमजन को कई तरह की सुविधाएँ प्राप्त हुई हैं।

आज कैंसर की जाँच एक एमआरआई से हो जाती है। शुरुआती स्टेज में कैंसर का पता चल जाता है तो उसका इलाज भी संभव हो जाता है। आम और गरीब आदमी को जीवन गँवाना नहीं पड़ता, क्योंकि आज कैंसर का प्रभावी इलाज संभव हुआ है।

आज चिकित्सा के क्षेत्र में भारत वैश्विक स्तर पर शीर्ष देशों में शामिल है। भारत विश्व की बड़ी फार्मा इंडस्ट्री है। हमारे यहाँ वैक्सीन उत्पादन का काम बड़े स्तर पर हो रहा है।

दुनिया भर से कई देशों के लोग इस उम्मीद से भारत आते हैं कि यहाँ उन्हें सस्ता और गुणवत्ता युक्त इलाज मिल सकेगा। हमारा देश जो अब तक अपनी संस्कृति, ज्ञान, सभ्यता, अध्यात्म के लिए जाना जाता था, आज 'भारत मेडिकल हब' के रूप में भी जाना जाता है।

हमारे देश में मेडिकल टूरिज्म बढ़ रहा है। देश में बढ़ रहे मेडिकल टूरिज्म में हमारे डॉक्टर्स, हमारे मेडिकल स्टाफ की सबसे बड़ी भूमिका है। भारत के डॉक्टर्स दुनिया में सबसे कुशल हैं, अगर मैं यह कहूँ, तो किसी को अचरज नहीं होना चाहिए। दुनिया के जितने भी बड़े-विकसित देश हैं, उन देशों में हमारे डॉक्टर्स अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। भारत के डॉक्टर्स दुनिया भर में भारत की ख्याति बढ़ा रहे हैं। हाल ही के वर्षों में हमारा देश चिकित्सा संबंधी ज्ञान और तकनीक का भी मुख्य केंद्र बनकर उभरा है।

भाभा परमाणु शोध केंद्र (बीएआरसी) और नाभिकीय औषधि तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान जैसे संस्थानों के वैज्ञानिक रेडियोएक्टिव चिकित्सा पद्धति के क्षेत्र में सक्रियतापूर्वक काम कर रहे हैं।

नाभिकीय चिकित्सा की मदद से हम कई गंभीर बीमारियों का पता लगाने और उनके इलाज में काफी समय तथा संसाधन बचा सकते हैं। ये चिकित्सा पद्धतियाँ भविष्य में बड़ा बदलाव लेकर आएगी, इसकी पूरी संभावना है।

आज भारत दुनिया में आबादी के हिसाब से दूसरा बड़ा देश है। हमारे यहाँ दुनिया की सबसे बड़ी कार्यशील जनसंख्या है। इसीलिए हम कहते हैं कि हमारी डेमोक्रेसी और डेमोग्राफी हमारी ताकत है।

हमारी डेमोग्राफी में ऐसी क्षमता है कि भारत दुनिया के शीर्ष पर पहुँच सके, लेकिन इसके लिए जरूरी है कि देश के सभी नागरिक शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहें। हर एक नागरिक के लिए स्वास्थ्य सेवा सुलभ हो, इसके लिए हम एक राष्ट्र के तौर पर गंभीर प्रयास कर रहे हैं। बीते कुछ वर्षों का हेल्थ डेटा देखें तो हमने स्वास्थ्य क्षेत्र में अभूतपूर्व तरक्की की है।

देश में मातृ-शिशु मृत्यु दर में उल्लेखनीय कमी आई है, पोलियो मुक्त होकर अब भारत 2025 तक टीबी मुक्त राष्ट्र की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

दुनिया का सबसे बड़ा और व्यवस्थित टीकाकरण अभियान चलाकर भारत ने कोरोना को हराया है। 200 करोड़ से ज्यादा कोविड वैक्सीन डोज देश भर में लग चुकी है। हमने

अपने स्तर पर रिकॉर्ड वैक्सीन का उत्पादन किया है, प्रत्येक व्यक्ति तक वैक्सीन की उपलब्धता सुनिश्चित की है। यह निश्चित तौर पर हमारे लिए गौरवशाली है।

सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं में हम किस तरह से और अधिक सुधार ला सकते हैं, इस दिशा में अभी हमें अधिक रिसर्च करने की आवश्यकता है।

मैं समझता हूँ कि सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में एआई और 5जी जैसी आधुनिक तकनीकों के इस्तेमाल से सुविधा बढ़ेगी, हम अपनी आबादी संबंधी डेटा का सटीक विश्लेषण कर सकेंगे, जिससे अधिक-से-अधिक लोगों को हम प्रभावी रियल-टाइम उपचार दे सकेंगे।

टेलीहेल्थ, ड्रोन तकनीक, इंटरनेट ऑफ मेडिकल थिंग्स (आईओएमटी) जैसी आधुनिक तकनीकों के माध्यम से हम देश में बीमारियों से जुड़ी प्रोफाइल तैयार कर पाएँगे। किस क्षेत्र में किस व्यक्ति को कौन सी बीमारी है। उसके वंश में वह बीमारी, ब्लड ग्रुप जैसी विस्तृत स्वास्थ्य सूचनाओं को हम व्यवस्थित रूप से तैयार कर पाएँ, देश के हर नागरिक का मेडिकल कार्ड हो।

यदि हमारे देश में हर नागरिक का मेडिकल कार्ड मौजूद होगा तो जब भी हमारा कोई नागरिक बीमार होगा, तो उसकी पूरी मेडिकल हिस्टरी का पता लग सकेगा। यदि यह संभव हो जाए, तो इलाज और अधिक प्रभावी और गुणवत्तापूर्ण होगा।

मैं समझता हूँ कि जिस स्पीड से आज मेडिकल साइंस तरक्की कर रहा है, जिस स्पीड से मेडिकल में तकनीक का समावेश हो रहा है। हम इन उपायों की तरफ जल्द ही बढ़ सकेंगे और अपने हर एक नागरिक को स्वास्थ्य का अधिकार दे पाएँगे।

लंबे समय से देश में यह आकांक्षा रही है कि हमारे देश में हेल्थकेयर का एक ऐसा सिस्टम हो, जो गरीब से गरीब की भी चिंता करता हो। एक ऐसी स्वास्थ्य व्यवस्था, जो गरीब के स्वास्थ्य की चिंता करे, गरीब को बीमारियों से बचाए, बीमारी हुई तो फिर उसको उत्तम इलाज सुलभ कराए। किसी भी देश का हेल्थ केयर सिस्टम तभी मजबूत होता है, जब वह हर तरह से समाधान दे, कदम-कदम पर उसका साथ दे।

इन वर्षों में जैसे-जैसे तकनीक ने प्रगति की है, हमारे देश ने भी इस दिशा में तेजी से तरक्की की है। आज होलिस्टिक हेल्थ केयर हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। देश में हर व्यक्ति का उन्नत इलाज आज हमारी प्राथमिकता है। देश में लगातार मेडिकल कॉलेज, एम्स की संख्या बढ़ रही है, मेडिकल की सीटें बढ़ रही हैं। अधिक प्रशिक्षित डॉक्टर्स देश में तैयार हो रहे हैं।

30 से भी अधिक वर्षों से जिस प्रतिबद्धता और निष्ठा के साथ यशोदा अस्पताल ने अपने रोगियों को उन्नत चिकित्सा देखभाल प्रदान की है, मैं आशा करता हूँ कि भविष्य

में भी अपनी इस निष्ठा को आप और अधिक बढ़ाएँगे। निश्चय ही आप तकनीक और नवाचार के प्रयोग से मेडिकल साइंस में अपना योगदान देते रहेंगे। रोबोटिक सर्जरी की जो पहल आपने अपने अस्पताल में की है, मैं इसकी सफलता की कामना करता हूँ।

आज के इस कार्यक्रम में उपस्थित कुशल डॉक्टरों, सर्जनों, चिकित्सकों, नर्सों, रिसर्च स्कॉलर्स और संपूर्ण मेडिकल स्टाफ को मैं अपनी बहुत-बहुत शुभकामनाएँ देता हूँ।

28

विश्व थैलेसीमिया दिवस*

"आज भी वैश्विक स्तर पर बीटा-थैलेसीमिया वाले 70 प्रतिशत से अधिक रोगियों को समय पर और पर्याप्त मात्रा में रक्त नहीं मिल पाता है। थैलेसीमिया से पीड़ित लोगों में अन्य बीमारियाँ होने की आशंका भी होती है।"

सर गंगा राम अस्पताल, दिल्ली द्वारा विश्व थैलेसीमिया दिवस कार्यक्रम का आयोजन यह दर्शाता है कि यहाँ के डॉक्टर्स, पदाधिकारी और स्टाफ के सदस्य जनसामान्य के स्वास्थ्य को लेकर अत्यंत जागरूक और जिम्मेदार हैं। मैं इसके लिए आपको साधुवाद देता हूँ।

मैं इस अवसर पर सर गंगा राम को अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। यह अस्पताल कई वर्षों से जरूरतमंद एवं कमजोर वर्ग के लोगों का नि:शुल्क इलाज कर रहा है। इसके लिए भी मैं आपकी सराहना करता हूँ। स्वास्थ्य के क्षेत्र में सेवा और सरोकार का बहुत महत्त्व है। मैं आपके सेवाभाव का सम्मान करता हूँ।

'विश्व थैलेसीमिया दिवस' ऐसा विशेष दिवस है, जब हम इस वैश्विक स्वास्थ्य समस्या पर विचार-विमर्श करते हैं। थैलेसीमिया आज भारत सहित दुनिया के कई देशों में एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या है। इसके निदान के लिए कई वर्षों से डॉक्टर्स कम्युनिटी काम कर रही है।

अंतर्राष्ट्रीय थैलेसीमिया दिवस (आईटीडी) 2023 का विषय 'बी अवेयर, शेयर, केयर : स्ट्रेंथनिंग एजुकेशन टू ब्रिज दि थैलेसीमिया केयर गैप' है।

थैलेसीमिया की गंभीरता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि दुनिया भर में लगभग 300 मिलियन, यानी 30 करोड़ लोग थैलेसीमिया से प्रभावित हैं। इनमें से लगभग 5 लाख लोग इस बीमारी से गंभीर रूप से पीड़ित हैं।

---

* विश्व थैलेसीमिया दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में संबोधन, नई दिल्ली, 9 मई, 2023

हमारे सामने सबसे बड़ी समस्या यह है कि इनमें से करीब 80 प्रतिशत लोग निम्न और मध्यम आय वाले देशों में रहते हैं और अधिकतर देशों में स्वास्थ्य का ढाँचा आज भी अच्छा नहीं है। भारत का हमेशा से यह मानना रहा है कि एक देश की स्वास्थ्य समस्या दूसरे से जुड़ी होती है। जितनी जल्दी दुनिया एक हुई है, उतनी ही जल्दी आज बीमारियों की भी कोई सीमा नहीं रही है।

कोरोना के समय पर हमने देखा है। भारत ने कोरोना से लड़ने के लिए भी विश्व के करीब 150 देशों की सहायता की है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः। सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु। मा कश्चित् दुःखभाग्भवेत्॥

यानी सभी सुखी रहें, सभी निरोगी रहें, सभी का कल्याण हो और किसी को कोई दुःख न हो, यह हमारा मूल दर्शन है।

दुनिया में और हमारे समाज में थैलेसीमिया पीड़ित लोगों की बड़ी संख्या है। इसे ध्यान में रखते हुए हमें इस बीमारी के बारे में अधिक-से-अधिक जागरूकता का प्रसार करना और अधिक-से-अधिक लोगों को थैलेसीमिया के बारे में शिक्षित करने की जरूरत है।

आज भी वैश्विक स्तर पर बीटा-थैलेसीमिया वाले 70 प्रतिशत से अधिक रोगियों को समय पर और पर्याप्त मात्रा में रक्त नहीं मिल पाता है। थैलेसीमिया से पीड़ित लोगों में अन्य बीमारियाँ होने की आशंका भी होती है। लेकिन दुनिया भर में लगभग 90 प्रतिशत थैलेसीमिया रोगियों को मल्टी-डिसिप्लिनरी केयर और एक्सपर्ट की सुविधा नहीं मिल पाती है। इस कारण थैलेसीमिया के साथ ही लोगों में दूसरी बीमारियों का लेवल बढ़ जाता है।

इस रोग और बढ़ती मृत्यु दर का प्रमुख कारण हीमोग्लोबिनोपैथी, विशेष रूप से बीटा थैलेसीमिया और सिकल सेल रोग भारत में सबसे आम सिंगल जीन विकार हैं और इनसे हमारी स्वास्थ्य सेवा प्रणाली पर काफी बोझ बढ़ रहा है।

यह चिंताजनक है कि भारत में थैलेसीमिया मेजर से पीड़ित बच्चों की संख्या सबसे अधिक है। बीटा थैलेसीमिया से पीड़ित 42 मिलियन यानी 4 करोड़ 20 लाख बच्चों में लगभग 1 से 1.5 लाख बच्चे भारतीय हैं। देश में हर साल थैलेसीमिया मेजर से ग्रस्त लगभग 10 से 15 हजार बच्चे पैदा होते हैं। इसी के साथ हमारे देश में बड़ी संख्या में बच्चे सिकल सेल रोग से भी ग्रस्त हैं, जिससे इसकी गंभीरता बढ़ जाती है।

स्वास्थ्य कर्मियों की जिम्मेदारी है कि इस रोग विशेष के बारे में जनसामान्य में जागरूकता और शिक्षा का प्रचार करें। लोगों को यह समझाने की आवश्यकता है कि थैलेसीमिया होने पर भी यदि सही समय पर और उचित उपचार दिया जाए, तो इस पर नियंत्रण संभव है।

बेहतर स्वास्थ्य के प्रति लोगों को जागरूक करने, स्वास्थ्य देखभाल के क्षेत्र से जुड़ी खामियों को दूर करने तथा स्वास्थ्य जगत में नई पहलों की शुरुआत करने में शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा के माध्यम से ही हम स्वास्थ्य और जीवन की गुणवत्ता में सुधार कर सकते हैं, सामाजिक सौहार्द्र की भावना को बढ़ावा दे सकते हैं और देश पर बढ़ रहे अनेक रोगों के बोझ को कम कर सकते हैं। इससे आने वाले वर्षों में हमारी स्वास्थ्य प्रणाली मजबूत होगी।

सर गंगाराम अस्पताल में आयोजित विश्व थैलेसीमिया दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए

थैलेसीमिया से ग्रस्त लोगों तक निरंतर सही और अपडेटेड जानकारी पहुँचे, ताकि वे अपनी स्थिति को बेहतर ढंग से समझ सकें और समुचित देखभाल व इलाज से स्वस्थ हो सकें।

इसी के साथ हमारे समाज में रक्तदान को लेकर लोगों में जो भ्रांतियाँ हैं, उन्हें भी दूर किया जाना चाहिए। अधिक-से-अधिक लोगों को समय-समय पर स्वेच्छा से रक्तदान के लिए आगे आना चाहिए। यह जागरूकता भी समाज में होनी चाहिए।

रक्तदान कर हम किसी जरूरतमंद व्यक्ति का जीवन बचा सकते हैं और अति आवश्यक होने पर आपके एक बार के रक्तदान से 3 लोगों तक का जीवन बचाया जा सकता है।

देश में हर दिन अनेक लोग होते हैं, जिन्हें अस्पतालों में रक्त की जरूरत होती है। कई बार किसी का एक्सीडेंट हो जाता है, किसी की सर्जरी होती है, कोई कैंसर से पीड़ित होता है या कोई किसी दूसरी बीमारी से जूझ रहा होता है। इन सभी व्यक्तियों को यदि समय पर रक्त मिल जाए, तो इनका जीवन बचाया जा सकता है।

रक्त सामान्यत: आज भी आर्टिफिशियल नहीं बनाया जाता है, और जब किसी भी व्यक्ति को अस्पताल में रक्त की आवश्यकता होती है, तब किसी का दान किया हुआ रक्त ही जरूरतमंद को चढ़ाया जाता है।

रक्तदान का क्या महत्त्व होता है, यह हमें तब समझ आता है, जब किसी का कोई परिजन अस्पताल में भर्ती हो, और उसे रक्त की जरूरत पड़ती है। उस स्थिति में वह व्यक्ति किसी-न-किसी से संपर्क करने की कोशिश करता है कि कहीं-न-कहीं से अरेंजमेंट हो जाए। उस वक़्त ज्यादातर लोग समझ पाते हैं कि रक्तदान कितना जरूरी है।

ओ नेगेटिव, AB नेगेटिव जैसे कुछ ब्लड ग्रुप्स बहुत कम लोगों में मिलते हैं। इसलिए जब कई बार ऐसे लोगों को रक्त की जरूरत होती है, तो रक्त आसानी से नहीं मिल पाता है। इसलिए ऐसे सभी स्वस्थ लोगों को रक्तदान करना चाहिए, जिनका ब्लड ग्रुप दुर्लभ प्रकार का है।

2047 तक सिकल सेल एनीमिया का उन्मूलन करने के लिए एक मिशन चलाने की घोषणा अभी इसी वर्ष के बजट में माननीय वित्त मंत्री, श्रीमती निर्मला सीतारमण जी ने की है।

16वीं लोक सभा के दौरान, पटियाला से माननीय सांसद और हृदयरोग विशेषज्ञ डॉ. धर्मवीर गांधी ने थैलेसीमिया निवारण विधेयक, 2018 पुनर्स्थापित किया था, जो गैर-सरकारी सदस्य द्वारा प्रस्तुत विधेयक था। इस विधेयक का उद्देश्य थैलेसीमिया के कारण होने वाली जीवन भर की पीड़ा और कष्टों को ध्यान में रखते हुए, नवजात बच्चों में थैलेसीमिया रोग के प्रसार को रोकने के संबंध में जागरूकता बढ़ाना और उससे संबंधित विषयों का उपबंध करना था।

आपको ज्ञात होगा कि मध्य भारत के विदर्भ क्षेत्र, विशेष रूप से जनजातीय आबादी वाले क्षेत्र में सिकल सेल बीमारी बड़े पैमाने पर फैली हुई है और कुछ जनजातीय समूहों में इसके फैलने की दर लगभग 35 प्रतिशत तक है। इस मुद्दे को और देश में इसी प्रकार की अन्य बीमारियों के फैलने को ध्यान में रखते हुए, चंद्रपुर में भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद् (आईसीएमआर)-हीमोग्लोबिनोपैथी अनुसंधान, प्रबंधन और नियंत्रण केंद्र (सीआर एमसीएच) की स्थापना की गई है।

हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 11 दिसंबर, 2022 को सीआरएमसीएच का शुभारंभ किया। मुझे विश्वास है कि यह केंद्र देश में हीमोग्लोबिनोपैथी के क्षेत्र में

अनुसंधान के अग्रणी संस्थान के रूप में कार्य करेगा तथा शिक्षण, नवोन्मेषी अनुसंधान और प्रौद्योगिकीय विकास का उत्कृष्ट केंद्र बनकर रोगियों को अत्यधिक लाभान्वित करेगा।

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि थैलेसीमिया के इलाज और इससे प्रभावित लोगों की देखभाल के लिए विकसित किए गए दो अभिनव उत्पादों के क्लीनिक ट्रायल पूरे हो गए हैं और उन्हें एफडीए (फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन) और ईएमए (यूरोपीय मेडिसिन एजेंसी) द्वारा स्वीकृति भी मिल गई है।

भारत में हीमोग्लोबिन मोलिक्यूल संबंधी बीमारियाँ एक बड़ी सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या है। इसकी सफलतापूर्वक रोकथाम के लिए केवल रोग के इलाज ही नहीं अपितु उसके कारण और निवारण पर भी ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। मुझे विश्वास है कि हर प्रकार से परस्पर सहयोग करके हम प्रभावी रूप से थैलेसीमिया पर काबू पा सकते हैं। मुझे विश्वास है कि इन कदमों से हमारी आने वाली पीढ़ियाँ बेहतर और स्वस्थ जीवन का आनंद ले पाएँगी।

इस अवसर पर मैं अपने देश के सभी नागरिकों से थैलेसीमिया के विरुद्ध अभियान में शामिल होने की अपील करता हूँ। हम सब मिलकर दुनिया भर में थैलेसीमिया से पीड़ित लाखों लोगों के जीवन को बेहतर बना सकते हैं। हमें एकजुट होकर थैलेसीमिया के बारे में लोगों को जागरूक करना होगा, ताकि थैलेसीमिया से पीड़ित हर व्यक्ति को इलाज संबंधी सुविधाएँ मिल सकें।

29

योग : एक स्वस्थ विश्व का आधार*

**"योग वह विद्या है, जो हमें शरीर और मन से
स्वस्थ जीवन जीने की कला सिखाती है।
योग हमारे जीवन-दर्शन में, हमारी जीवन पद्धति में है।"**

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ। आज जब हम यहाँ संसद भवन में योग कर रहे हैं, तो हमारे साथ ही दुनिया के करीब 200 देश भी योग कर रहे हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी भी आज हमारे साथ संयुक्त राष्ट्र संघ में योग कर रहे हैं। हम संपूर्ण विश्व के अंदर योग के माध्यम से सभी के स्वस्थ रहने की मंगल कामना करते हैं।

योग शब्द का अर्थ होता है—जुड़ना। आज योग के माध्यम से भारत ने दुनिया को जोड़ने का काम किया है और इसी विचार के साथ इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की थीम 'योगा फॉर वसुधैव कुटुंबकम्' रखी गई है।

योग के रूप में भारत ने दुनिया को एक अनुपम उपहार दिया है। भारत ने दुनिया को स्वस्थ तन और स्वस्थ मन की उपयोगिता बताई है।

जिस प्रकार हम कहते हैं कि भारत मदर ऑफ डेमोक्रेसी है, लोकतंत्र भारत की प्राचीन संस्कृति है, उसी तरह योग हमारी जीवन-शैली और चिंतन शैली है, जिसे आज दुनिया अपना रही है।

योग ने आज समग्र स्वास्थ्य क्रांति के युग का संचार किया है, जिसमें इलाज के बजाय रोकथाम पर अधिक ध्यान दिया गया है। आज के बदलते परिप्रेक्ष्य में जब हम 'इलनेस' से 'वेलनेस' की ओर जा रहे हैं, तो योग हमें इसके लिए समर्थ बना रहा है।

योग वह विद्या है, जो हमें शरीर और मन से स्वस्थ जीवन जीने की कला सिखाती है। योग हमारे जीवन-दर्शन में, हमारी जीवन पद्धति में है।

---

* अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर संबोधन, नई दिल्ली, 21 जून, 2023

योग व्यक्ति को समग्र रूप से स्वयं को रूपांतरित और विकसित करने की आध्यात्मिक विद्या है। यह हमें अपने लिए नहीं, बल्कि सबके लिए जीने का संदेश देती है। यही कारण है कि वर्तमान में योग की लोकप्रियता एवं स्वीकार्यता बढ़ी है।

संसद भवन परिसर में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योग अभ्यास का नेतृत्व करते हुए

योग किसी पंथ विशेष या समूह विशेष का नहीं है, बल्कि यह समस्त मानवता की अनमोल विरासत है, योग एक स्वस्थ विश्व का आधार है। यह शारीरिक और मानसिक अनुशासन का एक संयोजन है, जो शरीर को मजबूत और स्वस्थ बनाता है तथा जिससे मन को शांत और नियंत्रित करने में मदद मिलती है।

योग का मूलमंत्र है—'योग: कर्मसु कौशलम्' अर्थात् कार्य को कुशलता से करना ही योग है। योग हमारी कार्यकुशलता व कार्यक्षमता को बढ़ाता है; हमारी कार्यशैली को बेहतर बनाता है। योग के इसी मंत्र को आज हमें अपनाने का संकल्प करना है। आप अपनी शक्तियों को अपने कर्म में केंद्रित करें, ताकि हमारे कार्यों में श्रेष्ठता आए।

'योग से सहयोग तक' की हमारी धारणा को हम आत्मसात करें। मुझे विश्वास है कि यह हमें एक नए भविष्य का मार्ग दिखाएगा और मानव कल्याण को सुनिश्चित करेगा।

भाग-छह

युवा विषयक मुद्दे

30

युवा सपनों और संकल्पों के लिए प्रेरक स्वामी विवेकानंद का जीवन*

"स्वामी विवेकानंद जी ने उस समय कहा था कि अगर देश में कोई परिवर्तन लाना है, परिवर्तन की दिशा तय करनी है, तो हमें देश में ऊर्जावान, सामर्थ्यवान, बुद्धिमान नौजवानों की आवश्यकता है, जो देश के अंदर परिवर्तन का दौर लाएँ।"

आज का दिन बहुत महत्त्वपूर्ण है। जिनके नाम से यह विश्वविद्यालय है, आज उन स्वामी विवेकानंद जी की जयंती है। इस जयंती को हम 'युवा दिवस' के रूप में भी मनाते हैं। विश्वविद्यालय के नाम से ही नौजवानों में नई ऊर्जा, नया संकल्प, नया विश्वास जागता है। विवेकानंद ग्लोबल यूनिवर्सिटी में सभी नौजवानों और विद्यार्थियों को मैं आज छठे दीक्षांत समारोह की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ देता हूँ, बधाई देता हूँ।

इस विश्वविद्यालय के मुख्य संरक्षक—डॉ. के. राम जी ने लंबे समय तक भारतीय पुलिस सेवा में अपनी सेवाएँ दी हैं। अब ये अनुशासन और देशभक्ति के माध्यम से नौजवानों को तैयार कर रहे हैं।

आज का दिन उन नौजवानों के लिए महत्त्वपूर्ण है, जिन्होंने शिक्षा प्राप्त की और शिक्षा के बाद आज उपाधि प्राप्त कर एक नए जीवन की शुरुआत करने जा रहे हैं। विद्यार्थी जीवन में उन्होंने अपने डीन, प्रोफेसर से मार्गदर्शन लिया, उच्च शिक्षा प्राप्त की, तकनीकी शिक्षा प्राप्त की, कृषि की शिक्षा प्राप्त की, मैनेजमेंट की, विज्ञान की शिक्षा प्राप्त की। अलग-अलग 100 से ज्यादा विषयों में उन्होंने शिक्षा प्राप्त की और आज उनको उपाधि मिली है। उनके लिए तो एक बड़ा दिन है ही, लेकिन आज उन शिक्षकों के लिए भी बड़ा दिन है,

* स्वामी विवेकानंद जयंती के अवसर पर स्वामी विवेकानंद ग्लोबल यूनिवर्सिटी द्वारा आयोजित कार्यक्रम में संबोधन, जयपुर, राजस्थान, 12 जनवरी, 2023

जिन्होंने उनको शिक्षा दी, दीक्षा दी, अच्छे संस्कार दिए, विचार दिए, जीवन में एक दिशा दी और विशेष रूप से जिन्होंने पैदा किया, उन माता-पिता के लिए बड़ा उत्सव का दिन है कि उनके बेटे-बेटियों ने आज यह उपाधि प्राप्त की है।

मुझे खुशी है कि जिस विश्वविद्यालय में आप अध्ययन कर रहे हैं, उसने बहुत कम समय में देश के प्रमुख विश्वविद्यालयों में अपनी ख्याति प्राप्त की है।

एक अच्छी शिक्षा से, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से, अच्छे संस्कारों से, अच्छे विचारों से, जिसके कारण अलग-अलग प्रदेश के विद्यार्थी तो पढ़ ही रहे हैं, साथ ही 17 से ज्यादा देशों के विद्यार्थी भी यहाँ अध्ययन कर रहे हैं। इसके लिए मैं संस्था के सभी ट्रस्टियों को बहुत-बहुत साधुवाद देता हूँ, बधाई देता हूँ। यह हमारी जिंदगी का एक महत्त्वपूर्ण क्षण है और नए दौर की ओर हमारे जीवन की शुरुआत है। हमें अभी तक कोई-न-कोई मार्गदर्शन देने वाला था, दिशा देने वाला था। अब हमें हमारी दिशा तय करनी है, लक्ष्य तय करना है। जो कुछ भी यहाँ से सीखा है, अनुभव प्राप्त किया है, उसके आधार पर देश की सेवा भी करनी है और अपने कॅरियर की नई शुरुआत भी करनी है। मुझे आशा है कि जिस विश्वविद्यालय में आप पढ़े हैं, जो कुछ भी सामर्थ्य, जो कुछ भी शिक्षा आपने प्राप्त की है, उससे आपके नए कैरियर के अंदर आप और अधिक आकांक्षा से, और नए सपने देखकर, उन सपनों को पूरा करने के लिए उन लक्ष्यों की ओर बढ़ेंगे।

स्वामी विवेकानंद जी ने उस समय कहा था कि अगर देश में कोई परिवर्तन लाना है, परिवर्तन की दिशा तय करनी है, तो हमें देश में ऊर्जावान, सामर्थ्यवान, बुद्धिमान नौजवानों की आवश्यकता है, जो देश के अंदर परिवर्तन का दौर लाएँ।

आज हम उस सपने को पूरा होते हुए देख रहे हैं। उस समय का विचार, उस समय का सपना आज भारत का नौजवान पूरा कर रहा है। आज भारत के नौजवान अपनी ऊर्जा, सामर्थ्य, बुद्धि, कौशल, चिंतन, सोच और नए इनोवेशन के कारण दुनिया में नेतृत्व कर रहे है, भारत में भी नेतृत्व कर रहे हैं। दुनिया की जितनी बड़ी चुनौतियाँ हैं, उन चुनौतियों का समाधान भारत का नौजवान अपनी नई इनोवेशन से, नए रिसर्च से और अपने सामर्थ्य से दे रहा है।

आज इसीलिए हमें गर्व है कि दुनिया के विकसित देशों के अंदर भी वहाँ की कंपनीज में अगर कोई सीईओ है तो वह भारत का नौजवान है। आईटी से लेकर जितने भी प्रोफेशनल कोर्सेज हैं, उसके अंदर भारत का नौजवान नेतृत्व कर रहा है। दुनिया के अंदर भारत के नौजवानों की माँग है। यह माँग इसलिए है कि हमारी बौद्धिक क्षमता और ऊर्जा ज्यादा है।

दुनिया के अंदर एक समय था, जब लोग कहते थे कि जनसंख्या अभिशाप होगी। भारत भी इसको लेकर चिंतित था। माननीय प्रधानमंत्री जी के नए विजन से, उनकी नई सोच

से, नए विचार से आज दुनिया के अंदर कोई भी नया इनोवेशन होता है, नई रिसर्च होती है, तो उसमें भारत के नौजवान का सबसे बड़ा हाथ होता है।

इसीलिए हमने बहुत कम समय में नए रिसर्च, नए इनोवेशन और नए स्टार्ट-अप की शुरुआत की। जब दुनिया की चुनौतियों का समाधान करने का सवाल आया तो हमारे नौजवानों ने स्टार्ट-अप के माध्यम से उन चुनौतियों का समाधान किया।

आज हमें गर्व है कि हमारे देश के 70,000 से ज्यादा स्टार्ट-अप और 100 से ज्यादा यूनिकॉर्न देश और दुनिया की चुनौतियों का समाधान कर रहे हैं। देश की आम जनता को हर समस्या का समाधान, चाहे वह नए रिसर्च, स्किल्ड या सर्विस सेक्टर के अंदर हो, उन तमाम क्षेत्रों के अंदर जहाँ चुनौतियों का सॉल्यूशन नहीं होता था, उन चुनौतियों का सॉल्यूशन निकालने का काम भारत के नौजवानों ने किया है। यह हमारी शक्ति और सामर्थ्य है। इस 25 साल के दौर में दुनिया की वैश्विक नेतृत्व करने की हमारी क्षमता बढ़ रही है।

"हमारे देश में विशालता, विविधता, अलग-अलग संस्कृति है,
आज हमें गर्व है कि हमारी सामूहिक ताकत तो लोकतंत्र के कारण है।
लोकतंत्र की जननी भारत है।"

जी-20 का नेतृत्व भारत कर रहा है। इस समय दुनिया को बताने का हमारे पास एक अवसर है कि हमारी सोच और हमारी संस्कृति केवल हमारे देश तक सीमित नहीं है बल्कि हमारे देश और हमारी संस्कृति की सोच 'वसुधैव कुटुंबकम्' की है। जितनी शांति और स्थिरता होगी, विश्व उतना ही प्रगति करेगा। इसलिए जी-20 के अंदर हमारी सामर्थ्य और शक्ति को दिखाने का एक मौका आया है। लोकतंत्र की जननी के रूप में भारत सबसे प्राचीनतम लोकतंत्र है। इस लोकतंत्र के माध्यम से हमने आजादी के 75 वर्ष के अंदर सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन करके एक दिशा देने का काम किया है।

दुनिया के सबसे बड़े विशाल देश में विशालता, विविधता, अलग-अलग संस्कृति है, आज हमें गर्व है कि हमारी सामूहिक ताकत तो लोकतंत्र के कारण है। लोकतंत्र की जननी भारत है। हम विश्व को यह भी बताना चाहते हैं कि जितनी चुनौतियाँ हैं, उन चुनौतियों का नेतृत्व भी भारत ही कर रहा है, चाहे जलवायु परिवर्तन की चुनौती हो, चाहे क्लीन एनर्जी की चुनौती हो, वैश्विक स्तर पर जो भी चुनौतियाँ आईं, उन चुनौतियों का समाधान देने का काम भारत ने किया है।

कोरोना के वैश्विक संकट में एक समय था, जब हम विकसित देशों की ओर देख रहे थे कि वहाँ से कोई वैक्सिनेशन आएगी, रिसर्च आएगी या इनोवेशन आएगा। हमारे इन्हीं

नौजवानों ने भारत में रिसर्च की, इनोवेशन की और दुनिया को बताया कि सबसे सर्वश्रेष्ठ वैक्सीन भारत की है। इतने बड़े देश के अंदर वैक्सीनेशन करने की चुनौती थी, लेकिन हमारी सामूहिक संकल्प शक्ति ने यह भी करके बताया।

मैं दुनिया के कई देशों में गया, जिनकी आबादी एक करोड़ है, दो करोड़ है। जब वहाँ के राष्ट्र देशों के स्पीकर्स से मेरी चर्चा होती थी तो वे कहते थे कि हमारे यहाँ वैक्सीनेशन 60 प्रतिशत हुआ, 70 प्रतिशत हुआ, तब मैंने कहा कि हमारे यहाँ दो करोड़ वैक्सीनेशन एक दिन में हुआ तो वे चकित रह गए। यह हमारी ताकत है और इस ताकत की सामर्थ्य शक्ति आप जैसे नौजवानों ने पैदा की।

आपने मुझे बताया कि आपने एग्रीकल्चर सेक्टर में नए इनोवेशन किए हैं। जिस तरीके से हमने चिकित्सा, प्राकृतिक चिकित्सा, योग चिकित्सा के माध्यम से दुनिया को संदेश दिया कि आयुर्वेद और योग की पद्धति से व्यक्ति स्वस्थ हो सकता है और स्वस्थ तन और मन के लिए योग-विज्ञान पद्धति ही सबसे महत्त्वपूर्ण है। दुनिया में अधिकतम विकसित देशों के अंदर आप जाएँगे तो वहाँ योग टीचर की कमी है। योग विज्ञान से जोड़कर हमने इस आधुनिक युग में बताया कि स्वस्थ होने की सर्वश्रेष्ठ पद्धति योग है। इसी तरीके से आने वाले समय में हमारे एग्रीकल्चर सेक्टर में काम करने वाले नौजवान बढ़ रहे हैं, नई रिसर्च कर रहे हैं, नए इनोवेशन कर रहे हैं।

भारत कृषि प्रधान देश है, कोई समय था, जब हम अन्न बाहर से मँगाते थे, अब समय आया है कि जब हम अन्न एक्सपोर्ट कर रहे हैं। हम जिस मोटे अनाज की बात कर रहे हैं, पुनिया जी नागौर से बैठे हैं, कभी बाजरा, ज्वार, चना, मजबूरी में खाया जाता था, आज दुनिया में जितने बड़े लोग हैं, जो फाइव स्टार होटल में जाते हैं, जब उनको स्पीकर कॉन्फ्रेंस में बाजरे की रोटी मिली तो उन्होंने कहा—आज तो मजा आ गया, बाजरे की रोटी मिली।

संसद के अंदर हमने उस मोटे अनाज के सौ आइटम बनाकर भारत के 130 करोड़ लोगों के प्रतिनिधित्व करने वाले लोगों को बताया कि दुनिया के अंदर आने वाले समय में भारत मोटे अनाज का सबसे ज्यादा निर्यात करेगा। ऐसे कई विकल्पों की सोच है। ऐसे कई विचार हैं, कई इनोवेशन हैं, जिसे देने का काम आने वाले समय में वैश्विक स्तर पर भारत करेगा, इसीलिए हम कहते हैं कि भारत का नौजवान ही हमारी ताकत है। नौजवान, जो उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहा है, तकनीकी शिक्षा प्राप्त कर रहा है, एक समय आएगा, जब विश्वविद्यालय रिसर्च के सेंटर होंगे, इनोवेशन के सेंटर होंगे और दुनिया का रिसर्च और इनोवेशन हमारे विश्वविद्यालय के कैंपसों से होगा। विश्व की चुनौतियों का समाधान कैंपस में होगा, हमारा नौजवान करेगा। हमें इसी सामर्थ्य के साथ, इसी संकल्प के साथ आगे जाना है।

स्वामी विवेकानंद जी का जो विचार है, हमें उस विचार को लेकर जाना है। दुनिया में हर चुनौती का समाधान हमारे पास है। हम में आत्मविश्वास है, सोचने और संकल्प लेने की ताकत है। हम नए विचारों की ताकत रखते हैं। हम में अद्‌भुत क्षमता है। 'उठो, जागो और आने वाले समय में दुनिया पर राज करो', यही हमारा नारा है।

31

जन-जन की न्याय तक पहुँच : हमारा नैतिक दायित्व*

**"हमारे संविधान के अंदर स्वतंत्रता, न्याय और समानता के आदर्श हैं।
संविधान की प्रस्तावना में लिखा है, "हम भारत के लोग।"
यह संवैधानिक मूल्यों के प्रति सभी देशवासियों की एकजुटता को दर्शाता है।"**

गुजरात की पावन धरती पर आकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। गुजरात की भूमि हमारे देश की सांस्कृतिक-ऐतिहासिक-राजनीतिक धरोहर है। महात्मा गांधी और सरदार पटेल की यह पावन धरती हमारी शाश्वत प्रेरणा है।

आज इस प्रदेश में राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय के कैंपस में आकर बड़ा सुखद अनुभव हो रहा है। यह कैंपस लघु भारत की तरह है। मुझे बताया गया है कि यहाँ देश के कई राज्यों के स्टूडेंट्स पढ़ते हैं। यहाँ एल.एल.बी., एल.एल.एम. करते हैं, यहाँ से पी-एच.डी. करते हैं। यहाँ से अध्ययन कर हमारे युवा देश और दुनिया के कानूनी क्षेत्र में बदलाव ला रहे हैं।

आपको देश की इस प्रतिष्ठित यूनिवर्सिटी से कानून की शिक्षा प्राप्त करने का सुअवसर मिल रहा है। कानून के जानकारों और कानून के क्षेत्र से जुड़े लोगों ने देश के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। चाहे हम आजादी के आंदोलन में देखें या आजादी के आंदोलन के बाद देश के नवनिर्माण की बात करें; इन सबमें हमारे जिन महान नेताओं का योगदान रहा, उनमें से अधिकतर लॉ के विशेषज्ञ थे। यह भी एक कारण था कि आजादी के कठिन संघर्ष में हम सफल रहे।

देश की आजादी के बाद संविधान के निर्माण में, चाहे बाबा साहब अंबेडकर जी हों, डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी हों, सी. राजगोपालाचारी जी हों, इन विधि विशेषज्ञों की प्रमुख भूमिका

* गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी में संबोधन, गांधीनगर, गुजरात 15 फरवरी, 2023

रही। उन्होंने एक ऐसा संविधान बनाया, जो न सिर्फ दुनिया का सबसे विशाल संविधान है, बल्कि जीवंत और कार्यशील संविधान भी है। आज भी यह संविधान हमारे देश के अंदर सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन का सूत्रधार है, हमारा मार्गदर्शन कर रहा है।

आज हमें अपने संविधान पर गर्व है। देश की आजादी के बाद के 75 वर्षों की यात्रा में संविधान के माध्यम से हमने अपने लोकतंत्र को सशक्त किया है और देश में व्यापक सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन किए हैं।

हमारे संविधान के अंदर विधायिका, न्यायपालिका और कार्यपालिका, ये शासन के तीन अंग हैं। ये सभी संविधान द्वारा दिए गए अपने क्षेत्राधिकार के अंदर रहकर काम करते हैं। आजादी के बाद 75 वर्षों में शासन के तीनों अंगों की भूमिका से ही हमारा देश आगे बढ़ा है। देश का संपूर्ण विकास तभी संभव है, जब शासन के तीनों स्तंभ एक-दूसरे के प्रति सम्मान रखते हुए निष्ठापूर्वक अपनी-अपनी भूमिका निभाएँ। इससे हमारी प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी और लोगों के आस्था-विश्वास में भी वृद्धि होगी।

हमारे संविधान के अंदर स्वतंत्रता, न्याय और समानता के आदर्श हैं। संविधान की प्रस्तावना में लिखा है, "हम भारत के लोग।" यह संवैधानिक मूल्यों के प्रति सभी देशवासियों की एकजुटता को दर्शाता है।

हमारे मन में यह भावना होनी चाहिए कि हम भारत के लोग मिलकर देश की प्रगति में अपना योगदान देंगे। जैसा कि माननीय प्रधानमंत्री जी कहते हैं कि 140 करोड़ लोगों के देश को सामूहिक संकल्प और प्रतिबद्धता से आगे बढ़ाना है।

इस बदलते परिप्रेक्ष्य में आप कानून का अध्ययन कर रहे हैं, कानून का दायरा बहुत व्यापक है, यह हमारे जीवन के हर क्षेत्र से जुड़ा है। एक अच्छा कॅरियर ऑप्शन होने के साथ-साथ यह राष्ट्र सेवा का बेहतरीन माध्यम भी है।

कानून के जानकारों से मेरी अकसर चर्चा होती है। आज जो विद्यार्थी लॉ कर रहे हैं, उनमें टैलेंट बहुत हैं। आज के परिप्रेक्ष्य में लॉ फील्ड के जो भी विभिन्न पहलू हैं, जैसे कॉर्पोरेट, टैक्स, संविधान, अंतर्राष्ट्रीय विधि, ट्रेड, टॉर्ट सहित कई विषय हैं, जिनमें संभावनाएँ हैं। ऐसे में आप लोगों को अपना बेस्ट परफार्म करने के लिए बहुआयामी तरीके से आगे बढ़ना होगा।

आप कानून के अध्ययन के साथ-साथ राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विषयों के बारे में जागरूक रहें, आप अध्ययन करें कि किस प्रकार ये विषय हमारे देश और समाज को प्रभावित करते हैं और उनका क्या समाधान है। क्योंकि आज लॉ का दायरा बढ़ रहा है, तो हमें भी अपनी सोच एवं अपना दायरा बढ़ाना चाहिए।

हमारे नौजवान कानून के विषयों में विशेषज्ञता प्राप्त करें। उनमें पारंगत हों। इसके लिए आप सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट के सभी महत्त्वपूर्ण जजमेंट्स का अध्ययन करें। एक विद्यार्थी की तरह तो सोचें ही, इसी के साथ एक एडवोकेट और जज के नजरिए से भी विचार करें।

गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी के छात्रों को संबोधित करते हुए

संसद और लॉ के विद्यार्थियों में बड़ा गहरा संबंध है। क्योंकि भारत की संसद कानून बनाती है, और आप स्टूडेंट्स की जिम्मेदारी है कि आप उन कानूनों का सुविचारित रूप से अध्ययन करें। इतने वर्षों में संसद ने जो कानून बनाए हैं, उनसे आम लोगों को अधिकार मिले हैं, आम जनजीवन में व्यापक सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन आया है। संसद में बने कानूनों ने समाज के आखिरी व्यक्ति को भी एंपावर किया है। चाहे संसद हो या राज्य की विधान सभा हो, हमारा मानना है कि संसद द्वारा जो कानून बनाए जाते हैं, उन पर लंबी और सार्थक डिबेट्स होनी चाहिए।

चर्चा ऐसी हो कि विधेयक के सभी प्रावधानों पर विचार सामने आएँ। लेकिन यह चिंता का विषय है कि इसमें कहीं-न-कहीं कमी आई है। अब यहाँ आपकी भी जिम्मेदारी

है। मैं आपसे आग्रह करूँगा कि जब पब्लिक डोमेन में कोई कानून जाता है, तब आप स्वयं अपने स्तर पर उनका अध्ययन करें। आप उस पर अपना सुझाव दें। अपने क्षेत्र के जो जनप्रतिनिधि हैं, उनको कानून के बारे में अपना फीडबैक दें। लॉ स्टूडेंट होने के नाते यह आपका नैतिक दायित्व है।

राष्ट्र के विकास में कानून के विद्यार्थियों की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण है। संसद में एक्ट बनते समय या जब बाद में उनके अंदर रूल्स बनते हैं, जब वह पब्लिक डोमेन में आए, तब वहाँ आपके सुझाव, आपका फीडबैक अवश्य होना चाहिए। यह भी आपका नैतिक दायित्व है। आप जनता को सरल भाषा में समझाएँ कि इस कानून या इन रूल्स का उनके ऊपर क्या इंपैक्ट है।

हमारे संविधान में अब तक इतने संशोधन हुए हैं। इन संशोधनों को आप पढ़ें। इनके क्या इंपैक्ट हैं, आप गहनता से अध्ययन करें और अपना इनपुट भी दें। माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में आज केंद्र सरकार ने एक दूरदर्शी निर्णय लिया है कि हमारे जो भी कानून हैं, जो आजादी के पहले के बने हुए हैं, अंग्रेजों के बनाए हुए कानून हैं, हम उनका रिव्यू करें, उनकी उपयोगिता और प्रासंगिकता की समीक्षा करें और यदि आवश्यक हो तो उन्हें रिपील करें।

आज के समय में हमारे समाज और परिप्रेक्ष्य के हिसाब से कानून बनें। हमारे कानून हमारी अपनी विधायिका द्वारा बनाए जाएँ। इसलिए वर्तमान सरकार ने कई पुराने ब्रिटिश काल के कानूनों को रिपील किया है। कानून के जिम्मेदार विद्यार्थी होने के नाते आप यह देखें कि और कहाँ गुंजाइश है। पुराने और अप्रासंगिक हो चुके कानूनों का अध्ययन करें।

आईपीसी, सीआरपीसी सहित अन्य जो वर्तमान कानून हैं, उन्हे कैसे और बेहतर किया जा सकता है, इसके लिए आप सुझाव दें। जनप्रतिनिधियों और सरकार को इसकी जानकारी दें।

आप लॉ के स्टूडेंट्स होने के साथ कानून के सजग प्रहरी भी हैं। इसलिए आपकी जिम्मेदारी है कि लोकतंत्र में आपकी सक्रिय भागीदारी हो। शासन को अधिक पारदर्शी बनाने के लिए आप अपने सुझाव दें। हमारे विशाल और विविध लोकतंत्र को अधिक समृद्ध बनाने के लिए अपना फीडबैक दें।

सरकार द्वारा शासन को जवाबदेह और पारदर्शी बनाने के लिए कई कानून बनाए गए हैं। इसका एक उदाहरण आर.टी.आई. ऐक्ट है। आरटीआई का उपयोग कर देश का साधारण नागरिक शासन के कामकाज से जुड़ी जानकारी प्राप्त कर सकता है। इससे व्यवस्था पारदर्शी होती है। परंतु कई स्तरों पर ऐसे कानूनों का दुरुपयोग भी हो रहा है। इस प्रकार के कानूनों के नियोजित दुरुपयोग को किस तरह रोका जा सकता है, इस पर विचार करें, ताकि इन कानूनों के पीछे विधायिका का जो इन्टेंशन है, उसे पूरा किया जाए।

देश में जितने कानून बने हैं, उनका सही दिशा में उपयोग हो, और देश को आगे बढ़ाने के लिए हो। भारत को दुनिया में अपनी सशक्त संवैधानिक परंपरा, समृद्ध लोकतांत्रिक रीति और रूल ऑफ लॉ के लिए जाना जाता है। यह हमारी ताकत है।

आप जैसे नौजवान समर्पण भाव से देश को इस दिशा में और अधिक समृद्ध बनाने के लिए काम करें।

"भारतीय संविधान के नीति निदेशक तत्त्वों में अनुच्छेद 39(ए) में भी जरूरतमंद के लिए न्याय की संकल्पना की गई है। हम उसे साकार करें, यह हमारा दायित्व बनता है।"

हमारे संविधान ने हर एक नागरिक को न्याय का अधिकार दिया है। समाज के अंतिम व्यक्ति को भी न्याय मिले, इसके लिए आप पूर्ण समर्पण के साथ काम करें। जो गरीब, वंचित, पीड़ित और जरूरतमंद लोग हैं, आप उन्हें नि:शुल्क कानूनी सहायता दें।

अपनी पढ़ाई के दौरान आप अपने जीवन के कुछ वर्ष इस दिशा में समर्पित करें। अपनी पढ़ाई और प्रैक्टिस के साथ-साथ आप अपना सामाजिक दायित्व भी निभाएँ। आप आर्थिक-सामाजिक रूप से कमजोर, जरूरतमंद लोगों की नि:शुल्क पैरवी करें।

भारतीय संविधान के नीति निदेशक तत्त्वों में अनुच्छेद 39(A) में भी जरूरतमंद के लिए न्याय की संकल्पना की गई है। हम उसे साकार करें, यह हमारा दायित्व बनता है।

नि:शुल्क लीगल ऐड कैंप के माध्यम से हम समाज के कमजोर वर्गों को न्याय दिलवाने में उनकी सहायता करें। जब आप जैसे टैलेंटेड युवा कोर्ट में अपनी काबिलीयत और तर्कों के साथ जरूरतमंद लोगों को न्याय दिलाने के लिए आगे आएँगे, जनता की न्यायिक प्रक्रिया और संविधान में आस्था और बढ़ेगी।

हमारे अंदर यह सोच नहीं आनी चाहिए कि देश में सिर्फ बड़े वकील ही न्याय दिला सकते हैं। यहाँ पढ़ने वाला हर स्टूडेंट अपने आप में टैलेंटेड है। आप जरूरतमंद व्यक्ति को अधिक संवेदना के साथ न्याय दिला सकते हैं। आप न्याय के क्षेत्र में आदर्श मानक प्रस्तुत कर सकते हैं।

ऐतिहासिक रूप से कानूनविदों और कानून के छात्रों ने देश में अत्यंत सकारात्मक भूमिका निभाई है। मुझे विश्वास है कि हर एक व्यक्ति तक न्याय को सुलभ बनाने की दिशा में आप और अधिक निष्ठा से काम करेंगे।

32

राष्ट्रीय युवा संसद महोत्सव : लोकतंत्र को निकट से समझने का प्रयोग*

"दुनिया का सबसे प्राचीनतम लोकतंत्र भारत है। इसीलिए इसे मदर ऑफ डेमोक्रेसी कहते हैं। हमारे जीवन, कार्य प्रणाली, व्यवहार में वैदिक काल से लेकर, महाभारत काल से लेकर और बुद्ध के काल तक का इतिहास हम देखते हैं।"

देश भर के अलग-अलग राज्यों से एक कठिन प्रतियोगी परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद आप सब संसद के इस केंद्रीय कक्ष में पधारे हुए हैं। जिस कक्ष में आज आप बैठे हैं। यह एक ऐतिहासिक कक्ष है, भारत की आजादी हमने बहुत कठिनाई, चुनौतियों, संघर्षों, त्याग और बलिदान के बाद प्राप्त की, उसका साक्षी यह केंद्रीय कक्ष है। दुनिया का सबसे बड़ा संविधान इसी केंद्रीय कक्ष में एक लंबी चर्चा, संवाद के बाद बना, इसका साक्षी यह केंद्रीय कक्ष है।

उसके बाद इस 75 वर्ष की लोकतंत्र की यात्रा के अंदर आर्थिक, सामाजिक परिवर्तन का साक्षी यह केंद्रीय कक्ष है और यह आप सब के लिए भी गर्व का विषय है कि इस केंद्रीय कक्ष में युवा सांसद प्रतियोगी के रूप में आपने अपने विचार व्यक्त किए।

जिस तरह के विचार व्यक्त किए, जो आपका विजन है, जो आपकी वाक्पटुता है, जो आप में आत्मविश्वास है, आपके अंदर नया भारत बनाने का जो संकल्प और सपना है, यह मैंने आज आपके बीच में देखा।

सुश्री आस्था शर्मा, जो हिमाचल प्रदेश की पहाड़ियों से आई हैं, श्री नरेश क्षेत्री, जो उत्तर-पूर्व सिक्किम राज्य से आए हैं, सुश्री माहिरा खान, जो छत्तीसगढ़ जैसे दुर्गम इलाके से

---

* राष्ट्रीय युवा संसद महोत्सव कार्यक्रम में संबोधन, नई दिल्ली, 02 मार्च, 2023

आई हैं, सभी ने एक अच्छा विचार और विचारों के माध्यम से भारत में बदलाव, भारत की नई तस्वीर आप सभी के सामने रखी।

मैं विशेष रूप से युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने देश में दो लाख से ज्यादा नौजवानों की प्रतिभागिता के साथ इस युवा संसद प्रतियोगिता को कराया।

बदलते भारत की तस्वीर और इस तरीके से हमारी आजादी प्राप्त करने के लिए त्याग और बलिदान दिए गए, उसका इतिहास और उसके साथ विश्व में नए भारत की कल्पना को उन्होंने रखा, इसके लिए मैं उन सभी प्रतिभागियों को बहुत-बहुत साधुवाद देता हूँ।

सूचना और प्रसारण तथा युवा कार्यक्रम और खेल मंत्री, श्री अनुराग सिंह ठाकुर और गृह मंत्रालय तथा युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री निशिथ प्रामाणिक की उपस्थिति में संसद परिसर में राष्ट्रीय युवा संसद महोत्सव, 2023 के प्रतिभागियों के साथ

दुनिया का सबसे प्राचीनतम लोकतंत्र भारत है। इसीलिए इसे मदर ऑफ डेमोक्रेसी कहते हैं। हमारे जीवन, कार्य प्रणाली, व्यवहार में वैदिक काल से लेकर, महाभारत काल से लेकर और बुद्ध के काल तक का इतिहास हम देखते हैं।

इसी तरीके से उस समय भी सामूहिकता के साथ निर्णय लेना और उस निर्णय को बिना कानून का रूप दिए समाज द्वारा मानना हमारे लोकतंत्र की प्रक्रिया रही है। विशेष रूप से हर कालखंड में लोकतंत्र की अपनी विशेषता रही है। अत: लोकतंत्र की जननी भारत है और इसीलिए हमने जी-20 के अंदर जिस तरीके की हमारी संस्कृति-संस्कार हैं, उसी तरीके से हमने दुनिया में जी-20 का विषय 'एक पृथ्वी, एक परिवार और एक देश' रखा है।

हमारे तथा विश्व के सर्वोच्च नेता माननीय नरेंद्र मोदी जी ने कहा है कि जब तक हम 'वसुधैव कुटुंबकम्' यानी सारे विश्व को पूरा परिवार नहीं मानेंगे, तब तक विश्व प्रगति नहीं कर सकता है।

ये विचार ही आने वाले समय में दुनिया को एक नई दिशा देने का काम करेंगे। इसीलिए उन्हीं विचारों के मंथन के लिए आप यहाँ पर आए हैं। आपने आजादी के पहले के इतिहास की चर्चा की, जो अलग-अलग क्षेत्रों से संबंधित थी। आजादी के बाद भारत और उसके बाद नए भारत का निर्माण हुआ।

राष्ट्रीय युवा संसद महोत्सव, 2023 के प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए

हम काफी परिवर्तन देख रहे हैं। यह परिवर्तन हम नौजवानों की आँखों में देख रहे हैं। उनके आत्मविश्वास, उनकी बौद्धिक क्षमता, उनकी इनोवेशन की क्षमता, बदलाव के चिंतन में हम यह देख रहे हैं। यह चिंतन चर्चा और संवाद से आता है।

जब दूरदराज गाँव का व्यक्ति अपने विचारों को व्यक्त करता है, तो उसके मन में यह भाव रहता है कि मेरा गाँव, मेरा शहर, मेरा देश ऐसा होना चाहिए।

सामाजिक बदलाव लाने के लिए उसके मन की मंशा चर्चा और संवाद में झलकती है, जो मैंने यहाँ के वक्ताओं में देखी है। इसीलिए चर्चा, संवाद, विचारों का आदान-प्रदान, सुविचार, सकारात्मक विचार व सकारात्मक आलोचना ही हमारे देश के लोकतंत्र की ताकत है।

हम युवा संसद का आयोजन इस विचार से करते हैं कि युवा भारत में लोकतंत्र की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बनें और संविधान को जानें।

हमने 75 वर्षों की लोकतंत्र की यात्रा में केवल मतदाता मानकर अपना कर्तव्य निभाया, तो हम देश में परिवर्तन नहीं ला सकते। इस लोकतंत्र में हमारी सक्रिय भागीदारी, इस देश के बदलाव में हमारी सक्रिय भागीदारी और दुनिया के बदलाव से ज्यादा तेज बदलाव भारत में जो हुआ, उसमें हमारे देश के नौजवानों का योगदान है।

"नया, विकसित भारत बनाने में हमारी भूमिका हो
और देश के अन्य नौजवान आपके इन सुविचारों, विचारों से प्रेरणा लेकर
नए भारत के निर्माण में जुटें।"

अभी माननीय अनुराग जी बता रहे थे कि एक समय था, जब भारत में बेटियों को पढ़ाने के लिए लोग आंदोलन किया करते थे। बेटी की शिक्षा के लिए सामाजिक आंदोलन हुआ करते थे। आज कितना परिवर्तन हो गया है ? देश की कोई भी प्रतियोगी परीक्षा हो, कोई भी क्षेत्र हो, हर क्षेत्र में हमारी बेटियाँ अग्रिम पंक्ति में हैं। चाहे धरती हो, चाहे अंतरिक्ष हो, चाहे विज्ञान हो, चाहे तकनीक हो, चाहे सामाजिक सेवा हो, चाहे राजनीति का क्षेत्र हो, चाहे डॉक्टर, इंजीनियर या चार्टर्ड अकाउंटेंट हों, भारतीय प्रशासनिक सेवा हो या राज्य प्रशासनिक सेवा हो, हर जगह हमारी बेटियाँ आगे बढ़ रही हैं और नए तथा बदलते भारत की तस्वीर हम देख रहे हैं।

मैं आपसे यही कहना चाहता हूँ कि इस भारत को बदलने का सबसे बड़ा योगदान हमारा है। आजादी के आंदोलन में भी 18 से 22 साल के नौजवानों का योगदान था और 75 वर्षों के लोकतंत्र की यात्रा में भी जो सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक बदलाव आए, उसमें भी युवाओं की भूमिका रही। चाहे आर्थिक क्षेत्र में स्टार्ट-अप का क्षेत्र हो, सामाजिक क्षेत्र में सामाजिक सेवा का क्षेत्र हो, हर जगह युवाओं की भूमिका अहम रही है।

मैं अभी कुछ दिन पहले सिक्किम में था। उस पहाड़ी राज्य में मैंने देखा कि वहाँ के नौजवानों का क्या व्यू है ? वे अपने गाँव में शिक्षा और बदलाव चाहते थे। वे कई किलोमीटर दूर बच्चों को पढ़ाने आते थे। वे उस गाँव में सामाजिक बदलाव की एक ताकत और ऊर्जा के साथ काम करना चाहते थे। चाहे दुर्गम पहाड़ियाँ हों, चाहे जमीन हो, चाहे रेगिस्तानी इलाका हो, चाहे आदिवासी इलाका हो, हर जगह, हर इलाके के अंदर अब भारत का नौजवान नए इनोवेशन कर रहा है।

चाहे आर्थिक क्षेत्र हो, चाहे सामाजिक क्षेत्र हो, चाहे राजनीतिक बदलाव हो, उस युवा की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। इतना ही नहीं, दुनिया के विकसित देशों में भी वहाँ के आर्थिक-

सामाजिक बदलाव में भारत के नौजवानों की भूमिका अहम है। जब आप जानेंगे कि कितने लोगों ने अपनी जवानी कुर्बान करके इस देश को आजादी दिलाई, तो आप महसूस करेंगे कि इतनी शक्ति और सामर्थ्य आप में है। इस सामर्थ्य-शक्ति की ऊर्जा को आप यहाँ से लेकर जाएँगे।

अब हमारा योगदान क्या होना चाहिए, इस विचार के साथ आपको जाना है कि मेरे गाँव के अंदर, शहर के अंदर बदलाव की ताकत मुझे खड़ी करनी है।

जो ऊर्जा, जो सामर्थ्य हमारे अंदर है, जो सोचने, नए चिंतन करने की ताकत हमारे अंदर है, उसका उपयोग मुझे इसी उम्र में करना है, मुझे बदलाव अभी लाना है, भारत के प्रधानमंत्री जी का सपना वर्ष 2047 तक का है, लेकिन इस सपने को मुझे जल्दी पूरा करना है, आज इस संकल्प के साथ आप इस केंद्रीय कक्ष से जाएँगे।

हर क्षेत्र के अंदर, चाहे सामाजिक सेवा का क्षेत्र हो, गाँव में बदलाव लाने का क्षेत्र हो, आर्थिक परिवर्तन का नया युग हो, चाहे राजनीतिक क्षेत्र हो, हमारी लोकतांत्रिक संस्थाओं में सक्रिय भागीदारी हो, लोकतांत्रिक संस्थाओं के माध्यम से सामाजिक-आर्थिक बदलाव में हमारी भूमिका हो, यह सब हमें तय करना है।

आप देख रहे होंगे कि हमारे अनुराग जी यहाँ उपस्थित हैं, ये चार बार से मेंबर ऑफ पार्लियामेंट हैं। जब इस नौजवान जैसी सोच रखने वाले लोग आगे आएँगे और इस विचार से आएँगे कि मुझे मेरे भारत को बनाना है, मेरा केवल अधिकार नहीं, मेरा दायित्व है और यह दायित्व मुझे निभाना है। मेरा भी कोई नैतिक कर्तव्य है, इस मनोभाव, इन संस्कारों के साथ आपको यहाँ से जाना है।

नया, विकसित भारत बनाने में हमारी भूमिका हो और देश के अन्य नौजवान आपके इन सुविचारों, विचारों से प्रेरणा लेकर नए भारत के निर्माण में जुटें। जब भारत के सभी नौजवान इस विचार से चलेंगे, इस मंथन से चलेंगे, इस चिंतन से चलेंगे तो निश्चित ही बदलाव आएगा और बदलाव हमें ही करना है, यही संकल्प लेकर यहाँ से जाएँ।

33

विद्यार्थियों में समझ संसद की*

"समर्पण भाव के साथ हम चिंतन और मनन करके कोई कार्य करते हैं तो वह कार्य फलीभूत होता है और बेहतर तरीके से होता है।"

'नो योर पार्लियामेंट—समझ संसद की' प्रतियोगिता में अच्छा प्रदर्शन कर संसद भवन के विजिट के लिए आए सभी युवा साथियों और प्यारे विद्यार्थियों का हार्दिक स्वागत करता हूँ।

आप विद्यार्थियों को दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की संस्था, भारत की संसद को देखने का, उसकी कार्यप्रणाली को करीब से जानने-समझने का मौका मिले। आपके अंदर संसदीय परंपराओं को लेकर ज्ञान और समझ विकसित हो, राष्ट्र-निर्माण और उसकी प्रक्रिया में आपका अधिक-से-अधिक योगदान हो, यही इस कार्यक्रम का उद्देश्य है।

आप सब प्रतिभा के धनी हैं, होनहार हैं, ऊर्जावान हैं। आप लोगों ने यहाँ आने के लिए एक परीक्षा पास की है, और संसद के लिए पहले से एक अच्छी खासी समझ लेकर आप आए हो। इसके लिए मैं आपको बधाई देता हूँ। हमारी संसद को लोकतंत्र का मंदिर कहा जाता है। यही वह जगह है, जहाँ से देश की विधायिका देश के लिए कानून निर्माण करती है। इसी संसद भवन में गहन विचार-विमर्श के बाद भारत का महान संविधान तैयार हुआ था।

बाबा साहब अंबेडकर जी, डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी, सरदार वल्लभ भाई पटेल जी, बाबू जगजीवन राम जी, हंसा मेहता जी जैसे अनेक महापुरुषों ने इस भवन में करीब 3 वर्ष के चिंतन और विमर्श के बाद भारत का संविधान तैयार किया।

इससे हमें यह सीख मिलती है कि समर्पण भाव के साथ हम चिंतन और मनन करके कोई कार्य करते हैं तो वह कार्य फलीभूत होता है और बेहतर तरीके से होता है।

---

* 'समझ संसद की' कार्यक्रम के अंतर्गत संसद भवन के दौरे पर आए विद्यार्थियों के साथ संवाद, नई दिल्ली, 1 मई, 2023

'समझ संसद की' कार्यक्रम के अंतर्गत संसद भवन के दौरे पर आए विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए

आज से दो वर्ष बाद हमारे संविधान को तैयार हुए 75 वर्ष हो जाएँगे। लेकिन आप यकीन मानिए कि पूरी दुनिया में आज भी भारत के संविधान से बेहतर कोई संविधान तैयार नहीं हुआ है।

हमारे संविधान निर्माण और महापुरुषों से हम सीख सकते हैं कि आपका जो लक्ष्य है, आपके अंदर उसे पाने का जुनून होना चाहिए। हमारे संविधान निर्माताओं ने पहले दुनिया के अलग-अलग संविधानों का अध्ययन किया था, उसके बाद भारत का संविधान तैयार किया। उन्होंने संविधान के बहुत से भाग अलग-अलग संविधानों से लिए और सबका समायोजन कर एक सर्वोत्कृष्ट संविधान बनाया।

इससे हमें यह शिक्षा मिलती है कि हम हमेशा सीखने के लिए तैयार रहें। हम जितना सीखेंगे, जितना पढ़ेंगे, जितना पूरी दुनिया को जानेंगे, उतना अच्छा हम कर पाएँगे।

हमें यह जानना चाहिए कि दुनिया में क्या चल रहा है। क्या नया परिवर्तन दुनिया में हो रहा है, किस तरह नए आविष्कार हो रहे हैं, क्या अपडेट हो रहा है। यह सब जानकारी जानने की इच्छा हमारे मन में होनी चाहिए।

इसके लिए मैं आपको सुझाव दूँगा कि आप दैनिक समाचार-पत्र जरूर पढ़ें। आप हर दिन अखबार पढ़ें। अखबार में इतनी नॉलेज आती है, दुनिया की, कम-से-कम हमें वो मालूम होनी चाहिए और आज तो इंटरनेट तथा मोबाइल का जमाना है। इंटरनेट की सहायता से हम नई-नई चीजें सीखें और अपने आप को हमेशा बेहतर बनाएँ।

अभी जैसे एक नई चीज आई है, चैट जीपीटी आपमें से किस स्टूडेंट को इसके बारे में पता है। यह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की एक तकनीक है। जिसे आप इस तरह समझो कि दुनिया भर में वैज्ञानिक अभी इस पर काम कर रहे हैं कि कैसे अधिक-से-अधिक काम बिना इंसान के किए हो जाएँ। पहले इसके लिए मशीनें बनाई जाती थीं, अब सॉफ्टवेयर बनाए जाते हैं। चैट जीपीटी ऐसा ही एक तरीका है, जिसमें बस हमें इनपुट डालना होता है, जो हमें चाहिए, वह लिखकर दे देता है।

किसी भी प्रतियोगिता के लिए कहा जाता है कि व्यक्ति या तो उसमें जीतता है, या सीखता है, लेकिन हारता नहीं है। पढ़ाई हो या खेल, हमें हर क्षेत्र में यह सोच रखनी है कि पूरी क्षमता से हम उसमें भागीदारी करें।

"देश के प्रति हम अपने कर्तव्यों, अपनी जिम्मेदारी को निभाएँ तो हमें अपने अधिकार अपने आप मिल जाएँगे। इस भाव के साथ हम आगे बढ़ें।"

हमारा संविधान बहुत व्यापक है। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है, जिसका संविधान में उल्लेख न हो। सभी के लिए समानता और सभी के प्रति संवेदनशीलता हमारे संविधान की पहचान है। यह हर नागरिक, गरीब हो या दलित, पिछड़ा हो या वंचित, आदिवासी, महिला, सभी के मूलभूत अधिकारों की रक्षा करता है और उनके हितों को सुरक्षित रखता है।

हमारे संविधान में हमारे अधिकार भी हैं तो हमारे लिए कुछ कर्तव्य भी हैं। मैं चाहूँगा कि आप अपने अधिकारों को भी जानें और देश के लिए आपके क्या कर्तव्य हैं, यह भी समझें। देश के प्रति हम अपने कर्तव्यों, अपनी जिम्मेदारी को निभाएँ तो हमें अपने अधिकार अपने आप मिल जाएँगे। इस भाव के साथ हम आगे बढ़ें।

आप बच्चे ही तो देश का भविष्य हैं। तमाम प्रतिभाओं से गुणी हमारे बच्चों को जरूरत है अवसर प्रदान करने की। मेरा मानना है कि आपको जितने अवसर मिलेंगे, उतना ही निखार आपकी प्रतिभा में आएगा, और आप भविष्य के लिए उतने ही तैयार होंगे। आप जितनी और जिस गति से आगे बढ़ोगे, हमारा देश भारत भी उतनी ही तेजी से विकास पथ पर आगे बढ़ता रहेगा। इन सभी चीजों के लिए आवश्यक है कि आप देश और व्यवस्था से जुड़ी मूलभूत जानकारियों को जानें व समझें। 'समझ संसद की' कार्यक्रम उसी दिशा में एक कदम है।

आप देश में अभी वह पीढ़ी हो, जिस पर हम मान सकते हैं कि अभी कोई जिम्मेदारी नहीं है। आप अभी स्कूल में पढ़ते हो, इसलिए अभी आपसे ज्यादा उम्मीदें नहीं की जातीं। लेकिन आज से कुछ साल बाद आप कॉलेज-यूनिवर्सिटी में एडमिशन लोगे। आप कॉलेज-यूनिवर्सिटी में अपनी पढ़ाई करोगे, तब देश की आम जनता को भी आपसे उम्मीदें होंगी।

'समझ संसद की' कार्यक्रम के अंतर्गत संसद भवन के दौरे पर आए विद्यार्थियों के साथ संवाद करते हुए

आपसे यह उम्मीद होगी कि आप देश की सभी चुनौतियों का हल निकालोगे, उन चुनौतियों को पार करने का रास्ता बताओगे, क्योंकि जो जितना सामर्थ्यवान होता है, उस पर उतनी ही जिम्मेदारी आती है। आपको इस बात को समझना होगा और इस दिशा में आपको काम करना चाहिए।

हमारे देश में स्कूल, कॉलेज और यूनिवर्सिटी के लेवल पर 'युवा संसद' का आयोजन होता है। आप इनमें हिस्सा लें और अपने अंदर लीडरशिप के गुणों को और विकसित करें। स्कूल और कॉलेज स्तर पर कई संगठन हैं, जैसे एनएसएस, एनसीसी, नेहरू युवा संगठन। आप इन संगठनों, इन कार्यक्रमों से जुड़ें। आप पढ़ाई तो करें ही, लेकिन साथ में जो एक्स्ट्रा गतिविधियाँ हमारे स्कूलों में होती हैं, उनमें भी भागीदारी करें। वाद-विवाद, भाषण, लेखन जैसी प्रतियोगिताओं में भी भागीदारी करें।

21वीं सदी में आत्मनिर्भर भारत के लिए आत्मविश्वासी युवा बहुत जरूरी है। यह आत्मविश्वास, फिटनेस से बढ़ता है, एजुकेशन से बढ़ता है, स्किल और उचित अवसर उपलब्ध कराने से बढ़ता है। इसके लिए जो भी आवश्यक है, हर स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं। मैं मानता हूँ कि वह जो युवाशक्ति हमारे सामने है, वही तो हमारा भावी भारत है।

आधुनिक दौर में टेक्नोलॉजी हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बन गई है। बच्चे हों या युवा, सभी टेक्नोलॉजी से जुड़े हुए हैं। इसका शिक्षा के क्षेत्र पर काफी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। आज 'स्मार्ट क्लासरूम्स' जैसे कई लर्निंग एप्लीकेशंस उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त ऑनलाइन पाठ्य-सामग्रियों की भरमार है, जो शिक्षा को और अधिक मनोरंजक व सहज बना रही है। इसी का तो परिणाम है कि आज ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चे भी ऑनलाइन लाइब्रेरी के माध्यम से देश-दुनिया में उपलब्ध किताबों से अपना ज्ञान बढ़ा रहे हैं।

'समझ संसद की' कार्यक्रम के आयोजन का मूल उद्देश्य है—हमारे होनहार छात्र-छात्राओं और युवाओं को भारत के संविधान में जो मूल्य हैं, जो सिद्धांत हैं, उनकी जानकारी देना और विधायिका के बारे में समझाना।

मुझे पूरा विश्वास है कि यहाँ इस कार्यक्रम के माध्यम से आपको नई-नई जानकारियाँ मिलेंगी, एक अलग तरह का अनुभव प्राप्त होगा। आपके मन में जो सवाल उठ रहे होंगे, उनके बेहतर समाधान निकलेंगे।

अभी पिछले साल भारत ने अपनी स्वतंत्रता के ऐतिहासिक 75 वर्ष पूर्ण किए हैं। आजादी के बाद के इन 75 वर्षों में भारत ने अनेक उपलब्धियाँ हासिल की हैं, कई पड़ाव पार किए हैं। लेकिन 75 वर्ष के बाद अब हमारा देश एक नए उत्साह और उमंग के साथ आगे बढ़ रहा है। अगले 25 वर्ष के लिए भारत अमृतकाल की यात्रा कर रहा है। यह वह समय है, जब भारत के पास दुनिया की सबसे अधिक युवा जनसंख्या है।

आप लोगों ने कई बार पढ़ा होगा कि ज्यादा जनसंख्या विकास को रोकती है। लेकिन भारत के मामले में इसका उलट होने वाला है। क्योंकि देश की 65 प्रतिशत आबादी 35 वर्ष से कम आयु की है। आने वाले कल के भारत की तस्वीर कैसी होगी, हमारे नौजवान, आप विद्यार्थी निर्धारित करेंगे। 25 वर्ष बाद भारत जब अपनी स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे करेगा, तब हमारा देश दुनिया में सबसे विकसित राष्ट्र होना चाहिए, इस संकल्प के साथ हम आगे बढ़ रहे हैं।

आप प्यारे विद्यार्थियों से मिलकर, आपसे बात कर मुझे लग रहा है कि आप अपनी प्रगति करोगे और साथ में देश के विकास में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाओगे। मैं इसके लिए आपको बहुत-बहुत शुभकामनाएँ देता हूँ।

आगे बढ़ते रहो, अपने घर-परिवार, देश और समाज का नाम रोशन करते रहो।

34

आत्मविश्वासी युवा : आत्मनिर्भर भारत की रीढ़*

"यह राष्ट्रीय युवा सम्मेलन एक ऐसे समय में हो रहा है, जब नए भारत का निर्माण हो रहा है और आत्मनिर्भर भारत की ओर हम आगे बढ़ रहे हैं।"

जैन अंतर्राष्ट्रीय व्यापार संगठन (जी.आई.टी.ओ.) द्वारा जोधपुर नगर में आयोजित राष्ट्रीय युवा सम्मेलन में आकर आज मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है। मैं अपने सामने हजारों ऊर्जावान युवाओं को देख रहा हूँ। आपको देखकर मैं अपने आपको भी बहुत ऊर्जावान महसूस कर रहा हूँ।

जोधपुर की यह धरती अपनी परंपरा और संस्कृति, वीरता और स्वाभिमान के लिए तो प्रसिद्ध है ही, इसी के साथ यह अपने हस्तशिल्प और पारंपरिक कारीगरी के लिए भी जानी जाती है।

हैंडीक्राफ्ट के विकास में, स्थानीय स्तर पर रोजगार देने में एवं जोधपुर को क्षेत्रीय और राष्ट्रीय सप्लाई चेन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बनाने में आपकी क्या भूमिका हो सकती है, इस पर आप अवश्य चर्चा-संवाद करें, ताकि इस कॉन्क्लेव का अधिकतम लाभ इस नगर के व्यक्तियों को मिले।

यह राष्ट्रीय युवा सम्मेलन एक ऐसे समय में हो रहा है, जब नए भारत का निर्माण हो रहा है और आत्मनिर्भर भारत की ओर हम आगे बढ़ रहे हैं।

बदलते भारत के अंदर हम सब देशवासी सामूहिक रूप से किस तरीके से अपना कंट्रिब्यूशन दे सकते हैं, इस कॉन्क्लेव में हमें यह विचार करना है।

आज के परिप्रेक्ष्य में भगवान महावीर के जीवन के आदर्श, उनकी शिक्षाएँ आज हजारों वर्षों के बाद भी हमारे लिए प्रासंगिक हैं।

---

* राष्ट्रीय युवा सम्मेलन, 2022 में संबोधन, जोधपुर, राजस्थान, 16 सितंबर, 2023

अहिंसा, शांति, क्षमा और परमार्थ के मार्ग पर चलते हुए भगवान महावीर के पाँच सिद्धांतों अस्तेय, अपरिग्रह, अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य को अपनाकर हम न केवल व्यक्तित्व-निर्माण एवं चरित्र-निर्माण करेंगे, बल्कि देश के लिए बेहतर कंट्रिब्यूशन दे पाएँगे।

जैन समुदाय ने सदा ही दुनिया में शांति के साथ तरक्की का संदेश दिया है। जैन समाज का जहाँ देश की आर्थिक प्रगति में महत्त्वपूर्ण योगदान है, वहीं जैन समाज महावीर स्वामी के सिद्धांतों के आधार पर देश और विश्व के अंदर उनके संदेश एवं उनके विचारों का प्रसार कर इस संसार को अध्यात्म, ज्ञान और मानवता से परिपूर्ण बना रहा है।

अपनी महान संस्कृति में सात्त्विक जीवन जीते हुए मानवीय सेवा मूल्यों और जीव सेवा के प्रति आपका जो विचार है, वह अनुकरणीय है। वह विचार आज नौजवानों में परिलक्षित होना चाहिए।

जैन धर्म का दर्शन न केवल व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन को सँवारता है, बल्कि सामाजिक तौर पर भी हमें मजबूत बनाता है। समाज में आपसी भाईचारा, सद्भाव, अहिंसा एवं सत्य का महत्त्व बताता है। इन्हीं मूल्यों एवं आदर्शों के आधार पर समाज के युवा देश और विदेश में अपनी पहचान बना रहे हैं। बड़े-बड़े पदों पर, बिजनेस में, कंपनियों में समाज के युवा अपनी छाप छोड़ रहे हैं।

आज उद्योग, समाजसेवा, शिक्षा, अनुसंधान जैसे कई क्षेत्र हैं, जहाँ हमारे युवा अपना कॅरियर तो बना ही सकते हैं, साथ में देश और समाज के लिए भी कुछ बेहतर कर सकते हैं। समाज को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दे सकते हैं।

हम आर्थिक जगत के द्वारा किए गए नए इनोवेशन, नई सोच एवं नए विचार के साथ आगे बढ़ रहे हैं, उसी के साथ हमारी सोच अपरिग्रह की होनी चाहिए। यह भावना होनी चाहिए कि हमारा कुछ नहीं है, सब समाज का है।

जीवन जीने के लिए जितना जरूरी है, बस उतना ही हमारा है, बाकी सब दूसरों की सेवा में समर्पित हैं। त्याग एवं नि:स्वार्थ सेवा की यह सीख जैन दर्शन ने दुनिया को दी है। सेवा और समर्पण के इसी पुनीत सिद्धांत पर चलकर अभावग्रस्त और गरीब लोगों की मदद के लिए जी.आई.टी.ओ. अपनी कार्य योजना बनाता है।

आपने महिलाओं के लिए काम किया है, शिक्षा के क्षेत्र में काम किया है। आपने एंटरप्रिन्योरशिप के लिए काम किया है, बदलते परिवेश में नए इनोवेशन और रिसर्च के क्षेत्र में आपने योगदान दिया है। आपका यह सम्मेलन हमारे लोकतंत्र की प्राचीन पद्धति से मेल खाता है कि हम जब कोई भी कार्य करते हैं, तो उसके पहले हम सबसे चर्चा करते हैं, संवाद करते हैं।

राष्ट्रीय युवा सम्मेलन, 2022 को संबोधित करते हुए

सबके विचारों को समाहित करते हुए सामूहिक निर्णय लेना ही हमारे लोकतंत्र की पद्धति रही है और इसीलिए भारत को दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र माना जाता है, क्योंकि हमारे सामान्य कार्य, विचार और जीवन के अंदर भी लोकतंत्र है।

हमारे घर-परिवार में भी जो महत्त्वपूर्ण फैसले होते हैं, सामूहिक होते हैं, सबकी चर्चा से होते हैं। हमारे गाँव में, समाज में जो निर्णय होते हैं, सबकी राय से होते हैं। देश के लिए जब कानून का निर्माण होता है, तब भी जनप्रतिनिधियों की राय से, चर्चा-संवाद से अच्छे निर्णय हो पाते हैं।

आप सब इस सम्मेलन में लोकतांत्रिक व्यवस्था की तरह दो दिन तक आपस में विमर्श करेंगे, विचार करेंगे। एंटरप्रिन्योरशिप, व्यापार, सामाजिक सेवाओं, शिक्षा से लेकर अनेक क्षेत्र के आप युवा यहाँ उपस्थित हैं। आप सबके अलग-अलग आइडिया हैं, अलग-अलग विचार हैं, सोचने का अलग-अलग नजरिया है।

इन विचारों के आधार पर किस तरह से समाज के वंचित लोगों की सेवा की जा सकती है, किस तरह से राष्ट्र-निर्माण में अधिक भूमिका निभाई जा सकती है, इसके लिए आप आपस में चर्चा और विचार-विमर्श करेंगे। इस विचार-मंथन से जो अमृत निकलेगा, उस अमृत से देश-प्रदेश और समाज का सामाजिक-आर्थिक कल्याण होगा।

आप इस कॉन्क्लेव में अच्छे विचारों, बेस्ट प्रैक्टिसेज और नवाचारों का आदान-प्रदान करें। संसद और विधान सभाओं में भी हम ऐसा करते हैं। देश के विधान मंडलों में भी चर्चा-संवाद के आधार पर हम आपस में एक-दूसरे से सीखते हैं, एक-दूसरे की बेस्ट प्रैक्टिसेज को अपनाते हैं। यही हमारी कार्य-संस्कृति रही है।

स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर आज तक राष्ट्र-निर्माण में हमारे युवाओं ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हमारे युवाओं ने स्टार्ट-अप और यूनिकॉर्न के माध्यम से देश को प्रौद्योगिकी एवं आर्थिक क्षेत्र में व्यापक रूप से समृद्ध बनाने के लिए मिलकर काम किया है। भारत के युवाओं के सामर्थ्य को आज दुनिया भी समझती है। हमारे युवाओं की बौद्धिक क्षमता दुनिया में सर्वश्रेष्ठ है। आज बड़ी-बड़ी कंपनियों का नेतृत्व भारतीय सीईओ कर रहे हैं।

आज हमारा देश दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है। आज भारत में दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्ट-अप इको सिस्टम डेवलप हुआ है। आज 73 हजार से ज्यादा स्टार्ट-अप और 100 से ज्यादा यूनिकॉर्न के साथ भारत दुनिया की स्टार्ट-अप राजधानी बनने की ओर आगे बढ़ रहा है। ये स्टार्ट-अप नई सोच, नवाचारों और सुधारों पर आधारित हैं और आप युवा ही इनके रचनाकार हैं। इसीलिए आज आपका दायित्व है कि आप अपनी बौद्धिक क्षमता का उपयोग लोकतांत्रिक संस्थाओं को मजबूत बनाने के लिए भी करें। आपकी यह भी जिम्मेदारी है कि आप सरकार के हर निर्णय और नीतियों में भागीदारी करें।

जब किसी विधेयक से पहले कोई ड्राफ्ट लाया जाता है, तो हम उस पर अपने सुझाव दें, विधेयक और कानूनों का विश्लेषण करें। बिल कैसे सदन में पास होते हैं, क्या प्रोसीजर है, मैं चाहूँगा कि आप इस देश के भविष्य निर्माता युवा इस प्रक्रिया को जरूर समझें।

दो साल पहले देश की सरकार शिक्षा नीति लेकर आई थी। उस नीति को लाने से पहले उसके ड्राफ्ट पर देश भर के विद्यार्थियों, शोधार्थियों, युवाओं और शिक्षा-शास्त्रियों ने अपने सुझाव भेजे थे, तब जाकर देश को एजुकेशन पर नई पॉलिसी मिली।

राजनीति हो या समाज, युवाओं की भागीदारी से ही बदलाव संभव है। सिर्फ स्टार्ट-अप ही नहीं, मैं समझता हूँ कि जीवन के अन्य क्षेत्रों में आपको नवाचार करना है। मानव अधिकार का क्षेत्र हो, समाज सेवा का, राजनीति या फिर आपदा में आमजन की सहायता का विषय हो, हर क्षेत्र में दुनिया को सही दिशा देने की जिम्मेदारी आप युवाओं पर है।

कोरोना काल में हमने यह देखा है कि युवाओं ने अपने इनोवेशन, अपने आइडियाज से मानवता की बड़ी सेवा की थी। आज दुनिया हमें उम्मीद की नजरों से देख रही है।

विश्व ने इस बात को माना है कि आज भारत के पास दो असीम शक्तियाँ हैं—एक डेमोग्राफी और दूसरी डेमोक्रेसी। जिस देश में 65 प्रतिशत से ज्यादा संख्या युवाओं की हो, उस देश की तरक्की के रास्ते भी युवाओं को ही तय करने पड़ेंगे। सरकारें सिर्फ नीतियाँ बना सकती हैं, योजनाएँ ला सकती हैं, लेकिन उन्हें इंप्लीमेंट करने, देश के विकास को गति देने की महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी आप पर ही है।

हमारे देश ने इस वर्ष अपनी आजादी के 75 वर्ष पूरे किए हैं। इसी के साथ अब हमें अगले 25 वर्षों के विजन को लेकर देश के लिए जुट जाना है। आज से 25 वर्षों बाद भारत जब अपनी आजादी की 100वीं वर्षगाँठ मनाएगा, तब भारत के विकास और प्रगति में आप जो नौजवान यहाँ बैठे हो, आपकी प्रमुख भूमिका होनी चाहिए।

देश के लिए अगले 25 वर्ष बहुत निर्णायक साबित होंगे। आपके जीवन में भी आने वाले 25 वर्ष बहुत निर्धारक सिद्ध होने वाले हैं। मैं आशा करता हूँ कि आप अपनी तरक्की को देश की प्रगति से जोड़कर आगे बढ़ेंगे।

आजादी के बाद इन 75 वर्षों में हमने अधिकारों की बहुत बात की है। अधिकारों की चाह की है। मगर अब समय है कि हम कर्तव्य के भाव से देश को देने का मानस बनाए। देश के लिए समर्पण का भाव बनाए। हर नागरिक देश के लिए अपना कर्तव्य समझे। व्यक्ति-व्यक्ति को पता हो कि उसे सिर्फ अपना जीवन नहीं जीना है बल्कि अपने देश और समाज के लिए भी काम करना है।

आप युवाओं को मेरा यही मैसेज है कि आप किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ें, तो वहाँ अपनी जिम्मेदारी के साथ समाज और देश के लिए अपना योगदान जरूर दें। राष्ट्रहित आपका प्रथम कर्तव्य होना चाहिए।

हर व्यक्ति का दायित्व है कि वह स्वयं सफल हो, तो वह आगे बदलाव की प्रक्रिया को जारी रखे और इस प्रकार समाज और देश का ऋण चुकाए। इसी संदेश के साथ मैं आप सभी युवाओं को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ देता हूँ।

मैं आशा करता हूँ कि यह युवा सम्मेलन हमारे नौजवानों को सकारात्मक दिशा देगा, हमारी लोकतांत्रिक सभ्यता को और अधिक समृद्ध बनाते हुए राष्ट्र और आपको सफलता के मार्ग पर आगे बढ़ाएगा।

मुझे विश्वास है कि आज के कॉन्क्लेव से पूरे देश के युवाओं के लिए एक सकारात्मक संदेश जाएगा कि किस प्रकार हम अपने देश में, प्रदेश में और स्थानीय स्तर पर मेडिकल क्षेत्र में, टूरिज्म में, शिक्षण संस्थानों को इंप्रूव करने और उन्हें बेस्ट बनाने के लिए बेहतर प्लान बनाएँ।

हमारे विश्वविद्यालय रिसर्च के बड़े सेंटर बनें, हमारे अस्पताल बेस्ट सर्विस प्रदान करें, हमारा देश-प्रदेश और नगर बेस्ट टूरिस्ट डेस्टिनेशन बने; इस दिशा में हम मंथन करें। सामाजिक क्षेत्र में, बदलते भारत में, स्टार्ट-अप में, व्यापार में, बदलते ट्रेड में आपकी भूमिका भारत को आत्मनिर्भर बनाने वाली होनी चाहिए।

मैं एक बार फिर जैन अंतर्राष्ट्रीय व्यापार संगठन को जोधपुर में नेशनल यूथ कॉन्क्लेव 2022 के आयोजन के लिए बधाई देता हूँ। इस कान्क्लेव में अगले दो दिनों में आप अलग-अलग क्षेत्रों में सफल यूथ आइकॉन से चर्चा करेंगे, उनके विचार सुनेंगे, उनसे प्रेरणा लेंगे। मुझे आशा है कि उनके विचार आपके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने में सहायक होंगे।

मैं इस सम्मेलन के आयोजकों और आप सभी को अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

भाग-सात

विशेष व्यक्तित्व

35

महात्मा गांधी और लालबहादुर शास्त्री जी का जीवन : भारतीयता का अविस्मरणीय दर्शन*

"मैं समझता हूँ कि आज देश के हर नागरिक को अपने महापुरुषों के बारे में जानना चाहिए। युवाओं को उन्हें पढ़ना चाहिए, उन्हें समझना चाहिए।"

आज राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी और पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी की जन्म जयंती के पावन अवसर पर संसद भवन के इस ऐतिहासिक केंद्रीय कक्ष में उपस्थित होना अपने आप में गौरव की बात है।

1947 की स्वतंत्रता दिवस की मध्यरात्रि को इसी ऐतिहासिक केंद्रीय कक्ष से हमारे देश की स्वतंत्रता का उद्घोष हुआ था। इसी ऐतिहासिक कक्ष में भारत के संविधान की रचना की गई थी और उसे अंगीकार किया गया था।

यह बहुत सुखद है कि देश की नई पीढ़ी आज उसी ऐतिहासिक कक्ष में अपने उन मनीषियों का स्मरण कर रही है, जिन्होंने स्वतंत्र भारत को एक नई दिशा दी और लोकतंत्र के माध्यम से लोगों के जीवन में सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त किया।

गांधी जी और शास्त्री जी ऐसे आदर्श व्यक्तित्व थे, जिन्होंने सार्वजनिक जीवन में शुचिता, सरलता और सादगी के मानक स्थापित किए।

अमेरिकी नागरिक अधिकार आंदोलनों के नेता मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने 20वीं सदी में विश्व की दो महान हस्तियों के योगदान को विशेष रूप से रेखांकित किया है। आइंस्टीन

---

* महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री जी की जयंती पर संसद भवन के केंद्रीय कक्ष में संबोधन, नई दिल्ली, 02 अक्तूबर, 2022

के विचार ने भौतिक दुनिया की समझ को बदल दिया था, तो गांधी के विचार ने राजनीतिक दुनिया की समझ का कायापलट कर दिया था।

आप विचार कीजिए कि उस समय जब विश्वयुद्ध चल रहे थे, जब दुनिया परमाणु हथियार बना रही थी, उस दौर में महात्मा गांधी देशवासियों को एकजुट कर प्रेम, सत्य और अहिंसा के अपने अनोखे शस्त्रों से दुनिया की सबसे बड़ी ताकत का मुकाबला कर रहे थे।

महात्मा गांधी के बारे में अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था कि आने वाली पीढ़ियाँ मुश्किल से ही यकीन कर पाएँगी कि हाड़-मांस का एक ऐसा व्यक्ति भी इस दुनिया में था।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और अन्य गणमान्य व्यक्तियों के साथ
महात्मा गांधी और श्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती पर संसद भवन के केंद्रीय कक्ष में
उनके चित्रों पर पुष्पांजलि अर्पित करने के अवसर पर

मैं समझता हूँ कि आज देश के हर नागरिक को अपने महापुरुषों के बारे में जानना चाहिए। युवाओं को उन्हें पढ़ना चाहिए, उन्हें समझना चाहिए। गांधी जी के बारे में जितना मैंने पढ़ा, मुझे लगता है कि एक नेता के तौर पर उनकी सबसे खास बात थी कि वे लोगों को बड़ी सहजता से अपने से जोड़ लेते थे।

गांधी जी वास्तविक जननेता थे। उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन से पूरे देश को जोड़ दिया था। लाखों किसानों, मजदूरों, महिलाओं को उन्होंने हमारे राष्ट्रीय आंदोलन का हिस्सा बनाया। उनकी प्रेरणा से, उनके आह्वान पर उस समय कई वकीलों ने अपनी वकालत छोड़ दी, विद्यार्थियों ने आजादी की लड़ाई में हिस्सा लिया और लाखों गरीब-असहाय जनता, जो विदेशी शासन में मजबूर थी, उन्हें गांधी जी के नेतृत्व से मजबूती मिली।

मानवता के उपासक और शांति के दूत महात्मा गांधी जी ने अपने कार्यों से देश ही नहीं बल्कि दुनिया भर में लोगों को प्रेरित किया। अपनी युवावस्था में उन्होंने करीब 20 साल दक्षिण अफ्रीका में अन्याय के विरोध में वहाँ की जनता को जागरूक किया। नेल्सन मंडेला, मार्टिन लूथर किंग जूनियर, दलाई लामा, मिखाइल गोर्बाचे, आंग सान सू की जैसे कई वैश्विक नेताओं ने उनसे प्रेरणा ली।

शास्त्री जी भी गांधी जी के बड़े अनुयायी थे। असहयोग आंदोलन हो या दांडी मार्च; लाल बहादुर शास्त्री जी ने अपने पूर्ण समर्पण के साथ देश की आजादी की लड़ाई में भागीदारी की। आजादी के संघर्ष में शास्त्री जी सात वर्षों तक ब्रिटिश जेलों में भी रहे, लेकिन वह देश के लिए समर्पण ही था, जिसने उन्हें कभी हिम्मत नहीं हारने दी। आज जब आप युवा हमारे इन राष्ट्र नायकों का स्मरण कर रहे हो, तो ये आपका कर्तव्य बनाता है कि आप इनके बारे में पढ़ें, इन्हें गहराई से जानें। महात्मा गांधी जी, शास्त्री जी और हमारे जितने भी महापुरुष हुए हैं, सभी के जीवन में आप देखेंगे कि उन्होंने कठिन परिश्रम किया और संघर्ष किया।

"मानवता के उपासक और शांति के दूत महात्मा गांधी जी ने अपने कार्यों से देश ही नहीं बल्कि दुनिया भर में लोगों को प्रेरित किया।"

आज दुनिया के कई देशों में महात्मा गांधी की प्रतिमाएँ लगी हैं, पूरी दुनिया में उन्हें जाना जाता है। मगर जब आप पढ़ेंगे तो जानेंगे कि पूरे जीवन में कई बार गांधी जी ने दमन और अन्याय का सामना किया। दक्षिण अफ्रीका में ट्रेन की फर्स्ट क्लास कोच में सफर करने के कारण उन्हें अपमान कर सर्द रात में ट्रेन से उतार दिया गया था। अफ्रीका में और भारत में भी कई बार उन्हें विरोध झेलना पड़ा था। आप शास्त्री जी का जीवन पढ़िए कि किस तरह संसाधनों के अभाव में उन्होंने अपना जीवन जिया और देश के प्रधानमंत्री पद तक पहुँचे। यह लाल बहादुर शास्त्री जी की ईमानदारी और उच्च आदर्श थे, कि एक रेल दुर्घटना की नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए उन्होंने रेल मंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया था।

महात्मा गांधी जी का दर्शन तो इतना विशाल है कि उन्होंने सिर्फ राजनीति पर ही बात नहीं की, बल्कि जीवन के लगभग हर क्षेत्र पर उन्होंने खुलकर विमर्श किया और हमें प्रेरणा दी। गांधी जी आज भी जीवन के हर क्षेत्र में प्रासंगिक हैं।

ट्रस्टीशिप का उनका एक विचार है, जो कहता है कि जो पूँजीपति/धनवान लोग हैं, वे अपने आपको ट्रस्टी मानकर समाज के कल्याण और वंचितों के उत्थान के लिए कार्य करें।

पश्चिम के विचारकों ने 'सरवाइवल ऑफ द फिटेस्ट' की बात कही; मगर गांधी जी ने सर्वोदय का विचार दिया। सर्वोदय यानी सभी का उत्थान। समाज के अंतिम वंचित व्यक्ति

के अधिकारों की भी रक्षा हो और उसका भी कल्याण सुनिश्चित हो, ऐसी महान धारणा महात्मा गांधी जी ने दुनिया को दी।

पर्यावरण संरक्षण को लेकर गांधी जी का विचार बड़ा अतुलनीय है। आज हम देख रहे हैं कि दुनिया भर में तेजी से आगे बढ़ने की होड़ मची है और इस होड़ में मनुष्य प्रकृति को भारी नुकसान पहुँचा रहा है।

महात्मा गांधी की जयंती के अवसर पर संसद भवन के केंद्रीय कक्ष में उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए

लेकिन भारत आज भी अपनी परंपरा और संस्कृति पर चलता है। हम पर्यावरण बचाने के लिए एक प्रतिबद्ध राष्ट्र हैं। दुनिया की 17 प्रतिशत आबादी हमारे देश में रहती है, लेकिन दुनिया के कुल कार्बन उत्सर्जन में हमारी हिस्सेदारी केवल 5 प्रतिशत है।

हम प्रकृति और पर्यावरण के लिए गांधी जी के दर्शन को मानते हैं। उन्होंने कहा था कि अनमोल धरती के पास इतने संसाधन तो हैं कि वह मनुष्यों की जरूरतों को पूरी कर सकती है, लेकिन धरती की इतनी क्षमता नहीं कि यह मनुष्यों के लालच की पूर्ति कर सके।

नैतिकता गांधी जी के दर्शन के मूल में थी। आज हम देखते हैं कि व्यक्ति कई बार अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए किसी भी तरह के प्रयास कर लेता है, उसमें सही-गलत नहीं देखता। इस विषय पर गांधी जी ने कहा था कि साध्य के साथ-साथ साधन की पवित्रता भी आवश्यक है।

आज के दिन आप सब विद्यार्थी, जो यहाँ केंद्रीय कक्ष में बैठे हो; आप सभी प्रतिभाशाली हैं। इसलिए मैं समझता हूँ कि आप इस बात की गंभीरता को समझते हैं कि गांधी जी और शास्त्री जी को नमन करने—आज उन्हें याद करने का अर्थ केवल यह नहीं है कि हम अपने सोशल मीडिया पर उनकी तस्वीर लगा लें, उनकी पोस्ट कर दें। बल्कि हम अपने महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर अपना जीवन जीते हैं, तब इन महापुरुषों को हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

हम स्वदेशी का प्रचार करें और आत्मनिर्भर भारत बनाने में अपनी भूमिका निभाएँ। जब खरीददारी करें, तो अपने देश में बना प्रोडक्ट खरीदें। अपने घर और आस-पास साफ-सफाई रखें और देश को स्वच्छ बनाने में अपना योगदान दें।

"जीवन के किसी भी क्षेत्र में आप आगे बढ़ें, अपने कॅरियर में आप चाहे शिक्षा में जाएँ, मेडिकल में जाएँ, इंजिनियर बनें, प्रशासनिक अधिकारी बनें, खिलाड़ी बनें, समाज-सेवा में जाएँ या जीवन का कोई भी क्षेत्र हो, आप हमेशा अपनी व्यक्तिगत उपलब्धि और उन्नति के साथ-साथ देश की प्रगति में योगदान को अपना लक्ष्य बनाएँ।"

अभी इसी साल भारत की आजादी को 75 वर्ष पूरे हुए हैं। स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले से आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने देशवासियों से पाँच प्रण लेने की अपील की है।

हमारा पहला प्रण है—विकसित भारत का लक्ष्य

दूसरा प्रण है—गुलामी के हर अंश से मुक्ति

तीसरा प्रण है—अपनी विरासत पर गर्व करना

चौथा प्रण—देशवासियों की एकता एवं एकजुटता और

पाँचवाँ प्रण है—नागरिकों में कर्तव्य की भावना का होना।

आपको पूरे समर्पण के साथ इन पाँच संकल्पों, इन पाँच प्रण का पालन करना है। आप यकीन मानिए, यह देश के लिए आपका महत्त्वपूर्ण योगदान होगा। हमारे महापुरुषों का जीवन भी हमें इन पाँच प्रण के पालन की सीख देता है।

गुलामी के हर अंश से मुक्ति के लिए हमारे राष्ट्रनायकों ने आजीवन काम किया। इसके लिए महात्मा गांधी जी ने चरखा काता, सूत तैयार किया और उस सूत की खादी वे शरीर पर पहनते थे।

ब्रिटेन में जब बकिंघम पैलेस में उन्हें आमंत्रित किया गया, तब भी वहाँ उन्होंने पश्चिमी सभ्यता का अनुकरण नहीं किया; बल्कि एक सामान्य भारतीय किसान की वेशभूषा, अपने

खादी वस्त्रों में वहाँ गए। जब तक हम अपनी विरासत पर गर्व नहीं करेंगे, अपनी संस्कृति–अपनी परंपरा अपने इतिहास से प्रेरणा नहीं लेंगे, तब तक हम आगे बढ़ने के लिए अपने आपको प्रेरित और प्रोत्साहित नहीं कर पाएँगे।

जीवन के किसी भी क्षेत्र में आप आगे बढ़ें, अपने कॅरियर में आप चाहे शिक्षा में जाएँ, मेडिकल में जाएँ, इंजिनियर बनें, प्रशासनिक अधिकारी बनें, खिलाड़ी बनें, समाज–सेवा में जाएँ या जीवन का कोई भी क्षेत्र हो, आप हमेशा अपनी व्यक्तिगत उपलब्धि और उन्नति के साथ–साथ देश की प्रगति में योगदान को अपना लक्ष्य बनाएँ। अपने देश को हमें आगे ले जाना है, यह सोच हमेशा आपके अंदर होनी चहिए।

अपने महापुरुषों का जीवन संदेश आप अपने जीवन में अपनाएँ, इसी मैसेज के साथ आप सभी को बहुत–बहुत शुभकामनाएँ।

मैं एक बार पुनः राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी और लाल बहादुर शास्त्री जी को नमन करता हूँ और आप सभी नौजवानों को शुभकामनाएँ देता हूँ।

36

त्याग, संकल्प और स्वाभिमान की प्रतिमूर्ति : नेताजी सुभाष चंद्र बोस*

"मैं समझता हूँ कि आज देश के हर नागरिक को अपने महापुरुषों के बारे में जानना चाहिए। युवाओं को उन्हें पढ़ना चाहिए, उन्हें समझना चाहिए।"

आज हम सब स्वतंत्रता संग्राम के महान नायक नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 126वीं जयंती पर उनको श्रद्धांजलि अर्पित करने आए हैं। केंद्रीय कक्ष में भारत के अलग-अलग राज्यों से हमारे युवा विद्यार्थी, साथी आए हैं। एक संपूर्ण भारत यहाँ पर आज मुझे देखने को मिल रहा है।

मैं इस केंद्रीय कक्ष में आप सभी का अभिवादन और स्वागत करता हूँ। नेताजी सुभाष चंद्र बोस का त्याग, बलिदान प्रत्येक भारतीय को हमेशा एक नई प्रेरणा देता है, नई दिशा देता है। उनका संघर्ष और विचार नौजवानों में देश सेवा के लिए संकल्पित भाव देता है।

आज हम उनकी जयंती पर उनको शत्-शत् नमन करते हुए उनके विचारों, आदर्शों और उनके जीवन-संघर्ष को आत्मसात करेंगे, जो भारत की नई दिशा तय करेंगे।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस का व्यक्तित्व इतना विराट है कि उनके नाम से ही देश के हर नौजवान में नई ऊर्जा और नई शक्ति का संचार होने लगता है। हम सबके लिए और भारत में विशेष रूप से नौजवानों के लिए उनका आदर्श जीवन, उनका आदर्श संघर्ष निश्चित रूप से एक नई राष्ट्रभक्ति का संचार करता है। उनकी अद्भुत नेतृत्व क्षमता, उनका आत्मविश्वास, स्वाभिमान और चुनौतियों से लड़ने की शक्ति थी और भारत के लिए उनका एक विजन था। आज देश उसी विजन पर आगे चल रहा है।

नेताजी भारत के समृद्ध गौरवशाली इतिहास पर हमेशा गर्व करते थे। सांस्कृतिक

* नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती के अवसर पर संबोधन, नई दिल्ली, 23 जनवरी, 2023

विरासत पर उनका भरोसा था कि एक दिन भारत आत्मनिर्भर बनेगा, आत्मविश्वास और स्वाभिमान के साथ एक आधुनिक भारत बनेगा, आज हम उस सपने को पूरा होते हुए देख रहे हैं। उनके जीवन में हमेशा से एक स्पष्ट संदेश था, हर चुनौती का मुकाबला कठिन से कठिन संघर्ष से करना चाहिए, इसलिए उन्होंने अनवरत अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए जीवन भर संघर्ष किया, उनका यही जीवन-दर्शन आज हमको नई दिशा देता है। व्यक्ति के जीवन में जब कोई विचार आए तो उस विचार को पूरा करने के लिए उनके मन में संकल्प होना चाहिए, ऊर्जा होनी चाहिए।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और अन्य गण्यमान्य व्यक्तियों के साथ संसद भवन के केंद्रीय कक्ष में नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर उन्हें पुष्पांजलि अर्पित करने के अवसर पर

मैं देख रहा हूँ कि भारत के नौजवानों की इनोवेशन क्षमता, उनके नए रिसर्च करने की क्षमता, उनकी नई सोच और बौद्धिक क्षमता से नए भारत बनाने का सपना आज मैं देख रहा हूँ। नेताजी भारत को ऐसा ही देखना चाहते थे, इसलिए हम उनके जीवन-दर्शन को समझने के लिए यहाँ पर आए हैं। मुझे बहुत अच्छा लग रहा है कि किस तरीके से हमारे विद्यार्थी और नौजवान उनके जीवन-दर्शन के बारे में अपने वक्तव्य में बता रहे हैं।

मुझे आशा है कि आने वाले समय में भारत इसी तरीके से चुनौतियों का सामना कर स्वाभिमान से आगे बढ़ता रहेगा। भारत के नौजवान के मन में इसी तरीके से विचार होंगे, जो नेताजी सुभाष चंद्र बोस जी के विचारों में थे। भारत के कण-कण में, नौजवानों में उनके विचार, संकल्प, एक दृढ़ इच्छाशक्ति और एक नए आत्मविश्वास के साथ नए भारत का

निर्माण और नेताजी के सपनों का भारत बनाने का विचार हम सभी इस केंद्रीय कक्ष से लेकर जाएँ।

संसद भवन के केंद्रीय कक्ष में नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर उन्हें पुष्पांजलि अर्पित करते हुए

मैं पुन: आप सभी को धन्यवाद देता हूँ। आज आप यहाँ बड़ी-बड़ी दूर से आए हैं, आप निश्चित रूप से यहाँ से संकल्प और विचार लेकर जाएँगे। नेताजी के जीवन-दर्शन पर अलग-अलग विद्यार्थी अपने विचार व्यक्त करेंगे, उन विचारों को अनवरत लेकर जाना है और जब तक अपने लक्ष्य को पूरा न कर लें, तब तक हर चुनौती और कठिनाई का सामना करते हुए अपने संकल्प को सिद्धि तक पहुँचाना है। यही हमारा संकल्प है और इसी के साथ जय हिंद। मेरे साथ बोलेंगे—जय हिंद।

37

गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर : एक कवि हृदय विश्व मानव*

"गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर का जीवन हमें अपने देश और संपूर्ण मानवता के प्रति समर्पण भाव सिखाता है।"

संसद भवन के केंद्रीय कक्ष में गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर को नमन करता हूँ। उनकी जयंती पर आज केंद्रीय कक्ष में उन्हें पुष्पांजलि देने आए आप सभी युवाओं, विद्यार्थियों का हार्दिक अभिनंदन करता हूँ।

देश भर से युवा जब संसद भवन में हमारे महापुरुषों के जीवन-दर्शन और आदर्श विचारों पर विमर्श करते हैं, तो इस चर्चा से देश के नौजवानों को नई प्रेरणा मिलती है।

गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर को कविगुरु और विश्वगुरु भी कहा जाता है। गुरुदेव श्री रवींद्रनाथ टैगोर का जीवन अत्यंत विशाल, विविध और व्यापक था। हम उनके जीवन-अनुभवों के बारे में पढ़ते हैं तो हमें पता चलता है कि बहुत विस्तृत जीवन अनुभव था उनका।

आज के हिसाब से कहूँ तो वे एक मल्टीटास्किंग और डायनेमिक व्यक्तित्व थे। गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर का जीवन इस बात का प्रमाण है कि एक व्यक्ति अपने जीवन में क्या-क्या कर सकता है।

वे एक महान कवि, गीतकार, संगीतकार, साहित्यकार और चित्रकार थे। वे एक महान राजनीतिक चिंतक, दार्शनिक और विश्व विचारक भी थे। गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर भारत की श्रेष्ठ ऋषि परंपरा के व्यक्तित्व थे।

उन्होंने साहित्य की महान कृति 'गीतांजलि' की रचना की, जिसके लिए उन्हें 1913 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर पहले एशियाई थे, जिन्हें इस पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

---

* संसद भवन में गुरुदेव श्री रवींद्रनाथ टैगोर की जयंती पर आयोजित पुष्पांजलि कार्यक्रम में संबोधन, नई दिल्ली, 9 मई, 2023

गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर की जयंती के अवसर पर संसद भवन के केंद्रीय कक्ष में युवा प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए

अपने समय में उन्होंने 30 से अधिक देशों (34 देशों) की यात्रा की थी। यह आज से करीब 100-150 साल पहले की बात है। उस समय परिस्थितियाँ आज जितनी आसान नहीं हुआ करती थीं।

गुरुदेव ने यूनिवर्सिटी कॉलेज, लंदन से लॉ की पढ़ाई की। आज उसी यूनिवर्सिटी में साहित्य के अध्ययन में टैगोर पर लैक्चर सीरीज पढ़ाई जाती है।

गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर का जीवन हमें अपने देश और संपूर्ण मानवता के प्रति समर्पण भाव सिखाता है। जब वे एक कवि के रूप में गीत-कविताएँ लिखते थे, तब देश-काल की परिस्थितियों के अनुसार राष्ट्रवाद, देश प्रेम और आजादी के गीत लिखते थे। जब वह समाज सुधार की बात करते थे तो देशवासियों में भाईचारे, एकता की बात करते थे। उन्होंने सदैव इस बात पर जोर दिया कि विविधता में एकता ही भारत के राष्ट्रीय एकीकरण का एकमात्र संभव तरीका है।

गुरुदेव जब शिक्षक के रूप में शिक्षा का महत्त्व बताते थे, तब वह भारतीय संस्कृति और शिक्षा प्रणाली का महत्त्व बताते थे। वे कहते थे कि शिक्षा किताबी ज्ञान तक ही सीमित नहीं होनी चाहिए। शिक्षा को व्यावहारिक बनाना आवश्यक है।

शिक्षा का उद्देश्य समाज की प्रगति के लिए समाज में जागरूकता बढ़ाना होना चाहिए, अन्यथा ऐसी शिक्षा निरर्थक है। इस सदी में भी यह बात सुसंगत है।

उन्होंने वर्ष 1921 में शांति निकेतन में विश्व-भारती विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। एक ऐसा शिक्षण संस्थान, जहाँ स्वतंत्र वातावरण में, प्रकृति के मध्य, जीवन के अनुभवों के साथ-साथ शिक्षण हो, ऐसा परिवेश जहाँ मस्तिष्क के साथ हृदय का भी विकास हो।

शिक्षा को लेकर उनका मानना था कि शिक्षा ही मनुष्य को सशक्त बना सकती है और शिक्षा से ही समाज में सुधार किया जा सकता है।

रवींद्रनाथ टैगोर ने पश्चिमी ज्ञान-विज्ञान का अध्ययन भी किया और भारतीय ग्रंथ, महाकाव्य, उपनिषद भी पढ़े। उन्होंने भारत के युवाओं को आधुनिक बनने का संदेश दिया, लेकिन भारतीय संस्कृति एवं भारतीय संस्कारों को अपनाकर।

वर्ष 1905 में जब बंगाल विभाजन किया गया, तब रवींद्र नाथ टैगोर ने 'अमार सोनार बांग्ला' गीत लिखा था। आज यह गीत बांग्लादेश का राष्ट्रीय गान है। उनका एक प्रसिद्ध गीत है, 'एकला चलो रे', यह गीत हमें सीख देता है कि अन्याय के खिलाफ लड़ाई में अगर आपके साथ कोई नहीं खड़ा है, आप अकेले चल रहे हो तो भी चलते रहो, अपने पथ से विचलित न हो।

वसुधैव कुटुंबकम् हमारी मूल संस्कृति है, और आज भी भारत इसी भावना के साथ आगे बढ़ रहा है। आज जब भारत जी-20 समूह के देशों का नेतृत्व कर रहा है, हमारी थीम है, 'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य'। गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने सदा यही बात कही। उन्होंने भारतीय संस्कृति के अनुसार संपूर्ण विश्व को अपना परिवार माना। उन्होंने विश्व मानवतावाद की अवधारणा दी।

गुरुदेव टैगोर का दृष्टिकोण और विचारधारा बहुत आधुनिक थी। वह कहा करते थे कि 'आज का युवा ही कल का भविष्य है'। उन्होंने अपना अधिकांश जीवन देश और पूरे विश्व के कल्याण हेतु अपने समय की युवा पीढ़ी को शिक्षित और अनुशासित बनाने और उन्हें प्रेरणा प्रदान करने हेतु समर्पित कर दिया।

रवींद्रनाथ टैगोर का दर्शन हमें निरंतर कर्म करने और सकारात्मक सोच के लिए प्रेरित करता है। वे कहते थे, "यदि मुझे एक द्वार बंद मिलता है तो मैं दूसरे से निकलने का प्रयास करता हूँ, या फिर मैं अपने लिए द्वार खुद बनाता हूँ। कुछ-न-कुछ अच्छा अवश्य होगा, चाहे वर्तमान में कितना भी अँधियारा क्यों न हो।"

समाज और मानवता की सेवा के लिए उनका समर्पण ऐसा था कि वे कहा करते थे, "निद्रा में मुझे स्वप्न आया कि जीवन आनंद है। मैं जागा और मैंने देखा कि जीवन सेवा है। मैंने उस पर अमल किया और पाया कि सेवा ही आनंद था।"

आज यहाँ देश भर से आए युवाओं से मैं यही कहना चाहूँगा कि आप यहाँ हमारे महान राष्ट्रनायकों को नमन करने आए हैं, उनके जीवन-दर्शन से प्रेरणा लेने आए हैं। यहाँ से प्रेरणा लेकर आप हमारे महापुरुषों के सपनों का भारत बनाने और समाज के कल्याण में सार्थक योगदान देने के लिए आगे बढ़ेंगे।

गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर का जीवन उतना ही विविध और विस्मयकारी है, जितनी समृद्ध उनकी सृजनशीलता। वे एक असाधारण व्यक्तित्व थे।

मुझे विश्वास है कि हमारी भावी पीढ़ियाँ हमारे इन महान नेताओं के पदचिह्नों पर चलकर अपने देश और समाज के लिए श्रेष्ठ भूमिका निभाएँगी।

प्राइड द्वारा आयोजित ऐसे कार्यक्रम युवाओं को हमारे महान राष्ट्र नायकों से जोड़ रहे हैं। इससे युवाओं में अपने अतीत के लिए गौरव की भावना में वृद्धि होती है। आज जब भारत 'आजादी का अमृत महोत्सव' मना रहा है, तब अपने स्वर्णिम अतीत पर हम सबको गर्व होना भी चाहिए। हमें अपने अतीत से प्रेरणा लेकर, अपने महापुरुषों के जीवन से सीखकर नवभारत के निर्माण के लिए आगे बढ़ना चाहिए।

भाग-आठ

विविध

38

राष्ट्रहित और जनकल्याण के प्रति समर्पित व्यक्तित्व : श्री रामनाथ कोविन्द*

"आपके अभिभाषणों ने सभी दलों के लोगों को समान रूप से प्रेरित किया है, उनके दायित्वों के प्रति जाग्रत् किया है। यही कारण है कि आपको सभी दलों के नेताओं का पूर्ण सहयोग मिला है तथा हम सब आपको संवैधानिक मूल्यों एवं आदर्शों के संरक्षक के रूप में देखते हैं।"

माननीय राष्ट्रपति महोदय, श्री रामनाथ कोविन्द जी, भारत की संसद के दोनों सदनों के सदस्यों के लिए आज गर्व का अवसर है, जब वे राष्ट्र की ओर से आपके प्रति कृतज्ञता, सम्मान, श्रद्धा और साधुवाद व्यक्त करने के लिए एकत्र हुए हैं।

भारत गणराज्य के राष्ट्रपति के रूप में पाँच वर्ष के कार्यकाल के दौरान आपने इस सर्वोच्च पद की गरिमा और शालीनता को नव-उत्कर्ष प्रदान किया है। इसके लिए हम सब हृदय से आपका आभार प्रकट करते हैं।

महोदय, उत्तर प्रदेश के कानपुर जिले के एक छोटे से गाँव परौंख से भारत के राष्ट्रपति के शीर्ष पद तक पहुँचने की आपकी यात्रा हमारे लोकतंत्र की एक अद्भुत एवं प्रेरक उपलब्धि है। सुदीर्घ सार्वजनिक जीवन में राष्ट्रहित तथा जन-सामान्य के कल्याण को लक्षित करके किए गए कार्यों से आपने यह सिद्ध किया है कि आप एक बहुआयामी तथा संवेदनशील जनसेवक हैं।

वर्ष 1971 में दिल्ली बार काउंसिल से एक अधिवक्ता के रूप में अपने कॅरियर की शुरुआत करने के बाद आपने दिल्ली उच्च न्यायालय और भारत के उच्चतम न्यायालय में अपनी सेवाएँ प्रदान करते हुए निर्धन और वंचित लोगों की पूरे समर्पण के साथ मदद की।

---

* संसद सदस्यों की ओर से भारत के राष्ट्रपति, श्री रामनाथ कोविन्द के विदाई समारोह में संबोधन, नई दिल्ली, 23 जुलाई, 2022

उसके उपरांत राज्य सभा के सदस्य के रूप में अपने दो कार्यकालों के दौरान आपने संसदीय समितियों के सदस्य के रूप में तथा राज्य सभा की आवास समिति के सभापति के पद पर रहते हुए देश को अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

महोदय, आपका दृढ़ विश्वास है कि शिक्षा सशक्तीकरण का सर्वश्रेष्ठ साधन है। इसी भावना से संसद सदस्य के रूप में आपने ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के प्रसार के साथ-साथ उच्च शिक्षा के क्षेत्र में बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध कराने और उनकी गुणवत्ता बढ़ाने पर बल दिया।

भारत के राष्ट्रपति, श्री रामनाथ कोविन्द को विदाई देने के लिए केंद्रीय कक्ष में आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए

आपने राष्ट्र-निर्माण में महिलाओं की अधिक-से-अधिक भागीदारी और समाज के वंचित वर्गों, विशेष रूप से दिव्यांगों और अनाश्रितों के लिए अधिक अवसरों के सृजन जैसे विषयों पर निरंतर बल दिया है। जनहित के महत्त्वपूर्ण मुद्दों के लिए आपकी अटूट प्रतिबद्धता, लोक सेवा के प्रति आपके समर्पण का प्रमाण है।

महोदय, वर्ष 2015 में बिहार के राज्यपाल के पद पर आसीन होने के बाद आपने संवैधानिक मूल्यों को संरक्षित रखते हुए शांतिपूर्ण तरीकों और संवाद के माध्यम से अनेक मुद्दों का समाधान किया, जिसके लिए एक स्वर से आपकी सराहना की गई।

कुलाधिपति के रूप में आपने राज्य के विश्वविद्यालयों के क्रियाकलापों में सुधार के लिए निरंतर प्रयास किए। इसके अतिरिक्त आपने कुलपतियों की नियुक्ति में पारदर्शिता लाने एवं विश्वविद्यालयों के बेहतर विनियमन के लिए एक न्यायिक आयोग का गठन भी किया।

भारत के राष्ट्रपति, श्री रामनाथ कोविन्द को विदाई देने के लिए केंद्रीय कक्ष में आयोजित समारोह के अवसर पर

महोदय, जब आपको वर्ष 2017 में भारत गणराज्य के 14वें राष्ट्रपति के रूप में भारत के राष्ट्राध्यक्ष का दायित्व मिला, तो आपने अपने पद की अपेक्षाओं एवं चुनौतियों को गरिमा एवं विनम्रता से स्वीकारते हुए पदभार को ग्रहण किया।

आपके विनम्र स्वभाव तथा कार्यशैली ने हम सभी सांसदों के मन में एक विशिष्ट स्थान बनाया है। संसद में दिए गए आपके अभिभाषण, आपकी दूरदर्शिता, देश के समक्ष उपस्थित राजनीतिक एवं सामाजिक विषयों की गहरी समझ एवं उनके समाधान हेतु आपकी स्पष्ट सोच को प्रदर्शित करते हैं।

आपके अभिभाषणों ने सभी दलों के लोगों को समान रूप से प्रेरित किया है, उनके दायित्वों के प्रति जागृत किया है। यही कारण है कि आपको सभी दलों के नेताओं का पूर्ण सहयोग मिला है तथा हम सब आपको संवैधानिक मूल्यों एवं आदर्शों के संरक्षक के रूप में देखते हैं।

हमें स्मरण है कि पदग्रहण करने के बाद जब आप पहली बार अपनी जन्मस्थली गए थे, तब आपने भावविह्वल होकर वहाँ की धरती को नमन किया था तथा कानपुर में अपने शिक्षण संस्थान में आपने मंच से नीचे उतरकर शिक्षकों का चरण-स्पर्श किया था।

आपकी इन्हीं विशेषताओं ने नागरिकों का दिल जीता है और वे आपके साथ विशेष जुड़ाव महसूस करते हैं।

महोदय, राष्ट्रपति के रूप में आपके कार्यकाल को अनेक मधुर और स्मरणीय पलों के कारण सदैव याद रखा जाएगा। स्वतंत्रता दिवस पर राष्ट्रपति भवन में आयोजित उस 'एट होम' रिसेप्शन को आज भी याद किया जाता है, जिसमें आपने असंख्य लोगों का जीवन बचाने वाले कोरोना योद्धाओं को सम्मानित करने के लिए उन्हें मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया था।

भारतीय सेना के सुप्रीम कमांडर के रूप में मई, 2018 में सियाचिन में सबसे ऊँचाई पर स्थित युद्धक्षेत्र 'कुमार पोस्ट' में तैनात सैनिकों से आपकी ऐतिहासिक मुलाकात, पीएम केयर्स निधि में एक माह के वेतन का दान करने का आपका अनुकरणीय योगदान, कोविड-19 के विरुद्ध संघर्ष के दौरान अधिक धनराशि उपलब्ध कराने के लिए मितव्ययता के उपायों के साथ ही एक वर्ष के लिए अपने वेतन के 30 प्रतिशत भाग का परित्याग करना—ऐसे कई उदाहरण हैं, जो देश की सामूहिक चेतना में स्थायी रूप से अंकित रहेंगे।

भारतीय संविधान के सिद्धांतों का अक्षरशः पालन, राजनीतिक निष्पक्षता के लिए आपकी प्रतिबद्धता और राष्ट्रपति भवन को आम नागरिकों के लिए सुलभ बनाने जैसे आपके अनुकरणीय कार्य आने वाली पीढ़ियों को सदैव प्रेरित करते रहेंगे।

महोदय, आज जब राष्ट्र अपनी स्वतंत्रता के 75वें वर्ष में है, हमारा सौभाग्य है कि हम आपके दूरदर्शी एवं अनुभवी मार्गदर्शन में अमृतकाल में प्रवेश कर रहे हैं। आप राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, बाबा साहेब अंबेडकर, श्यामा प्रसाद मुखर्जी व पंडित दीनदयाल उपाध्याय जैसे महान नेताओं से प्रेरित रहे हैं।

आपकी सरलता, विनम्रता तथा परहित को स्वहित से अधिक महत्त्व देने के स्वभाव से यह स्पष्ट है कि आपने इन महापुरुषों के उच्च विचारों और शिक्षाओं का अपने जीवन में अनुसरण किया है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि आपके विचार तथा आपका व्यक्तित्व वर्तमान के साथ-साथ भावी पीढ़ियों के लिए भी प्रेरणास्रोत बने रहेंगे। हम आपके स्वस्थ जीवन और दीर्घायु होने की कामना करते हैं।

सादर।

भारत की संसद के सदस्य।

39

व्यापक जन भागीदारी से सुनिश्चित हो रही प्रभावी एवं पारदर्शी शासन व्यवस्था*

"कानून और अधिनियम के माध्यम से आम जनता को अधिकार मिले। कानून का शासन हो, जनता का शासन हो।"

मैं सबसे पहले केंद्रीय सूचना आयोग को बहुत-बहुत साधुवाद देता हूँ, बधाई देता हूँ, जो हर वर्ष अपने इस वार्षिक अधिवेशन के अंदर चर्चा करते हैं, संवाद करते हैं कि किस तरीके से हम सूचना आयोग को और पारदर्शी बनाएँ, जवाबदेह बनाएँ, ताकि देश के हर नागरिक को सशक्त कर सकें, मजबूत कर सकें। शासन और प्रशासन में पारदर्शिता ला सकें, जवाबदेही ला सकें, इसके लिए आप लगातार चर्चा और संवाद द्वारा कैसे इस अधिनियम को प्रभावी क्रियान्वयन के साथ, समाज का जो अंतिम व्यक्ति है, जो सूचना माँग रहा है, उसको ठीक समय पर सूचना उपलब्ध हो जाए। इसीलिए इस कानून को अधिक प्रभावी बनाने के लिए, इसका प्रभावी क्रियान्वयन करने के बारे में आज 3 विषयों पर आप व्यापक चर्चा करेंगे, संवाद करेंगे।

इसके साथ-साथ नागरिकों को अधिक सशक्त करते हुए, उसको त्वरित गति से किस तरीके से सूचना उपलब्ध कराई जा सकती है, इस विषय पर आप चर्चा और संवाद करेंगे।

इस देश में हमने 75 वर्ष की लोकतंत्र की यात्रा के अंदर एक बहुत बड़ी उपलब्धि प्राप्त की है। इस 75 वर्ष की लोकतंत्र की यात्रा में हमने देश में सामाजिक, आर्थिक परिवर्तन करके देश को एक सशक्त राष्ट्र बनाया है। कानून का शासन हो, शासन और प्रशासन की जवाबदेही हो, शासन में पारदर्शिता आए, इसके लिए समय-समय पर जब-जब

---

* केंद्रीय सूचना आयोग के वार्षिक सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में संबोधन, नई दिल्ली, 09 नवंबर, 2022

आवश्यकताएँ महसूस हुईं, उस समय भारत की संसद ने कानून बनाए, राज्यों की विधान सभाओं ने कानून बनाए।

कानून और अधिनियम के माध्यम से आम जनता को अधिकार मिले। कानून का शासन हो, जनता का शासन हो, इसके लिए यह कानून पारित हुआ है। शासन-प्रशासन में जवाबदेही और पारदर्शिता लाने के लिए यह एक महत्त्वपूर्ण कानून है। इसका मूल लक्ष्य था कि नागरिकों को सशक्त बनाना, कार्यप्रणाली को पारदर्शी बनाना, जवाबदेह बनाना, भ्रष्टाचार को रोकना और लोकतंत्र सही मायने में जनता के हाथों में हो। इस कानून के आने के बाद आपने 14वें अधिवेशन तक व्यापक चर्चा-संवाद किया।

माननीय लोक सभा अध्यक्ष 9 नवंबर, 2022 को हुए केंद्रीय सूचना आयोग के 15वें वार्षिक सम्मेलन में मंचासीन अन्य गण्यमान्य व्यक्तियों के साथ

आज आप डिजिटल युग में ई-गवर्नेंस के माध्यम से सूचना त्वरित गति से पहुँचाने का काम कर रहे हैं।

सूचना प्राप्त करने वाला व्यक्ति भी देश के किसी गाँव, ढाणी से डिजिटल के इस युग में अपनी सूचनाएँ प्राप्त करने का अधिकार ले रहा है। आपने मोबाइल एप्लिकेशन, वेबसाइट आदि कई माध्यमों का उपयोग कर के इस कानून को प्रभावी बनाने के लिए लगातार चर्चा और संवाद किया है। आज भी देश भर से आप लोग यहाँ पर आए हुए हैं।

आप यहीं चर्चा करेंगे, संवाद करेंगे, ताकि देश की जनता के अंदर जो शिकायत प्रणाली है, वह सशक्त हो, प्रभावी हो। शासन में जनता का विश्वास हो, भरोसा हो, प्रशासन के अंदर पारदर्शिता आए, जवाबदेही आए कि हम किस तरीके से एक बेहतर शासन

चला सकते हैं। इसके लिए मुझे लगता है कि अगर हम सूचना का अधिकार अधिनियम का प्रभावी तरीके से उपयोग करें तो एक पारदर्शी शासन का जो लक्ष्य सरकार का है, जो माननीय प्रधानमंत्री का विजन है, संकल्प है कि अगर देश को विकसित राष्ट्र बनाना है तो हमें भ्रष्टाचार मुक्त भारत बनाना पड़ेगा।

"भ्रष्टाचार मुक्त भारत बनने के लिए
लोकतंत्र के अंदर हर व्यक्ति की सक्रिय भागीदारी हो,
जन-भागीदारी हो।"

भ्रष्टाचार मुक्त भारत बनने के लिए लोकतंत्र के अंदर हर व्यक्ति की सक्रिय भागीदारी हो, जन-भागीदारी हो। सरकार का जो धन है, उसका ठीक से उपयोग हो, उसका अपव्यय न हो, इसके लिए शासन ने कई तरीके की नियम-प्रक्रिया बनाई है। शिकायत पोर्टल राज्यों में भी है, केंद्र में भी है। कई राज्यों ने अपने-अपने राज्यों में ग्रीवांसेज सेल बना रखे हैं। केंद्र में भी ग्रीवांसेज सेल बना हुआ है, जैसा कि माननीय मंत्री जी ने बताया कि शासन में विश्वास होना चाहिए।

ग्रीवांसेज ज्यादा आएँ तो उसकी चिंता नहीं करनी चाहिए। ग्रीवांसेज ज्यादा आती हैं, इसका मतलब कि जनता की सक्रिय भागीदारी है और शासन के प्रति लोगों का विश्वास है कि मैंने जो ग्रीवांसेज दी है, वह सरकार तक पहुँचेगी तो निश्चित रूप से मुझे न्याय मिलेगा। इसलिए जब सरकार नीतियाँ, योजनाएँ बनाती है तो उसका कार्यान्वयन करते समय जो प्रशासनिक व्यवस्था है, उस प्रशासनिक व्यवस्था के अंदर तब जवाबदेही आएगी, जब नीचे तक के व्यक्ति को उन नीतियों, कार्यक्रमों और योजनाओं की संपूर्ण जानकारी होगी। जिसके लिए योजनाएँ बनीं, उन्हें योजनाओं का लाभ मिले। समाज के कल्याण की योजनाएँ अंतिम व्यक्ति तक पहुँचें, जिससे उसके जीवन में परिवर्तन हो। इसलिए सरकार ने पारदर्शी व्यवस्था के लिए आज डिजिटल पेमेंट की एक नई व्यवस्था शुरू की है। हम जितना ह्यूमन रिसोर्स का उपयोग कम करेंगे, उतनी अधिक पारदर्शिता आएगी।

आपने देखा होगा कि इस शासन ने, माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस दिशा में बड़े स्तर पर कार्य योजना बनाई गई है। देश के हर गाँव के अंदर डिजिटल नेटवर्क पहुँचे, उसके लिए व्यापक रूप से काम हुआ है। ऑनलाइन सिस्टम बेहतर हो, इसके लिए काम हुआ है।

सभी योजनाओं का पेमेंट, नीतियों, कार्य-योजनाओं की पॉलिसी के साथ डिजिटल पेमेंट के माध्यम से हो रहा है। करोड़ों रुपए के धन का जो अपव्यय होता था, उसे रोककर उसको एक पारदर्शी व्यवस्था के अंदर करने का काम शासन ने किया।

आप सभी लोग यहाँ अनुभवी हैं। मेरा आपसे इतना ही निवेदन है कि कानून बनाते समय सरकार की या लोकतंत्र की हमेशा यह व्यवस्था रहती है कि कानून प्रभावी हो और जिसके लिए कानून बना है, वह ठीक से उसका उपयोग करे, क्योंकि आरटीआई का कानून लाने के समय एक लंबा आंदोलन किया गया था।

देश के अंदर पंचायतों से लेकर नीचे से ऊपर तक जब भ्रष्टाचार बढ़ने लगा, लोगों को नीतियों का लाभ नहीं मिला, जो निर्माण कार्य होते थे, उनकी गुणवत्ता बेहतर नहीं थी, जिस काम के लिए पैसा भेजा जाता था, उसका उपयोग ठीक से नहीं होता था, तो एक लंबे संघर्ष के बाद यह कानून बना।

कानून बनाते समय यह मानसिकता थी कि गाँव की पंचायत में बैठा व्यक्ति भी, उसके गाँव में जो निर्माण कार्य चल रहा है, उसकी गुणवत्ता और जो धन आया है, उसकी जानकारी उसको मिल सके, एक जन-भागीदारी, सहभागिता हो सके, ताकि हम नीचे तक के शासन और प्रशासन में पारदर्शिता ला सकें। लेकिन अभी भी आपके प्रयास और आपके कई अधिवेशन के बाद भी हम अंतिम पड़ाव तक नहीं पहुँचे हैं। उसके साथ-साथ हमें यह भी देखना चाहिए कि आरटीआई कानून का दुरुपयोग न हो। जब आपके पास आरटीआई आती है, तो आप देखते हैं कि आरटीआई लगाने वाला व्यक्ति कौन है, उसकी मंशा क्या है।

अगर आप उसका सही से अनुभव कर लेंगे, जानकारी प्राप्त कर लेंगे तो जो वास्तविकता में शासन-प्रशासन में पारदर्शिता चाहता है, उस आरटीआई को पढ़ने से प्रथम-दृष्टया ही अगर आपको लगता है कि कहीं-न-कहीं इसमें करप्शन या इसकी जवाबदेही के अंदर लापरवाही बरती गई है तो आप खुद भी जाँच के आदेश दे सकते हैं, ऐसे आरटीआई को तुरंत देकर प्रशासन में पारदर्शिता ला सकते हैं। इसलिए आरटीआई कानून जिस लक्ष्य के लिए बना था, शासन-प्रशासन में पारदर्शिता, जवाबदेही के लिए बना था, उसका ठीक से उपयोग हो, तब हम एक भ्रष्टाचार-मुक्त सिस्टम को खड़ा कर सकते हैं।

सरकार की यह मंशा भी है, देश की आम जनता की यह मंशा भी है, देश की आम जनता का बहुत विश्वास, भरोसा आप सब पर है कि आप उसको न्याय दिलाएँगे और समाज का अंतिम व्यक्ति भी, जिसके साथ अन्याय हो रहा है, उसको भी न्याय दिलाने का सबसे बड़ा माध्यम आपके पास है।

इसलिए मुझे आशा है कि इस दो दिनों के मंथन में आप एक बेहतर तरीके की चर्चा करने के बाद एक पारदर्शी व्यवस्था खड़ी करने में सरकार का सहयोग करेंगे। शासन में जवाबदेही और व्यवस्था खड़ी करने के लिए भी यह बेहतर तरीके से कैसे हो सकता है, आप उस पर चर्चा करेंगे, ताकि हम आरटीआई कानून को प्रभावी बना सकें, क्योंकि कई बार आरटीआई लगाने के पीछे की मंशाओं को अध्ययन करने की आवश्यकता है।

अगर उन मंशाओं का हम अध्ययन करने लगें तो आरटीआई लगाने वाला व्यक्ति, आरटीआई की मंशा के उस निर्णय से ही हम बेहतर पारदर्शिता ला सकते हैं। आजादी का 75 वर्ष, जो लोकतंत्र का उत्सव है, हमारा शासन, जनता का शासन लाने का जो सपना हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने सँजोया था, उन सपनों को पूरा करने का वक्त आ चुका है। लोकतंत्र की 75 वर्ष की यात्रा के अंदर आप जैसे महानुभावों का शासन-प्रशासन में जवाबदेही, पारदर्शिता और एक बेहतर शासन, गुड गवर्नेंस लाने में आपके सहयोग की बहुत आशा है।

मुझे विश्वास है कि आप इस आरटीआई अधिनियम के प्रभावी क्रियान्वयन पर जो दो दिनों तक चर्चा करेंगे, उसमें प्रभावी गतिशीलता लाने के लिए चर्चा करेंगे, अधिकतम जन-भागीदारी बढ़ाने का आपका प्रयास होगा। जितनी जन-भागीदारी बढ़ेगी, लोकतंत्र उतना ही सशक्त होगा।

अगर लोकतंत्र को सशक्त और मजबूत करना है, तो लोकतंत्र में जन-भागीदारी अधिकतम बढ़े, हर व्यक्ति सजग रहे। योजनाएँ, नीतियाँ बनाई गई हैं, उनका लाभ उन्हें मिले, ताकि लोकतंत्र की इस 75 वर्ष की यात्रा में हमने समाज में जो आर्थिक-सामाजिक परिवर्तन किए हैं। आने वाले 25 वर्ष हमारे देश के लिए महत्त्वपूर्ण वर्ष हैं, जब हम एक पारदर्शी, जवाबदेह व्यवस्था को खड़ा करने के लक्ष्य को पूरा कर पाएँगे, एक गुड गवर्नेंस की व्यवस्था कर पाएँगे।

हमारी नीतियों, कार्यक्रमों, योजनाओं का लाभ जिन तक पहुँचाने की सरकार की मंशा है, उन तक उन योजनाओं का लाभ अगर ठीक से पहुँच गया तो हम आर्थिक-सामाजिक परिवर्तन करते हुए एक विकसित भारत का सपना, जो माननीय प्रधानमंत्री जी ने देखा है, उस सपने को पूरा कर पाएँगे।

40

गुर्जर जन नायक : स्वर्गीय कर्नल किरोड़ी सिंह बैंसलान*

"समाज के लिए मैं अपनी तरफ से सब कुछ करूँगा, मुझे आप सब के साथ की जरूरत है। समाज को आपकी जरूरत है। अपने तरीके से समाज में भागीदारी देना शुरू कीजिए, रिटायरमेंट का इंतजार मत कीजिए।"

मानवता के सच्चे पुजारी, महान समाजसुधारक, महानायक कर्नल किरोड़ी बैंसला जी को कोटि-कोटि नमन। कर्नल साहब फौज के कर्नल थे और गुर्जर समाज के लिए जनरल थे।

कर्नल साहब का जीवन विराट और विशाल था। उन्होंने आजीवन देश की भी सेवा की। सेना में रहे, और समाज की सेवा भी की। समाज का भी उत्थान किया। उनकी बदौलत हजारों घरों में उजाला हुआ है। गुर्जर, रैबारी, राइका समाज अपने आप में बहुत भाग्यशाली हैं कि कर्नल साहब जैसा व्यक्तित्व इस समाज में पैदा हुआ, जिसने अपने त्याग और समर्पण से समाज की दिशा और दशा दोनों को काफी हद तक बदल डाला।

यह समाज कर्नल साहब के योगदान को कभी भुला नहीं सकता और वास्तव में वे सर्व समाजों के नेता थे। उन्होंने सभी पिछड़े और वंचित वर्गों को अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी।

युवाओं के प्रेरणास्रोत स्वामी विवेकानंद जी कहते थे कि जब कोई व्यक्ति शिक्षित और समर्थ बनता है, तो वह उस देश और समाज के साधन-संसाधनों के बल पर आगे बढ़ता है, जहाँ वह रहता है। समर्थ बनने के बाद यदि वह व्यक्ति उन लोगों पर ध्यान नहीं देता है, उनकी दशा सुधारने के प्रयास नहीं करता है तो उसका मनुष्य होना व्यर्थ है।

---

* स्वर्गीय कर्नल किरोड़ी सिंह बैंसला की मूर्ति के अनावरण और गुर्जर सम्मेलन में संबोधन, कोटा, राजस्थान, 30 मई, 2023

कर्नल किरोड़ी सिंह बैंसला ने अपने जीवन भर की पूँजी, अपना ज्ञान और अनुभव समाज के उत्थान के लिए समर्पित कर दिया। मुझे खुशी है कि समाज की तरफ से उनके सम्मान में यह कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है और हम सब आज उनकी इस भव्य प्रतिमा के अनावरण के अवसर पर यहाँ एकत्र हुए हैं।

ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम से समाज में एकता और सामूहिकता की भावना का विकास होता है। सामाजिक एकता के बल पर ही वीर गुर्जर समाज ने विकास किया है। आज के समय में गुर्जर समाज के लोग राजनीति में, समाज-सेवा में, शिक्षा में, खेल में और हर एक क्षेत्र में अपनी जगह बना रहे हैं।

आपका समाज ऐसा समाज है, जिसने इतिहास से लेकर वर्तमान तक सदा संघर्ष किया है। आपके समाज के लोगों ने अपने लिए तो जीवन जिया ही है, इसी के साथ देश के लिए भी अपने आप को समर्पित कर दिया है।

गुर्जर समाज कई वर्षों से पशुपालन और खेती का काम करता आया है और ये काम करते हुए ही गुर्जर समाज के बड़े-बुजुर्गों ने विषम परिस्थिति में अपने बच्चों को पढ़ाया है, उन्हें आगे बढ़ाया है। आज समाज के पढ़े-लिखे बच्चे सिर्फ अपनी उन्नति नहीं कर रहे हैं, बल्कि वे देश के लिए भी बेहतरीन काम कर रहे हैं।

समाज के बच्चों से मैं कोटा के कोचिंग में भी मिला हूँ तो संसद भवन में भी मिला हूँ। मैंने आईआईटी/मेडिकल की तैयारी करने वाले बच्चों से भी बातचीत की है, तो प्रशासनिक अधिकारी बनकर संसद भवन के अध्ययन दौरे पर आए समाज के युवकों से भी बातचीत की है।

समाज के बच्चे संघर्ष करने से कतराते नहीं हैं। तैयारी करने वाले जो युवा परीक्षाओं को पास कर सलेक्ट हो जाते हैं, उनकी एक खासियत है कि उसके बाद भी वे दूसरे प्रतियोगियों की सहायता करते हैं। उन्हें गाइड करते हैं। सलेक्ट होने के बाद ऑनलाइन क्लास के माध्यम से या कहीं-न-कहीं सेमीनार के माध्यम से वे कोशिश करते हैं कि दूसरे प्रतियोगी भी सलेक्ट हो जाएँ।

यह प्रेरणा भी कर्नल किरोड़ी सिंह बैंसला जी ने समाज के युवाओं, सक्षम लोगों और अधिकारियों को दी थी।

समाज के एक कार्यक्रम में, जिसमें पढ़े-लिखे लोग और अधिकारी लोग थे, वहाँ कर्नल साहब ने कहा था, "समाज के लिए मैं अपनी तरफ से सब कुछ करूँगा, मुझे आप सब के साथ की जरूरत है। समाज को आपकी जरूरत है। अपने तरीके से समाज में भागीदारी देना शुरू कीजिए, रिटायरमेंट का इंतजार मत कीजिए। आप लोग पढ़े-लिखे हैं, बुद्धिमान हैं। समाज के वंचित लोगों को आपकी गाइडेंस और सहयोग की जरूरत है।

कर्नल साहब के इस आह्वान का उन लोगों पर प्रभाव पड़ा, और उस हॉल में मौजूद लोगों ने युवाओं और विद्यार्थियों को मुख्यधारा में जोड़ने के लिए, कॅरियर गाइडेंस देने के लिए अपनी नि:शुल्क सेवा देने का संकल्प लिया। साल 2012 में कर्नल साहब की इस प्रेरणा ने मूर्त रूप लिया और सुयोग संस्था का निर्माण हुआ, जो आज भी समाज के युवाओं और विद्यार्थियों के हित के लिए काम कर रही है।

ग्रामीण लाइब्रेरी की प्रेरणा भी कर्नल साहब की मौलिक सोच का परिणाम है। कर्नल साहब ने लगातार लाइब्रेरीज के महत्त्व पर जोर दिया। वे जानते थे कि समाज को थिंक टैंक की आवश्यकता है। लाइब्रेरी ही ऐसे थिंक टैंक उपलब्ध करवा सकेगी।

कर्नल साहब गरीब, कमजोर और वंचित तबके के अभिभावक थे। उन्होंने जो संघर्ष समाज को आगे बढ़ाने के लिए किया, उसका परिणाम है कि समाज के हजारों घरों से युवा निकलकर आगे बढ़े हैं। अनेक युवा RAS बने हैं, अधिकारी, लैक्चरर, टीचर बने हैं और दूसरे सरकारी पदों पर पहुँचे हैं। इससे समाज के सभी घरों को, नौजवानों को शिक्षित होकर आगे बढ़ने की प्रेरणा मिली है।

कर्नल साहब की प्रेरणा से गुर्जर समाज ने संघर्ष कर अधिकार प्राप्त किए हैं, और फिर आगे बढ़ा है। समाज ने उन्नति की दिशा में कदम बढ़ाए हैं, लेकिन मंजिल अभी हासिल नहीं हुई है। क्योंकि शिक्षा का जो स्तर होना चाहिए, वह अभी भी समाज में नहीं है।

कर्नल किरोड़ी सिंह जी कहते थे कि आज के नौजवान फर्राटेदार अंग्रेजी बोलने वाले होने चाहिए। वे कहते थे कि "न मुझे हैंडपंप की जरूरत है, न मुझे आँगनबाड़ी की जरूरत है। मैं पैदल चल लूँगा, मैं तो कुएँ से पानी ले आऊँगा, लेकिन मुझे स्कूल चाहिए। हर जिले में एक रेजिडेंशियल इंग्लिश मीडियम स्कूल चाहिए।" समाज को इस दिशा में आगे बढ़ना चाहिए।

आज समय बदल चुका है। आज हमें यह नहीं देखना है कि समाज में साक्षरता का स्तर कितना है! बल्कि आज हमें यह देखना है कि समाज में कितने बालक-बालिका हायर एजुकेशन हासिल कर पाते हैं। कितने बालक-बालिका पीएच.डी. में एडमिशन ले पाते हैं, कितने प्रशासन में जा पाते हैं, कितने बालक-बालिका अपने मन का कर पाते हैं; आज इस दिशा में हमें तेजी से आगे बढ़ना है।

आप सभी मेरा परिवार हो। मुझे आज आगे बढ़ते परिवार को देखकर खुशी होती है। लेकिन इसी के साथ मुझे चिंता होती है, जब मैं देखता हूँ कि परिवार की बेटियाँ अभी भी पूरी क्षमता के साथ आगे नहीं बढ़ पा रही हैं। समाज की बेटियों को आगे बढ़ाने के लिए, उच्च शिक्षा के लिए केंद्र और राज्य की सरकारें कई योजनाएँ चलाती हैं। मैं चाहता हूँ कि समाज भी इस पर गंभीरता के साथ काम करे। जब हमारी बेटियाँ पढ़-लिखकर आगे बढ़ेंगी, जब हमारी बेटियाँ बुलंदी का आसमान छूएँगी; उस दिन समाज बहुत आगे बढ़ जाएगा।

बाबा साहब अंबेडकर जी ने कहा है कि "मैं किसी भी समाज की प्रगति का इस बात से आकलन करता हूँ कि उस समाज में महिलाओं की क्या स्थिति है।"

श्री वीर गुर्जर समाज में महिलाओं को, बालिकाओं को आगे बढ़ाना होगा। बेटियों को अवसर देने होंगे, ताकि समाज अपनी पूरी क्षमता और सामर्थ्य से आगे बढ़े।

समाज के जो सक्षम, समर्थ लोग यहाँ बैठे हैं, उनके बारे में कर्नल साहब ने कहा था कि "समाज को देने का सही वक्त है, तो वह अभी है। रिटायरमेंट का इंतजार क्यों करें। कर्नल साहब का यही आह्वान और प्रेरणा थी।"

मुझे विश्वास है कि वीर गुर्जर समाज अपनी प्रगति से अन्य समाजों को रास्ता दिखाएगा। इसी संदेश और विश्वास के साथ आप सभी को पुनः शुभकामनाएँ।

जय हो भगवान देवनारायण जी की। कर्नल किरोड़ी सिंह बैंसला अमर रहें।

40

वैश्विक आकांक्षाओं और अपेक्षाओं को पूरा करने में समर्थ भारत*

**"जो मतदान की योग्यता उम्र के आधार पर रखता हो,
न लिंग के आधार पर, न शिक्षा के आधार पर,
हम कोई भेदभाव नहीं करेंगे।"**

भारतीय विदेश सेवा एक बहुत प्रतिष्ठित सेवा है। यह कठिन भी है, लेकिन एक व्यापक स्वरूप के साथ वैश्विक राजनीतिक क्षेत्र के अंदर इस सेवा का एक विशेष स्थान है। जब आप ट्रेनिंग के बाद अलग-अलग देशों के अंदर भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे, कई अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर प्रतिनिधित्व करेंगे, उस समय आपकी सोच, आपका चिंतन, आपका दायरा बहुत व्यापक होगा। इस प्रशिक्षण अवधि के दौरान आपने जो भी ट्रेनिंग की, उस प्रशिक्षण अवधि के अनुभव का लाभ भी आपको कहीं-न-कहीं मिलेगा।

जीवन के अंदर एक समय ऐसा भी होता है, जब अध्ययन पर ही हमारा सारा ध्यान केंद्रित होता है। उस अध्ययन के बाद जब हम वास्तविक जिंदगी के अंदर जाते हैं तो हमें कई सारी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। कई नए सेक्टर्स आते हैं, क्योंकि यह सेवा ऐसी है कि आप उस देश के अंदर भारत का प्रतिनिधित्व करते हैं। आप दुनिया के अंदर भारत की तस्वीर रखने का काम करेंगे। जितना आपका अनुभव होगा, आपका प्रेजेंटेशन जितना व्यापक होगा, उतना ही भारत के बारे में एक अच्छी धारणा बनेगी।

हम दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश हैं, जनसंख्या की दृष्टि से भी बड़ा देश हैं। हमें अपनी विरासत और ऐतिहासिक पलों को भी समझना पड़ेगा। आपने इतिहास को किताबों में पढ़ा है। विरासत की कुछ घटनाओं को भी आपने किताबों में पढ़ा होगा। दुनिया के अंदर हम डेमोक्रेटिक देश केवल इसलिए नहीं हैं कि हमने संसदीय लोकतंत्र को

* भारतीय विदेश सेवा के प्रशिक्षु अधिकारियों से संवाद, नई दिल्ली, 7 जून 2023

अपनाया है। आप जितने भी देशों का अध्ययन करेंगे, आपको लगेगा कि जब भारत आजादी की लड़ाई लड़ रहा था और आजादी के बाद भारत की स्थिति में क्या-क्या परिवर्तन हुए, दुनिया के बहुत ही कम देश होंगे, जहाँ इतनी बड़ी जनसंख्या अशिक्षित थी। जब हम आजाद हुए थे तो हमने संसदीय लोकतंत्र को अपनाया और सबको मताधिकार दिया। उस समय भी दुनिया के बहुत सारे जो विकसित देश थे, उनमें भी लिंग के आधार पर महिलाओं को मत का अधिकार नहीं दिया गया था।

संसदीय ज्ञानपीठ में भारतीय विदेश सेवा के प्रशिक्षु अधिकारियों से संवाद करते हुए

लेकिन हमने कहा कि हर व्यक्ति को जो वयस्क है, जो मतदान की योग्यता उम्र के आधार पर रखता हो, न लिंग के आधार पर, न शिक्षा के आधार पर, हम कोई भेदभाव नहीं करेंगे। वर्ष 1952 का पहला इलेक्शन और वर्ष 2019 के इलेक्शन को देखेंगे और एक अध्ययन करेंगे तो पाएँगे कि मतों का प्रतिशत लगातार बढ़ रहा है। ज्यों-ज्यों मतदाताओं में जागरूकता पहुँची, तो मतदान का प्रतिशत बढ़ता गया। हम कभी विदेश में जाएँगे तो कहेंगे कि हम सबसे बड़ी डेमोक्रेसी हैं। हमारी डेमोक्रेसी स्ट्रांग हुई है। इसके स्ट्रांग होने के क्या कारण हैं? 1952 में मतदान प्रतिशत काफी कम था, लगातार मतदान का प्रतिशत बढ़ना डेमोक्रेसी के प्रति लोगों का विश्वास है।

दूसरा विषय भारत में लगातार इतनी बड़ी जनसंख्या के अंदर निष्पक्ष चुनाव होना, चुनाव प्रक्रियाओं पर सवाल नहीं उठना और सबसे बड़ी बात है कि इतनी बड़ी संख्या के अंदर, आप कई देश जाएँगे, कहीं की पॉपुलेशन एक मिलियन होगी, कहीं की दो मिलियन

होगी, कहीं की दस मिलियन होगी, जब पॉपुलेशन की आप चर्चा करेंगे कि इतनी बड़ी हमारी पॉपुलेशन है, हम भी जब विदेश में जाते हैं तो बड़े-बड़े देश की पॉपुलेशन भी हमसे एक-चौथाई से भी कम है। वहाँ भी कभी न कभी चुनाव पर सवाल उठे। कभी सैनिक शासन आए, कई अन्य शासन आए। लगातार पचहत्तर वर्षों तक डेमोक्रेटिक सिस्टम से शासन चले, सत्ताओं का परिवर्तन हो, चाहे राज्यों में हो, चाहे केंद्र में हो, चाहे पंचायत में हो, हमारा डेमोक्रेटिक सिस्टम पंचायत से लेकर दिल्ली तक हर चीज में मतदान से है और मतदान के बाद जो संस्थाएँ हैं, उनका अपना-अपना काम रेखांकित है कि पंचायत का क्या काम होना है, विधान सभा का क्या काम होना है, पार्लियामेंट में क्या होना है। संविधान बनाते समय वे कितने विद्वान लोग होंगे, जिन्होंने दुनिया के संविधान का अध्ययन किया, लेकिन अपने विजन से संविधान को बनाया। आज भी भारत का संविधान दुनिया के कई बड़े देशों के संविधानों से सर्वश्रेष्ठ ही है, मार्गदर्शक भी है और उस पर हमारा सारा सिस्टम जितना भी है, हम संविधान से चलते हैं। यह एक विशेषता रही है।

"हम मानव संसाधनों को सर्वश्रेष्ठ करने की दिशा में लगातार काम कर रहे हैं। आने वाले समय में भारत के प्रधानमंत्री जी का विजन है कि हम किस तरीके से मानव संसाधनों को श्रेष्ठ बनाएँ, ताकि देश में उसका कंट्रीब्यूशन हो, इंटरनेशनल स्तर पर भी कंट्रीब्यूशन हो।"

संविधान में संशोधन हुए हैं, आवश्यकता के अनुसार हुए हैं। संविधान सभा की डिबेट जब आप पढ़ेंगे तो आपको लगेगा कि संविधान के प्रत्येक अनुच्छेद पर कितनी डिबेट हुई, कितनी व्यापक चर्चा हुई, लेकिन सर्वसम्मति से संविधान बना। उस समय यह था कि परिस्थितियों के अनुसार यह फ्लेक्सिबल होगा, इसलिए सबसे ज्यादा संविधान के संशोधन हुए। हम डेमोक्रेटिक सिस्टम को लगातार मेंटेन कर पाए हैं और सहज रूप से सत्ता का स्थानांतरण होता रहा है। इतने बड़े देश के अंदर लोगों को लगता था कि कैसे भारत सर्वाइव कर पाएगा। उस समय 1947 की आजादी के बाद विश्व के देशों के कमेंट्स जब आप देखेंगे, तब अधिकतम देशों का मानना था कि जो संविधान बना है, जिस तरीके की चुनाव पद्धतियाँ अपनाई हैं, संभव नहीं कि भारत लंबे समय तक चल पाएगा। हमने साबित किया, हमने चर्चा, डिबेट, संवाद से देश में परिवर्तन किया, कानून बनाए। कानूनों पर व्यापक चर्चा और संवाद हुए। कानूनों के अंदर जब-जब भी आवश्यक हुए, परिवर्तन किए।

हमने कानूनों को रिपील भी किया, नए कानून बनाए, पुराने प्रचलित कानूनों को आज की आवश्यकता के अनुसार बदला। डेमोक्रेसी की इन सारी बातों को समझना, अध्ययन

करना है। जब आप कभी कहीं जाएँगे तो चर्चा में रहेंगे कि भारत डेमोक्रेटिक क्यों है? डेमोक्रेसी हमारी विचारधारा में है, हमारी धारणा में है। आप इतिहास पढ़ें कि भारत शुरू से गाँव से लेकर डेमोक्रेसी का सिस्टम है। गाँव में पंचायत होती थी, पाँच लोग बैठते थे, पंच होते थे, निर्णय करते थे, कोर्ट नहीं था, थाना नहीं था। यह हमारी विचारधारा में रही है, हमारी कार्य प्रणाली में रही है, यह अपने आप बिल्ट होता है, वैसे भी लोकतंत्र हमारे दैनिक जीवन के अंदर है।

जब कभी घर में विवाद होता है तो हम पाँच लोग बैठकर चर्चा करते हैं, जो फैसला होता है, उसका सम्मान होता है। हमें डेमोक्रेसी को समझना है। डेमोक्रेसी में चर्चा-संवाद, डिबेट से परिवर्तन हुआ। 75 वर्षों के बाद भारत वैश्विक मंच पर आज नेतृत्व कर रहा है। दुनिया में जितनी बड़ी पॉलिसियाँ हैं, नीतियाँ हैं, उसे बनाने का काम भारत कर रहा है। हमने कई ऐसे परिवर्तन किए और दुनिया उसे मानने लगी है। वैश्विक मंच पर बहुत कठिन होता है, सब देशों की अपनी स्वायत्तता होती है, भौगोलिक स्थितियाँ होती हैं, संस्कृति होती है, विचारधारा होती है। इसके बाद भी आप देखेंगे कि भारत वैश्विक मंच पर आज मजबूत हुआ है। इकोनॉमिक पॉलिसी के अंदर, टेक्नोलॉजी के अंदर, सोशल पॉलिसियों के अंदर, एजुकेशन सिस्टम में बहुत बड़ी जनसंख्या अनपढ़ थी और आज नौजवानों की बौद्धिक क्षमता दुनिया में दिख रही है, हर कहीं डॉक्टर, इंजीनियर भारत के हैं। जापान जैसे देश में जाएँगे तो आईटी में भारत के नौजवान नेतृत्व कर रहे हैं।

हम मानव संसाधनों को सर्वश्रेष्ठ करने की दिशा में लगातार काम कर रहे हैं। आने वाले समय में भारत के प्रधानमंत्री जी का विजन है कि हम किस तरीके से मानव संसाधनों को श्रेष्ठ बनाएँ, ताकि देश में उसका कंट्रीब्यूशन हो, इंटरनेशनल स्तर पर भी कंट्रीब्यूशन हो। वर्तमान और आने वाले विश्व की चुनौतियों के समाधान में इतनी बड़ी आबादी आर्थिक रूप से स्ट्रांग हो रही है। हम पहले इतने स्ट्रांग नहीं थे, फिर भी हमने उन पॉलिसियों को अपनाया, उन नीतियों को अपनाया। टेक्नोलॉजी की बात करें, ग्रीन एनर्जी की बात करें या सोलर एनर्जी की बात करें, दुनिया के अंदर भारत नेतृत्व कर रहा है।

क्लाइमेट चेंज का विषय बहुत लंबा है। आप किसी भी देश में जाएँगे तो वे क्लाइमेट चेंज की चर्चा करेंगे। इसकी चिंता बहुत पहले विकसित देशों ने की थी, लेकिन उन चिंताओं का एग्जीक्यूशन नहीं हो पाया था। भारत ने इतनी बड़ी आबादी होने के बाद आर्थिक, भौगोलिक स्थिति के बाद इसे अपनाया और मेजर रूप से परिवर्तन किया। विश्व के अंदर दो-तीन विषय हमेशा भारत के प्रति आकर्षित करने वाले लगेंगे, उसमें पर्यावरण भी एक बड़ा विषय है। जब हम कहीं जाते हैं तो यह चर्चा का विषय बनता

है। डेवलप्ड कंट्रीज क्लाइमेट चेंज की चर्चा नहीं करतीं, क्योंकि एग्रीमेंट और कमिटमेंट को पूरा नहीं किया, लेकिन भारत जैसा देश क्लाइमेट चेंज की चर्चा करता है।

तीन-चार विषय आपके जीवन में रहें कि हम एक डेमोक्रेटिक देश हैं। आपको ऐसे देश भी मिलेंगे, जहाँ डेमोक्रेसी नहीं है, लेकिन उन्होंने डेमोक्रेसी का एक चेहरा बना रखा है। दुनिया में यह साबित हुआ है कि डेमोक्रेसी शासन चलाने की सर्वश्रेष्ठ पद्धति है। इस संबंध में दुनिया के देशों के बीच दोहरे मत नहीं हैं। उसमें भारत की डेमोक्रेसी सबसे मजबूत है। आप लोकतंत्र के इस मंदिर में आए हैं, तो आपको अध्ययन, अध्यापन और प्रशिक्षण का पर्याप्त अवसर मिलेगा। आप ठीक से इंटरनेशनल स्तर पर अपने विषयों को रख सकेंगे। जिन विषयों में भारत ने नए परिवर्तन किए हैं, उनको आप देखेंगे। आज दुनिया के अंदर आर्थिक डेस्टिनेशन का बड़ा केंद्र बन रहा है। दुनिया के देश अनुकूलता, मैन पावर या बाजार आदि दृष्टि से देखते हैं, तो उनको भारत नजर आता है। इसमें भी भारत ने काफी सार्थक कदम बढ़ाए हैं। अन्य देशों में भी जी-20 सम्मेलन हुए हैं, लेकिन किस तरह से भारत ने जी-20 के तहत अधिकतम राज्यों और अधिकतम सेक्टरों को कवर किया, ताकि डिबेट और डिस्कशन से जो निर्णय निकले, वे वैश्विक मंचों पर समान रूप से लागू हों, ताकि वैश्विक परिवर्तन हो सके। हमने 'वसुधैव कुटुंबकम्' का नारा दिया है, यानी हमने विश्व को एक परिवार माना है। आप देखेंगे कि कोई देश इस तरह का नारा नहीं दे सकता, जो कि वन अर्थ, वन फैमिली और वन फ्यूचर है। किसी भी देश का चिंतन ऐसा नहीं हो सकता। केवल भारत नहीं, बल्कि पूरी दुनिया को लेकर हम साथ चलेंगे और एक सहयोगी के रूप में चलेंगे, तो ही परिवर्तन होगा। यही हमारी संस्कृति है और इसकी बड़ी पहचान दुनिया में बनती जा रही है। भारत का जो विजन है, वह दुनिया को साथ लेकर चलना है। अन्य कई सेक्टर्स, जैसे डिफेंस, हेल्थ सेक्टर आदि भी हैं। हेल्थ सेक्टर में आप देखेंगे कि दुनिया में सबसे सस्ती और अच्छी क्वालिटी की दवाएँ भारत की हैं। अनेक देशों में भारत की दवाएँ जाती हैं। अफ्रीकन देशों में भारत की दवाएँ जाती हैं। आप टूरिज्म को देखें, तो मेडिकल टूरिज्म में विकसित देशों के लोग भी इलाज कराने भारत आते हैं। सस्ता और बेहतर इलाज भारत में मिलता है।

मैं जितने भी देशों में गया वहाँ के लोगों ने भारत की अलग-अलग चीजों को लेकर आकर्षण देखा। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि यदि आप विदेश सेवा के प्रभावी अधिकारी होंगे, तो वैश्विक मंच पर प्रभावी तरीके से अपनी बात रख सकेंगे। जो वैश्विक स्तर पर अपनी बात को प्रभावी तरीके से रखता है, उसके देश के प्रति लोगों का आकर्षण बढ़ता है। हम धरातल की बात रख रहे हैं, इसलिए आज भारत की वैश्विक स्तर पर अलग पहचान बनी है और शक्ति बढ़ी है। हम कह सकते हैं कि वैश्विक स्तर पर नेतृत्व

करने की क्षमता भारत में है। हमारी नीतियों, पॉलिटिकल लीडरशिप के कारण, हमारे नौजवानों के कारण, हमारी आध्यात्मिक संस्कृति आदि के कारण आज भारत नेतृत्व कर रहा है। मुझे आशा है कि आने वाले समय में दुनिया की आकांक्षाओं को पूरा करने का काम भारत करे, इस दुनिया के लोगों की अपेक्षाएँ भारत से हों और भारत में सबकी आकांक्षाओं और अपेक्षाओं को पूरा करने की शक्ति हो, यह हमारा मूल मंत्र होना चाहिए। यही हम सब देखना चाहते हैं।

□□□